कादम्बिनी □ मई, 2003 □ वर्ष 43 □ अंक 7

बशीर बद्र,
रमेश उपाध्याय,
स्वयं प्रकाश
की रचनाएं

25 रुपये
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

हम जानते हैं आपकी रूचि और कुतूहल को एक ही पंक्ति से तृप्त करना नामुमकिन है।

हिन्दुस्तान पेश करता है सात रंगीन फीचर पेज

जीवन के कुछ पहलू ऐसे होते हैं कि मन करता है उसके बारे में और जानें। और गहराई से जानें। अपने पाठकों की इस असीम अभिलाषा की पूर्ति के लिए हिन्दुस्तान केन्द्रित करेगा सप्ताह के हर दिन जीवन के किसी विशेष पहलू पर एक खास पृष्ठ। जो ले जाएगा आपको उस विषय की गहराइयों में, विस्तार से और एक ताज़ा दृष्टिकोण के साथ।

- **रविवार:** अनंत-धर्म और उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी का पृष्ठ।
- **सोमवार:** यूरेका- विज्ञान और उसकी असीम संभावनाओं पर एक ख़ास नज़र।
- **मंगलवार:** स्कोर— निराले और रोमांचक खेल जगत पर एक पूरा पन्ना।
- **बुधवार:** कृति— कहानी, कविता, चर्चा-परिचर्चा व व्यंग्य की बौछार से भरा एक अत्यन्त पठनीय पन्ना।
- **गुरुवार:** टेक-वन— सिनेमा और टी.वी. की रंगीन दुनिया पर एक लुभावना रोचक पृष्ठ।
- **शुक्रवार:** हाट— बाजार का रुझान, नए उत्पादन, विज्ञापन की रोमांचक दुनिया की जानकारियों से भरा एक सहेजने लायक पृष्ठ।
- **शनिवार:** तन-मन— स्वास्थ्य संबंधी जानकारी का एक महत्वपूर्ण विशिष्ट आयोजन।

तो आराम के साथ अपने जीवन के ढेरों दिलचस्प पहलुओं से रुबरू होइये हर रोज़! हर रोज नया अनुभव, नया संतोष और झलक एक नयी विशाल दुनिया की

हिन्दुस्तान

युग नया, जोश नया

सारी दुनिया में तहलका मचा देने वाली रहस्यमय सच्ची घटनाओं के अनूठे सात कथा-सकलन

सभी के साथ प्रमाणों के संदर्भ सैंकड़ों प्रामाणिक फोटोग्राफ सहित

अनसुलझे रोचक रहस्य

डिमाई आकार • पृ: 120

अनसुलझे रहस्यों की 119 अद्भुत घटनाओं की रोचक कहानियां।

पुनर्जन्म एवं सूक्ष्म शरीर

डिमाई आकार • पृ: 152

पुनर्जन्म और सूक्ष्म शरीर के बारे में 101 सच्ची घटनाओं का रोमांच।

भूत-प्रेतों की रहस्यमय घटनाएं

डिमाई आकार • पृ: 96

अनेक स्थानों पर सचमुच घटी भूत-प्रेतों की रहस्यमय 103 घटनाएं।

संयोगों का विचित्र संसार

डिमाई आकार • पृ: 112

162 छोटे-छोटे मगर अद्भुत, अनोखे, विस्मित कर देने वाले सच्चे किस्से।

उड़न-तश्तरियों के रहस्य

डिमाई आकार • पृ: 120

रहस्यमय उड़नतश्तरियों की घटनाओं से रू-ब-रू हुए लोगों की 98 कथाएं।

पूर्वाभास और स्वप्नों की रहस्यमय सच्ची घटनाएं

डिमाई आकार • पृ: 120

ऐसी 101 घटनाएं, जिनका किसी-न-किसी को पूर्वाभास हुआ या सपनों में वे दिखीं।

रहस्यमय अलौकिक घटनाएं

डिमाई आकार • पृ: 144

इसी लोक में घटी चमत्कारी अलौकिक 99 घटनाएं, जिनसे बुद्धि भी चकराए।

मूल्य: प्रत्येक पुस्तक 48/-
डाकखर्च: 15/-
3 या अधिक पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर डाकखर्च माफ

आपके निकट के बुक स्टॉल, ए.एच. व्हीलर के रेलवे व बस अड्डों के बुक स्टॉलों पर उपलब्ध। वी.पी.पी. द्वारा मंगाने का पता

पुस्तक महल®
दिल्ली • मुंबई • बंगलौर • पटना • हैदराबाद

10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन: 3268292-93, 3279900 • फैक्स: 011-3280567
E-mail: info@pustakmahal.com • Website: www.pustakmahal.com

Discover the world of PUSTAK MAHAL Books — visit our online Bookstore: www.pustakmahal.com

लोकमत

'कादम्बिनी' का मार्च अंक देखा। पत्रिका पहले से कहीं ज्यादा पठनीय और सार्थक है। आशा है इस माध्यम का साहित्य और समाज के पक्ष में पूरा-पूरा उपयोग होगा।

– श्रीलाल शुक्ल, लखनऊ।

'कादम्बिनी' के स्वरूप में आपने जो परिवर्तन किये हैं वे मेरे विचार में बहुत अच्छे हैं। मुझे विश्वास है कि इस परिवर्तन का आपके पाठक स्वागत करेंगे। श्रीमती मृणाल पाण्डे की देखरेख में 'कादम्बिनी' का स्वरूप और भी निखरेगा।

– शांता कुमार, पूर्व केंद्रीय मंत्री, नयी दिल्ली।

'कादम्बिनी' का मार्च अंक देखा। कवर पृष्ठ पर अभी भी नारी है किंतु उसका रूप दूसरा है। पत्रिका अच्छी लगी।

– बालकवि बैरागी, सांसद,नयी दिल्ली।

पत्रिका का नया कलेवर अच्छा लगा। आपसे हम सबको बहुत उम्मीदें हैं।

– डॉ. अनामिका, नयी दिल्ली।

'कादम्बिनी' के मार्च अंक के स्वरूप और सामग्री में बदलाव सुखद और पठनीय लगा। हिंदी में इस समय ऐसी कोई स्तरीय पत्रिका नहीं है, जो घर-घर में पढ़ी जाती हो। 'कादम्बिनी' पूरे परिवार की पत्रिका बन सकती है। पत्रिका का मूल्य भी आम पाठक की पहुंच में होना चाहिए।

– गोविन्द माथुर, जयपुर।

'कादम्बिनी' वर्षों से पढ़ता रहा हूं , परंतु मार्च अंक की अभिनव प्रस्तुति ने चमत्कृत कर दिया। ऐसा लगता है,पाठकों का एक विशाल समुदाय 'कादम्बिनी' से पुनः जुड़ेगा।

– ललन चतुर्वेदी, रांची।

'कादम्बिनी' के मुख पृष्ठ को देखते हुए परिवर्तन का संकेत मिला। 'कादम्बिनी' का शीर्षक वामन से विराट हो गया। पन्ने पलटे तो पता चला कि युग बदल गया। बदलाव की बयार के साथ नये संपादन-कौशल और सूझबूझ को देखा, पढ़ा, महसूस किया। साधुवाद।

– अजहर हाशमी, रतलाम।

'कादम्बिनी' परिवर्तन की ताजा बयार लेकर आयी है। फेफड़ों में स्वच्छ ताजा हवा भरने का सा एहसास हुआ। होली के अवसर पर मानो पत्रिका ने भी नये कपड़े सिलाकर पहने हों, ऐसी अनुभूति हुई।

– विनय पंकज, दरभंगा।

मार्च अंक नयी साज-सज्जा के साथ विविधता लिये हुए है। नया कलेवर रुचिकर है।

– विश्वनाथ सिंहानिया, जयपुर।

मार्च अंक नवीनता के ज्ञान रस में सराबोर होकर हृदय की अनंत गहराइयों को छू गया।

– सूर्यप्रकाश, फलोदी।

'कादम्बिनी' का मानो पुनर्जन्म हो गया है। घर आकर पत्रिका परिवार के लोगों को दिखायी। सबका यही निष्कर्ष था कि वाकई

पत्रिका नयी हो गयी है।

– **शशि भूषण बडोनी,** मसूरी।

पत्रिका का कलेवर बदला-बदला जरूर है लेकिन अच्छा है। अंतरिक्ष यात्रा पर लेख समय की मांग रही। संगीत सम्राट उस्ताद बिस्मिल्ला खां से साक्षात्कार हमारे बुजुर्गों के प्रति सम्मान व श्रद्धा को जगाने में सफल रहा। मेट्रो के अग्रदूत ई. श्रीधरन के बारे में लेख मन के तारों को हिला गया।

– **राजीव अरोड़ा,** चरखी दादरी।

पत्रिका का कलेवर अपना परिचय स्वयं ही दे गया। आपके संपादकत्व में पत्रिका यह प्रथम अंक विशेषरूप से सराहनीय है।

– **प्रतीक्षा पुष्प,** नांगल टाउनशिप।

'कादम्बिनी' की रूपरेखा में स्पष्ट बदलाव परिलक्षित हुआ। पहले से बेहतर, अधिक सजी-संवरी एवं सुव्यवस्थित। कई अपेक्षाएं बनती हैं।

– **वीरेन्द्र कुमार बसु ,** सीतामढ़ी।

'कादम्बिनी' का मार्च अंक देखकर दिल बाग-बाग हो गया। काश कम-से-कम पांच वर्ष पहले इस तरह के परिवर्तन किये गये होते। मेरी बधाई स्वीकार करें। आशा है यह गंभीरता और स्तरीयता हर अंक में देखने को मिलेगी।

– **पंकज चौधरी,** पटना।

यह पत्रिका नयी साज-सज्जा एवं नये स्तंभ लेकर आयी है। और भी परिवर्तनों की आशा है। कवि नईम का गीत भा गया।

– **प्रवीण राय एस. शाह,** सूरत।

नूतनता का आभास देता हुआ मार्च अंक पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि आपके चमत्कारी हाथ 'कादम्बिनी' का कायाकल्प कर उसे सर्वोत्कृष्ट और सर्वग्राह्य पत्रिका बना देंगे। ये पत्रिका पत्रकारिता के नये आयामों को छुएगी।

– **चन्द्रकांत यादव,** चंदौली।

मार्च अंक की 'कादम्बिनी' चिरपरिचित होते हुए भी नवीन बन पड़ी है। निराला ने देखी थीं ऐसी आंखें, गुच्ची आंखों देखा बसंत, सुंदर निबंध हैं। पुल के आत्महत्या करने की कथा का व्यंग्य सटीक चोट करता है। 'एहसास' कहानी हृदयस्पर्शी है।

– **सुरेश बंसल,** पिपरिया।

नये संपादक के साथ पत्रिका के रूप में भी सुखद परिवर्तन आया है। आपका भविष्य, ज्योतिष, समस्या और समाधान जैसे स्तंभ हटाकर आपने वैज्ञानिक दृष्टि का परिचय दिया। बाकी स्तंभ हटाकर भी आपने पाठकों का उपकार किया। नये रूप में हंसते-हंसाते तथा इंटरनेट शब्दावली रोचक स्तंभ हैं।

– **सुधीर निगम,** कानपुर।

परिवर्तन कुछ मन को भाया और कुछ नहीं। रचना के साथ लेखक का परिचय व उसकी उपलब्धियों का विवरण दिल को सुकून देता है। 'शब्द-सामर्थ्य' स्तंभ व 'कालचिंतन' न पाकर टीस हुई।

– **नलिन,** रतलाम।

मार्च अंक में परिलक्षित बदलाव उज्ज्वल भविष्य का सूचक है।

– **मोहन कुमार सरकार,** पटना।

भीष्म साहनी का आत्मकथात्मक अंश पढ़कर संतुष्टि हुई। पुस्तकों की समीक्षा,

समीक्षा कम स्थूल विज्ञापन अधिक लगी।

– ठाकुर 'खिलवानी', सतना।

पत्रिका का नया रूप काफी अच्छा लगा। महेश दर्पण और मधुसूदन आनंद की कहानियां सोचने पर विवश करती हैं, तो महेश कटारे का यात्रा-वृत्तांत मन को उद्वेलित कर गया। आशा है आप अपने समस्त पाठकों को एक डोरी में बांधकर चलेंगी। शुभकामनाएं।

– रामफल सिंह पटेल 'रवि', सिंगरौली।

अब साहित्यिक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, पुरातात्विक आलेख अधिक प्रकाशित होंगे ऐसा विश्वास बढ़ा है। यदि कंप्यूटराइज्ड के स्थान पर हस्तलिखित लेखों के लिए स्थान खुला रख दिया जाए, तो गरीब लेखकों की मान रक्षा हो सकेगी।

– डॉ. हरिप्रसाद दुबे, फैजाबाद।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। विगत का स्थान आगत लेता है। आशा है मृणालजी के संपादन में 'कादम्बिनी' नवीन क्षितिज छुएगी और नये आयामों को उद्घाटित करेगी।

–अश्विनी कुमार पाठक, जबलपुर।

नया अंक नये कलेवर एवं नये विचार लेकर प्रस्तुत है, अच्छा लगा। विभिन्न नये क्षेत्रों पर दृष्टि पहुंची है। भीष्म साहनी का आत्मकथ्य, निराला और के.जी. सुब्रमण्यन पर लेख, बिस्मिल्ला खां का साक्षात्कार, हिमनदों के पार तांबे सा पहाड़ लेख तथा रामेश्वरम में गुंडों से सामना लेख भी अच्छा लगा। कालचिंतन के बदले यात्रिक शीर्षक ठीक है।

–के.टी. वेदारकर, मध्यप्रदेश।

मार्च अंक की प्रशंसा में पाठकों के पत्र बड़ी संख्या में हमें मिले हैं। स्थानाभाव के कारण उन्हें हम यहां नहीं दे पा रहे हैं। पाठकों के सहयोग के लिए हम आभारी हैं। –संपादक

ज्ञान-गंगा

प्रेमदर्शनतोपैत्यपैति नूनं च सततदर्शनतः।
पिशुनजनजल्पितेनाप्यपैत्यथा अपैति चैवमेवा अपि॥
स्त्रीणामदर्शनेन हि नीचस्य च सततदर्शनेनेह।
पिशुनजनजल्पितेनाज्ञस्य खलस्यैवमेवा अपि॥

–संस्कृतगाथासप्तशती

बड़े दिनों तक किसी के न दिखने से उसके प्रति प्रेम खत्म हो जाता है। लगातार दिखते रहने से भी प्रेम खत्म हो जाता है। दुष्ट जनों के द्वारा भड़का दिये जाने से भी प्रेम खत्म हो जाता है और कभी ऐसे ही बिना कारण के प्रेम खत्म हो जाता है। बड़े दिनों तक न दिखने से स्त्रियों का, लगातार दिखने से नीच व्यक्ति का, दुष्ट जनों की बातों में आकर मूर्ख का और बिना कारण के ही दुर्जन का प्रेम खत्म हो जाता है।

करीरो न फलं दत्ते सेव्यमानो अप्यहर्निशम्।
किन्त्वल्पसेवया हृष्टो रसालः फलसंचयम्॥

–उपदेशशती

करीर के वृक्ष की सेवा कोई दिन-रात करे, तब भी वह उसे एक फल तक नहीं देता। किन्तु आम का वृक्ष थोड़ी-सी सेवा से ही पुलकित होकर फलों का ढेर दे डालता है।

(प्रस्तुति : डॉ. शशि तिवारी)

तो क्या करो

अगर ओसामा ढूंढ़े से भी न मिले
तो क्या करो
इराक पर बमबारी करो

अगर बाजार का शगूफा
टांय-टांय फिस्स हो जाए
तो क्या करो
इराक पर बमबारी करो

अगर आतंकवादी पकड़ में न आएं
अगर पाकिस्तान ढुलमुल हो जाए
अगर उत्तरी कोरिया को छेड़ना
मुनासिब न रह जाए
तो क्या करो
इराक पर बमबारी करो

अगर उनके पास ऐसे हथियार हैं
जिन्हें हम ढूंढ़ नहीं पाये
तो फिर इसे ही सबूत मानकर
क्या करो
इराक पर बमबारी करो

अगर कोई चुनाव लड़े बिना
हुकूमत कर रहा है
तो क्या करो
इराक पर बमबारी करो

अगर तुम्हारा मूड खराब है
तो क्या करो
इराक पर बमबारी करो

अगर तुम्हारे खयाल से
सद्दाम के पास हथियार हैं
(जिनसे उसने तुम्हारे पिता को मारने की
कोशिश की थी)
और अगर तुम्हें लगता है कि
इन्हें पाकर सद्दाम पगला गया है
तो क्या करो
इराक पर बमबारी करो

अगर औद्योगिक घरानों की
जालसाजियां बढ़ रही हैं
और अगर उनसे तुम्हारे रिश्ते
उजागर हो रहे हैं
तो क्या करो
इराक पर बमबारी करो

अगर तुम्हारी राजनीति सड़ चुकी है
अगर उसके पीछे
अपना चेहरा छिपाना मुमकिन नहीं रहा
अगर मर्दानगी खतरे में है
तो क्या करो
इराक पर बमबारी करो।

[न्यूयार्क में युद्ध विरोधी प्रदर्शन के दौरान प्रौढ़ महिलाओं के संगठन 'रेजिंग ग्रेनीज' की महिलाओं द्वारा गाये गये एक समूह गीत का किंचित संपादित अंश।]

युद्ध-शांति की छवियों के बीच

मध्यपूर्व में जो युद्ध इन दिनों फैलता जा रहा है, वह सचमुच समीक्षा के परे है। वैसे युद्ध के बारे में मीडिया अथवा अन्य मंचों पर जो भी बातचीत होती है, वह भी प्राय: बहुत गंभीर, लगभग आदरभरी भावना से की जाती है। चाहे जीत का जश्न हो या युद्ध में हताहत हुओं का ब्योरा, लोगबाग उन्हें एक भव्य ऐतिहासिक घटना या त्रासदी के रूप में ही देखने के आदी हैं। यह संभवत: इसलिए हुआ कि अब तक युद्ध के ब्यौरे, सैनिकों को छोड़कर, जनसामान्य तक कानोंकान या लिखितरूप में ही पहुंचते रहे हैं। युद्ध की विभीषिका को अपनी आंखों से उमड़ते लोगों ने बहुत कम ही देखा है। 1991 के बाद से यह क्रम बदल गया है। सीएनएन, बीबीसी और अल जजीरा जैसे टी.वी.चैनलों ने जब युद्ध को हर घर के भीतर पहुंचाने में सफलता पायी, तो लोगों को युद्ध की मानवीय कीमत का ठोस अंदाजा पहली बार लगने लगा। गो शुरू में इसे भी एक उत्तेजक सोप ऑपेरा की तरह देखा गया। 'ओ व्हॉट अ ब्यूटीफुल वॉर', यह पहली प्रतिक्रिया थी सीएनएन के कई अमरीकी दर्शकों की, जब उन्होंने अपने महाबली देश की मिसायलों को इराक की अंधेरी रात के बीच ब्रह्मास्त्र की तरह उड़ते-फटते देखा। लेकिन धुआं, लपटें, कर्णभेदी ध्वनियां और मलबे का ढेर जब स्वयं उनके गृहप्रदेश में उजागर हुआ, तो टी.वी. की छवियों ने लोगों को स्तब्ध-त्रस्त कर दिया और गुस्से तथा अवसाद की पहली लहर बीत जाने के बाद दुनिया के कोने-कोने से पूछा जाने लगा कि ऐसी प्रतिक्रिया के मूल में अमरीकी विदेश नीति की जो भयावह गलतियां थीं, उनका परिमार्जन कब होगा?

युद्ध का मूल एक उन्माद, एक जुनून में होता है, जो युद्धकाल में सैनिक और नागरिक, स्त्री और पुरुष, बच्चे और बूढ़े, सब पर गहरा असर डालता है। और जब राष्ट्र अपनी सेनाएं युद्धक्षेत्र को रवाना करते हैं, वे उन्हें उन्माद की

अंधी सुरंग में ही भेज रहे होते हैं। महाभारत से लेकर वियतनाम तक के उदाहरण यह बड़ी क्रूर स्पष्टता से दिखाते हैं। यही कारण था कि कृष्ण और युधिष्ठिर, अंत तक युद्ध की संभावना निरस्त करने के प्रयास में लगे रहे और जब स्पष्ट हो गया कि इसे टालना असंभव होगा, तो कविदृष्टा व्यास ने अपनी मां को सुदूर द्वीप को भेज दिया :

असम्प्राप्तसुखाः कालाः प्रत्युपस्थित दारुणाः।
श्वः श्वः पापीय दिवसाः पृथिवी च गतयौवना॥

"ऐसा दारुण समय आ रहा है, जब सुख पाना एक सपना भर रह जाएगा। हर बीतनेवाले कल से आनेवाला कल और भी अधिक पापमय होगा, और यह पृथ्वी भी गतयौवना हो जाएगी।"

टी.वी. पर लाल रेत के अंधड़ से घिरे बसरा और बगदाद के प्यासे नागरिकों की विश्वव्यापी छवियां, उसी भयावह विडंबना को क्या फिर साकार नहीं कर रहीं, जिसे देखकर भी न समझ पानेवाली मानवजाति व्यास के शब्द बार-बार दुहराने को अभिशप्त है?

एक सृजनशील कलाकार ही हर युग में उस युगसत्य को देख-समझ पाता है, जो उसके समकालीनों के लिए अदीख-अबूझ रहता है और इसकी वजह यह है कि अपने ही सुख या दुःख में डूबे रहनेवाले सामान्य व्यक्ति के विपरीत वह बड़ी सुथरी तटस्थता से दुःख के कसकते-दुःखते तात्कालिक वैयक्तिक रूप से ऊपर उठकर अपनी दृष्टि को नितांत निर्वैयक्तिक युगसत्य पर केंद्रित कर सकता है। महाभारत में युद्ध की जिस क्रूरता और विनाशकारिता को वेदव्यास के कलाकार हृदय ने स्पष्ट देखा और व्याख्यायित किया था, उसे उस युद्ध की घटनाओं को *'युद्धस्य रम्याः कथाः'* के अंतर्गत खूब बढ़ा-चढ़ाकर बांचनेवाले संजय ने भी कितना समझा होगा, इसमें कवि को संशय था। इसी से महाकाव्य को लिपिबद्ध करनेवाले गणेश से वह कहते हैं कि इस महागाथा का मर्म पूर्णतः या मैं समझता हूं, या अनासक्त योगी शुकदेव। संजय समझता है या नहीं, पता नहीं *(अहं वेद्मि शुको वेत्ति, संजयो वेत्ति वा न वा)*।

लच्छेदार शब्दों, उदात्त विशेषणों तथा अतिरंजित राष्ट्रवाद से सजे इक्कीसवीं सदी के इक्कीस दिना इस महाभारत के रंगारंग संपादित ब्योरों को देखते हुए क्या कुछ प्रबुद्ध दर्शक याद रख पाएंगे कि एक निरर्थक यांत्रिक उत्तेजना और सतही राष्ट्रवाद का पक्षधर बनने की बजाय, युद्ध और शांति को मानव इतिहास के बड़े फलक पर रखकर विचार-यात्रा पर निकलना कितना जरूरी है। इस युध्द की तटस्थ , ईमानदार समीक्षा से क्या हमें वास्तविक ज्ञान और पाशवी शारीरिक शक्ति की सीमाओं का असली परिचय मिल सकेगा?

मई,2003, वर्ष 43, अंक 7

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी
कादम्बिनी वर्षतु

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिका

संपादक
मृणाल पाण्डे
सहयोगी संपादक
विष्णु नागर
कार्यकारी अध्यक्ष
राजन कोहली
मुख्य उप संपादक
भगवती प्रसाद डोभाल
वरिष्ठ उप संपादक
प्रभा भारद्वाज, सुरेश नीरव
उप संपादक
धनंजय सिंह, अरुण कुमार जैमिनि, प्रदीप कुमार
सहायक
बलराम दुबे, भारत भूषण अरोड़ा
चित्रकार-**भुपेन मंडल**

संपादकीय पता:
कादम्बिनी, हिंदुस्तान टाइम्स लि.,
18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नयी दिल्ली- 110 001.
फोन-23361234-286, 23704581
फैक्स-011-3704600
टेलेक्स-031-66327,66310.
आवरण सज्जा : **कौशल श्रीवास्तव**

लेख

अकाल का पर्याय बन रहा है : राजस्थान
भारत डोगरा....14
हताशा और निराशा में बीते थे डॉ. अम्बेडकर के अंतिम दिन
नानकचंद रत्तू....19
न इनके सिर पर टोपी है, न इनकी तोंद मोटी है
सुरेश बाफना....26
शिवानी दीदी कब आएंगी ?
पद्मा सचदेव....32
लोकतंत्र के मायने
पुरुषोत्तम अग्रवाल....41
राज्यसभा संसद का अमृत सदन है
बालकवि बैरागी....58
सहरा में स्वर्ग - सऊदी अरब
राजेन्द्र वार्ष्णेय....63
ग्लैमरस रवीना एक सामाजिक कार्यकर्ता भी है
सौम्या....68
भिखारी को नहीं, नैट भिखारी को भीख मिल जाती है
प्रतीक पांडे....73
तुम बेटियों से क्यों डरते हो ?
शुभा....85
आंदोलन के लिए टेलीफोन
अनिल चमड़िया....89
अंतरिक्ष के दस अनसुलझे रहस्य
संदीप निगम....93
एक होता है शब्द, एक होती है परंपरा
अशोक चक्रधर....98
स्वर्ग से उतरे थे यहां बुद्ध
डॉ. जगदीश चंद्रिकेश....105

ईश्वर
विमल
पानी
सत सो
सृजनश
अशोक
रेल में
पं. जवा
रेलों से
संदीप
रेल ने
अश्विनी
आजादी
कोमल
रेलों ने
योगेश...
कहा
मत तोड़
शिवानी.
नाचने
स्वयं प्र
हमर दु
डॉ. गौरी
कथा-प्र
कहानी :
चयन :
पाप-पु
आलोक
लाला बु
रमेश उप

ईश्वर मुझे दे साधारण जीवन
विमल कुमार..................................112
पानी कई बीमारियों का इलाज है
सत सोनी.......................................123
सृजनशीलता से भरा भविष्य है डिजायन में
अशोक सिंह..................................168

भारतीय रेल पर विशेष

रेल में छुट्टी
पं. जवाहरलाल नेहरू.......................134
रेलों से पहाड़ों की यात्रा का आनंद
संदीप साइलस...............................139
रेल ने भी तय किया है लंबा सफर
अश्विनी कुमार...............................145
आजादी की लड़ाई में काम आयी थीं रेलें
कोमल वर्मा...................................150
रेलों ने पाटी हैं कई-कई दूरियां
योगेश..154

कहानियां, संस्मरण एवं व्यंग्य

मत तोड़ो चटकाय
शिवानी...35
नाचने वाली कहानी
स्वयं प्रकाश...................................43
हमर दुखक नहीं ओर
डॉ. गौरीशंकर राजहंस........................54
कथा-प्रतिमान : रूमाल
कहानी : अरविंद बिन्दु /
चयन : अमरकान्त.............................76
पाप-पुण्य दो नव कथाएं
आलोक पुराणिक..............................115
लाला बुकसेलर
रमेश उपाध्याय...............................157
उधार प्रेम की कैंची है
अश्विनी कुमार दुबे..........................178

कविताएं

तो क्या करो.......................................7
ढूंढता रहूंगा किसी खुद को/ बाघ
चन्द्रकांत देवताले.............................128
इराक-1, इराक-2
सुदीप बनर्जी...................................130
खूबसूरत है बहुत/ तुम नशे में हो
बशीर बद्र......................................132

स्थायी स्तंभ

लोकमत-4, ज्ञान-गंगा-6, यात्रिक-8, दृष्टिकोण-12, जिसे कहते हैं उर्दू -18, मन की उलझन-50, विधि-82, क्लीनिक-101, गोष्ठी-119, नये पत्ते-165, आई.टी. शब्दावली-167, ग्रह-नक्षत्र-173, जीवन और धर्म-175, कसौटी-181, सांस्कृतिक डायरी-188, क्लब-समाचार-190, क्लब-रचना-193, हंसते-हंसाते-194, चित्र और रचना-198.

'कादम्बिनी'-वार्षिक / द्विवार्षिक शुल्क
वार्षिक-230 रुपये, द्विवार्षिक-430 रुपये।
विदेशों में-पाकिस्तान, नेपाल एवं भूटान वार्षिक-615 रुपये।
अन्य सभी देशों के लिए-वार्षिक-780 रुपये।
'कादम्बिनी क्लब' के सदस्यों के लिए - 185 रुपये प्रति सदस्य (वार्षिक)।
शुल्क- द हिंदुस्तान टाइम्स लि., नयी दिल्ली के नाम भेजें।
शुल्क भेजने का पता : प्रसार व्यवस्थापक, कादम्बिनी , हिंदुस्तान टाइम्स लि., 18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग , नयी दिल्ली-110 001.

अपने पाठकों से

फरवरी में जब श्रीमती मृणाल पाण्डे ने 'हिन्दुस्तान' के साथ ही 'कादम्बिनी' के संपादन का कार्यभार संभाला और मुझे उन्होंने सहयोगी संपादक का दायित्व दिया, तो हमने तय किया कि क्यों न मार्च के अंक में ही कुछ ऐसी तब्दीलियां लायी जाएं, जो हमारे परंपरागत पाठकों को अच्छी भी लगें और अलग से सभी को नजर भी आएं, ताकि नया पाठक वर्ग भी इस पत्रिका की ओर आकर्षित हो। हमें खुशी है कि मार्च अंक पर हमें अपने पाठकों का व्यापक समर्थन मिला है, जैसा कि 'लोकमत' स्तंभ में प्रकाशित पाठकों के ढेरों पत्रों से जाहिर है और कई-कई पत्र तो हम प्रकाशित भी नहीं कर पा रहे हैं। इधर नया पाठक वर्ग भी बनना शुरू हुआ है। लेकिन परिवर्तन करते समय सबसे पहले हमने अपने परंपरागत पाठकवर्ग का पूरा-पूरा ख्याल रखने की कोशिश की, क्योंकि हमारे मन में उसके प्रति विशेष रूप से गहरा सम्मान है। उसी की वजह से इस तरह की पत्रिका इस व्यावसायिक युग के तमाम झंझावातों के बीच भी खड़ी रह सकी है,जबकि कई डूब गयीं और कभी उबर नहीं पायीं। जैसाकि आपने देखा, हमने पत्रिका के मूल स्वभाव के साथ किसी तरह की छेड़छाड़ नहीं की है, क्योंकि इस तरह की पत्रिका की हिंदी को जरूरत भी है और यह जरूरत कभी खत्म नहीं होगी। हां, एक-दो स्तंभों को हमने छोड़ा है, तो कुछ को नये रूप में फिर से पेश भी किया है। कुछ नये स्तंभ हमने जोड़े हैं और इस अंक में भी आप पाएंगे कि कुछ स्तंभ जुड़े हैं। ज्योतिष पर हमारे अधिकांश पाठकों का भरोसा है इसलिए हमने इस स्तंभ को हल्के-से बदले हुए रूप में जारी रखा है। इसी प्रकार 'शब्द-सामर्थ्य' स्तंभ एक अलग रूप में आपके सामने पेश किया जा रहा है। हमने 'वैद्य की सलाह' स्तंभ की जगह नया स्तंभ 'क्लीनिक' शुरू किया

है और उसमें आपको आयुर्वेद, एक्यूपंक्चर, एलोपैथी और होम्योपैथी के शीर्ष चिकित्सक परामर्श दे रहे हैं। इस प्रकार चिकित्सा सलाह का दायरा व्यापक बनाने का प्रयत्न हमने किया है। पत्रकारिता का हमारा अनुभव बताता है कि जागरूक पाठक परिवर्तनों के प्रति हमेशा सदाशयी होते हैं और यह बात दिनोंदिन सिध्द भी होती जा रही है।

हमारा प्रयास समय के बदलावों की पूरी समझ रखते हुए 'कादम्बिनी' के उस स्वरूप को भी पाने की कोशिश करना है, जो बालकृष्ण राव तथा रामानंद दोषी-जैसे यशस्वी संपादकों के समय था। इसी को दृष्टिगत रखते हुए हम अगले अंक से विश्व की प्रसिद्ध और कालजयी रचनाओं का 'सार-संक्षेप' भी प्रस्तुत करने जा रहे हैं। इसकी मांग उस पाठक वर्ग की ओर से बड़े पैमाने पर थी, जो इस पत्रिका से अब स्थायी रूप से जुड़ना चाहता है।

एक ऐसे समय में जब स्तरीय तथा पठनीय सामग्री प्रस्तुत करना पत्रकारिता में लगभग अपराध मान लिया गया हो और हिंदी के सभी पाठकों की रुचियों को घटिया मान लिया गया हो, तब हम कोशिश करना चाहते हैं कि हमारे पाठकों को स्तरीय, रोचक, नवीनतम तथा प्रामाणिक सामग्री मिले, यह पत्रिका हमेशा की तरह एक पारिवारिक पत्रिका बनी रहे और हर उम्र तथा हर वर्ग के लोग इसे अपनी पत्रिका मानकर पढ़ें। हम यह भी चाहते हैं कि 'कादम्बिनी' के कारण हिंदी के पाठकों का सिर ऊंचा रहे, कभी नीचा न हो। हमें पूरा तथा पक्का विश्वास है कि हमारे समाज में इतनी ऊर्जा और अच्छी चीजों के प्रति इतना लगाव अभी बचा हुआ है कि इस प्रयास को निरंतर आपका समर्थन मिलता रहेगा।

हमारे पाठकों को इस पत्रिका से कई अपेक्षाएं हैं। वे अच्छी सामग्री भी चाहते हैं और अन्य सुधार भी। हम आपके समर्थन तथा सहयोग से शायद भविष्य में कुछ और बेहतर कर पाएं। आपके पत्रों तथा सुझावों का हमेशा स्वागत है और आप विश्वास कर सकते हैं कि आपके द्वारा लिखा गया हर पत्र गंभीरता से पढ़ा जाता है, उसे रद्दी की टोकरी में नहीं डाला जाता। इस बार के पत्र-स्तंभ से यह बात काफी हद तक आपके सामने स्पष्ट भी हो चुकी होगी।

बहरहाल पाठकों के साथ हमारा संवाद समय-समय पर जारी रहेगा।

— विष्णु नागर

राजस्थान के बाड़मेर जिले में भारत-पाकिस्तान सीमा के बहुत पास स्थित है भीलों का तला गांव। आसपास दूर-दूर तक फैला रेतीला मैदान और उसमें बसा भील आदिवासियों का यह गांव। थार रेगिस्तान के लगभग सभी गांवों की तरह यह भी भीषण सूखे की चपेट में है। वैसे तो पिछले लगभग चार-पांच

अकाल का पर्याय बन रहा है राजस्थान

राजस्थान इस बार फिर अकाल की चपेट में है। कुछ रोजगार के लिए कहीं चले गये हैं। जो यहां हैं उनकी और उनके पशुओं की स्थिति अत्यंत विकट है। राजस्थान से लौटकर बता रहे हैं - भारत डोगरा

मा

साल से ही वर्षा सामान्य से कम हो रही थी, पर वर्ष 2002 में तो वर्षा की चंद बूंदें भी देखने को लोग तरस गये। भील महिला डामिया बताती है, 'शुरू में ऐसा लगा कि इस साल अच्छी वर्षा होगी, तो सभी ने जैसे-तैसे बीज का इंतजाम किया, चाहे कर्ज ही लेना पड़ा, तो भी किया। पर उसके बाद तो वर्षा ने पूरी तरह धोखा दे दिया। एक बूंद वर्षा नहीं हुई। फसल पूरी तरह बर्बाद हो गयी। अनाज-चारा कुछ नहीं मिला।'

प्रवास की विवशता

फसल खराब होने के बाद बहुत से भील परिवार अपने पशुओं सहित प्रवास पर मजदूरी के लिए चले गये। जो यहां रह गये हैं, उनके लिए सबसे बड़ा सहारा है,
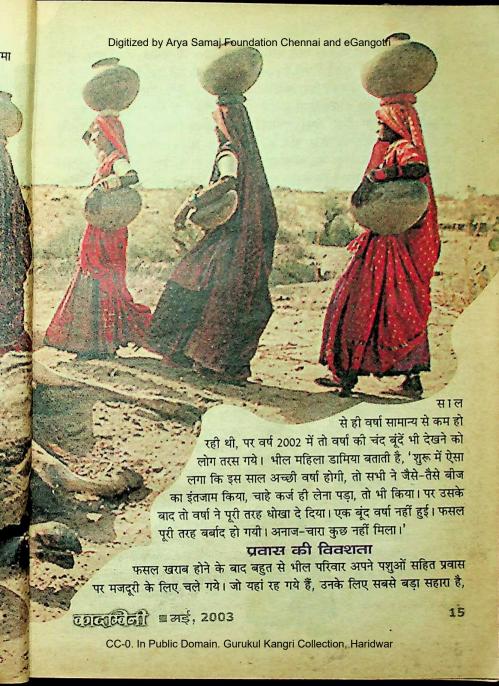
गांव के पास चल रहा सरकारी राहत कार्य। इसमें एक तालाब की खुदाई हो रही है। हर नौ दिन बाद मजदूरों को बदल दिया जाता है, ताकि सीमित रोजगार की स्थिति में सबको थोड़ा-थोड़ा रोजगार मिल जाए। भुगतान कार्य नाप के आधार पर किया जाता है। शारीरिक कमजोरी के कारण कोई भी मजदूर इतना कार्य नहीं कर पाता है कि कानूनी तौर पर तय मजदूरी प्राप्त कर ले, पर किसी तरह दो समय पेट में कुछ अनाज डालने की व्यवस्था हो जाती है।

यह हाल बाड़मेर जिले का ही नहीं, थार-रेगिस्तान के अधिकांश अन्य गांवों का भी है। सीमावर्ती क्षेत्र के गांवों की विशेष बात यह है कि सेना के जमाव के कारण भी लोगों को क्षति हुई। बड़ा बिजोरिया गांव के लोगों ने बताया कि जब युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी, तो उन्हें लगा कि किसी भी समय गांव खाली करने को कहा जा सकता है। अतः जो थोड़ा-बहुत अनाज और चारा उनके पास था, वह उन्होंने कम कीमत पर ही बेच दिया। इस कारण आज चारे का संकट यहां बहुत विकट हो गया है और झोपड़ी की छत को तोड़कर भी सूखा चारा पशुओं को खिलाना पड़ रहा है। भीलों के तला के अनेक परिवारों की एक अन्य शिकायत यह है कि सीमा निर्धारण के समय उनकी बहुत-सी जमीन उनके हाथ से निकल गयी,जिसका कोई मुआवजा भी उन्हें नहीं मिला।

पेयजल की समस्या विकट

इन परिवारों के लिए पेयजल की समस्या सबसे अधिक विकट है। बड़ा बिजोरिया के पास बड़ा-सा टैप तो बना है, पाइप लाइन भी डली हुई है, पर उसमें कभी पानी ही नहीं आता है। यहीं के लोग बताते हैं कि इसका स्रोत बहुत दूर है, यदि किसी पास के जल-स्रोत से जोड़ा जाए, तो पानी मिल सकता है। पिछले वर्ष यह लेखक सीमा के पास के एक अन्य गांव कुम्हारी के टिब्बा में गया था, तो वहां के लोगों ने बताया कि भीषणतम गरमी में वे पंद्रह दिनों में केवल एक बार नहा सकते हैं। वह भी बहुत कम पानी से। इस थोड़े से पानी की भी चिंता इतनी होती है कि एक चौड़े बरतन में खड़े होकर नहाते हैं। इस तरह जितना भी मैला पानी है वह बरतन में एकत्र हो जाता है। उसे सावधानी से सहेजकर पशुओं को पिला दिया जाता है। चारे व पेयजल की कमी से पिछले वर्ष में पशुओं की मौतें बड़ी संख्या में हुई हैं। गायों की रक्षा के लिए सरकार ने चाहे अपर्याप्त ही सही पर कई शिविर खुलवाये हैं। किंतु ऊंट, गधे, भेड़-बकरी जैसे अन्य महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी पशुओं को यह थोड़ी-बहुत राहत भी उपलब्ध नहीं है। ऊंट को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है। रेगिस्तानी स्थितियों में ऊंट की विशेष उपयोगिता को भी सब स्वीकार करते हैं, पर ऊंट के संरक्षण के लिए बहुत कम

कार्य हुआ है। बहुत कमजोर हो चुके ऊंटों को रेगिस्तान में जगह-जगह काफी बेबस स्थिति में चारे-पत्ते के लिए भटकते हुए देखा जा सकता है। गधे से काम बहुत लिया जाता है, पर उसकी उतनी ही उपेक्षा भी की जाती है।

महत्त्वपूर्ण है पशुधन-संरक्षण

रेगिस्तान में कृषि से भी अधिक महत्त्व पशुधन का है। अत: अकाल की इस विकट परिस्थिति में पशुधन बचाने पर अधिक ध्यान देना जरूरी है। चारे के ट्रक दूर-दूर से मंगवाये जा रहे हैं, पर पैसा खर्च करने पर भी अच्छी किस्म का चारा प्राप्त करना आसान नहीं है। प्राय: ठेकेदार-व्यापारी काफी घटिया किस्म का चारा शिविरों में भेज रहे हैं। भविष्य में थार रेगिस्तान में जहां नहर का पानी पहुंचा है या थोड़ा-बहुत ट्यूबवेल का पानी पहुंचा है, वहां व्यापारिक महत्त्व की फसलें उगाने के स्थान पर स्थानीय गांवों की आपूर्ति के लिए पर्याप्त मात्रा में चारा उगाने पर ध्यान देना होगा और चारे का काफी संग्रहण भी करना होगा। इस क्षेत्र में गोवंश की देसी नस्लें दूर-दूर तक मशहूर रही हैं। यहां के मुसलिम पशुपालकों ने भी गाय की बढ़िया से बढ़िया देसी नस्लों को तैयार करने में और उन्हें बढ़ावा देने में बहुत उल्लेखनीय भूमिका निभायी है। पिछले कुछ वर्षों में विविध कारणों से देसी नस्लों का क्षय होने लगा था, पर अब 'श्योर' जैसी संस्थाओं के प्रयास से कुछ गांवों में थारपरकर जैसी उच्च कोटि की देसी नस्लें फिर पनपने लगी हैं।

हरियाली बढ़ाने, पशुधन बचाने तथा पेयजल संरक्षण के महत्त्वपूर्ण कार्य आपस में जुड़े हुए हैं। इस दृष्टि से गांवों के ओरन बचाने का कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण है। ओरन वे वन क्षेत्र हैं, जिन्हें किन्हीं महापुरुष या देवी-देवता के प्रति श्रद्धा के साथ जोड़कर उनकी रक्षा की जाती है। हाल ही में सरकार ने ओरन बचाने के लिए विशेष बजट की व्यवस्था भी की है। बाड़मेर जिले में नेहरू युवक केंद्र के सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने कई स्थानों पर ओरन व गोचर बचाने के लिए अभियान आरंभ किया है तथा ओरन की जमीन हथियाने के प्रयासों का विरोध किया है।

शराबबंदी भी जरूरी

अकाल के समय में निर्धन व दलित परिवारों की जरूरतों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कुछ गांवों में उनकी मजबूरी का लाभ उठाकर अप्रत्यक्ष रूप से कर्ज के बदले में उनकी जमीन छीनने या उनसे बंधक मजदूर की तरह कार्य करवाने के प्रयास भी होते हैं। कुछ असरदार परिवार उन्हें शराब के नशे में फंसाना चाहते हैं, ताकि और सरलता से उनका शोषण हो सके। अकाल के दिनों में भी शराब का चलन होने से विशेषकर महिलाओं के कष्ट बहुत बढ़ जाते हैं। शराब विरोधी कोई आंदोलन उभरने पर उसमें दूर-दूर के गांवों की महिलाओं का भरपूर समर्थन मिल सकता है।

- सी-27, रक्षा कुंज,
पश्चिम विहार, नयी दिल्ली-110 063

बस कि दुश्वार है, हर काम का आसां होना
आदमी को भी मुयस्सर नहीं, इनसां होना

न था कुछ तो ख़ुदा था, कुछ न होता, तो ख़ुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता

दोनों जहान दे के, वह समझे, यह ख़ुश रहा
यां आ पड़ी यह शर्म, कि तकरार क्या करें

रंज से ख़ूगर हुआ इनसां, तो मिट जाता है रंज
मुश्किलें मुझ पर पड़ीं इतनी, कि आसां हो गयीं

इस सादगी पे कौन न मर जाये, अय ख़ुदा
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं

ग़ालिब, बुरा न मान, जो वाअिज़ बुरा कहे
ऐसा भी कोई है, कि सब अच्छा कहें जिसे

गरमी सही कलाम में, लेकिन न इस क़दर
की जिससे बात, उसने शिकायत ज़ुरूर की

है ग़नीमत, कि बउम्मीद गुजर जायगी उम्र
न मिले दाद, मगर रोज़-ए-जज़ा है तो सही

ग़ैर से, देखिये क्या ख़ूब निभायी उसने
न सही हमसे, पर उस बुत में वफ़ा है तो सही

दो रंगियां यह ज़माने की जीते जी है सब
कि मुर्दों को न बदलते हुए कफ़न देखा

– मिर्ज़ा ग़ालिब

हताशा और निराशा में बीते थे डॉ. अम्बेडकर के अंतिम दिन

भारत के संविधान निर्माता डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के निजी सचिव रहे नानकचंद रत्तू की पुस्तक 'लास्ट फ्यू इयर्स ऑव डॉ. अम्बेडकर' जब प्रकाशित होकर आयी थी तो काफी चर्चित हुई थी। डॉ.आर. बी. लाल द्वारा अनूदित तथा मजीद अहमद द्वारा संपादित यह पुस्तक 'डॉ. अम्बेडकर : जीवन के अंतिम कुछ वर्ष' शीर्षक से किताबघर प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित होकर शीघ्र ही आनेवाली है। इसके कुछ महत्त्वपूर्ण तथा मार्मिक अंश हम यहां दे रहे हैं।

विगत एक-डेढ़ वर्षों से डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर का मानसिक तौर पर दुखी रहना और कभी-कभी रो पड़ना मेरे मन-मस्तिष्क पर भारी पड़ रहा था। मैं इस अवसर की तलाश में था कि इसका कारण ज्ञात कर सकूं। जब भी मैंने पूछने की हिम्मत की, कदम पीछे खींच लिये, क्योंकि मैं उनके गुस्से से, जो ज्वालामुखी की तरह फट पड़ता था और जिसके सामने खड़े होना आसान न था, डर जाता था।

शांत करने की तरकीब

29 जुलाई, 1956, रविवार को सायं 6.30 बजे, कुछ झिझक के बाद मैंने हिम्मत बटोरकर उनके कमरे में प्रवेश किया। बिस्तर पर लेटे-लेटे उन्होंने मुझे देखा। उनकी मन:स्थिति का लाभ उठाते हुए मैंने उनके पैरों को हलके-हलके दबाया और विनम्रतापूर्वक पूछा, ''सर, आप इन दिनों इतने दुखी, चिंतातुर व हताश क्यों दिखते हैं और कभी-कभी तो रो भी पड़ते हैं?'' मुझे कठोर दृष्टि से देखते हुए उन्होंने कहा, ''जाओ,अपना टाइप का काम करो, मुझे परेशान न करो।'' मैं मुश्किल से एक शब्द बोल पाया और उनकी डांट-फटकार के भय से बाहर आ गया और अपने पीछे का दरवाजा धीरे से बंद कर दिया। हालांकि मैंने यह तय कर लिया था कि सच्चाई जानकर रहूंगा, चाहे जो हो जाए और उनका क्रोध झेलने के लिए खुद को तैयार कर लिया था।

लंबे समय तक उनके करीब रहने और अधिकतर समय साथ ही बने रहने के कारण मैंने उन्हें शांत करने की तरकीब सीख ली थी। उनके सामने हाथ जोड़कर, गूंगे-बहरे बनकर खड़े हो जाओ, उनके चरण स्पर्श कर लो, फिर सिर और पैरों पर तेल मालिश कर दो। इसके बाद मैं नौकर को एक कप चाय लाने का संकेत करता था। उन्हें थोड़े आराम की मुद्रा में देखकर, मौके की नजाकत के हिसाब से मैं कोई विषय छेड़ देता या उन्हें कोई ताजा सूचना दे देता था, जिस पर वह प्रतिक्रिया व्यक्त कर देते थे।

आधी रात से अधिक बीत चुकी थी, जब मैंने उनके कमरे में प्रवेश किया। वह बिस्तरे पर लेटे थे, पर जाग रहे थे। मैंने विनम्रतापूर्वक पूछा, ''सर, क्या मैं घर जा सकता हूं या मेरे यहां रुकने की आवश्यकता है?'', ''हां, तुम जा सकते हो।'' उन्होंने कहा। मैं रात 1.30 बजे घर पहुंचा और पत्नी की नाखुशी का शिकार बना।

अगले दिन 30 जुलाई, सोमवार को मैंने अपना दफ्तर कुछ पहले ही छोड़ दिया। श्रीमती अम्बेडकर कुछ खरीदारी करने बाजार गयी थीं और उन्होंने मुझे निर्देश दे दिया था कि उनकी अनुपस्थिति में मैं किसी को भी डॉ. अम्बेडकर से मिलने की अनुमति न दूं।

आवाज भावुकता से रुंध गयी

सारी डाक जो दिन-भर में आयी थी, उन्हें पढ़ा गया। कुछ महत्त्वपूर्ण पत्रों का उन्होंने बोलकर जवाब लिखवाया। उन्होंने 'सांध्य समाचार' पर एक नजर डाली, जो

ऑफिस से [illegible] आया था। इसके बाद उन्होंने मुझे करीब 50 पन्ने पकड़ा दिये। उनमें कुछ उनके हाथ के लिखे थे, कुछ टंकित सार-संक्षेप व कुछ किताबों की सामग्री थी। उन्होंने कहा, ''यह सामग्री 'बुद्ध और कार्ल मार्क्स,' 'प्राचीन भारत में क्रांति और प्रतिक्रांति' तथा 'हिंदुत्व के रहस्य' का एक भाग है। मुझे लग रहा है कि अपने जीवन में मैं इन पुस्तकों को प्रकाशित नहीं करा पाऊंगा।'' उनकी आवाज भावुकता से रुंध गयी। थोड़ी देर शांत रहने के बाद उन्होंने मेरी पीठ थपथपायी और कहा, ''तुमने जो मुश्किलें और तकलीफें उठायीं, मैं उसकी प्रशंसा करता हूं। 'बुद्ध और उनका धर्म' की प्रेस कॉपी टंकित करने में तुमने अपनी सेहत का जरा भी ध्यान नहीं रखा और न ही इस सेवा के बदले में कुछ चाहा। इसके अलावा तुम दफ्तर के रोजमर्रा के काम देखने के साथ वर्षों तक मेरा खयाल रखते रहे। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम इन कठिन परिस्थितियों को समझोगे, जिनमें कि मैं पड़ा हूं और उसी भावना व समर्पण से मुझे सहारा देते रहोगे।''

मथनेवाला प्रश्न

इस दौरान मैं लंबे समय से अपने मस्तिष्क को मथनेवाले प्रश्न को पूछने के लिए स्वयं को तैयार करता रहा, पर उन्होंने अचानक ही कह दिया, ''अब समय बर्बाद न करो, जाओ अपने काम में लगो।'' जो सामग्री मुझे दी गयी थी, उसे लेकर मैं बाहर आ गया और टंकण में व्यस्त हो गया। आधी रात बीतने के बाद मैं इजाजत लेने उनके कमरे में गया। उन्हें सोता पाकर मैं लौट आया।

डॉ. अम्बेडकर सी.राजगोपालाचारी के साथ

रसोइया सुदामा उठ गया और मेरी

साइकिल पकड़ दरवाजा खोलने के लिए लपका। वह चौकीदार पर चिल्लाया, जिसने बड़बड़ाते हुए दरवाजा खोलने में बहुत देर लगायी, क्योंकि उसकी नींद में इस वक्त खलल पड़ गया था। रात को करीब 1.30 बजे साइकिल से लंबी यात्रा कर के मैं घर पहुंचा। सड़क पर पूरी तरह सन्नाटा था। घर के बरामदे में खड़ी मेरी समर्पित व संत स्वभाव की पत्नी को राहत की सांस मिली। बिना किसी फुसफुसाहट या जरा सी भी भुनभुनाहट किये, उसकी आंखें रात्रि अवसान के बाद मेरे सुरक्षित घर पहुंच जाने पर खुशी से चमक उठती थीं।

परेशानी भरे हालात

अगले दिन 31 जुलाई, 1956, मंगलवार को मैं सायं 5.30 बजे 26, अलीपुर रोड पहुंचा। सदैव की तरह दिन भर की डाक की गठरी लेकर उनके पास गया। मेरे कमरे के सामने पड़नेवाले बरामदे में वह बैठे थे और स्टूल पर गद्दी रखकर अपना पैर टिकाये थे।

उन्होंने जवाब लिखवाना शुरू किया, पर बीच में ही सो गये। उनकी आंखें बंद हो गयीं और उन्होंने अपना सिर कुरसी की बैक पर टिका लिया। मैं उनका थका हुआ चेहरा देखता चुपचाप बैठा रहा। थोड़ी देर में वह फिर जाग गये और कुछ पत्रों के जवाब, जैसा कि मैं उन्हें एक-के-बाद एक पढ़ रहा था, उन्होंने जल्दी-जल्दी लिखवा दिये, फिर मेरे कंधे पर अपने हाथ का सहारा लेकर सोने के कमरे में गये और बिस्तर पर तुरंत लेट गये। उनके हाथ की किताब जमीन पर गिर गयी। कुछ समय तक वह कुछ बोले ही नहीं, तो मैं घबरा गया। मैंने उनके सिर और पैरों की मालिश की और पाया कि वह आराम से हैं।

विक्षोभ पैदा करनेवाली स्थिति

उचित अवसर भांपकर कुछ संकोच के बाद मैंने खुद को तैयार किया और उनके बिस्तर के पास रखे स्टूल पर ठीक उनके सामने ही बैठ गया। बिना कोई समय गंवाये मैंने अरसे से मस्तिष्क में विक्षोभ पैदा करनेवाला सवाल पूरी दृढ़ता और साहस के साथ उनसे पूछ लिया, ''सर, आजकल आप बहुत दुखी व हताश क्यों दिखते हैं? बीच -बीच में रो पड़ते हैं, ऐसा पूछने के लिए कृपया हमें क्षमा करें, पर कृपा करके मुझे जरूर बताइए।'' उन्होंने मेरी गंभीरता का अनुमान जरूर लगा लिया होगा। कुछ क्षणों के लिए शांति व्याप्त रही। वह कुछ बोले नहीं। कुछ देर बाद स्पष्ट रूप से उद्विग्न हो उठे और उनकी आवाज भावुकता से रुंध सी गयी।

अपना हाथ उन्होंने माथे के पीछे रखा और लंबी चुप्पी तोड़ते हुए कहा, ''तुम लोग नहीं जानते कि मुझे किस बात का कष्ट है और किन कारणों से मैं इतना दुखी हूं। पहली चिंता मुझे यह है कि मैं अपने जीवन के मिशन को पूरा नहीं कर पाया। मैं अपने जीवन में ही अपने लोगों को शासक वर्ग के रूप में देखना चाहता था, जहां वे अन्य वर्गों की तरह समान रूप से

राजनीतिक शक्ति के हिस्सेदार बनें। मैं तो अब करीब-करीब अपंग और बीमारी के कारण बिस्तर से लग गया हूं।

असमर्थता की वेदना

"जो कुछ मैं प्राप्त कर सका, उससे कुछ पढ़े-लिखे लोग ही मजे ले रहे हैं और वे अपने कपटपूर्ण कार्यकलापों के कारण बिलकुल व्यर्थ हैं। उनके मन में अपने दलित भाइयों के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है। वे तो मेरी परिकल्पना से भी आगे निकल गये। केवल अपने लिए और अपने हित- लाभ के लिए जी रहे हैं। उनमें से कोई भी सामाजिक कार्य करने को तैयार नहीं। अपनी ही तबाही की राह बना रहे हैं।

"मैं अपना ध्यान विशाल संख्या वाले उन ग्रामीण अशिक्षित लोगों की ओर लगाना चाह रहा था, जो अभी भी पीड़ा सह रहे हैं और उनकी आर्थिक स्थिति ज्यो-की-त्यों बनी हुई है, पर लगता है, जीवन थोड़ा ही बचा है।

"मैं चाहता था कि मेरी पुस्तकें मेरे जीवनकाल में ही प्रकाशित हो जाएं। मेरी पुस्तकें 'बुद्ध और कार्ल मार्क्स', 'प्राचीन भारत में क्रांति और प्रतिक्रांति' तथा 'हिंदुत्व के रहस्य' को प्रकाशित करने का बड़ा व ऐतिहासिक काम मेरे बाद कोई दूसरा नहीं कर पाएगा। यह सोचकर और खुद को असमर्थ पाकर मुझे वीभत्स वेदना होती है।"

वह गहरी भावनाओं में डूब-उतरा रहे थे। मैंने दखल देना चाहा, पर वह आगे बोल पड़े, "मैं यह भी चाहता था कि दलित लोगों में से मेरे जीवन में ही कोई आगे आये और मेरे बाद इस आंदोलन को आगे बढ़ाने की गुरुतर जिम्मेदारी वहन करे। ऐसा कोई नहीं दिखता, जो समय की कसौटी पर खरा उतर सके। मेरे सिपहसालार, जिन पर मैंने पूरा भरोसा किया और मुझे विश्वास था कि वे आंदोलन को आगे बढ़ाएंगे, नेतृत्व और शक्ति के लिए आपस में ही लड़ रहे हैं। उन्हें परवाह नहीं है कि कितनी बड़ी जिम्मेदारी उनके ऊपर है। मैं इस देश की और इसके वासियों की अभी भी सेवा करना चाहता था। ऐसे देश में जन्म लेना पाप है, जहां की जनता जाति-पांति के भेदभाव से इतनी पूर्वग्रहग्रस्त हो।

"वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह बहुत कठिन है कि इस देश के मामलों में कोई अपनी रुचि बरकरार रख सके, क्योंकि लोग किसी भी ऐसे विचार को सुनना नहीं चाहते, जो प्रधानमंत्री के विचार से मेल न खाता हो। देश किस गर्त में जा रहा है।" उन्होंने लंबी सांस ली।

मरने तक काम करता रहूंगा

"फिर भी चारों ओर से गालियां पाने के बावजूद मैंने बहुत कुछ कर दिया है और अपने मरने तक करता रहूंगा।" ऐसा कहते

हुए उनके गालों पर आंसू बहने लगे। वह मुझे ही देख रहे थे। मेरी आंखों में भी आंसू भर आये और मेरे सामने भी उन्हें देखते रहने के अलावा कोई चारा न था। पहले भी कई अवसरों पर मैंने उन्हें आहत होते व रोते हुए देखा था, पर इस बार तो मेरी परिकल्पना से भी अधिक हो गया था।

उन्होंने कहा, हिम्मत रखो

जब मैं खड़ा हुआ और सादर प्रणाम करने की मुद्रा में झुका और उनके पैर छुए, तो उन्होंने ऊपर-नीचे और दायें -बायें देखा, फिर गहरी पीड़ा उनके चेहरे पर प्रकट हो गयी। तत्पश्चात उन्होंने कहा, "हिम्मत रखो, परेशान न हो। जीवन तो एक-न-एक दिन खत्म होना ही है।" मुझे झटका लगा और कुछ समझ में न आया कि उनके ऐसा कहने का क्या आशय था। मैं भावहीन एकटक उन्हें देखता रहा।

थोड़ी देर शांत रहने के बाद अपने आंसू पोंछते हुए अपना हाथ ऊपर उठाकर उन्होंने कहा, "नानकचंद, मेरे लोगों को बता देना कि जो कुछ मैंने किया है, वह अपने विरोधियों से जीवन भर लड़ते हुए और कुचलकर रख देनेवाली तकलीफों और कभी न समाप्त होनेवाली बाधाओं से गुजरकर ही कर पाया हूं।

"बहुत मुश्किल से मैं कारवां को इस मुकाम तक लाया हूं, जहां यह आज दिखायी पड़ रहा है। इस कारवां को आगे बढ़ने ही देना है, चाहे कितनी ही बाधाएं, रुकावटें या परेशानियां इसके रास्ते में आएं। यदि मेरे लोग, मेरे सिपहसालार इस कारवां को आगे नहीं ले जा सकते, तो उन्हें इसे यहीं, इसी दशा में छोड़ देना चाहिए, पर किसी भी हालत में कारवां को पीछे मोड़ने की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए।"

उन्होंने कहा, "यही मेरा संदेश है और संभवत: अपने लोगों के लिए अंतिम संदेश है, जिसे मैं पूरी गंभीरता से दे रहा हूं और मैं निश्चिंत हूं कि यह अनसुना नहीं रहेगा। जाओ और उन्हें बता दो, जाओ और उन्हें बता दो, जाओ और उन्हें बता दो।" उन्होंने तीन बार दुहराया।

अंतिम संदेश

ऐसा कहते हुए वह सुबकने लगे और उनकी आंखों से आंसू बहने लगे। वह गहन निराशा में डूबे थे और स्पष्टतया हिल गये थे। उनके चेहरे पर इतनी असहनीय वेदना उभर आयी कि मैं उसे शब्दों में प्रकट नहीं कर सकता। हृदय दहला देनेवाला उनका संदेश उनके लोगों तक पहुंचाने का मन नहीं कर रहा था, क्योंकि यह संदेश दीर्घ निःश्वासों, सुबकियों व आंसुओं के बीच दिया गया था। मुझे इसका जरा भी अनुमान न था कि यही संदेश वास्तव में डॉ. बाबा

साहेब अम्बेडकर का अंतिम संदेश होगा। ऐसा लगता है कि अपनी तेजी से गिरती सेहत और आंखों की रोशनी से उन्हें पूर्वानुमान हो गया था कि उनका अंत तेजी से निकट आ रहा है। उन्हें सांत्वना देने के लिए मुझमें जरा भी साहस न था, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता था कि इससे उनके दुखी मन पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। मैं इतना अभिभूत हो गया था कि मुश्किल से खुद को संभाल पा रहा था। मैं सादर उनके सामने झुक गया, हाथ जोड़े और उनके पैर छुए।

पितातुल्य स्नेहभरा हाथ

मैंने कहा, ''सर , आपका जीवन कहीं ज्यादा मूल्यवान है। मेरी तो इच्छा है कि यदि संभव हो, तो मैं अपनी जिंदगी के 8-10 वर्ष आपको दे दूं, ताकि आप अपने जीवन का मिशन पूरा कर सकें। विशाल संख्या में अशिक्षित ग्रामीणों को मुक्ति दिला सकें, जो अभी भी आर्थिक दुर्दशा झेल रहे हैं और उच्च वर्ग के लोगों द्वारा प्रताड़ित और उनके दुर्व्यवहार के शिकार बन रहे हैं। इससे मुझे अत्यधिक संतोष मिलेगा कि मैंने एक ऐसे महान व्यक्ति की सेवा की, जिसने अपनी पूरी जिंदगी, दबे-कुचलों, दलितों व हताश लोगों की मुक्ति के लिए समर्पित कर दी। उन्हें भारतीय समाज में उचित स्थान दिलाने के लिए कठोर संघर्ष किया।''

मुझे परेशानहाल व रोते देखकर उन्होंने अपना कमजोर पर प्रेम भरा हाथ, पितातुल्य स्नेह से मेरी पीठ पर फेरा और सारगर्भित व स्नेहमयी निगाहों से मुझे देखा। इस तरह अपने जीवन के अंतिम क्षणों में अपने दलित भाइयों तक पहुंचाने के लिए संदेश देने की उनमें एक दूरदृष्टि थी। इसके आगे उन्होंने कुछ नहीं कहा, पर उनका संदेश मेरे कानों में गूंज रहा था। जो कुछ उन्होंने कहा, उससे मैं बुरी तरह हिल गया था। मुझे अपराधबोध हो रहा था और मैं खुद को कोस रहा था कि नाहक ही मैंने ऐसा विषय छेड़ दिया, जिससे उनके दिल को बेहद कष्ट पहुंचा। मैं उनके सिर-पैर व टांगों की मालिश करने लगा और उनके हताश चेहरे को देखता रहा। धीरे-धीरे वह सो गये। बत्ती बुझाकर, भारी हृदय से मैं बाहर आ गया। रसोइया सुदामा जो चाय ला रहा था, रोता हुआ वापस चला गया, जब मैंने उसे बताया कि बाबा साहेब कितने अप्रसन्न थे और रो रहे थे। उन तनावपूर्ण क्षणों को भूलना कठिन है और उनका वर्णन करते हुए मैं दुःख से भर उठता हूं और रो पड़ता हूं। ■■

न इनके सिर पर

हमारे सांसद, मंत्री और नेता अब वैसे नहीं रहे, जैसी उनकी छवि हुआ करती थी। वर्षों से उन्हें नजदीकी से जाननेवाले वरिष्ठ पत्रकार सुरेश बाफना बता रहे हैं कि हमारे बदले हुए जन प्रतिनिधि कैसे हैं।

एक जमाना था जब संसद के दोनों सदनों में आमतौर पर सफेद खादी की पोषाकें ही दिखायी देती थीं। महिला सांसद भी खादी की साड़ियां पसंद करती थीं। बीस साल पहले तक कांग्रेस की सफेद टोपियां भी दोनों सदनों में अच्छी तादाद में दिखायी देती थीं। समय का विरोधाभास देखिए, आज संसद में सफेद टोपी केवल शिवसेना के सांसद व मंत्री श्री बालासाहेब विखे पाटिल के सिर पर ही दिखायी देती है। कांग्रेस पार्टी में सफेद टोपी अब केवल कांग्रेस सेवा दल के सांसदों के लिए आरक्षित कर दी गयी है। कांग्रेस पार्टी के युवा नेताओं को सफेद टोपी बिलकुल रास नहीं आती है।

टेलीविजन के आने के पहले बहुत कम सांसद अपने कपड़ों को गंभीरता से लेते थे। कहा जाता है कि राजीव गांधी के प्रधानमंत्री बनने के बाद कांग्रेस के नेताओं के कपड़े अधिक साफ-सुथरे दिखायी देने लगे। पुरानी पीढ़ी के नेता आज भी अपने पुराने अंदाज में परिवर्तन करने के लिए तैयार नहीं हैं, किंतु नयी पीढ़ी के नेताओं ने इस बात को महसूस किया है कि लोग उन्हें साफ- सुथरे और

रेखा चित्र: सुधीर तेलंग

टोपी है, न इनकी तोंद मोटी है

प्रभावशाली लिबास में देखना चाहते हैं। नयी पीढ़ी के सांसदों में राजीव प्रताप रूढ़ी, ज्योतिरादित्य सिंधिया, शाहनवाज हुसैन, अरुण जेटली, सुषमा स्वराज, रेणुका चौधरी, कान्ता सिंह, वसुंधरा राजे सिंधिया, सुबीरामी, अनन्तकुमार, प्रमोद महाजन, रामविलास पासवान, सुमित्रा महाजन, उमर अब्दुल्ला, शत्रुघ्न सिन्हा और विनोद खन्ना जैसे अनेक सांसद हैं, जो अपने रंग-रूप व कपड़ों के प्रति काफी सजग हैं।

परंपरा के साथ आधुनिकता

महिला सांसद अब खादी की बजाय सिल्क की रंग-बिरंगी साड़ियां पहनना अधिक पसंद करती हैं। श्रीमती सुषमा स्वराज ने तो बाकायदा खुद ही अपनी पोषाक डिजाइन कर नया इतिहास रचा है। श्रीमती स्वराज ने साड़ी के साथ उसी कपड़े का विशेष जैकेट डिजाइन किया है, जो महिला सांसदों को परंपरा के साथ आधुनिकता के साथ जोड़ता है। कुछ युवा महिला सांसदों को छोड़ दें, तो अधिकांश महिला सांसद अब सिल्क की आकर्षक साड़ियां पहनना अधिक पसंद करती हैं। वहीं पुरुष सांसद गरमियों के दिनों में खादी के रंग-बिरंगे कुरते-पायजामे और ठंड के दिनों में बंद गले का सूट अधिक पसंद करते हैं।

कुछ पुरुष व महिला सांसदों को आप ब्यूटी पार्लर में भी निखरते हुए देख सकते हैं। कुछ गिने-चुने सांसद ऐसे भी हैं, जो फैशन डिजाइनर से अपने कपड़ों को डिजाइन करवाते हैं।

महंगे फैशन डिजाइनरों के कपड़े

जनता दल के सांसद विजय मलाया और समाजवादी पार्टी के सांसद अमर सिंह को देश के सबसे महंगे फैशन डिजाइनरों के कपड़ों से संवरे हुए पाया जा सकता है।

रेखा चित्रः सुधीर तेलंग

विपक्ष की नेता सोनिया गांधी का आकर्षक लिबास स्वर्गीय इंदिरा गांधी की याद दिलाता है। उनके कपड़ों के रंगों का संयोजन अवसर के अनुकूल होता है। श्रीमती इंदिरा गांधी की तरह शोक के क्षणों में उनकी साड़ी में काले रंग की प्रमुखता जरूर होती है।

उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी के जैकेट पर तो अफगानिस्तान के राष्ट्रपति हामिद करजई इतने फिदा हो गये कि कई भारतीय नेताओं के साथ मुलाकात में उन्होंने इसका जिक्र किया। हाल ही में भारत यात्रा के दौरान आडवाणीजी ने श्री करजई को चार जैकेट भेंट किये, जो विशेष तौर पर उनके लिए सिलवाये गये थे।

बॉलीवुड के रास्ते पर

कांग्रेस के मीडिया सेल के सदस्य व सांसद सुबीरामी रेड्डी के सिल्क के कुरतों के रंग और डिजाइन इस बात का खुलासा करते हैं कि कांग्रेस पार्टी गांधीजी के बजाय बॉलीवुड के रास्ते पर निकल पड़ी है। गनीमत है।

गांधीजी के अनुयायियों को संतोष करना होगा कि देश के सांसद अभी हीरे-मोती के आभूषणों की दौड़ में शामिल नहीं हुए हैं। इसका प्रमुख कारण शायद यह होगा कि यदि उनकी काया से हीरे मोती के आभूषण चमकते हुए दिखायी दिये, तो वोट कटने का खतरा हो सकता है। 28 फरवरी को लोकसभा में वित्त मंत्री द्वारा आम बजट पेश करने के दौरान सदन में इंद्रधनुषी रंगों की छटा महसूस की जा रही थी।

सफेद और पीले कुरते

कांग्रेस के अधिकांश सांसदों के कुरते अभी भी सफेदी से चमकते दिखायी देते हैं, वहीं भाजपा के अधिकांश सांसदों के कुरतों में पीले रंग की भरमार है। सफेद और पीले रंग के बीच नयी पीढ़ी के सांसद रंगों की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। वामपंथी दलों के सांसद रंगों की इस बयार से पूरी तरह अप्रभावित हैं। वैसे अब सांसद तथा मंत्री कुरता-पायजामा युग से निकल रहे हैं। उन्हें सूट-बूट भी आज रास आने लगे हैं।

देश के सांसदों के पहनावे में आये इस परिवर्तन के समानांतर एक नयी बात यह महसूस की जा रही है कि नयी पीढ़ी के सांसदों में बहुत कम संख्या ऐसे सांसदों की होगी ,जो मोटापे से त्रस्त हैं। आजादी के बाद कार्टूनों में नेता को मोटापे से त्रस्त दर्शाया जाता था।

रेखा चित्रः सुधीर तेलंग

नेता शब्द सामने आते ही उसकी बड़ी तोंद सामने आ जाती थी। इस लिहाज से देखा जाए, तो तेरहवीं लोकसभा में मोटापे से त्रस्त सांसदों की संख्या बहुत कम है।

एक जमाना था जब मोटापे की वजह से हमारे प्रिय नेता का पैदल चलना मुश्किल होता था। आज नयी पीढ़ी के सांसद न केवल सुबह दौड़ लगाते हैं, बल्कि आधुनिक मशीनों से सज्जित व्यायामशाला में पसीना भी बहाते हैं।

राजीव गांधी की शिकायत

पुरानी पीढ़ी के सांसद व्यायाम के नाम पर केवल सुबह सैर करना पर्याप्त समझते हैं। एक जमाना था जब कांग्रेस पार्टी के अधिकांश नेता मोटापे और डायबिटीज की परेशानी से ग्रस्त होते थे, लेकिन राजीव गांधी के प्रधानमंत्री बनने के बाद कांग्रेस की नयी पीढ़ी के नेताओं में शारीरिक फिटनेस के प्रति सजगता में बढ़ोतरी हुई। कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता के अनुसार राजीव गांधी मोटे नेताओं को बेहद नापसंद करते थे।

इस संदर्भ में एक किस्सा याद आता है कि जब राजीव गांधी ने सुविख्यात कार्टूनिस्ट आर. के. लक्ष्मण को सम्मानित किया था। बकौल लक्ष्मण, राजीव गांधी ने सम्मानित करते हुए उनसे कहा कि मैं आपके कार्टून को बेहद पसंद करता हूं। बाद में चाय पर मुलाकात के समय राजीव गांधी ने लक्ष्मण से कहा कि मुझे आपसे एक शिकायत है कि आपके कार्टून में मुझे मोटा दिखाया जाता है, जो सच नहीं है। लक्ष्मण ने मुसकुराते हुए जवाब दिया कि अब मैंने अपनी सामग्री को करीब से देख लिया है, भविष्य में आपको यह शिकायत नहीं होगी।

हमारे नेताओं के मोटापे में कमी होने का एक प्रमुख कारण नयी पीढ़ी के मतदाताओं का दबाव भी है। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि यदि कोई नेता मोटापे से ग्रस्त है जो जनता में उसे भ्रष्ट मान लिया जाता है। नयी पीढ़ी के मतदाताओं व नेताओं के सामने अब फिटनेस की दृष्टि से आदर्श अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर हैं। यही कारण है कि भारतीय राजनीति के परिदृश्य में घाघ व बूढ़े नेताओं की संख्या में तेजी के साथ कमी हो रही है।

स्वास्थ्य के प्रति अधिक सजग

संसद के केंद्रीय कक्ष में सांसदों के खाने-पीने की आदतों का विश्लेषण किया जाए, तो कई दिलचस्प बातें सामने आती हैं। एक बात जो साफ तौर पर दिखायी देती है कि हमारे अधिकांश नेता व सांसद दोपहर के भोजन से परहेज करते हैं। संसद के केंद्रीय कक्ष में सांसदों की सबसे प्रिय वस्तु हमारे देश की सबसे बदनाम खिचड़ी है। मजाक में कहा जाता है कि देश में खिचड़ी सरकार बनने के बाद संसद में खिचड़ी अधिक लोकप्रिय हो गयी। इसका अर्थ यह न निकाला जाए कि हमारे नेताओं

की पाचन शक्ति कमजोर हो गयी है।

सांसदों में खिचड़ी की लोकप्रियता का अर्थ यह है कि हमारे सांसद फिटनेस और स्वास्थ्य के प्रति अधिक सजग हो गये हैं। केंद्रीय कक्ष में खिचड़ी और मौसम्मी के रस की बिक्री सबसे अधिक होती है। दूसरे नंबर पर दक्षिण भारतीय व्यंजन आते हैं। केंद्रीय कक्ष में इटली का पिज्जा भी मिलता है, लेकिन उसकी भारी उपेक्षा होती है।

हमारे देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का मालपुआ प्रेम हमारे देश की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है। अब सुना है कि वाजपेयी ने अंततः डॉक्टरों के आदेश को स्वीकार करते हुए मालपुए से अपना नाता तोड़ लिया है।

विपक्ष की नेता श्रीमती सोनिया गांधी की खान-पान पसंद के बारे में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता भी अंधेरे में भटक रहे हैं। पत्रकारिता की भाषा में कहें, तो विश्वस्त सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार श्रीमती सोनिया गांधी का प्रिय भोजन अरहर की दाल और चावल है।

उप-प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी अपने सेहत के प्रति सबसे अधिक जागरूक नेता हैं। आडवाणीजी के लिए एक चपाती, दाल व सब्जी पर्याप्त भोजन है। वामपंथी दलों के सांसद फिटनेस के प्रति उतने सजग नहीं दिखायी देते हैं।

सिगार और डिस्को डांस

धूम्रपान के मामले में वामपंथी सांसदों ने अन्य दलों के सांसदों से काफी आगे हैं। किंगफिशर बीयर के पितामह श्री विजय मलाया के राज्यसभा सदस्य बनने के बाद संसद के केंद्रीय कक्ष में अब क्यूबन सिगार का भी प्रवेश हो गया है। श्री मलाया के कान, गले और हाथों में चमकते हीरों के आभूषणों को देखकर गांधीजी की याद और भी गहरी हो जाती है।

हमारे नेताओं को डिस्को डांस करते हुए देखना भी दिलचस्प अनुभव है। हमें उनके डिस्को डांस करने पर कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन हम इतना जरूर चाहेंगे कि डिस्को डांस के साथ-साथ जनता के साथ किये गये चुनावी वादों को भी पूरा करने की तरफ पर्याप्त ध्यान दें।

टूट चुके हैं बंधन

संसद के केंद्रीय कक्ष का एक दूसरा पहलू यह है कि चीज के दामों में बढ़ोतरी होने के कारण कुछ माह पूर्व चीज सैंडविच को मेनू से हटा दिया गया। केटरिंग विभाग के अधिकारियों के अनुसार अधिकांश सांसदों को लगता था कि चीज सैंडविच काफी मंहगा है। कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ व गांधीवादी नेता स्वर्गीय ए. जी. कुलकर्णी ने एक बार टिप्पणी की थी कि सांसदों के रहन-सहन में जमीन-आसमान का अंतर आ गया है।

संसद भवन के मुख्य द्वार पर चमकीली विदेशी कारों की कतार प्रतिदिन लंबी होती जा रही है। अब संसद के गलियारों में

विजय मलाया के निजी विमान की चर्चा थमती नजर नहीं आ रही है। वह मुंबई से दिल्ली आकर संसद की कार्यवाही में भाग लेते हैं और शाम को फिर मुंबई लौट जाते हैं। अब पहले की तरह मंत्रियों-सांसदों को पीने-पिलाने से भी परहेज नहीं रहा। सार्वजनिक रूप से उन्हें अब भी पीने से परहेज करते हुए काफी हद तक देखा जा सकता है, लेकिन हां अब उन्हें पिलाने में वैसा संकोच नहीं रहा। पहले पत्रकारों आदि को मंत्री की उपस्थिति में मदिरा पिलायी नहीं जाती थी, मगर अब ये बंधन लगभग टूट चुके हैं। अब सांसद और मंत्री शराब पार्टी देने में आमतौर पर संकोच नहीं करते।

सौभाग्य से हमारे देश की राजनीति अभी दिल्ली और मुंबई के बीच उलझी नहीं है। यदि मुझसे कहा जाए कि बेस्ट ड्रेस सांसद का चयन करो, तो मैं श्रीमती सोनिया गांधी, शबाना आजमी और उमर अब्दुल्ला का चयन करूंगा। संघ परिवार और विशेष तौर पर विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल से करबद्ध विनती है कि वे मेरे इस निर्णय को हिंदू विरोधी न बताएं।

-251/2 ए,रेलवे ऑफिसर्स कॉलोनी,
पंचकुइयां रोड,नयी दिल्ली-110 001

युद्ध के बारे में

यह नहीं कह सकते कि सभ्यता का विकास होता ही नहीं। अगर यह सच होता तो हर युद्ध में लोगों को मारने के नये-नये तरीके कैसे ईजाद होते। -विल रोजर्स

किसी भी समस्या के हल के लिए लड़ना-भिड़ना हद दर्जे की बेवकूफी है। यह इसी से साबित है कि या तो ऐसा काम छोटे-छोटे बच्चे करते हैं या बड़े-बड़े देश। -डेविड फ्राइडमैन

हमारा आज का दिन बड़ा बढ़िया रहा। हमने आज बड़ी तादाद में लोग मार डाले। -अमेरिकी सार्जेंट श्रुम्फ

अगर किसी को मारना बहुत बढ़िया काम होता, तो उसका प्रशिक्षण देने की जरूरत ही क्यों पड़ती? -जान बोएज

युद्ध के बारे में सिर्फ एक ही बात सच है और वो ये कि इसमें मार तमाम लोग मारे जाते हैं। -शेरिडान

अगर किसी ने एक भी दिन के लिए युद्ध को अपनी आंखों से देखा है, तो वह कभी नहीं चाहेगा कि ऐसा मौका उसकी जिंदगी में दुबारा आए। -नेपालियन बोनापार्ट

ऐसा नहीं हो सकता कि आप युद्ध तो बड़े पहलवानों की तरह लड़ें और शांति कायम करने के वक्त बौद्धिक चूजें बन जाएं। -बासिल ओ कोन्नोर

आप जीत से एक पंक्ति हासिल कर सकते हैं जबकि हार से पूरी किताब। -पाल ब्राउन

हिंदी की सबसे लोकप्रिय तथा मूर्धन्य कथाकार गौरा पंत 'शिवानी' नहीं रहीं। उनका निधन 21 मार्च की सुबह दिल्ली में हुआ। वह 79 वर्ष की थीं। बच्चनजी तथा देवेन्द्र सत्यार्थी के बाद हिंदी का एक और बड़ा स्तंभ ढह गया। एक जमाना था, जब शिवानीजी खूब लिखती थीं और उन्हें इतने ज्यादा पाठकों द्वारा पढ़ा जाता था कि किसी भी लेखक को इससे

शिवानी दीदी कब आएंगी?

■ पद्मा सचदेव

वर्ष 1987-88 की बात है। उत्तर प्रदेश के हिंदी संस्थान ने मुझे पुरस्कृत किया था। मुझे लखनऊ जाना था, जहां शिवानी दीदी रहती थीं। शिवानी दीदी से परिचय तो मुम्बई में डॉ. धर्मवीर भारती के घर में हुआ था, पर अब तो बरसों की मित्रता थी। मैं उन्हें फोन करके सीधी उनके घर चली गयी। दीदी मुझे देखकर इतनी खुश हुईं कि मेरा मन हुआ कि अक्सर यहां आती रहूं। लखनऊ का घर जैसे दीदी की कर्मस्थली था। उनकी रामरति की बेटी किरण उसी घर के नीचे अपने परिवार के साथ रहती थी,मगर हर समय वह और उसकी छोटी बहन दीदी के इशारों को समझती थीं। उन पर चलती थीं। राजमहिषी की तरह रहती थीं दीदी वहां। उनका लेखन भी वहीं होता था।

लखनऊ मेरा घर है

दीदी जब भी दिल्ली आतीं, मैं उनसे कहती, ''यहां बेटियां आपका इतना ध्यान रखती हैं, आप क्यों लखनऊ जा रही हैं?'' वह कहतीं, ''पद्मा

सहज ही ईर्ष्या हो सकती है। वह इस दौर की अकेली रचनाकार थीं जो लोकप्रियता तथा सर्जनात्मकता, दोनों कसौटियों पर पूरी तरह खरी उतरीं। हिंदी में ऐसे बिरले लेखक हुए हैं, जिनके उपन्यास-दर-उपन्यास लगातार चाव से पढ़े गये। उनके कृष्णकली, चौदह फेरे, भैरवी, सुरंगमा, कालिन्दी तथा आकाश जैसे उपन्यास बहुत प्रसिद्ध हुए। उनकी कहानियां तथा संस्मरण भी उतने ही रोचक, उतने ही सर्जनात्मक तथा संवेदनशीलता से परिपूर्ण हैं। हम उनके बारे में इस अंक में एक संस्मरणात्मक लेख प्रकाशित कर रहे हैं। हम शिवानीजी का लिखा एक संस्मरण भी प्रकाशित कर रहे हैं, जो अपनी कथात्मकता में अद्‌भुत है।

मेरा लिखना वहीं होता है और वहीं मेरा घर है।'' सुबह-शाम उस घर में पूजा करतीं, शंख फूंकतीं, विष्णु-सहस्रनाम और कई स्तुतियां और मंत्र पढ़तीं। दीदी मुझे कहने लगीं, ''मेरे यहां एक औरत आती है। तुम्हारे पैर थक गये हैं। तुम्हारी ऐसी मालिश करेगी कि याद रखोगी तुम।'' मैंने कहा -''दीदी, मुझे लखनऊ की साड़ियां लेनी हैं।'' उनकी एक प्रशंसिका लखनऊ में कढ़ाई करनेवाली स्त्रियों की मदद करती थी। वह शहर भर की साड़ियां ले आयी। दीदी ने मुझे इतनी सुंदर हल्दिया रंग की साड़ी दी, जिसे मैं आज भी सेंत-सेंतकर रखती हूं। मैंने दीदी से कहा, ''कितनी मेहनत करती हैं ये औरतें।'' सरला कपूर ही नाम था उसका, जो साड़ियां लिवा लायी थी। आज साड़ियां पड़ी हैं, मगर न दीदी हैं, न सरला कपूर।

उस दिन मृणाल (पाण्डे) के घर में दीदी चिरनिद्रा में सोयी हुई थीं। कैसे-कैसे बेटियों ने फूलों से सजा दिया था दीदी को। माथे में सिंदूर, चंदन। इतनी सुंदर साड़ी, ऊपर से ढंकी-मुंदी दीदी। मृणाल ने कहा, ''मैं दीदी के जन्मदिन के लिए यह साड़ी लायी थी। आज उन्हें पहना दी।'' इस तरह जाने को तैयार हुई थीं दीदी। लखनऊ वाली किरण, उनके मुंह के चारों तरफ गुलाब की लाल पत्तियां सजा रही थी। बहू उनका प्रिय परफ्यूम छिड़क रही थी। मैंने उनकी देह को लकड़ियों पर रखते देखा था, पर मुझे यकीन नहीं आ रहा था कि दीदी अब नहीं हैं।

सपने में वह आयीं

कुछ ही दिन पहले इरा दीदी की छोटी बेटी के घर में थीं दीदी। इरा की सास और दीदी का दोस्ताना था। जिया उनको गौरा-गौरा कहतीं, उनका शब्द-शब्द पढ़ती थीं। वह कुरसी पर स्तब्ध बैठी दीदी को निहार रही

थीं।

परसों रात दीदी मेरे सपने में आयीं। एक कुरसी पर बैठी थीं। थोड़ा अंधेरा था। उनकी गोद में उनका अस्थि-कलश रखा था। उस पर एक लाल फूल था। दीदी नें देखा था मुझे। सुबह मैंने मृणाल को बताया, तो मृणाल ने कहा - "आज मैंने दीदी की तसवीर पर लाल फूल चढ़ाया था। क्या दीदी देवता हो गयीं, मनुष्य नहीं रहीं! उनके जैसा मनुष्य कौन था!" उनके भीतर से उपजी कृष्णकली, सुरंगमा जैसे असंख्य पात्र आज भी पन्नों में से झांक रहे हैं, जो हमेशा झांकते रहेंगे। जिंदगी के हर रंग से प्यार था दीदी को। मैं जब भी उदास होऊं या मौजूदा स्थिति से निकलना चाहूं, तो हमेशा दीदी की किताबें पढ़ती हूं। लफ्जों की ऐसी सुंदर बनावट और कहां है!

चश्मा लगाये बंदरिया

इरा ने बताया था कि जिस दिन भारत सेमीफाइनल जीता, दीदी को ऑक्सीजन लगी थी, पर वह मैच देख रही थीं। बीच में आंखें मुंद जातीं, पर होश में आते ही फिर से मैच देखने लगतीं। मैच देखने से पहले वह टेलीविजन पर फूल रखतीं, हाथ में ताबीज रखतीं। सचिन की पीठ देखतीं, मुंह न देखतीं, कहीं मेरी नजर न लगे। कोई फोन आए, तो झुंझलाती थीं।

पिछले बरस लखनऊ में उनके घर एक बंदरिया आने लगी। दीदी बरामदे में अखबार पढ़ते हुए चाय पी रही होतीं। दीदी एक बार उठकर गयीं, तो आकर उन्होंने देखा कि बंदरिया उनका चश्मा लगाये उनकी कुरसी पर बैठी उलटा अखबार पढ़ रही है। बंदरिया का नाम दीदी ने रामकली रखा था। वह पूजा में भी उनके साथ बैठती, फिर प्रसाद लेकर चली जाती। फिर अचानक वह गायब हो गयी और दीदी ने सोचा -ऐसी मेधावी बंदरिया को कोई मदारी ले गया होगा!

फिर वह एक दिन अपना बच्चा लेकर आयी। दीदी को दिखा गयी।

दीदी जो-जो कहती थीं, चाहती थीं, वैसे ही हुआ। मृत्यु से हफ्ता भर पहले आई.सी.यू. में थीं, तो साथ के बिस्तर पर कानपुर का बीमार था- वह गा रहा था- -

'चलो मन कानपुर के तीरे'

दीदी को ऑक्सीजन लगी थी, पर बोलीं, "मुझे लखनऊ छोड़ते जाना।" जैसा वह चाहती थीं, ब्राह्ममुहूर्त्त में गयीं। उस वक्त मसजिद से अजान, मंदिर से घंटियों और गुरुद्वारे से गुरुवाणी के स्वर गूंज रहे थे। वसंत की मोहक बयार चल रही थी। दीदी अपने भरे-पूरे घर से उठकर चली गयीं। उनकी आंखों के कोनों में आंसू थे। एक दिन पहले ही पोती सारा ने दीदी को अपने हाथों में लगी मेंहदी दिखाते हुए चांदी की बाली दी और कहा था- "दादी जब आप पार्टी में जाओ, तो ये पहन लेना।"

दीदी पार्टी में चली गयी हैं। अब मैं उनकी बेटियों से कब पूछूंगी, "दीदी कब आ रही हैं?"

-बी-242, चित्तरंजन पार्क,
नयी दिल्ली-110019

संस्मरण

मत तोड़ो चटकाय

शिवानी

हर ईद की आगमनी मेरी स्मृतियों का सिंहद्वार चरमराकर खोल देती है। बचपन रामपुर में बीता, जहां मेरे पिता पहले हिंदू होम मिनिस्टर नियुक्त थे। 'मुस्तफा लॉज', की आलमगीर कोठी, ड्योढ़ी पर संगीनधारी गारद, चारों ओर फैली मेहंदी की बाड़ और नीले ऊदे फूलों की खुशबू से महकता बाग – इसी परिवेश में हम खेले-कूदे, बड़े हुए। इसी से शायद आज तक ईद हमारे लिए उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी हमारी होली-दीवाली।

अब, कभी-कभी लगता है कि जमाने की बेरहम करवट ने हमारे त्योहारों की दुनिया ही बदलकर रख दी है। पहले त्योहारों की आगमनी हमें उत्साह से भर देती थी, आज उन्हीं को मनाना हमारी विवशता बन गयी है। जितने में कभी एक तोला सोना आता था, उतने में अब आधा

किलों खोया तुलता है। बालाई पगी सेंवइयां हमारे लिए सपना बन गयी हैं। मेवों से ठंसी-फंसी स्वस्थ गुझिया, आकाश कुसुमवत् बन चली हैं। दीव के खील-बताशे, खांड के दर्शनीय खिलौने, सब-कुछ पकड़ से बाहर - पर न वह स्वाद, न छटा। अब तो खांड के बने हाथी-घोड़े भी आ खंडित ही मिलेंगे, हाथी की सूंड तो घोड़े की टांग। यहां तक अंगूठेभर के गणेश-लक्ष्मी भी पांच रुपये से कम नहीं मिलेंगे।

याद आते हैं वे दिन

खिलौने के साथ-साथ हमारे हृदय भी निश्चित रूप से खंडित हैं। कहीं-न-कहीं आपसी भाईचारे और प्रेम की दीवार सं अविश्वास और प्रवंचना ने हिलायी अवश्य है। देखा जाए तो ह धर्मांधता ने ही स्वयं हमें, हमारा दुश्मन बना दिया है। मैं आज लगभग छप्पन वर्ष के उस युग की साक्षिणी रही हूं , जब इन इनसान था, न हिंदू, न मुसलमान। हर हिंदू त्योहार में, देशभर के प लिखे और अपढ़ मुसलमान समान उत्साह से भाग लेते थे और हर उसी उत्साह से मुसलमानों के त्योहार में भाग लेता था। हर हिंदू जबान सेंवइयों की मिठास रहती थी और हर मुसलमान गुझियों का आनंद उठाता आज जब वे दिन याद आते हैं तो कलेजे में हूक-सी उठती है। ऐसा नहीं कि तब हिंदू-मुसलिम दंगे नहीं होते थे, मैंने बनारस के वे भयानक दं देखे हैं, जब 'अल्लाह-हो-अकबर' और 'हर-हर महादेव' के रोम-रोम देनेवाले नारों से बनारस की अली गलियां थर्रा उठती थीं, पर तब वह च चालाक अंगरेजों की भड़कायी आग थी, आज हमारे अपने राजनीतिज्ञ ही घरों को फूंक तमाशा देख रहे हैं।

मैं तब, ग्यारह या बारह साल की रही हूंगी, फिर भी ईद की वे कस्तूरी रामपुरी शामें, मुझे दो के पहाड़े-सी याद हैं। तड़के ही हम नहा-धो तैयार हो जाते कि अब हमारे पिता के सेक्रेटरी अलवी साहब आयें और ईद का मेला दिखाने ले चलें। साथ में रहते हमारे ट्यूटर स्मिथ साहब के बेटे पीटर और माइकेल। ठेठ रामपुरी लिबास, कुरता-पाजामा, सिर पर न टोपी, टोपी से निकले सुनहले बाल और नीली आंखों में अदम्य उत्साह, च में बैठेंगे। चीनी के बने गिलास, लालटेन, साइकिल सब इकन्नी में। रंगीन गरी में मिले किशमिश, कटे छुहारें [illegible] पुड़िया दो पैसों में। ईद का तोहफा। न कर्फ्यू का भय, न [illegible] का आतंक। शाही सवारी भी क्या शान से निकलती थी! पर न साथ में होते थे मनहूस काले कमांडो, न ही

ल्ले। नवाब साहब बेखटके ताज पहने, मुसकराते चले जा रहे हैं, रेजगारी टायी जा रही है। आज के ये राजा, बिना कमांडो या ब्लैककैट के दस्ते के, क कदम चलकर तो देख लें! भले ही बुलेट प्रूफ कार के शीशे अभेद्य हों या लेट प्रूफ जैकेट के जिरहबख्तर पहने हों, रिमोट कंट्रोल पूरे दल-बल को ही पल भर में उड़ाकर रख सकता है और जब स्वयं राजा ही ऐसी असुरक्षा से तंकित हो तो वह प्रजा की क्या खाक सुरक्षा करेगा? पहले तो गुरुजनों को खे गये पत्र में एक पंक्ति अवश्य लिखी जाती थी-'श्रीमन मुख्य अपने गात जतन को जिएगा तब हमारी पालना होगी।' अब, ऐसी मूर्खता कोई नहीं रता। यह पंक्ति ही पत्रों से उड़ गयी है। हम ज्ञान गये हैं कि अपने अभागे त का जतन हमें स्वयं करना है।

कहां गयीं वे सुगंधें

द के एक दिन पहले ही हमारा नया जोड़ा सिलकर मोहम्मद अली पेशकार हब के यहां से लाकर हमारे सिरहाने रख दिया जाता। जोड़ा भी ऐसा कि हर पर, हर तुरपन और बखिया में नयी खुशनुमा ताजगी रहती। बड़े-बड़े यचोंवाली शलवारें और नारंगी रंग का महीन तंजेबी कुरता, जिसकी बांहों में स और हिना की चुटकियों की चुन्नटें रहतीं, यह सब ठेठ रामपुरी कुरतों का पना अंदाज था, शायद अब भी हो। राजारानी मलमल का, कड़ी कलफ में ीन चुन्नटों में बंधा इंद्रधनुषी दुपट्टा, जिस पर अबरकी चमक बीच-बीच में रों-सी झिलमिलाती, नोंकदार सलमा-सितारे जड़ी जूतियां ऐसी कसतीं कि लते तो लगता अंगुलियां ऐंठी जा रही हैं पर मजाल जो हमारे मुंह से उफ तो कल जाए! जितनी बार नखूनी गोटा-किरन लगा दुपट्टा सम्हालते, उतनी ही र हथेली मदमस्त खुशबू से महक उठती। खुशबू भी ऐसी कि आज के सीसी क्रिस्टीन डियारे के सेंट पानी भरें। आज हम विदेशी-सुगंध डोर से ध हो, सैकड़ों रुपया बहा, एक छोटी-सी प्रख्यात फ्रेंच परफ्यूम की शीशी थियाने टूटे पड़ते हैं, किंतु अपने देश में जो दुर्लभ इत्रों का अशेष कोष है सका हमें ज्ञान ही नहीं है-वही पंक्तियां सटीक लगने लगती हैं कि

'अलि आवत सौ कोस से लेन सुमन की वास
दादुर रस पावत नहीं रहैं सुमन के पास'

शमा तुलंबर, हिना, खस, अतर,गुलाब कहां गयीं वे सुगंधें?

मनभावन गीतों के रिकॉर्ड

ईद के दिन मनिहारिन सुबह ही आकर चूड़ियां पहना जाती, हाथभर रंगीन काले लच्छे, एक रुपये सैकड़ा,, बीच-बीच में

सुनहले लच्छे-चूड़ियों का उस युग में विशेष महत्त्व था, जैसे ही लुभाव वैसी ही कंगूरेदार बनावट-मनिहार है तो कंधे पर चूड़ियों की माला लट मनिहारिन है तो सिर पर चूड़ियों भरी टोकरी। नीचे धर, कपड़ा हटाती तो हृदय धड़कने लगते, कैसे-कैसे रंग और कैसी-कैसी छटा? वही अंदाज दिनों की लोकप्रिय रिकार्डों में उतर आता, उन दिनों सर्वाधिक लो रिकॉर्ड था- *'अब के बालम फिर पिन्हा दे, आसमानी चूड़ियां।'*

न आज के से लोकप्रिय गीतों की बेहूदी भाषा, न विचित्र धुनें। फिर, होती ईद-मिलन की परिक्रमा। सबसे पहले ज़ाते चीफ साहब की 'रोजविले'। चीफ साहब, सर अब्दुल समर खान, रामपुर नवाब के स और हमारे पिता के अभिन्न मित्र भी। जैसी ही ऊंची कद-काठी, वै रोबदार चेहरा। चांदी की कटोरियों में सेंवइयां आतीं, हमारा माथा चूम हमें थमाते, फिर न जाने कितने घरों की परिक्रमा होती, डॉ. वहीदी, डॉ. कु माजिद साहब, मुहम्मद अली पेशकार साहब, रजा भाई और न जाने कि और-

पेशकार साहब के संत के से सौम्य चेहरे की एक-एक रेखा मुझे याद होंठों से लगी स्नेहसिक्त हंसी, करीने से संवरी दाढ़ी, काली शेरवानी और टोपी। उनकी बेगम जिन्हें हम खाला कहते थे, साक्षात् अन्नपूर्णा थीं। बड़े से खिलातीं, चौबीसों घंटे उनकी गोरी गदबदी अंगुलियों में तसबीह घ रहती। हमारे घर में कोई भी बीमार पड़ता तो फूंक डलवाने, उन्हें ही बु जाता।

हमारी मां कहतीं-'साक्षात् देवी का स्पर्श है इनकी अंगुलियों में।'

हिंदुओं की - सी टोपी

एक बार मुझे तेज बुखार हो आया, आंय-बांय बकती बिस्तर से भागने थी। खाला आयीं और जैसे ही उन्होंने नरम हथेली मेरे माथे पर धरी, सु शांत हो कर सो गयी। उनके शरीर से आती वह मदमस्त खुशबू, रेशमी की सरसराहट, बुर्के की जालीदार चिलमन से स्नेह विगलित दृष्टि से देखतीं वे सुरमाभरी आंखें, आज तक न जाने मेरी कितनी कहानियों नायिकाओं को संवार चुकी हैं। हम तब उस बिरादरी में ऐसे घुलमिल ग कि कभी-कभी भूल जाते कि हम हिंदू हैं। एक बार हम अपने पुराने ड्रा शफीकुल बारी को अम्मा की बधाई देने उनके घर आये। उनका बेटा हॉकी में स्वर्ण पदक लेकर लौटा था। साथ में मेरा छोटा भाई राजा भी उस दिन उसका जन्मदिन था, इसी से टोपी लगाये था। उसे देखते ही बा

अम्मां ने टोक दिया- हाथ अल्ला, आज हिंदुओं की-सी टोपी लगाकर आये हो भैया।' मुझे हंसी आ गयी थी-'क्यों अम्मां भूल गयीं, हम तो हिंदू ही हैं।' खिसियाकर उन्होंने अपना माथा ठोककर कहा, 'हाय अल्ला, मैं तो भूल ही गयी थी विन्नो।'

किताबों वाले दाना मियां

होली के दिन एक और चेहरा बरबस याद हो आया है, 'दाना मियां'- नैनीताल की एक खास शख्सियत, सफेद दाढ़ी, पान से रंगी बत्तीसी, सिर पर दुपलिया टोपी, पीछे-पीछे पहाड़ी कुली के सिर पर धरी किताबों की गठरी। नित्य फेरी लगाते, कभी शेर का डांडा, कभी अंयार पाटा और कभी तल्लीताल बस स्टैंड के पास ही अपनी फटी चादर पर, किताबें सजाकर बैठ जाते। एक किताब पढ़ाने का रेट कुल एक चवन्नी, पुरानी किताबें पढ़कर वापस करनी होतीं।

एक दिन, हमने टोक दिया-'वाह दाना मियां, आपका बिजनेस अच्छा है, चित भी मेरी, पट भी मेरी, अंटा मेरे बाप का। किताब भी मिल गयी, पैसे भी।'

चट से बोले, 'माफ कीजिए हुजूर, आप पढ़े-लिखों से तो हम अनपढ़ भले। अच्छा-इत्ती सी बात आपकी समझ में न आयी। आप लोग सलीमे जाती हैं। देखा और चली आयीं, क्या सलीमे को यह कहकर घर लाती हैं कि हमने तो पैसे दिये हैं? देखा और दिमाग के कोठे में भर दिया। ऐसा ही किताबों का इल्म है। पढ़ा और दिमाग के कोठे में भर लिया।'

उनकी गठरी में फ्लौबेयर, मॉम, गॉल्सवर्दी से लेकर किस्सा हातिमताई और चहारदरवेश सब कुछ रहता, सचमुच ही उन्हीं की सीख और असंख्य चवन्नियों ने, न केवल हमारे दिमाग का कोठा ठसाठस भर दिया, हमारे बच्चों का भी कोठा भर दिया।

होली की सुबह दूर से ही अपने पठानी हाथ हिलाते, वह हांक लगाते-'होली की गुझिया मुबारक, अबीरगुलाल मुबारक।'

प्यासा और मीठा कुआं

होली की सुबह दूर से ही अपने पठानी हाथ हिलाते, वह हांक लगाते-'होली की गुझिया मुबारक, अबीर-गुलाल मुबारक।' उनकी मेहंदी से रंगी दाढ़ी पर अबीर-गुलाल के छींटे रहते। गुझिया खा हम पर दुआएं बरसाते वह चले जाते-'आपको तेज बुखार है, फिर भी आप इस चढ़ाई को पार कर आ ही गये', हमने कहा तो वे हंसे-'हुजूर, प्यासा मीठे चश्मे के पास हीं जाता है।' आज सोचती हूं क्या

उन मीठे चश्मों का उत्स ही सूख गया है? एक और घटना याद हो आती है, वह भी होली की ही। साहिबज़ादा हामिद अली साहब ने हमें गोद में खिलाया था, इसी से परिचय बहुत पुराना था। अंत तक उन्होंने वह रिश्ता निभाया। भाईदूज, रक्षाबंधन हो या होली-दीवाली, वे हमारे प्रथम अतिथि रहते। कोई दस-बारह साल पहले की बात है। प्रातः होली का हुड़दंग आरंभ भी नहीं हुआ था कि उन्होंने घंटी बजायी । बेहद गुस्से में थे, 'पता नहीं तुम हिंदुओं का यह कैसा कमबख्त त्योहार है। देखो हमारी बुर्राक तमनियों की क्या गत बना दी है। इत्ती सुबह घर से निकले कि तुम्हें होली की मुबारकबाद दे आएं पर न जाने किस सिरफिरे को यह मजाक सूझा। लंगूर बना कर रख दिया-लाहौल बिला कूवत।'

जाओ माफ किया

एक तो विराट भीमकाय शरीर, उस पर लाल बैंजनी रंग की अजब बहार। मुझे हंसी आ गयी तो वे फिर बिफर उठे- 'हंसती है। शरम नहीं आती?'

'पर मैंने रंग नहीं डाला हामिद भाई।'

'पर समझा नहीं सकती अपनी बिरादरी को?'

बड़ी मुश्किल से उन्हें मीठी गुझिया खिला, उनका गुस्सा शांत किया- 'मैं लखनऊ की पूरी हिंदू बिरादरी की ओर से आपसे माफी मांगती हूं हामिद भाई-माफ कर दीजिए।'

'ठीक है, ठीक है, जाओ माफ किया।'

आज बेरहम जमाने ने एक फांस हमारे कलेजे में छोड़ दी है, जो रह-रहकर सालती है। त्योहार वही हैं, हम वही हैं, वे ही मंदिर हैं, वे ही मसजिद, किंतु हमारे दिल बदल गये हैं।

क्या ईद और होली के वे सहज-सुखद दिन फिर कभी लौटेंगे? क्या हममें वह औदार्य, वह सहिष्णुता रह गयी है जो हम कह सकें कि 'ठीक है ठीक है जाओ माफ किया।' आज, दूध का जला हर हिंदू, हर मुसलमान ठंडी छाछ भी फूंक-फूंककर पी रहा है।

ईद की सेंवइयों की वह मिठास, मेवे भरी गुझियों का वह अमृततुल्य स्वाद, फिर हमें पुलकित कर पाएगा? हो सकता है, स्थिति धीरे-धीरे सुधरे, इनसान एक बार फिर इनसान बनने की चेष्टा करे, किंतु रहीम की सीख भयभीत-आशंकित चित्त को विचलित अवश्य करती है-

'रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय
टूटे तो फिर ना जुड़े, जुड़े गांठ पड़ जाय।'

लोकतंत्र के मायने

पुरुषोत्तम अग्रवाल

'लोकतंत्र' का सीधा-सा अर्थ है - लोगों का अपना तंत्र। उनकी अपनी ताकत। अंगरेजी शब्द 'डेमोक्रेसी' के आधार हैं- दो ग्रीक शब्द-'डेमोस' अर्थात जनता और 'क्रातोस' अर्थात-शक्ति। स्वाभाविक रूप से डेमोक्रेसी या 'लोकतंत्र' में राज्यसत्ता अपनी शक्ति या वैधता जनता से ही प्राप्त करने का दावा करती है। इसके विपरीत राजतंत्र में राजा की सत्ता अपनी संप्रभुता का स्रोत दैवीय इच्छा या राजा के व्यक्तिगत पराक्रम को बताती है। इस प्रकार 'लोकतंत्र' की परिभाषा का पहला तत्व है- राज्यसत्ता की वैधता और संप्रभुता का आधार जनता की इच्छा में होना, लेकिन यह पहला ही तत्व है, अकेला नहीं।

लोकतंत्र की वास्तविकता का आधार

जनता की इच्छा का पता कैसे चले? इस सवाल को हल करने के सिलसिले में ही स्वतंत्र, निष्पक्ष निर्वाचन, जनमत संग्रह, जनमत की संचार माध्यमों द्वारा स्वतंत्र अभिव्यक्ति जैसी मांगें विकसित हुईं। जिन्हें लोकतंत्र की वास्तविकता का आधार माना जाता है वे सवाल हैं : जनता में कौन शामिल है? इस सवाल के सिलसिले में याद रखना चाहिए कि सभी वयस्क नागरिकों को मतदान का अधिकार संभव कराने में उन्नीसवीं-बीसवीं सदी के मजदूर आंदोलनों की निर्णायक भूमिका रही है।

लोकतांत्रिक अधिकार

लोगों की अपनी ताकत का विचार स्वाभाविक रूप से बड़ा ही आकर्षक विचार है; इस आकर्षण का दुरुपयोग भी हुआ है। हिटलर के जरमनी में मताधिकार केवल 'आर्यराष्ट्र' तक सीमित कर दिया गया था और उस धरातल पर भी लोगों को उसका उपयोग करने का अवसर नहीं मिला था। सदियों से जरमनी में रहते आये यहूदी 'आर्यराष्ट्र' का अंग नहीं माने गये; हिटलर-पंथियों का तर्क था कि यहूदी जरमन राष्ट्र की 'मुख्यधारा' का अंग नहीं हैं, इसलिए उन्हें नागरिकों के लोकतांत्रिक अधिकार देने का सवाल ही नहीं।

इस तरह के विचारों की भयानक परिपाटियों के कारण ही, वास्तविक

लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं प्रयत्न करती हैं कि सांस्कृतिक, धार्मिक, अल्पसंख्यक अपनी अल्पसंख्या के बावजूद सुरक्षा और सम्मान के साथ लोकतांत्रिक प्रक्रिया में शामिल हो सकें। आदर्श कल्पना यह है कि लोकतंत्र में हर नागरिक अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता के बावजूद बराबरी की हिस्सेदारी कर सके। यह बात और है कि व्यवहार में कई बार सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता के नाम पर नागरिकता की अवधारणा के विकास में रोड़े अटकाये जाते हैं। कभी मुख्यधारा का नाम लेकर; तो कभी सामाजिक-सांस्कृतिक अस्मिता की विशेषताओं को स्थायी बनाये रखने की राजनीति करके। दोनों ही स्थितियां लोकतांत्रिक व्यवस्था का उपयोग करके अलोकतांत्रिक समाज और मानस का निर्माण करने में सहायक होती हैं।

आदर्श का व्यावहारिक रूप

लोकतंत्र के आदर्श को व्यावहारिक रूप देने में लोकतांत्रिक संस्थाओं और व्यवहारों की भूमिका निर्णायक है। यों तो आजकल हर राज्य-व्यवस्था स्वयं को किसी न किसी तरह का लोकतंत्र ही कहती है। यह अपने आप में लोकशक्ति के प्रति आकर्षण का सबसे बड़ा प्रमाण है। लेकिन लोग सचमुच अपनी शक्तिसंपन्नता महसूस कर सकें - लोकतांत्रिक विचार का सबसे बड़ा लक्ष्य यही है। इसी कारण शक्ति-विभाजन का विचार लोकतांत्रिक संस्थाओं का आधार माना जाता है। विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका के बीच शक्तियों का बंटवारा और संतुलन होना चाहिए -इस बात को लोकतंत्र के मूल प्रतिमान के रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय जॉन लॉक(1632-1704) और चार्ल्स लुई मांटेस्क्यू(1689-1755) को जाता है।

लोकतांत्रिक मानस का अभाव

आज यह निर्विवाद है कि बिना मजबूत लोकतांत्रिक संस्थाओं (न्याय पालिका, निर्वाचन आयोग, स्वतंत्र मीडिया-आदि) के लिए लोकतंत्र दिखावा बनकर रह जाता है। इसी के साथ यह भी महत्त्वपूर्ण है कि सहिष्णुता, संवाद, सामाजिक-आर्थिक न्याय, कानून के सामने सभी की समानता जैसे संस्कारों में व्यक्त होनेवाले लोकतांत्रिक मानस के अभाव में भी लोकतंत्र दिखावा मात्र रह जाता है। इसी कारण इन संस्कारों को ध्वस्त करनेवाले आंदोलन अलोकतांत्रिक माने जाते हैं -भले ही वे किसी भावनात्मक सवाल पर जनता का समर्थन हासिल कर लें। असल में तो, ऐसे आंदोलन लोकतंत्र को भीड़तंत्र में बदलने का काम करते हैं। लोकतंत्र लोक की विवेकसंपन्न शक्ति का तंत्र बने, भीड़ की मनमानी का नहीं -यह लोकतांत्रिक संविधान का लक्ष्य भी होता है -और लोकतंत्र का मर्म पहचाननेवाले लोकतांत्रिक नागरिक का कर्त्तव्य भी।

- 168 ए, उत्तराखंड,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नयी दिल्ली-110067

कथा

नाचनेवाली कहानी

■ स्वयं प्रकाश

हांफते-हड़बड़ाते युवा खोजी पत्रकार मित्र ने कमरे में प्रवेश किया। बोला-बहुत शानदार स्कूप मारकर लाया हूं। एक कप गरम-गरम कॉफी मिल जाये, तो समाचार फोड़ने का मजा आ जाये। पत्नी चुपचाप उठकर भीतर गयीं और चार गिलास पानी ले आयीं। अब वह गटागट दो गिलास पानी पियेगा, तीसरे को जाम की तरह हाथ में पकड़कर बैठ जाएगा और अपना समाचार फोड़ेगा। पत्नी इस बीच कॉफी बना लाएगी। लेकिन आज उसने ऐसा नहीं किया। यानी आधा किया, आधा नहीं

चित्रांकन : भूपेन मंडल

किया। पानी पी लिया, जाम उठा लिया पर किस्सा शुरू नहीं किया। चुपचाप बैठा परपीड़न सुख के साथ मेरी उत्सुकता का मजा लेता रहा।

आखिर जब कॉफी आ गयी तो उसका किस्सा शुरू हुआ। किस्सा कुछ यों था- जैसलमेर और बाड़मेर के बीच एक कस्बा है जिसका नाम है 'नाचना'। पंद्रह-बीस हजार की आबादी है। वहां से कोई बस आती है, तो लोग कहते हैं 'नाचनेवाली बस आ गयी' या 'नाचनेवाली सवारियां उतर गयीं' वगैरह। बोलचाल में ऐसा ही चलता है। इमर्जेंसी के दिन थे। एक दिन दिल्ली से गुप्तचर विभाग का एक अधिकारी जोधपुर से होता हुआ जैसलमेर पहुंचा। रात हो चुकी थी। वह सीधा थाने पहुंच गया। थाने के मुख्य द्वार पर खड़े सिपाही से उसने पूछा-'थानेदार साहब हैं?'

सिपाही ने जवाब दिया-'थानेदार साहब तो नाचने गये हैं।'

चतुर गुप्तचर अधिकारी को मालूम था कि इस तरह अम्मल घालने का रिवाज है। कोई अजब नहीं जो सिपाही थोड़ा पिनक में हो। उसने पूछा-'भीतर कौन है?' जवाब मिला-'मुंशीजी हैं।'

इतना काफी था। गुप्तचर अधिकारी भीतर गया और मुंशीजी को अपना परिचय दिया। मुंशी ने अपने ही थाने में अपनी ही कुरसी से खड़े होकर एक तरह से उसे 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया और उससे बिराजने को कहा। आपातकाल है। क्या पता। कोई भरोसा नहीं। भेरूजी रक्षा करें। कहां बापड़ा जैसलमेर-देश की पिछाड़ीतुल्य.... और कहां ठेठ दिल्ली! और थाने में इस समय दुर्योग से इंचार्ज कौन? तो मुंशीजी।

गुप्तचर अधिकारी ने पूछा-'डिप्टी साहब कौन हैं? राठौड़?'

-'होकम।'

-'कहां हैं?'

-'डिप्टी साहब तो होकम नाचने पधारे हैं।'

गुप्तचर अधिकारी की त्यौरियां चढ़ीं। यहां तक अफीम का असर? सो भी ऑन ड्यूटी। उसने पूछा-'और एसपी साहब?'

-'होकम! एसपी साहब भी नाचने पधारे हैं।'

-'कहां गये हैं नाचने?' गुप्तचर अधिकारी ने डांटकर पूछा।

-'होकम नाचने।'

अब माथा मारना बेकार था। खीझा हुआ गुप्तचर अधिकारी चुपचाप उठकर बाहर आ गया और सर्किट हाउस की तरफ चल पड़ा। रास्ते में ठंडी हवा लगी, तो भेजा थोड़ा ठिकाने आया। सोचा जैसलमेर पर्यटन स्थल है। देश-विदेश के पर्यटक आते हैं। इधर-उधर उनके मनोरंजन के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। दूसरे क्या, खुद सरकार करती है। उसका टूरिज्म डिपार्टमेंट और करता क्या है? और वह जानता है कि इन कार्यक्रमों में शराब भी चलती है और नाच-गाना भी। आसपास के लोक कलाकारों को बुलवा लिया जाता है।

वे विदेशी गोरों के मनोरंजन के लिए नाचते-गाते हैं। नहीं, उनके मनोरंजन के लिए नहीं, अपनी आजीविका के लिए। तो इसमें हर्ज ही क्या है? और वह जानता है ऐसी नाच-गाना पार्टियों में ऐसे उन्माद का वातावरण पैदा कर दिया जाता है कि विदेशी सैलानी भी उठ-उठकर नाचने लगें और उनकी देखादेखी देसी सैलानी भी। धींगामस्ती ही तो करनी है। उसके लिए इंडिया से बेहतर जगह कौन सी होगी?

...तो होगी कोई पार्टी-शार्टी दस-बीस किलोमीटर दूर कहीं धोरों में या किसी रिसॉर्ट या हवेली या किसी खंडहर महलनुमा होटल में। और किसी लाटसाहब का कोई मेहमान आया होगा तो एसपी, डीएसपी भी चले गये होंगे। लेकिन दिस इज इंप्रॉपर। कल इसकी पूरी तफतीश करनी पड़ेगी।

सर्किट हाउस में आया और खा-पीकर सो गया। नींद तो नहीं आयी पर शरीर को आराम जरूर मिल गया। सितम्बर का महीना था। रेगिस्तान की रातें तो गरमियों में भी काफी ठंडी हो जाती हैं। सुबह गरम पानी से नहाएगा।

सुबह गरम पानी से नहाकर थाने पहुंचा, तो मामला थोड़ा चकाचक लगा। हुआ, दिल्लीवाले अफसर के आने का कुछ असर तो हुआ। इस बार सिपाही से कुछ पूछताछ नहीं की। सीधा भीतर घुस गया। लेकिन थानेदार का कमरा खाली पड़ा हुआ था। बाहर दो मुजरिम किस्म के आदमी जमीन पर उकडूं बैठे बीड़ियां पी रहे थे और बड़े लाड़ से एक-दूसरे को गंदी-गंदी गालियां दे रहे थे। उसे देखकर भी चुप नहीं हुए।

20 जनवरी, 1947 को इंदौर में जन्म। एम.ए., पीएच. डी., डिप्लोमा मैकेनिकल इंजीनियरिंग। मात्रा और भार, सूरज कब निकलेगा (राजस्थान साहित्य अकादमी से पुरस्कृत), आसमां कैसे- कैसे, अगली किताब, आएंगे अच्छे दिन भी (कहानी-संग्रह), फीनिक्स- (नाटक), बीच में विनय (उपन्यास) तथा बच्चों के लिए दो किताबें।

फिर वही मुंशी। हालांकि वरदी में। पर इस बार उसने 'गार्ड ऑफ ऑनर' नहीं दिया। बिराजने को भी नहीं कहा। सिर्फ सामने पड़ी कुरसी की तरफ इशारा कर दिया।

-'थानेदार साहब आये नहीं अभी तक?' गुप्तचर ने पूछा।

-'आज नहीं आएंगे होकम।'

-'क्यों?'

-'वो नाचने गये हैं।'

-'और डिप्टी साहब?'

-'वो भी नाचने गये हैं।'

-'और एसपी साहब?'

-'होकम, एसपी साहब भी नाचने गये हैं।'

यह तो हद थी। रात तो चलो रात थी, पर दिन में भी अफीम की पिनक? समझ क्या रखा है इन लोगों ने? वहां पक्का इरादा, कड़ा अनुशासन वगैरह पर इतना जोर दिया जा रहा है और यहां यह हाल है? मैडम को पता चल गया तो एक-एक को सड़ा देंगी। उसकी एक चार लाइन की रिपोर्ट काफी है। 'सारा थाना अफीम के नशे में धुत्त पाया गया।' बशर्ते इसे मैडम तक पहुंचने दिया जाए। हो सकता है तब उसकी पदोन्नति हो जाए। या हो सकता है उसे लताड़ पड़े और पदावनत कर दिया जाए। कुछ भी हो सकता है। कुछ कहा नहीं जा सकता। बेहतर है कोई भी रिपोर्ट सबमिट करने से पहले बॉस की राय ले ली जाए। लेकिन वह क्या कम घाघ है? दोष मिलना होगा, तो उस पर डाल देगा और श्रेय मिलना होगा, तो खुद हड़प लेगा।

पर पहले पूरी बात तो पता की जाए। यह नाचने-वाचने का चक्कर क्या है जो कल रात से ही चल रहा है? कहीं किसी अति उत्साही आईजी ने कोई फिटनेस कैंप का नया प्रयोग तो यहां नहीं चला रखा है? तोंद-जिसकी कोई तुक नहीं-पुलिस में भी होती तो है ही-और खूब होती है। गुप्तचर अधिकारी को शर्म और पछतावे का अनुभव हुआ। एक गुप्तचर अधिकारी होने के बावजूद वह कितना कम जानता है। काश! आने से पहले कुछ होमवर्क करके आता।

पर क्या करें। माहौल ऐसा है कि कोई किसी को कुछ बताता ही नहीं। गोपनीयता के नाम पर अच्छी गपड़चौथ चला रखी है। और दूसरा कोई पूछे तो भी एक बात है, गुप्तचर अधिकारी पूछे, तो उलटे हंसी उड़े, 'तुम सचमुच नहीं जानते? नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है। मजाक कर रहे हो न?'

-'वायरलेस पर मेरी बात कराओ एसपी साहब से।' गुप्तचर अधिकारी ने कहा।

-'होकम सेट तो ताले में बंद है।'

-'क्या?, क्यों?'

-'साब ऑपरेटर का स्मगलर्स से कोई कनेक्शन था। वो सस्पेंड हो गया। बाकी किसी को चलाना आता नहीं।'

हैरान और भभकते गुप्तचर अधिकारी ने मुंशी के आगे पड़ा फोन उठाया और पूछा-'एसपी साहब के बंगले का क्या नंबर है?'

टेलीफोन में डायल नहीं था। एक्सचेंज से नंबर मांगना पड़ता था। ऐसा अंधा टेलीफोन गुप्तचर अधिकारी ने बहुत दिन बाद देखा था। वह टेलीफोन के चोंगे को काफी देर कान से सटाये बैठा रहा, लेकिन दूसरे छोर से किसी ने 'नंप्ली?' या 'नंबर प्लीज' या ऐसा कुछ भी नहीं पूछा।

पांच मिनिट बाद मुंशी बोला-'दो रोज से सारे टेलीफोन डैड हैं होकम। पल्ले रोज जांख आयी थी, जिससे कुछ गरबड़ हो गयी।'

–'क्या आयी थी?'

–'आंधी।'

गुप्तचर अधिकारी ने फोन जोर से टका, उठ खड़ा हुआ और थाने से बाहर ा गया और पूछता-पूछता एसपी के बंगले र पहुंच गया। उसे यकीन ही नहीं हो रहा ा कि किसी जिला मुख्यालय का सदर ाना दिन-दहाड़े भी अफीम की पिनक में ाफिल हो सकता है, वायरलैस सैट ताले में द हो सकता है, टेलीफोन डैड पड़े हो कते हैं और एसपी, डीएसपी नाच-गाने ी महफिलों में रात भर पड़े हो सकते हैं। ो भी इमर्जेंसी के दौरान। ये तो द्रीय सत्ता को एक तरह से ंगूठा दिखाना ही हो गया।

पता वही चला जो चलना ा। 'एसपी साहब नहीं हैं। नाचने ये हैं।' 'कहां?' 'नाचने।' 'हां, किन कहां?' 'नाचने।' 'हां, हां, र किस जगह?' 'बताया तो सही नाचने।' कब तक लौटेंगे?' 'पता नहीं। शायद शाम क आ जाएं।'

यह हद थी। मामला संगीन था। यह ीमावर्ती क्षेत्र है। कहीं पड़ोसी देश ने सपी का अपहरण तो नहीं कर लिया है? ोटे पैमाने पर पहले भी ऐसी वारदातें हो ुकी हैं। फौरन दिल्ली खबर करना जरूरी । हो सकता है वह किसी बहुत बड़े ंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र के पर्दाफाश का निमित्त न जाए। अचानक ही। उसे चौकन्ना रहना ोगा और फुर्ती से काम करना पड़ेगा।

गुप्तचर अधिकारी स्वयं को ऐसे अभूतपूर्व और ऐतिहासिक रहस्योद्घाटन के मुहाने पर पाकर इतना रोमांचित हो गया कि बजाय ठीक से आगे की योजना बनाने के पुलिस पदक और पद्मश्री और मरणोपरांत अशोक चक्र की बात सोचने लगा। बल्कि उसकी आंखों के आगे वह दृश्य साफ-साफ दिखायी देने लगा जिसमें उसकी जवान विधवा महामहिम राष्ट्रपति महोदय से अशोक चक्र ले रही है। वह यह तक बता सकता था कि अशोक चक्र लेते समय उसकी जवान विधवा ने किस रंग का शॉल ओढ़ रखा था या है या होगा।

उलझन में पड़ा गुप्तचर अधिकारी जाना चाहता था कलेक्टर के कार्यालय या निवास, पर पहुंच गया टेलीफोन एक्सचेंज। सबसे पहले दिल्ली खबर करना जरूरी है। उसने रौब मारने की बजाय आजिजी के साथ अपना परिचय दिया, आई कार्ड दिखाया और कहा कि उसे फौरन दिल्ली बात करनी है। लेकिन जोधपुर की दोनों लाइनें खराब थीं और बगैर जोधपुर हुए आवाज दिल्ली नहीं जा सकती थी। उसने कहा-यह देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए बेहद जरूरी है।

ऑपरेटर भला आदमी था। वह हंसा नहीं। उसने सुपरवाइजर को घर से बुलवा लिया। अपने पैसों से गुप्तचर अधिकारी को पास के होटल से भेड़ के दूध की चाय मंगवाकर पिलवायी और उससे कोई सवाल

नहीं पूछा। इससे ज्यादा सम्मान क्या होगा?

फिर सुपरवाइजर आ गया। उसने आर्मी एक्सचेंज से अनुरोध करके पोखरन बात की, पोखरन के आरएसए से कहकर लाइन पर जोधपुर लिया, जोधपुर से रिक्वेस्ट की कि पांच मिनिट के लिए दिल्ली लगा दें, इमर्जेंसी है, यानी वो वाली नहीं जो कई महीनों से है; यह एक और है और अभी आयी है। किसी तरह दिल्ली की लाइन व नंबर मिला। गुप्तचर अधिकारी ने बात करने से पहले सबको बाहर निकालकर कमरे का द्रवाजा बंद किया और दिल्ली दफ्तर को वह गुप्त सूचना दी जिसे जैसलमेर से दिल्ली के बीच लोग सुन रहे थे।

अब कलेक्टर।

तो पता चला वह भी नाचने गया है।

किस्सा कोताह शाम तक गुप्तचर अधिकारी सारे शहर में जगह-जगह भटकता रहा और सिवा इसके उसे कुछ पता नहीं चल पाया कि कलेक्टर से लेकर थानेदार तक रात से ही कहीं नाचने गये हैं और क्यों? उसकी इच्छा हो रही थी। अपने बाल नोच डाले। सिर के। उसे लगा अब उसे जल्दी से जल्दी दिल्ली पहुंचना चाहिए। जैसलमेर से कहीं भी जाने के लिए उन दिनों दिन में सिर्फ एक रेलगाड़ी हुआ करती थी। बसें भी थीं, पर वे बहुत समय लेती थीं और बस-सेवा नियमित भी नहीं थी। आंधी आती तो रेत के टीले सड़क पर आ जाते थे और सड़क यातायात कई के लिए स्थगित हो जाता था, जो बि समय भी था और रेल का समय हो रहा लिहाजा पराजित-सा गुप्तचर अधि रेलवे स्टेशन पहुंच गया।

रेलवे स्टेशन पर रेल तो थी, मुसाफिर इक्का-दुक्का ही थे। प्ले सूना पड़ा था। यह भारत सरकार हिम्मत थी कि एक भी नहीं बिकने पर भी रेल जरूर थी। गार्ड यह भी कह सकता था कि रुक आधा घंटा और देख ले कुछ सवारियां और आ ज चलें।

चाय की एकमात्र पर धोती-कोट पहने एक अधेड़ गंजा आवाज में चायवाले के साथ राजनी तबसरा कर रहा था। हो सकता है प्ले खाली और सुनसान होने की वज उसकी आवाज गुप्तचर अधिकारी को लगी हो, पर उसकी ऊंची आवाज से बड़ा सुकून मिला। पिछले कई मही वह हर जगह सिर्फ फुसफुसाहटें सुन था। अंततः वह जैसलमेर आ आभारी हुआ, जहां उसे एक मनुष्य की बुलं खुली आवाज सुनायी दी।

वह अपनी चाय लेकर वहीं खड़ा और चुपचाप उस बुलंद आवाज को रहा। बातें तो कुछ अजीब-सी थीं, जैसी,लेकिन इसमें उसका कोई दोष

ा। सच को इस कदर गोपनीय शासकीय पत्ति बना दिया गया था कि जनता के पास र्फ कयास और गुंताड़े और अफवाहें ही ह गयी थीं।

फर आखिर गुप्तचर अधिकारी से रहा नहीं या। अंततः हिम्मत करके वह गंजे को क तरफ ले गया और बोला-'मैं गुप्तचर धिकारी हूं और दिल्ली से आया हूं। केकिन आप भले आदमी लगते हैं। इस मय मैं बड़ी उलझन में पड़ा हूं। क्या आप री मदद करेंगे?'

गंजे ने गुप्तचर अधिकारी को सिर से ांव तक देखा और मानो उससे भी ज्यादा सकी कमसिनी को देखकर मुसकुराते हुए ोला-'हां, हां, बताइये क्या बात है?'

गुप्तचर अधिकारी ने कहा-'मैं कल रात यहां हूं और देख रहा हूं कि थानेदार से केकर कलेक्टर तक सब नाचने गए हुए हैं। या आप बता सकते हैं कि कहां और क्यों नाचने गये हुए होंगे?'

गंजे ने कहा-'आपको नहीं मालूम?। दिल्ली से एक मंत्री महोदय नाचने आनेवाले थे। इसलिए इन सबको तो पीछे-पीछे जाना ही था।'

गुप्तचर अधिकारी को लगा अब वह अपना आपा खो देगा और चीख पड़ेगा। फंसे गले से पूछा-'लेकिन क्यों?'

'अरे..... किसी विकास भवन का उद्घाटन करने। अब हकीकत यह है कि न कहीं विकास है न भवन.... लेकिन अन्नदाता को जंच गयी कि उद्घाटन करके ही मानेंगे तो बनाओ विकास और भवन रातों-रात और करवाओ उद्घाटन।'

-'लेकिन कहां?'

गंजा चुपचाप गुप्तचर को देखता रहा और उसे सबकुछ समझ में आ गया। गुप्तचर की आंखों में आंखें डालकर करारी आवाज में बोला-'देश का नक्शा देखा है कभी ध्यान से? नहीं देखा? खैर दिल्लीवालों को इसकी जरूरत ही क्या है?'....और पीठ फेरकर चल दिया।

किस्सा और कॉफी दोनों खत्म हो चुके थे। युवा खोजी पत्रकार मित्र मेरा मुंह देख रहा था। दम भर रुककर मैंने कहा-'क्या कहा तुमने? कोई दिल्ली से नाचने-नचाने आया था? अच्छा! हां, तब आते थे। आजकल तो सुना है इसी काम के लिए अमरीका से आते हैं।'

वह जानता था मैं कोई-न-कोई तुरुप जरूर मारूंगा। मैं हमेशा ऐसा ही करता हूं। उसका मुंह लटक गया।

पत्नी ने हम दोनों को मुसकराते हुए देखा और उठते हुए बोली-'मैं एक-एक कॉफी और बनाकर लाती हूं।'

- हिन्दुस्तान जिंक लि.,
पुठौली, चित्तौड़गढ़ (राज.)- 312 021

हजार शब्द कहने की जरूरत नहीं, हजार विचारों को एक शब्द में अभिव्यक्त करने की कोशिश करो।
-शेख सादी

डॉ. अशुम

मैं लड़कियों से बात कैसे करूं ?

मैं 22 वर्षीय कॉलेज छात्र हूं। मैंने स्कूली शिक्षा केवल लड़कों के स्कू प्राप्त की है। मैं पढ़ाई में हमेशा सर्वप्रथम रहता हूं। मैं को-एजूकेशनल कॉलेज रहा हूं। मैं लड़कियों से बहुत शर्माता हूं। कॉलेज में उनके सामने से भी नहीं पाता। जैसे ही कोई लड़की मुझसे बात करने की कोशिश करती है, मैं पसी पसीना हो जाता हूं। समझ नहीं आता मैं खुद को कैसे बदलूं। चाहता हूं कि दोस्तों की भांति बिना किसी घबराहट के लड़कियों से बात कर सकूं। कृपया बताएं कि मैं शर्माना छोड़ दूं।

आप कैसे माहौल में पले हैं, इसका आपके व्यक्तित्व के विकास पर बहुत पड़ता है। सबसे अच्छा तो यह है कि आप अपने शर्मीले स्वभाव को पहचानकर को बदलना चाहते हैं और यह बिल्कुल संभव है। चूंकि आप केवल लड़कों के स्कू पढ़े हैं, आपको लड़कियों के संपर्क में आने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। आपके घ पड़ोस का माहौल भी शायद ऐसा नहीं रहा कि लड़के-लड़कियां बचपन से ही एक खेलते-कूदते आये हों। परिवार व आसपास के माहौल से निर्धारित कुछ व्यक्ति अनुभवों के कारण कुछ लोगों में लड़कियों के प्रति कुछ अनुचित धारणाएं बन जा जिनके कारण सामान्य तौर पर उनसे बातचीत करना बहुत कठिन होता है। इसके अ बहुत से लोग स्वभाव से भी शर्मीले होते हैं, उनके व्यक्तित्व का पूरी तरह से विकास होता। आत्मविश्वास की कमी होने के कारण उनके मन में हीन भावना बनी रहती स्वयं को बातचीत करने की कला में दूसरों की अपेक्षा हमेशा कम मानते हैं। याद

आप लड़कियों से जितना कतराएंगे, उतना ही आपका [illegible] बढ़ेगा। आप चेतन होकर लड़के-लड़कियों के गुट में शामिल हो जाइए। ध्यानपूर्वक नोट करते रहिए कि अन्य लड़के किस तरह लड़कियों से बातचीत करते हैं, उनके बातचीत के विषय क्या होते हैं, लड़कियों की प्रतिक्रियाओं को गौर से देखिए। अपनी अच्छाइयों तथा कमियों को जानने की कोशिश कीजिए। दूर भागने के स्थान पर जहां तक हो सके, लड़के-लड़कियों से मिलें-जुलें, जिस विषय में आपकी अच्छी जानकारी हो, हिम्मत जुटाकर उस विषय का अभ्यास करें। लोकप्रिय विषयों में अपनी अधिक से अधिक जानकारी बढ़ाने की कोशिश करें, ताकि उन्हें लड़के-लड़कियों के समूह में चर्चा का विषय बनाने का प्रयास कर पाएं। अपने पहनावे, बातचीत के तौर-तरीकों आदि को बेहतर बनाएं। प्रतिदिन शीशे के सामने खड़े होकर अपने बातचीत के स्टाइल को सुधारने का प्रयास करें। शुरू में अपनी दोस्ती उन लड़कियों से करने की कोशिश कीजिए, जिनके बारे में आपको लगता हो कि वे संवेदनशील हैं और आपसे बात करने में दिलचस्पी रखती हैं। कॉलेज के ऐसे छोटे समूह में शामिल हों, जिसमें आप स्वयं को सुरक्षित महसूस कर सकें। लगातार अभ्यास करते रहने से और सामना करते रहने से धीरे-धीरे घबराहट कम होगी, आत्मविश्वास बढ़ेगा और आप कुछ समय के बाद इस समस्या से छुटकारा पाने में अवश्य कामयाब होंगे।

मेरी उम्र पैंतीस वर्ष है। मुझे बचपन से ही छोटी-मोटी बातों पर बहुत गुस्सा आता है। मेरे गुस्से से घर के सब लोग मुझसे बहुत डरते थे। मैं शादीशुदा हूं। मेरी बीवी और तीन बच्चे मेरे गुस्से की आदत से बहुत परेशान हैं। आये दिन घर में झगड़ा होता रहता है। मैं बहुत टेंशन में रहता हूं, यहां तक कि ऑफिस के लोगों पर भी बरस पड़ता हूं। समझ नहीं आता क्या करूं, क्या मेरा गुस्सा कम किया जा सकता है?

आपको बचपन से ही बहुत गुस्सा करने की आदत है। गुस्सा सबको आता है लेकिन गुस्से को नियंत्रित करना सीखना पड़ता है। यदि आरंभ से ही परिवार के सदस्य बच्चों के गुस्सा करने की आदत को सहन करते रहें, उन्हें लाड़-प्यार में कुछ न कहें, तो उनका गुस्सा बढ़ता ही जाएगा। हर बात को गुस्से से मनवाने की आदत पड़ जाती है। ऐसे लोगों में सहनशक्ति बहुत कम होती है। वे आवेगशील होते हैं। आप मान लीजिए कि आप अपने गुस्से को नियंत्रित करने का पूरा प्रयास करेंगे। जब भी लगे गुस्सा आ रहा है, गहरी सांस लें, उस समय किसी से कुछ भी न कहें, अपना ध्यान किसी अन्य जगह आकर्षित कर दें। बार-बार ऐसा करते रहने से कुछ दिन बाद आप देखेंगे कि आप अपने गुस्से को

काफी नियंत्रित कर पा रहे हैं। आपमें थोड़ा-थोड़ा बदलाव देखकर घर के लोग भी आपसे खुलकर बात कर पाएंगे। आपकी पत्नी आपके स्वभाव को समझते हुए आपके गुस्से को कम करने में आपकी मदद कर पाएंगी। आपके कार्यालय के लोग भी आपके बदलते स्वभाव को देखते हुए आपका अधिक्र आदर-सम्मान करेंगे। धीरे-धीरे आप महसूस करेंगे कि व्यक्तिगत, पारिवारिक व कार्यालय-संबंधित सुख-शांति काफी कुछ आपके हाथ में है। याद रखिए गुस्से को कम करने के लिए आपको चेतनापूर्वक लगातार प्रयास करते रहना होगा। यदि ऐसा कर पाने में स्वयं को असमर्थ पाएं तो मनोवैज्ञानिक की सहायता लेने से न हिचकिचाएं।

मेरी उम्र 28 वर्ष है। मैं चार वर्षीय बेटे की मां हूं। मेरे पति बिजनेसमैन हैं। वे सुबह घर से जाने के बाद देर रात तक घर लौटते हैं। मैं सारा दिन घर के कामकाज करके बोर हो जाती हूं। मैंने अंग्रेजी में एम.ए. किया है, लगता है व्यर्थ में ही इतनी पढ़ाई की। शादी के बाद मैंने अपने पति से कहा था कि मैं कोई नौकरी करना चाहती हूं, लेकिन वह राजी नहीं थे। वह चाहते थे कि मैं अपना पूरा ध्यान घर-गृहस्थी में ही लगाऊं, लेकिन अब और नहीं रहा जाता। मैं कुछ करना चाहती हूं जिससे संतुष्ट रह पाऊं। मुझे नहीं मालूम मैं अपने पति को कैसे मनाऊं। कृपया उचित सलाह दें।

आप पढ़ी-लिखी हैं और जीवन में कुछ करने की इच्छा रखती हैं। हालांकि अपने घर-परिवार को व्यवस्थित रूप से चलाना बहुत बड़ा और महत्त्वपूर्ण कार्य है लेकिन इसके साथ-साथ यदि आपके पास समय है और आपमें प्रतिभा है तो उसका सही उपयोग करना अति आवश्यक है। आपका बेटा स्कूल जाने लगा हो, तो उसके स्कूल से लौटने तक आपके पास बहुत समय है जिसे आप अपनी मनचाही हॉबी के अनुसार सार्थक रूप से बिता सकती हैं। जरूरी नहीं है कि आप नौकरी ही करें। आप जिन कार्यों में योग्यता व रुचि रखती हैं, उनकी सूची बनाइए, इंटरनेट पर खोजिए कि उन क्षेत्रों में क्या-क्या संभावनाएं एवं अवसर हैं। चाहें तो अपना बायोडेटा कुछ जगह भेज दें। कोई ऐसा सृजनात्मक कार्य अपने लिए तलाश लें, जो आप घर में रहकर कर सकती हैं। कुछ संस्थाओं से अपना संपर्क बनाकर उनके लिए यह काम कर सकती हैं। जब आप स्वयं ऐसी जानकारी से संतुष्ट हो जाएं, तो अपने पति से अच्छा अवसर देखकर शांतिपूर्वक बात कीजिए। उन्हें विश्वास दिलाने की कोशिश कीजिए कि आपके उन कार्यों को करने से आपके घर व बच्चे के काम में कोई बाधा नहीं आएगी तथा आपको संतुष्टि मिलेगी।

अवश्य ही आपके पति आपकी बात [illegible]। अपना उत्साह बनाये रखिए। आजकल सबके सामने बहुत से विकल्प हैं। केवल उचित चुनाव करने की जरूरत है जिससे व्यक्तिगत व पारिवारिक शांति बनी रहे।

मैं 28 वर्षीया शादीशुदा महिला हूं। मेरे पति मेरे से तीन साल उम्र में छोटे हैं। हमारा संयुक्त परिवार है । सब भाई एक साथ कपड़े का व्यापार करते हैं। मेरे पति व घर वाले मुझे बहुत प्यार करते हैं लेकिन बातों-बातों में बहुत बार हम दोनों के बीच उम्र के अंतर की बात उठ जाती है, जिससे मैं हीन भावना से ग्रस्त हूं। पता नहीं क्यों मुझे लगने लगा है कि मेरे पति को भी मेरा उनसे तीन साल बड़ा होना अब अच्छा नहीं लगता। हो सकता है इसलिए वह छोटी-छोटी बात पर झुंझलाने लगते हैं। शादी के पहले साल में तो वह ऐसा बर्ताव कभी नहीं करते थे। मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता। मन चाहता है घर छोड़कर कहीं चली जाऊं। अभी तो हमारा कोई बच्चा नहीं है, बच्चा होने पर तो मैं बिल्कुल बंध जाऊंगी। मैं अपनी जिंदगी खुश रहकर बिताना चाहती हूं। कृपया मेरी समस्या का हल बताएं।

अकसर हमारे समाज में पति की उम्र या तो पत्नी से अधिक होती है या लगभग बराबर लेकिन यह सब पुरानी बात है। आधुनिक युग में पति-पत्नी की उम्र में अंतर कोई मायने नहीं रखता। यह केवल अपनी पूर्वधारणाओं की बात है। आपके मन में व्यर्थ ही ऐसे विचार आ रहे हैं। सुखी विवाहित जीवन का संबंध उम्र से न होकर आपसी समझ से है। आप एक-दूसरे के साथ व संयुक्त परिवार के साथ कितना समायोजन कर पाते हैं, यह सोचना ज्यादा जरूरी है। पति-पत्नी की एक-दूसरे से बहुत-सी अपेक्षाएं होती हैं। उनमें से कुछ पूरी न होने पर निराशा होती है जिससे झुंझलाहट बढ़ती है। इसके अतिरिक्त संयुक्त परिवार के या व्यापार संबंधित कुछ मामलों को लेकर तनाव पैदा हो सकता है। हो सकता है आपके पति आपको बताना उचित न समझते हों या आपसे खुलकर अपनी बात न कह पा रहे हों। आप कोशिश कीजिए कि अपने पति के मन की बात जान जाएं। जब वह अच्छे मूड में हों, तो उनसे खुलकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की कोशिश कीजिए। आर्थिक या पारिवारिक समस्या को पहचानकर उसका समय पर हल निकालना जरूरी है। हीन भावना रखकर अपना आत्मविश्वास मत कम कीजिए। भागने के स्थान पर बातचीत करके तनाव कम करने की कोशिश करें। सोचें किस तरह परिवार के सहयोग से अपने जीवन में खुशी ला सकती हैं। ■■

कहानी

हमर दुखक नहीं ओर

■ डॉ. गौरीशंकर राजहंस

कुछ महीने पहले हरिया ने तिहाड़ जेल से मुझे एक पत्र भेजा था। पत्र पढ़कर मैं बहुत हैरान हो गया था। पत्र में उसने लिखा था कि उसे जल्दी ही फांसी की सजा होनेवाली है और मृत्युदंड के पहले वह अंतिम बार मुझे देखना चाहता है।

इस पत्र को पढ़कर मुझे घोर आश्चर्य हुआ और पहले के सारे दृश्य सिनेमा के रील की तरह मेरी आंखों के सामने आ गये। प्रायः दस वर्ष पहले मैं मिथिला के सुदूर गांवों में वहां की सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन करने के लिए घूमा करता था। मिथिला के हरिपुर गांव में पहले एक सरकारी चीनी मिल हुआ करती थी। प्रबंधकों की हेरा-फेरी के

कारण वह मिल बंद हो गयी। परंतु उस क्षेत्र में गन्ने का उत्पादन भरपूर होता था।

अमरेन्द्र सिंह नाम के एक सरदारजी ने, जो कभी उस कारखाने में एक मामूली-सा फोरमैन हुआ करते थे और जो अब कनाडा में बस गये थे, भारत आकर उस बीमार मिल को खरीद लिया और इस बात का ऐलान किया कि वह आधुनिक टैक्नोलॉजी से चीनी पैदा करेंगे। परंतु सरदारजी का मुख्य उद्देश्य चीनी मिल में निकलनेवाले छोआ गुड़ से शराब बनाने का और उसके निर्यात करने का था। सरदारजी को पता था कि भारतीय शराब बहुत ही उम्दा किस्म की होती है और इसी कारण विदेशों में उसकी बड़ी मांग है। सरदारजी को यह भी अच्छी तरह पता था कि हरिपुर के आसपास गन्ने की भरपूर पैदावार होती है। अत: वह इस बात से निश्चिंत थे कि वहां चीनी बहुत ही सस्ती दरों में पैदा होगी।

जब से पुरानी चीनी मिल बंद हुई थी, तब से वहां के किसान भयानक गरीबी में जी रहे थे। पुरानी चीनी मिल में भी उनके अनुभव बहुत ही कटु थे। मिल के मैनेजर उन्हें गन्ने का इतना मूल्य भी नहीं देते थे, जिससे लागत खर्च निकल सके। परिणामस्वरूप कई वर्षों तक किसानों को अपने खेतों में ही गन्ना जलाना पड़ता था। अब जब सरदारजी ने नये सिरे से कारखाना चलाने की बात शुरू की, किसानों के चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ गयी। उन्हें लगने लगा कि उनके अच्छे दिन अब वापस आ गये हैं।

हरिया उस गांव का एक छोटा-सा किसान था। उसने अपने अनुभव से पाया कि सरदारजी का केन मैनेजर प्रताप सिंह अत्यंत ही धूर्त और बेईमान किस्म का आदमी है। जहां पर गन्ने की तौल होती थी, उस तौल की मशीन के नीचे उसने चुंबक छिपा रखा था जिससे तौल आधी हो जाती थी।

हरिया ने गांववालों को प्रताप सिंह की बेईमानियों के बारे में बताया। परंतु सारे गांववाले निराश बैठे थे। उनका कहना था कि वे वर्षों तक गन्ना खेतों में जलाते रहे हैं। आधे दाम में भी उन्हें अपना गन्ना बेचना पड़े, तो वे उसी में संतोष कर लेंगे।

हरिया की बहन सुखिया, जो कि अविवाहित थी, कभी-कभी अपने भाई की मदद करने के लिए उसके साथ गन्ने से लदी हुई बैलगाड़ी में बैठ जाती थी। गांव की लड़की होने के बावजूद सुखिया परम

हरिया ने देखा कि असिस्टेंट जेलर बार-बार मुझे जाने के लिए कह रहा था। बिना समय बरबाद किये उसने गाना शुरू किया, 'हमर दुखक नहीं ओर, हो भोला बाबा..।'

सुंदरी थी।

एक दिन जब हरिया गन्ने से भरी बैलगाड़ी लेकर चीनी मिल के गेट पर पहुंचा और गन्ने तुलवा रहा था , तब उसने देखा कि प्रताप सिंह ने झट से चुंबक गन्ना तौलनेवाली मशीन के नीचे छिपा दिया, जिससे तौल आधी हो गयी। यह देखकर हरिया आपे से बाहर हो गया। उसने कड़ककर प्रताप सिंह से पूछा, 'सरदारजी, आपने नाप-तौल करनेवाली मशीन के नीचे चुंबक क्यों छिपा रखा है?'

प्रताप सिंह ने क्रूर हंसी हंसते हुए कहा, 'असली चुंबक तो तुम्हारी बहन सुखिया है। उसे आज शाम मेरे क्वार्टर में भेज देना। मैं हर रोज तुम्हारी गन्ने की तौल दूनी लिख दूंगा।'

प्रताप सिंह अभी अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि जिस गंडासे से हरिया गन्ने काटा करता था, उसीसे गुस्से में उसने प्रताप सिंह का सिर धड़ से अलग कर दिया। खून के फव्वारे फूट पड़े। लोगों ने हरिया को पकड़ लिया। देखते ही देखते पुलिस आ गयी। हरिया ने थाने में यह कबूल कर लिया कि चूंकि प्रताप सिंह उसकी बहन पर बुरी नजर रख रहा था और रोज उसके बारे में गंदी बातें करता था, इसलिए वह अपना गुस्सा रोक नहीं सका।

हरिया को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और जेल भेज दिया। गांव वालों ने चंदा कर मुकदमा लड़ा और हरिया को बचाने की भरपूर कोशिश की। परंतु नीचे से ऊपर तक हर कोर्ट में गांववाले मुकदमा हार गये क्योंकि हरिया ने दिन-दहाड़े सैकड़ों लोगों के सामने प्रताप सिंह का कत्ल किया था।

अंत में मुकदमा सुप्रीम कोर्ट जा पहुंचा, जहां उसे फांसी की सजा हुई।

अपने अध्ययन और शोध के सिलसिले में मैं हरिया से उसके गांव में मिल चुका था। वह घंटों विद्यापति के मधुर गीत गाता रहता था, जिन्हें मैं तन्मय होकर सुनता था। एक जादू था उसकी आवाज में। मेरा अध्ययन कुछ महीनों में पूरा हो गया और मैं दिल्ली लौट गया-मिथिला की संस्कृति पर अपनी पुस्तक लिखने के लिए।

गांव में ऐसा हादसा हो जाएगा, इसकी मुझे आशा नहीं थी। मैं हरिया को करीब-करीब भूल चुका था।

जब मैं हरिया से तिहाड़ जेल में मिला , तब उसने मुझे कहा कि उसे फांसी होने में अभी एक महीना बाकी है। मैं उसके लिए इतना-सा कष्ट कर लूं कि हरिपुर जाकर गांव वालों को धन्यवाद दे दूं कि दस वर्षों तक उन्होंने चंदा करके उसका मुकदमा लड़ा। गांव वालों से मैं यह भी कहूं कि चूंकि उसकी माता बहुत गरीब है और वह उसकी बहन की शादी नहीं करा पाएगी, इसलिए गांववाले चंदा कर उसकी बहन की शादी करा दें।

हरिया का मन रखने के लिए मैं हरिपुर

गया। वहां का नजारा बिलकुल बदला हुआ था। उस दुखद घटना के बाद अमेरन्द्र सिंह ने वह चीनी मिल बंद कर दी। किसानों ने गन्ना उगाना बंद कर दिया। अब वे गन्ना बेचने के लिए उस मिल तक नहीं जाते थे, शायद यही कारण था कि अमरेन्द्र सिंह को अपना कारखाना बंद करना पड़ा। मुझे देखकर सारे किसान गंभीर हो उठे।

मैंने जब पता लगाया, तो उन्होंने कहा कि एक दिन मुंह अंधेरे हरिया की मां हरिया की बहन को लेकर गांव से बाहर चली गयी। उन्होंने किसी को कुछ नहीं बताया। शायद वे मजदूरी करने के लिए पंजाब चले गये। मैं पंजाब और हरियाणा के अनेक गांवों में घूमा और जहां कहीं कोई मजदूर विद्यापति के गीत गाता मिलता था, मुझे लगता था कि हरिया की मां और हरिया की बहन शायद उसी टोली में होंगे। परंतु मुझे उन दोनों का लाख प्रयास के बावजूद कोई पता नहीं चला।

अंतिम बार जब मैं हरिया से तिहाड़ जेल में उसकी फांसी के एक दिन पहले मिला, तब उसे खुश देखने के लिए मैं थोड़ा-सा झूठ बोल गया। मैंने कहा कि उसकी सुखिया की शादी एक स्कूल शिक्षक से हो गयी है और वह मजे में अपनी ससुराल में है। गांव वालों ने उसकी मां को भी जमीन का एक टुकड़ा दे दिया है जिसमें वह सब्जी उगाती है और पास के बाजार में सब्जियां बेचती है। सब लोग हरिया को याद कर बहुत दुखी हैं।

मेरी मुलाकात का समय समाप्त हो रहा था। मैंने हरिया से कहा, 'हरिया, तुमने पहले भी कई बार अपने मधुर कंठ से विद्यापति के गीत मुझे सुनाये हैं। आज अंतिम बार मुझ पर कृपा कर दो। एक बार फिर से विद्यापति का कोई गीत गाओ जिसे मैं जीवनभर याद रखूं'।

हरिया ने देखा कि असिस्टेंट जेलर बार-बार मुझे जाने के लिए कह रहा था। बिना समय बरबाद किये उसने गाना शुरू किया, 'हमर दुखक नहीं ओर, हो भोला बाबा... ।'

मैं हरिया के दर्द भरे गीत को पूरा सुन सकने की स्थिति में नहीं था। मैंने अपना मुंह फेर लिया। आज वह इस दुनिया से जा रहा था, मैं नहीं चाहता था कि वह मुझे रोता हुआ देखे। असिस्टेंट जेलर लगभग घसीटते हुए मुझे बाहर ले जा रहा था। उधर बार-बार मेरे कानों में हरिया का गीत सुनायी पड़ रहा था, 'हमर दुखक नहीं ओर..... ।'

- ए-1/76, सफदरजंग एन्क्लेव,
नयी दिल्ली- 110029

मैंने जब कामनाओं को छोड़ दिया, तो मेरी तमाम कामनाएं पूरी हो गयीं -मैंने आशा को त्याग दिया, तो सारी आशाएं तृप्तियां बनकर मेरे पास आ गयीं।

-हाफिज़
(महान पारसी कवि)

राज्यसभा संसद का

राज्यसभा को संसद का वरिष्ठ सदन कहा जाता है। लोकसभा से कैसे भिन्न है यह और क्या है इसकी कार्यप्रणाली? इसकी जानकारी दे रहे हैं कवि और राज्यसभा सदस्य बालकवि बैरागी

भारत की संसद के बारे में समय-समय पर सरकार और उसके विभिन्न प्रकाशन-घटक जानकारी देते रहते हैं। इतना सब होते हुए भी भारत की जनता को यदि सबसे कम जानकारी है तो वह है हमारी संसद की। संसद के नियम, अधिनियम, प्रक्रिया, परम्परा और प्रस्थापित सामन्जस्य, समन्वय जैसे तत्वों की जानकारी देश की एक प्रतिशत जनता को भी नहीं है। मैं अपने ऐसे हजारों मित्रों को जानता हूं जो चौंककर कह बैठते हैं - "अच्छा संसद में काम इस तरह चलता है।"

जिसे आप संसद कहते हैं उसका एक महत्वपूर्ण अंग है राज्यसभा। इसे अपर हाउस या कौंसिल ऑफ स्टेट्स भी कहा जाता है। कुल सीटें 250 हैं,जिनमें 12 महामहिम राष्ट्रपति द्वारा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से ढूंढकर नामजद किये जानेवाले व्यक्ति भी शामिल हैं।

न्यूनतम आयु-सीमा

लोकसभा को लोअर हाउस या कनिष्ठ सदन कहा जाता है। राज्यसभा को वरिष्ठ सदन कहा जाता है। आसान भाषा में यह सदन सयानों का सदन है। तात्पर्य यह नहीं है कि लोकसभा अगंभीर या असयाना सदन है। तीस बरस की आयु पूरी होने पर ही कोई संसद के लाल बिछावन वाले सदन राज्य सभा में प्रवेश पा सकता है। हमारे संविधान निर्माताओं ने जहां पच्चीस बरस की वयस को परिपक्व माना, वहीं यह भी संकेत दे दिया कि तीस बरस वाला सयाना तो हो ही गया। कृपया सयाने को कटाक्ष या व्यंग्य में नहीं लें। लोकजीवन में प्रचलित स्याना से भी इसका अर्थ नहीं निकालें। गंभीरता, शालीनता, सूझबूझ, अध्ययन, अनुभव, दर्जा, उमंग और अपनेपन तथा आत्मीयता के साथ बात करने

का अमृत सदन है

की अपेक्षा सयाने से की जाती है। इस सदन का मतलब यही है। पूरा देश और संविधान-निर्माता राज्यसभा सदस्य से यही और ऐसा ही सब कुछ चाहते हैं।

शून्यकाल नहीं होता

नियम-प्रक्रिया में प्रावधान होने के बावजूद राज्यसभा में शून्यकाल नहीं होता। लोकसभा में शून्यकाल यथानियम प्रचलित और प्रभावशील है। राज्यसभा में शून्यकाल को पीछे सरकारकर विशेष उल्लेख उठाने का प्रावधान प्रचलन में है। बंधन यह भी है कि विशेष उल्लेख मात्र 250 शब्दों में कर दिया जाए। उस पर लंबा भाषण नहीं दिया जा सकता। छपा हुआ प्रारूप-पत्र तैयार मिलता है। एक-एक खांचे में एक-एक शब्द लिख दो। सभापति का सचिवालय उसे संपुष्ट कर दे और आप अपनी बारी पर उसे सदन में पढ़ भर दें। आपसे उस विषय पर सहमत सदस्य अपनी-अपनी सहमति खड़े होकर जता दें, स्वयं को संबद्ध कर दें। यथासमय सरकार उस विषय पर अपना लिखित मत आपके पास भेज देगी। स्वीकृति लायक हुआ तो स्वीकार कर लेगी - काम शुरू कर देगी -अस्वीकार हुआ तो मामले पर वहीं पूर्ण विराम लगा देगी।

एक विशेष बात यह है कि संसद में बिंदु, विषय या मुद्दे सदैव जीवित रहते हैं। मरते कभी नहीं। इस सदन में या उस सदन में आप नियम प्रक्रिया के संदर्भ देते हुए अध्यक्ष या सभापति की आज्ञा से उठा सकते हैं।

कभी भंग नहीं होती राज्यसभा

राज्यसभा हमारी संसद का अमृत सदन है। लोकसभा भंग हो सकती है किंतु राज्यसभा कभी भंग नहीं होती। संविधान में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रावधान यह है कि केंद्र में कभी राष्ट्रपति शासन लागू नहीं हो सकता। कामचलाऊ ही सही किंतु एक प्रधानमंत्री और उसका मंत्रीमंडल, सरकार चलाता रहेगा। वही लोकसभा का चुनाव करवायेगा। इसी का नाम है कामचलाऊ सरकार।

गिनती के आधार पर देखा जाए तो देश की कई विधानसभाओं की सदस्य-संख्या के सामने यह सदन छोटा माना जा सकता है। उत्तर-प्रदेश का उदाहरण लें। वहां की सदस्य संख्या 403 है, जबकि राज्यसभा में 250 ही सदस्य हैं। मैं मध्यप्रदेश के 320 सदस्यों वाले सदन का दो बार सदस्य रह चुका हूं।

छत्तीसगढ़ बनने के बाद आज मध्य प्रदेश में 230 सदस्य हैं। 320 वाला विधानसभा सदन संख्या बल में राज्यसभा सदन से बड़ा होता था, किंतु व्यवहार क्षेत्र तथा अधिकार क्षेत्र के नाते सयाना सदन गरिमा, महिमा और दायित्व के मामले में अद्भुत और अनन्य है।

समय का निर्धारण

वर्ष 2003 की सूची को देखते हुए मैं पाता हूं कि इस समय राज्यसभा में मोटे तौर पर देश के छोटे-बड़े 17-18 राजनैतिक दलों का जमावड़ा है। अखिल भारतीय, फिर प्रादेशिक,फिर आंचलिक और बहुत ही स्थानीय जैसे राजनैतिक दल भी इस सदन में उपस्थित हैं। यदि सदन के समक्ष कोई राष्ट्रीय मुद्दा विचारार्थ या चर्चार्थ है तो आप मान लें कि कम-से-कम 17 या 18 लोग तो उस पर बोलेंगे ही। विषय निर्धारिणी कार्यसमिति प्रत्येक विषय पर सदन में विचार हेतु समय का निर्धारण करती है। फिर राजनैतिक दलों की संख्या(सदस्य संख्या) के अनुपात में समय को विभाजित कर दिया जाता है। जैसे आज सदन में सबसे बड़ा दल कांग्रेस है, दूसरा भाजपा और तीसरा तेलुगु देशम पार्टी है। यूं चलते-चलते चौथा, पांचवां, छठा... फिर अन्य नामजद आदि हैं। तब सबसे अधिक समय कांग्रेस लेगी। उसके बाद भाजपा, उसके बाद तेदेपा, उसके बाद इसी क्रम में अन्य और नामजद सदस्यगण समय पायेंगे। किस विषय पर किस दल की तरफ से कौन सदस्य बोलेंगे, इसकी लिखित सूचना प्रत्येक दल का सचेतक सदन के सचिवालय को देगा। उस सूची में प्राथमिकताएं चिह्नित कर दी जाती हैं। उसी क्रम से सभापति उन्हें बोलने के लिए पुकारेगा। पुकारने पर अनुपस्थित सदस्य प्राय: अपना अवसर खो बैठता है। वापस कतार में लगने के लिए लंबी मशक्कत करनी पड़ती है। प्रणाली में लोच सभी जगह है। राज्यसभा भी लोच का अपवाद नहीं है।

सभापति तालिका

प्रत्येक सत्र में सभापति तालिका के सदस्यों की सूची बनती है। यदि सभापति, उपसभापति आसंदी पर नहीं हैं, तो सचिवालय तत्काल अपनी तालिका देखता है। यदि तालिका में सूचीबद्ध सदस्य भी उपलब्ध नहीं हैं, तब तत्काल सदन की सहमति प्राप्त करके उपस्थित सदस्यों में से किसी को भी आसंदी पर बैठा कर कार्य सूची को परिणति देता है। आसंदी कभी खाली नहीं रहती। कार्यसूची (एजेंडा) को पूरा करना सदन का दायित्व है।

संविधान लागू होने के बाद आज हम 13वीं लोकसभा को देख रहे हैं। यानी कि तेरह बार देश ने लोकसभा के चुनाव संपन्न किये। राज्यसभा के मामलें में गिनती वैसी नहीं है। जिस समय

आप यह पढ़ रहे हैं उस समय यानी 9 मई, 2003 तक राज्यसभा का अपना 198वां सत्र चल रहा है।

विशेष किंतु दिलचस्प स्थिति

एक विशेष किंतु दिलचस्प 'स्थिति है कि महामहिम राष्ट्रपति, महामहिम उपराष्ट्रपति एवं लोकसभा के अध्यक्ष किसी भी हालत में सदन के भीतर सदस्यों की आसंदी पर नहीं बैठ सकते। उपराष्ट्रपति सदन का सभापतित्व कर सकते हैं, किंतु सदस्यों के साथ सदन में नहीं बैठ पायेंगे। महामहिम राष्ट्रपति संसद के सदनों को बैठकों के लिए आहूत कर सकते हैं, संयुक्त सदन को संबोधित कर सकते हैं, किंतु सदन के भीतर किसी भी आसन पर बैठ नहीं सकेंगे। यह सुनिश्चित प्रावधान है। लोकसभा के अध्यक्ष की स्थिति इससे ज्यादा दिलचस्प है। उसे लोकसभा सदस्य का चुनाव जीतकर सदन में आना पड़ता है। उसकी सीट संख्या(विभाजन नंबर) चिह्नित हो जाती है, किंतु जब वह लोकसभा का अध्यक्ष चुन लिया जाता है, तब वह चाहे तो भी अपनी सीट पर नहीं बैठ सकता है। वह सदन में जब भी बैठेगा, अध्यक्ष की आसंदी पर ही बैठेगा। यही स्थिति विधानसभाओं में राज्यपालों और विधानसभा अध्यक्षों की भी होती है। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और राज्यपाल चूंकि किसी सदन के सदस्य नहीं होते, इसलिए सदन के भीतर उनकी कोई सीट नहीं होती। वे बैठ नहीं सकते। लोकसभा या विधान सभा का अध्यक्ष (स्पीकर) सदन का सदस्य होते हुए भी इसलिए अपनी सीट पर नहीं बैठ सकता है कि सदन ने उसे अपना सर्वोच्च आसन सौंप दिया है।

अकेले बैठने का प्रावधान नहीं

लोकसभा की कालीन और आसंदियां हरे रंग की हैं तथा राज्यसभा की लाल रंग की। एक और जानकारी आपको रुचिकर होगी। किसी भी सदन में सिवाय अध्यक्ष की आसंदी के कोई भी आसंदी अकेली नहीं होती। कुरसी देश के किसी भी सदन में नहीं है। जहां भी है वह बेंच है। सदस्यों के अकेले बैठने का प्रावधान कहीं नहीं है। कम-से-कम दो सदस्य प्रत्येक बेंच पर बैठते हैं। राज्यसभा में मैं जिस बेंच पर हूं, उस पर मुझ सहित छह सदस्यों के नंबर हैं-186 से 191 तक।

राज्यसभा में भी सदन का नेता और नेता प्रतिपक्ष होता है। सदन का नेता सत्तारूढ़ दल नामजद करता है। जसवंत सिंह इन दिनों राज्यसभा में सदन के नेता हैं। वह सदन की एक नंबर आसंदी पर बैठते हैं। देश का प्रधानमंत्री उनसे पहले नहीं बैठेगा। उन्हें दो नंबर की सीट पर ही बैठना होगा। राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मनमोहन सिंह हैं।

मुख्य प्रतिपक्षी दल अपने नेता को नामजद करता है। किंतु सदन में उनसे पहले वाला स्थान राज्यसभा के उपसभापति के लिए सुरक्षित है।

नेता पद नामजदगी से

एक स्थिति यह है कि सदन का नेता और नेता प्रतिपक्ष (लोकसभा में) हमेशा अपने दलों की ओर से चुना जाता है,जबकि राज्यसभा में ये दोनों पद नामजदगी से अपने-अपने दल भर लेते हैं। ह्विप(सचेतक), डिप्टी ह्विप, चीफ ह्विप जैसे पद राजनैतिक दल नामजद करते हैं। सदनों में अपने-अपने उपनेता भी राजनैतिक दल अपने नेता की इच्छानुसार नामजद करते हैं। अपने दोनों सदनों के अनुभवों के आधार पर मैं कह सकता हूं कि संयम, धैर्य, अध्ययन, आत्मीयता, अपनापन जैसे संवेगों की राज्यसभा में कमी नहीं है। उत्तेजना, कटुता, कटाक्ष, व्यंग्य, पलटवार जैसे आवेग राज्यसभा में बहुत कम हैं। ज्वार उठते हैं किंतु कोई पूनम या शुक्लपक्ष का प्रतिवेगी बिंदु ही उठाता है। कोई पूर्वाग्रह जैसी बात नहीं है। राज्यसभा में कई लोग, कई सदस्य राजनैतिक धाराओं के आरपार ऐसे भी हैं, जो अपना होमवर्क जमकर करते हैं। सरकार की सिट्टी-पिट्टी गुम करवा देते हैं। उन्हें सुनना आनंद और उल्लास से स्वयं को परिपूर्ण रखना है। तेजस्विनी, तेज तर्रार बहिनों से राज्यसभा का यह सयाना सदन बहुत धनी है। बेलाग और दो टूक किंतु शालीन तार्किक भाषा में अपनी बात कहना सयाने सदन का मूल चरित्र है। आवेग, संवेग, उतार-चढ़ाव औ[र] कहासुनी से परिपूर्ण संवाद भारती[य] लोकतंत्र के मूल धन हैं।

असहमति को सम्मान

राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय प्रेस औ[र] राजनयी शिष्ट मंडलों को अप[नी] दीर्घाओं में बैठाकर अपने सदस्यों [से] परिचित करवाना इस सदन का सौ[म्य] दिनमान है। एक दूसरे पर झल्ला[ते] हुए विभिन्न भाषाओं, विभिन्न धर्मों, विभि[न्न] आस्थाओं, विभिन्न मान्यताओं, विभि[न्न] राजनैतिक दलों और विभिन्न अंचलों से आ[ए] विभिन्न सदस्यों को देखकर आप न ज[ाने] कैसे-कैसे निष्कर्ष निकालते होंगे, किंतु ज[ब] उन्हें आप सेंट्रल हॉल में एक दूसरे के सा[थ] कॉफी पीते, एक दूसरे की प्लेटों में से निवा[ले] लेते और साग्रह एक दूसरे के बिल चुका[ते] देखेंगे, तो अवाक रह जाएंगे।

आये दिन तरह-तरह के कार्यक्रमों में [मैं] आपके सामने होता हूं। लोग ऑटोग्राफ लेते है[ं] मैंने कई जगह लिखा है-

'आइए हम इस बात पर सहमत [हो] जाएं कि हम एक-दूसरे से असहमत हैं।'

मैं एक वाक्य और भी लिखता हूं-

'जो लोकतंत्र अपनी असहमति [को] सम्मान नहीं देता वह चरित्रहीन हो जा[ता] है।'

सयानों का सदन मुझे ऐसे वाक्य लिख[ने] की प्रेरणा देता है।

- सी-201, स्वर्ण जयंती सद[न]
डॉ. विशम्भरदास मार्ग, नयी दिल्ली-110 00[1]

सऊदी [illegible] है मगर समुद्र के किनारे उच्च तकनीक से बने विस्तृत हाई वे ने कितने ही पर्यटन स्थलों को सैलानियों की परिधि में ला दिया है। इसका खुलासा कर रहे हैं - राजेन्द्र वार्ष्णेय

सहरा में स्वर्ग
सऊदी अरब

मध्य-पूर्व एशिया के दक्षिण-पश्चिम भाग में स्थित सऊदी अरब एक मुसलिम देश है। यह विश्व का प्रमुख तेल उत्पादक एवं निर्यातक देश है। लगभग नौ लाख वर्ग मील में फैले इस देश का अधिकांश भाग रेगिस्तान है। सऊदी

अरब के उत्तर में जोर्डन, ईराक तथा कुवैत हैं। दक्षिण में यमन, पश्चिम में लाल सागर है तथा पूरब में बहरीन, कतर, ओमान और संयुक्त अरब अमीरातें हैं। यहां की जनसंख्या लगभग पांच करोड़ है। यहां अनेक देशों के लोग अपनी आजीविका हेतु कार्यरत हैं। भारत के लगभग 15 लाख लोग सऊदी अरब में काम करते हैं। यहां की भाषा अरबी तथा मुद्रा रियाल है। एक रियाल लगभग तेरह भारतीय रुपये के बराबर है। सऊदी अरब में प्रतिवर्ष हज के लिए आनेवाले तीर्थ यात्रियों की संख्या लगभग बीस लाख के ऊपर है।

पर्यटन के लिए उपयुक्त

तीर्थ स्थलों के अतिरिक्त सऊदी अरब में अनेक ऐसे स्थान है, जो पर्यटन के लिए उपयुक्त हैं परंतु यहां पर्यटन-व्यवसाय अपने शैशवकाल में है अभी। इसका प्रमुख कारण यहां के कठोरतम नियम-कानून तथा सरकार द्वारा पर्यटन का विशेष प्रचार-प्रसार न कर पाना है। मगर पिछले कुछ वर्षों से स्थिति में परिवर्तन आ गया है। इसके कारण यहां आनेवाले पर्यटकों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है।

अब पर्यटकों को देश में कहीं भी जाने की छूट है। हज यात्रियों को भी हज के पश्चात पर्यटन की अनुमति है। हज के महीने के

अतिरिक्त अन्य समय पर कभी भी उमरा (छोटी हज) करने के लिए सऊदी अरब आने की छूट भी दी गयी है। इसके अतिरिक्त सऊदी अरब के प्रत्येक भू-भाग में पक्की एवं उत्तम तकनीक से निर्मित लगभग चालीस हजार किलोमीटर सड़कों का जाल बिछा हुआ है।

इसमें लगभग पांच हजार किलोमीटर उच्चस्तरीय 'हाई वे' (राजमार्ग) हैं, जिनकी निगरानी राडार द्वारा होती है। देश के प्रमुख बड़े तथा दर्शनीय शहर जेद्दा, रियाद, दम्माम, अल खोबर, असीर-आभा, मक्का एवं मदीना इन्हीं राजमार्गों से जुड़े हुए हैं। दूसरी प्रमुख बात यह है कि ये सभी शहर हवाई मार्ग से भी जुड़े हुए हैं तथा कंप्यूटरीकृत बुकिंग आफिस छोटे-छोटे कस्बों में भी स्थित हैं। ये सुविधाएं पर्यटन उद्योग के विकास हेतु अति आवश्यक हैं।

प्रमुख दर्शनीय स्थान

वायु मार्ग से जेद्दा, रियाद अथवा दम्माम पहुंचा जा सकता है, फिर वहां से देश के किसी भी कोने में टैक्सी अथवा वातानुकूलित बसों से जाया जा सकता है। समुद्र मार्ग से भी जेद्दा पहुंचा जा सकता है।

रियाद- यह सऊदी अरब की राजधानी है। विभिन्न देशों के दूतावास यहां हैं। आकर्षक भवन,
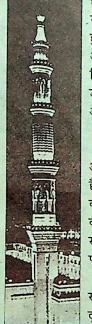
आधुनिक तकनीक से निर्मित वातानुकूलित विशाल सुपर मार्केट, संग्रहालय तथा हवाई अड्डा दर्शनीय है।

जेद्दा- सऊदी अरब की व्यावसायिक राजधानी। जेद्दा समुद्र तट के किनारे पर है। यह विश्व के सुंदर शहरों में से एक है। समुद्र तट से कुछ हटकर किनारे-किनारे अनेक स्थानों पर सीमेंट तथा लोहे से निर्मित सुंदर आकृतियां दर्शकों को अपनी ओर बरबस आकर्षित करती हैं। समुद्र तट पर कार्निश है। सर्कस, मनोरंजन के अनेक साधन , एवं रेस्टोरेंटों की श्रृंखला भी समुद्र किनारे है। पूरा शहर अत्यंत स्वच्छ एवं सुंदर है। रात्रि में भी अधिकांश दुकानें तथा सुपर मार्केट्स जगमगाते रहते हैं। चौड़ी-चौड़ी सड़कों के मध्य सुंदर वृक्षों पर बिजली से सजावट दर्शनीय है। सोने की बहुत बड़ी मार्केट है जहां कतारबद्ध दुकानों पर सजे हुए स्वर्णाभूषण रोशनी में अपनी छटा बिखरते हुए मन को भाते हैं।

जेद्दा शहर का हवाई अड्डा अत्यधिक बड़ा है क्योंकि विश्व के कोने-कोने से आनेवाले हज यात्री यहीं उतरते हैं। फिर सड़कमार्ग द्वारा मक्का के लिए प्रस्थान करते हैं।
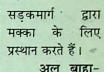
अल बाहा- पहाड़ की एक चोटी पर स्थित छोटा , परंतु सुंदर पर्यटन स्थल है। यहां की जलवायु ठंडी है। ग्रीष्मकालीन अवकाश के लिए यह उपयुक्त है। तलहटी से चोटी तक पहुंचने के लिए लगभग 14 सुरंगें पहाड़ों के मध्य से निकाली गयी हैं।

तैफ- यह प्राचीन शहर है जो समुद्र तल से लगभग पांच से छह हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित पहाड़ी भू-भाग में फैला है। प्राचीन समय में समुद्री मार्ग से मक्का हज करनेवाले तीर्थ यात्री इसी शहर को अंतिम पड़ाव मानते थे तथा यहां मुंडन होने तथा सफेद पवित्र वस्त्र अलहेरम पहनने के पश्चात् मक्का के लिए प्रस्थान करते थे। तैफ की तलहटी के पास ही मक्का स्थित है। तैफ को फूलों का शहर भी कहा जाता है क्योंकि यहां बड़ी मात्रा में फूलों विशेषतः गुलाब की खेती होती है जिससे इत्र निकाला जाता है। आज यह शहर हरे-भरे पार्कों एवं सुंदरता के कारण अनेक पर्यटकों का पसंदीदा स्थल है। दूसरा कारण इसका

जेद्दा एवं मक्का के निकटस्थ होना भी है। यहां हवाई अड्डा भी है। जलवायु ठंडी है, अतः ग्रीष्मकालीन अवकाश हेतु उपयुक्त है।

आभा- असीर प्रदेश में स्थित आभा शहर पहाड़ के ऊपर का समुद्र तट से लगभग आठ हजार फीट की ऊंचाई पर बसा एक सुंदर हिल स्टेशन है। सड़क तथा वायु मार्ग द्वारा यहां पहुंचा जा सकता है। गर्मी के मौसम में यहां एक बड़ी नुमाइश लगती है जिसमें अनेक देशों के प्रमुख उत्पाद प्रदर्शित होते हैं। यहां पर्यटकों के लिए रोप वे, गोल्फ तथा ग्लाइडिंग भी रोमांच पैदा करती है।
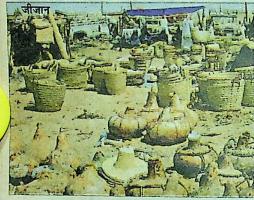
जीजान

सुदा- यह सऊदी अरब में सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित एक हिल स्टेशन है। यहां पांच सितारा आभा इंटरकांटिनेंटल होटल राजभवन के प्रांगण में स्थित है। कई छोटे होटलों की श्रृंखला भी है। सुदा प्रकृति की हरियाली से परिपूर्ण है जिसके कारण यह स्थल सऊदी अरब में अपना एक अलग स्थान रखता है।

अल-फुरसान- यह लाल सागर में स्थित एक द्वीप है, जहां पहुंचने का अपना एक रोमांच है। समुद्र किनारे स्थित यमन देश के समीप एक शहर जीजान से पानी के जहाज द्वारा अल फुरसान द्वीप तक सात-आठ घंटे की यात्रा के पश्चात पहुंचा जा सकता है। जहाज पर अपनी कार भी बुक करवाकर साथ में ले जा सकते हैं। रात्रि को अल फुरसान द्वीप से समुद्र के दूसरे किनारे पर बसे सूडान की जलती हुई रोशनी साफ दिखायी पड़ती है। अब सऊदी सरकार ने जीजान से अल फुरसान द्वीप तक हैलीकॉप्टर सेवा प्रारंभ कर दी है, जिससे समय की तो बचत होती ही है, आप एक रोमांचक यात्रा वायु मार्ग से करने का आनंद और उठा सकते हैं। सऊदी अरब में पर्यटन स्थलों का अवलोकन एवं आनंद उठाने के साथ-साथ यदि पर्यटक चाहें, तो डेजर्ट सफारी की रोमांचक यात्रा का लुत्फ ऊंट पर चढ़कर उठा सकते हैं।

पर्यटकों के लिए सऊदी अरब में समस्त प्रकार की खाने-पीने की वस्तुएं मिल जाएंगी। कहीं भी कमी नहीं है। सब्जी, फल, दालें, रोटी, जूस, दूध, घी, मक्खन, मट्ठा, आदि समस्त सामिष-निरामिष वस्तुएं मिलती हैं। जापान, चीन एवं अन्य अनेक देशों की निर्मित वस्तुएं भी

बाजार में उपलब्ध हैं। सोने की गिन्नी, बिस्कुट तथा तैयार आभूषणों की विस्तृत वैरायटी महिलाओं को अत्यधिक ललचाती है।

-100, बनारसीदास एस्टेट, तिमारपुर, दिल्ली-54

ग्लैमरस रवीना एक सामाजिक कार्यकर्ता भी है
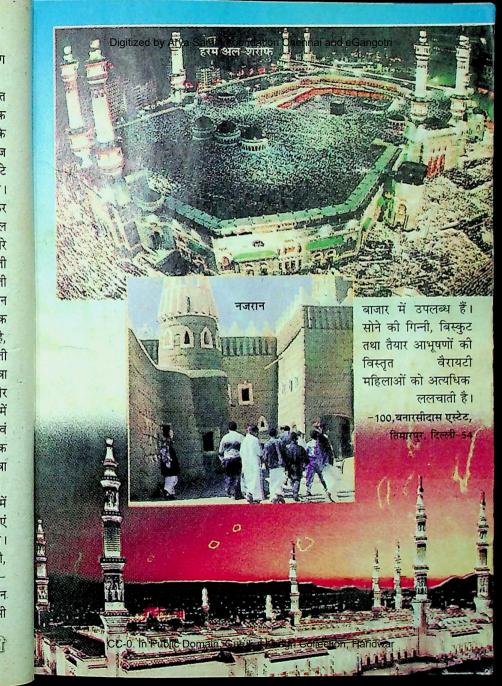
रवीना टंडन मात्र 'ग्लैमरस डॉल' नहीं हैं। वह ग्लैमरस होने के साथ संवेदनशील अभिनेत्री हैं और कई गैर सरकारी तथा सामाजिक संगठनों के साथ कार्य कर रही हैं। यह बता रही हैं सौम्या

रवीना टंडन की खास पहचान है। वह ग्लैमरस होने के साथ संवेदनशील अभिनेत्री हैं। अभिनय के लिए उन्हें छोटे-बड़े कई पुरस्कारों समेत राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुका है। पिछले दिनों 'सत्ता' में सामान्य लड़की से राजनीतिज्ञ बनी अनुराधा की भूमिका में उन्होंने प्रभावित किया। अब वह सिर्फ ग्लैमरस रोल और फिल्मों तक सीमित नहीं हैं। वह प्रयोग करने की हिम्मत रखती हैं और उसमें सफल भी हो रही हैं। उम्र, अनुभव और समझदारी ने उन्हें दूसरी समकालीन अभिनेत्रियों की तुलना में परिपक्व कर दिया है। यही कारण है कि वह एक नागरिक की हैसियत से अपने कार्य के प्रति सचेत और जागरूक हैं।

अभिनेत्री बनाम सामाजिक कार्यकर्त्ता

उनसे पिछली मुलाकात अंधेरी पूर्व स्थित

आराधना स्टूडियो में हुई। वहां वह अपनी नयी फिल्म 'स्टंप्ड' की डबिंग कर रही थीं। क्रिकेट और कारगिल से संबंधित उनकी यह फिल्म कुछ सवाल खड़े करती है। क्रिकेट की दीवानगी में हम देश की रक्षा में शहीद हुए जवानों तक की परवाह नहीं करते। रवीना टंडन के व्यक्तित्व और सोच में आये फर्क का नतीजा है, यह फिल्म। उनकी बातचीत और चिंताओं से भी लगता है कि अब वह हिंदी फिल्मों की 'ग्लैमरस डॉल' मात्र नहीं रह गयी हैं। अभिनय के साथ ही फिल्म निर्माण में उतरने के अलावा वह कई गैर सरकारी और सामाजिक संगठनों के साथ कार्य कर रही हैं। उन्हें बच्चों से खास लगाव है। बच्चों के उत्थान के लिए सक्रिय क्राई (चाइल्ड रिहैबिलिटेशन एंड यू) की वह एंबैसडर हैं। वह जानवरों के प्रति दया दिखानेवाली संस्था 'पेटा' में भी सक्रिय हैं।

और भी गम हैं जमाने में...

फिल्मों से अलग उनकी इस सक्रियता और सच को समझने के लिए बगैर किसी लाग-लपेट या भूमिका के मैंने उनसे सीधा पूछा। मुझे आशंका थी कि शायद वह इन मुद्दों पर बातें करना पसंद न करें। फिल्मों से जुड़े अधिकांश लोग तात्कालिक हित और फायदे पर ज्यादा ध्यान देते हैं। हीरोइनों की बातचीत का दायरा और भी स्वकेंद्रित होता है। उनके लिए फिल्मों से बाहर की दुनिया बेमानी होती है। मेरी आशंका के विपरीत न केवल रवीना टंडन ने जवाब दिया, बल्कि अपनी खास रुचि भी जाहिर की। ऐसा नहीं है कि सामाजिक कार्य रवीना टंडन का कोई नया शगल है। पाठकों को शायद मालूम हो कि रवीना टंडन की दो बेटियां हैं। दोनों इस साल हाई स्कूल की परीक्षाएं दे रही हैं। है न, अजीब-सी बात। जिसकी अभी खुद शादी नहीं हुई, वह दो-दो बेटियों की परवरिश करे! रवीना बताती हैं,"मैंने उनकी पैदाइश देखी थी। शायद हर औरत के अंदर ममता होती है। मैं तब छोटी उम्र की थी, मगर उन्हें अपने घर ले आयी। मुझे उन पर इतना प्यार आया कि मुझे लगा कि उन्हें अच्छी जिंदगी मिलनी चाहिए। मैंने अपनी तरफ से उन्हें वह माहौल दिया।" दूसरों के लिए कुछ करने की यह भावना रवीना टंडन में आरंभ से थी। इस भावना ने ही घोर इमोशनल झटके के समय उन्हें संबल और सहारा दिया। 1994 में मंगेतर अक्षय कुमार से सगाई टूटने के बाद वह निहायत अकेली और असुरक्षित हो गयी थीं। ऐसे नाजुक वक्त में रवीना को बिखरने से उनके इस एहसास ने बचाया कि 'और भी गम हैं जमाने में मोहब्बत के सिवा।' न केवल मोहब्बत, बल्कि फिल्मों से बाहर की

दुनिया को उन्होंने नये सिरे से देखा।

समझाने के अंदाज में रवीना बताती हैं, "प्यार में झटका लगा तो मुझे जिंदगी से मोहब्बत हो गयी। मैंने अपने आसपास की चीजों में रुचि लेना शुरू किया। ऐसा लगा कि दुनिया में इतने सारे काम हैं। हम उनमें शामिल हो सकते हैं और महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं।" शुरूआत साफ-सफाई के अभियान से हुई। वह अपने मुहल्ले की सफाई कमेटी में शामिल हो गयीं। रवीना के शामिल होने से साफ-सफाई अभियान को पर्याप्त प्रचार और बल मिला। उन्हें देखकर मुहल्ले के दूसरे कथित संभ्रांत लोग भी इस अभियान में बेहिचक आये। देखते-ही-देखते सफाई का संदेश असर कर गया। रवीना ने इससे सबक लिया।

सफाई अभियान की सफलता

वह बताती हैं, "सफाई अभियान की सफलता से मुझे लगा कि मशहूर हस्तियों को सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेना चाहिए। हम लोग किसी कार्य में शामिल होते हैं तो उसे अच्छा मीडिया कवरेज मिलता है। इस कवरेज से उस मुद्दे के प्रति सभी की जागरूकता बढ़ती है। दूसरे अनिच्छुक लोग भी सक्रिय होते हैं। मुहल्ले के सांफ-सफाई अभियान में मुझे इसका प्रत्यक्ष अनुभव मिला। मुझे ऐसे कार्यों के लिए कोई बुलाता है तो मैं सहर्ष जाती हूं। फिल्म जगत के अपने साथियों से आग्रह करती हूं कि वे भी ऐसे अभियानों और मुद्दों में शामिल हों। भले ही उसके लिए कुछ पैसे मिल रहे हों तो वह ले लें। मेरा तो यह कहना है कि पैसे मिलें या न मिलें, हमें अपनी व्यावसायिक जिंदगी से थोड़ा वक्त समाज के लिए निकालना चाहिए।"

सामाजिक कार्यों का समर्थन

वह और स्पष्ट करने के उद्देश्य से बताती हैं, "सामाजिक कार्यकर्ता बगैर किसी प्रचार की लालसा से ईमानदारी से अपना काम करते रहते हैं। अब मैं अगर आप से उन्हें सहयोग देने का आग्रह करूं और आपका सहयोग भी मिले तो भी सिर्फ एक व्यक्ति का सहयोग होगा। दूसरी तरफ किसी अभियान में किसी मशहूर व्यक्ति के शामिल होने से उसके प्रशंसक

खास उल्लेख किया। नतीजा यह हुआ कि उस संस्था के लिए मददगारों की कतार लग गयी। रवीना संतुष्ट भाव से कहती हैं, ''वैसा सुख मुझे अपनी फिल्म की सिल्वर जुबली से भी नहीं मिला

और समर्थक भी उस अभियान से जुड़ जाते हैं। बहुत फर्क पड़ता है। एड्स के संबंध में जागरूकता फैलाने में फिल्मी हस्तियों के योगदान को ही देख लें। पिछले दिनों अमितजी (अमिताभ बच्चन) ने पोलियो टीका के लिए आह्वान किया तो उसे बहुत जन समर्थन मिला।'' ऐसे ही कारणों से रवीना टंडन ने 'क्राई' का एंबैसडर बनना स्वीकार किया। वह उनकी गतिविधियों में नियमित हिस्सा लेती हैं। इससे उन्हें गहरी संतुष्टि मिलती है। उन्हें लगता है कि वह समाज के किसी काम तो आ रही हैं।

अच्छा काम करने की कोशिश

वह एक और उदाहरण देती हैं। दो-ढाई साल पहले गोविंदा द्वारा प्रस्तुत 'जीतो छप्पर फाड़ के' में वह गयी थीं। इस खेल प्रतियोगिता में जीता इनाम उन्होंने मुंबई के मड आइलैंड में स्थित एक संस्था को दान में दे दिया और अपने इंटरव्यू में उसका

था।'' दूसरों के लिए इतने काम कर रही रवीना टंडन कभी ढिंढोरा नहीं पीटतीं कि वह क्या-क्या कर रही हैं। वह तो ऐसी बात चली तो वह बताती चली गयीं। इस बातचीत के बाद उनका आग्रह था कि मुझे देवी बनाकर पेश मत करना। मैं भी दूसरों की तरह आम इंसान हूं। मुझ में सारी बुराइयां और कमजोरियां भी हैं। मेरी तो बस इतनी कोशिश रहती है कि दिन में एक अच्छा काम जरूर कर लूं।

आप बताएं ? आप क्या सोचते हैं इस ग्लैमरस 'शहर की लड़की' के बारे में जो 'अंखियों से गोली' मारती है और अपनी अदाओं से दर्शकों को बेसुध कर देती है? उसके अंदर भी एक इंसान का दिल धड़कता है। है न?

- 504-बी, तिलक गार्डन,
फिश मार्केट के पास, चारकोप,
कांदिवली (पश्चिम) मुंबई 400067

साधारण भिखारी को लोग दुत्कारते हैं मगर नेट पर न केवल भीख मांगना आसान है बल्कि दाता लोग भीख उदारता से दे भी देते हैं। पांच हजार से ज्यादा साइटों पर आजकल भीख मांगने का यह धंधा चल रहा है। बता रहे हैं-

प्रतीक पांडे

भिखारी को नहीं, नेट-भिखारी को भीख मिल जाती है

आप कर्ज में आकंठ डूबे हुए हैं अथवा आपके कुत्ते को गंभीर बीमारी है अथवा आपको आखिरी बार जुआ खेलना है। इन सभी के लिए आपको धन की आवश्यकता है, जो आपको नहीं मिल पा रहा है। ऐसे में आप क्या करेंगे? संभव है कि आप अपने परिचितों, रिश्तेदारों से मदद की गुहार करें। यह भी संभव है कि आप लॉटरी खेलें या चोरी करें। पर अमेरिका में कई महारथी धन की जुगाड़ में इंटरनेट की शरण में जा रहे हैं। इंटरनेट पर 'भीख' मांगकर वे पूरी दुनिया से अपनी

मदद की गुहार कर रहे हैं। इसके लिए नेट भिखारियों ने इंटरनेट पर बाकायदा अपनी दुकानें सजा रखी हैं।

मजे की बात यह है कि नेट भिखारियों को भीख देनेवालों की भी अच्छी-खासी संख्या है।

सहायता के नाम पर भीख

इंटरनेट पर नेट भिखारियों द्वारा भीख मांगने का तरीका बहुत निराला है। इसके लिए पहले अपनी साइट बनायी जाती है। साइट पर धन मांगने का कारण सविस्तार बताया जाता है। मसलन कुछ भिखारी इसलिए लोगों से धन मांगते हैं क्योंकि उन्हें अपना कर्ज चुकाना है। कुछ लोग दूसरे शहर में बसना चाहते हैं, इसलिए धन मांग रहे हैं। जबकि कुछ लोग तो अपने कुत्ते, बिल्ली तक के लिए नेट पर भीख मांग रहे हैं। साइट पर लोगों के मनोरंजन के लिए कई कंप्यूटर गेम्स, ग्रीटिंग्स व दूसरी व्यवस्थाएं भी होती हैं ताकि 'नेट भिखारियों' की साइटों पर आनेवाले लोग पूरा मनोरंजन कर सकें।

सेवकार्यनडॉटकॉम, सेवबस्टरडॉटकॉम, हेल्पमीलीवमाईहसबेंडडॉटकॉम जैसी पचासों साइटें इंटरनेट पर भीख की मांग कर रही हैं। मजे की बात यह है कि सहायता के नाम पर 'भीख' मांगती ऐसी साइटों की ओर न सिर्फ लोग आकर्षित हो रहे हैं बल्कि अपनी जेब भी ढीली कर रहे हैं। इसका उदाहरण 29 वर्षीय न्यूयॉर्क निवासी कार्यन की साइट पर जाकर देखा जा सकता है। कार्यन ने पिछले वर्ष जब अपने बीस हजार डॉलर के उधार को चुकता करने के लिए नेट पर भीख की गुहार लगायी थी, तो स्वयं उसे भी अंदाजा नहीं था कि वास्तव में इंटरनेट पर सर्फिंग कर रहे 'दानवीर' उसके उधार को चुकता करने में मदद करेंगे। लेकिन अब कार्यन दानवीरों की बदौलत अपने बीस हजार डॉलर के कर्ज से मुक्ति पा चुकी है। इसी प्रकार लॉस एजेंल्स निवासी 26 वर्षीया ब्रियान नोलन ने अपने कर्ज से मुक्ति के लिए नेट पर लोगों से मदद की गुहार की। नवम्बर में जब उन्होंने अपनी साइट बनायी थी, तो उन पर करीब 40,000 डॉलर का कर्ज था। नोलन के मुताबिक अब प्रत्येक सप्ताह वह करीब एक हजार डॉलर दान में पा रही हैं। हालांकि सभी लोग इतने खुशकिस्मत नहीं होते हैं। जरमनी में कंप्यूटर विशेषज्ञ रत शाह बताते हैं कि उन्होंने भी इसी प्रकार का एक प्रयोग किया था, पर पिछले छह महीने में उन्हें मात्र 160 डॉलर ही दान में मिले हैं।

नेट भीख में अमेरिका आगे

अमेरिका और यूरोप में पिछले एक साल में ऐसी कई साइटें अस्तित्व में आयी हैं, जिसमें लोग व्यक्तिगत रूप से अपनी किसी परेशानी से छुटकारे के लिए लोगों से धन मांग रहे हैं। लोगों ने नेट-भीख के लिए अपनी व्यक्तिगत साइटें बनायी हैं और उस पर अपनी सारी समस्याएं बतायी हैं। नेट-भीख के मामले में अमेरिका

विद्यार्थी स
लोग नेट
समस्याओं
रहे हैं औ
उल्लेखनीय
क्रिस्टीन कें
लिए बनायी
भीख
नेट पर
बढ़ा है तो
यही कि
मतलब है,
अमेरिका में
बना रहे हैं
पा रहे हैं।
अमेरिकी म
का मतलब
अपनी मद
निश्चित ज
से नेट भ
मिलेगी भी
लोगों को
मदद इसलि
पेमेंट क्रेडि
की समस्य
अपनी जेब
हैं। इसके अ
मानना है कि
जेब कुछ
साइट पर उ
गौरतल

विद्यार्थी सबसे आगे हैं। इसके अलावा कुछ लोग नेट पर अपने कुत्तों, बिल्लियों की समस्याओं को दूर करने के लिए धन मांग रहे हैं और उन्हें भी लाभ हो रहा है। उल्लेखनीय है कि सेवबस्टर डॉट कॉम क्रिस्टीन केंट की बिल्ली बस्टर की मदद के लिए बनायी गयी साइट है।

भीख का भूमंडलीकरण

नेट पर भीख मांगने का प्रचलन तेजी से बढ़ा है तो इसकी कुछ वजहें हैं। पहली तो यही कि नेट पर भीख मांगने का साफ मतलब है, भीख का भूमंडलीकरण। लोग अमेरिका में बैठकर मदद के लिए साइट बना रहे हैं और यूरोप और भारत से मदद पा रहे हैं। इसी प्रकार भारतीय भिखारी अमेरिकी मदद के लिए तरस रहे हैं। कहने का मतलब यह है कि आप कहीं भी बैठकर अपनी मदद की गुहार लगा सकते हैं। निश्चित जानिए कि अगर आप पूरी शिद्दत से नेट भीख मांगेंगे तो आपको भीख मिलेगी भी। नेट विशेषज्ञों का मानना है कि लोगों को नेट पर मदद की गुहार करने पर मदद इसलिए मिल जाती है क्योंकि सारा पेमेंट क्रेडिट कार्ड से होता है। लोग किसी की समस्या सुनकर पसीज जाते हैं और अपनी जेब से दो-चार डॉलर ढीले कर देते हैं। इसके अलावा कुछ दानवीरों का यह भी मानना है कि भले ही भीख में उन्होंने अपनी जेब कुछ ढीली की हो, पर इसके बदले साइट पर उन्हें कुछ मनोरंजन तो मिला ही।

गौरतलब है कि नेट भिखारियों की कुछ साइटों पर तो उनकी समस्याओं के अलावा कई कंप्यूटर गेम्स, वालपेपर, स्क्रीन, सेवर, नयी जानकारियां आदि भी हैं। अमेरिका में ऐसे मामलों पर नजर रखनेवाले विशेषज्ञ पेकिन हाकिन्स कहते हैं, "ऐसा नहीं है कि सभी भिखारियों के वारे-न्यारे ही हो रहे हों, पर उनकी साइटों को हिट्स मिल रहे हैं। और पांच हजार से अधिक साइटें फिलहाल साइबर दुनिया में भीख मांग रही हैं।"

घर बैठे भीख

भारत में अभी इंटरनेट पर भीख मांगने और भीख देने का प्रचलन फिलहाल अधिक नहीं है, पर कुछ अक्लमंद इस दिशा में भी काम कर रहे हैं। दिल्ली की एक कंप्यूटर कंपनी में काम कर रहे विवेक द्विवेदी कहते हैं आमतौर पर ऐसे प्रयोगों में भारतीयों की नीयत पर संदेह किया जाता है। नेट पर भीख मांगना चोखा धंधा भी साबित हो सकता है। एक साल में यदि आपको घर बैठे 1000 डॉलर मिल गये तो आपके लिए तो यह बात हींग लगे न फिटकरी और रंग चोखा होय वाली कहावत सरीखी होगी। फिर इस भीख में आपकी पहचान संदिग्ध रहती है। सड़क के भिखारी की तरह आप कटोरा लेकर भीख नहीं मांगते, पर फिर भी मोटी रकम पीटते हैं। इससे अच्छा और क्या हो सकता है।

– ए-736, कमला नगर,
आगरा

कथा-प्रतिमान

'कथा-प्रतिमान' स्तंभ के अंतर्गत हर बार हिंदी के वरिष्ठ तथा प्रतिष्ठित लेखक अपनी पसंद की एक कहानी विश्व साहित्य या भारतीय साहित्य से प्रस्तुत कर रहे हैं। पिछले अंकों में आपने प्रसिद्ध कथाकार निर्मल वर्मा और विख्यात लेखिका कृष्णा सोबती द्वारा चुनी गयी कहानियां पढ़ीं। इस बार सुप्रतिष्ठित लेखक अमरकांत, अरविन्द बिन्दु की हिंदी कहानी 'रूमाल' को अपनी टिप्पणी के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं

'रूमाल' के बारे में

अच्छी कहानियां विदेश में ही नहीं लिखी जातीं, इस देश की अन्य प्रादेशि[क] भाषाओं तथा हिंदी भाषा में भी लिखी गयी थीं और लिखी जा रही हैं। पचास के द[शक] में जब कहानी पत्रिकाएं बहुत कम थीं, नये लेखक की किसी अच्छी कहानी पर ध्[यान] फौरन चला जाता था और वह उसी के बल पर ख्यात समझा जाता था और हो जाता था। मुझे याद आता है, 'कहानी' पत्रिका के जमाने में रामनारायण शुक्ल, मधु[कर] गंगाधर, प्रयाग शुक्ल, प्रतिमा वर्मा आदि अनेक नये लेखक अपनी-अपनी पहली कहानी के प्रका[शन] के बाद ही तत्कालीन कहानी साहित्य की चर्चाओं में शामिल किये जाने लगे थे।

आज वैसा नहीं है। एक अजीब बिखराव का युग आ गया है, जब काफी बड़ी-बड़ी बातें [की] जाती हैं, लेकिन हमारे जीवन से जो मूल्य लुप्त होते जा रहे हैं, उसका अंदाजा शायद नहीं है। [इस] समय में किसी हिंदी कहानी को मानक के रूप में प्रस्तुत कर देना आसान काम नहीं है, वह भी ऐसे लेखक की ऐसी कहानी, जिससे हिंदी के सामान्य पाठक परिचित न हों। इसके साथ आलोचक या समीक्षक अथवा निर्णयकर्ता की अपनी सीमाएं भी हैं। स्वयं मेरी सीमाएं तो और हैं-ऐसे में, मैं एक नये हिंदी लेखक की कहानी 'रूमाल' पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहा हूं। [यह] रचना करीब तीन वर्ष पूर्व 'साक्षात्कार' मासिक में छपी थी और इलाहाबाद में मार्कण्डेय, र[...]

कालिय[...]
1. इ[...]
यह पा[...]
व्यक्ति-[...]
2. क[...]
रचना [...]
है। श[...]
है।
3. [...]
चित्रक[...]
है, जो[...]
हमारे [...]
को अ[...]
4. [...]
सूक्ष्म [...]
की क[...]

रूमाल

अरविन्द बिन्दु

आज ही मुझे अपने शहर लौटना था। मेरी गाड़ी शाम साढ़े छह पर छूटती है। मैं ठीक समय स्टेशन पहुंच गया और गाड़ी में प्रवेश कर गया। थोड़ी देर बाद वह चलने लगी। मेरे करीब पांच-छह लोग बैठे थे, जो ताश खेलने में मशगूल थे। भाग-दौड़ और शहर के प्रदूषण से मेरे सिर में दर्द और एक अजीब-सी थकान थी।

थोड़ी देर मैं आंखें बंद करके बैठा रहा, फिर मैगजीन निकाल कर एक लेख देखने लगा। अगले स्टेशन पर चाय ली, बस ये लगे कि जल्दी ही इलाहाबाद आये। तीन घंटे काटने थे, सिर-दर्द बढ़ता ही जा रहा था। तनाव में हलका-सा सिगरेट की तरफ ध्यान गया, मगर कंपार्टमेंट में नहीं पीना चाहता था।

सामने से एक सज्जन ने सिगरेट निकाली और

कालिया तथा कुछ अन्य लेखकों को पसंद भी आयी थी।

1. इस काहनी की एक खूबी तो यही है कि किसी समीक्षा से भी इसको क्षति पहुंच सकती है। यह पाठक के स्वयं पढ़ने, महसूस करने तथा इसकी संवेदना के तल तक पहुंचने की रचना है। व्यक्ति-व्यक्ति के अनुसार इसके अनेक आयाम हो सकते हैं।

2. कला की एक खूबी है अवलंबन की सूक्ष्मता। स्थूल अवलंबन कला को क्षति पहुंचाता है। इस रचना में कथानक, चरित्र-चित्रण, चमत्कार, मनोविज्ञान, सिद्धांत आदि का सहारा नहीं लिया गया है। शब्दों का सहारा अत्यल्प है। एक अनजान रूमाल है, जिस पर दुर्लभ मानवीय संवेदना अवलंबित है।

3. इस अवसरवादी, विघटनकारी तथा आतंककारी एवं भाग-दौड़ के समय में यह कहानी एक चित्रकार की तरह कुछ विरल रेखाओं द्वारा ऐसे विश्वास, प्यार तथा प्रतिबद्धता का रूप निर्मित करती है, जो हमारे जीवन से गायब होते जा रहे हैं। यही चिंता नहीं कि विश्वास, प्यार और कमिटमेंट हमारे अंदर अक्षुण्ण रहें, बल्कि किसी भी अन्य बात से, हमसे जुड़े दूसरे व्यक्ति की वैसी भावनाओं को आहत भी न करे कभी भी।

4. यह एक आधुनिक कहानी है। इसमें फालतू के शब्द नहीं हैं और जो छोटे-छोटे, विरल और सूक्ष्म वाक्य हैं, वे अभिव्यंजना तथा अभिव्यक्ति में सक्षम, सशक्त एवं गहन संवेदनायुक्त हैं। यह आज की कहानी है और आगे तक जाती है।

– अमरकांत

जलायी, तो मेरे सीने में दर्द ही उठा। दर्द का कारण क्या था? लेकिन मैं सशंकित हो गया। आदमी शरीफ लगे, आग्रह पर उठकर दरवाजे के पास चले गये।

फिर मैं नॉर्मल होकर एक लेख पढ़ने लगा। दर्द की स्थिति वैसी ही थी, पर घर जाना था, सफर ठीक लग रहा था। इसी बीच मेरे दिमाग में एक सवाल पैदा हुआ, मुझे गाड़ी में कुछ हो जाता है तो मेरी शिनाख्त कैसे होगी? कहीं ऐसा तो नहीं, मुझे लावारिस समझ बैठें? लेकिन ऐसा नहीं, खुद को समझाया।

अपने पहने हुए कपड़े और रखे समान पर मेरा ध्यान गया, जो शिनाख्त के लिए पर्याप्त था। मेरी डायरी, शर्ट की जेब में रखी थी, जिस पर मेरे घर का पता था। पैंट की जेब में एक रूमाल था, जिसे मेरी पत्नी ने लखनऊ आते समय दिया था। एक पेन जिसे मैं हमेशा इस्तेमाल करता था।

अब मैं सामान्य तरीके से इधर-उधर देखने लगा। तब मेरा ध्यान पैंट के पीछेवाले पॉकेट पर गया, उस जेब में एक और रूमाल था, सोचा शिनाख्त में दो रूमाल पाये जाएंगे। जब दूसरे रूमाल की खूबियों पर गौर किया तो मैं दहशत में आ गया, अगर यह जेंट्स रूमाल होता तो कोई खास बात न होती।

मैं परेशान हो गया, शिनाख्त में इस रूमाल का स्पष्टीकरण कौन देगा? समस्या गंभीर हो गयी। मैं किसी घटना, प्रसंग, हास्य या बिंदु की तलाश करने लगा, शायद इस सोच से बरी हो जाऊं। इधर-उधर दिमाग और सर घुमाया। मगर मैं रूमाल और अपने अनिश्चित जीवन के कशमकश में फंस गया, दूसरी बात का दिमाग में प्रवेश करना कठिन हो गया।

कहां जाऊं, समझ नहीं पा रहा था। मैंने ताश खेलनेवालों पर अपने को केंद्रित किया, उन्हें निश्चिंत देखकर, मुझे अपने पर गुस्सा आया। भय में शक्ति ज्यादा थी, क्रोध काफूर हो गया।

मैं उठा और चल दिया। क्यों उठा, कहां चला, दरवाजा खोलने पर पता लगा, मैं टॉयलेट में आ गया। दरवाजा बंद करने की कोशिश की तो घबरा गया, तुरंत बाहर निकल आया, वाशबेसिन के पास गया और बिना इस्तेमाल किये अपनी जगह पर आकर बैठ गया।

मैं उस विश्वास के बारे में सोचने लगा, जो मेरे व्यक्तित्व का एक अंग था। सिद्धांतों

की धज्जियां उड़ते देखीं, सोचा वहां क्या होगा, जहां दूसरे की जिंदगी के साथ मेरा विश्वास जुड़ा है। मेरे प्रति एक आस्था है।

आधा सेकेंड भी रूमाल रखना मुझे रिस्की लगा। रूमाल खूबसूरत और सोबर था, आकर्षक होने के साथ सवालिया भी।

इस घुटन से मेरी परेशानी बढ़ती जा रही थी। कोई ऐसा वाकया नजर नहीं आ रहा था, जिस पर मैं विचार कर सकूं।

मेरे ठीक सामने एक व्यक्ति बैठे थे, जो ताश खेलनेवालों की टीम में शामिल थे।

उन्होंने धीरे से कहा, ''आपको मैंने हजरतगंज में देखा है।''

मेरे सोचने की रफ्तार में उनके हस्तक्षेप से थोड़ी राहत मिली।

मैंने कहा, ''इस देश में हम और आप दोनों ही हैं, संभव है आपने देखा हो। वैसे मैं इलाहाबाद का रहनेवाला हूं।''

''मैं भी वहीं का हूं।''
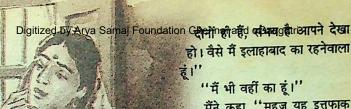
मैंने कहा, ''महज यह इत्तफाक है कि आपने लखनऊ में देखा और मुलाकात गाड़ी में हुई।''

जब मेरा प्रोफेशन पूछा और मैंने बताया तो उन्होंने ऐसे अंदाज में 'अच्छा' कहा, जैसे ट्यूब से हवा निकल गयी हो। फिर आंखें बंद कर लीं।

अब मेरी परेशानी का यह आलम था कि मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा था। इस चक्रव्यूह से मैं निकलना चाहता था।

इतनी देर में अगला स्टेशन आया। सोचा, थोड़ा बाहर चलें। मैं अपने ही कंपार्टमेंट के सामने एक मिनट टहला, फिर अंदर आकर बैठ गया। चाय पीने की भी इच्छा नहीं हुई।

मैंने रूमाल को फेंकने का निश्चय किया और मन-ही-मन फेंकने उठ चला। शरीर अभी उठानेवाला ही था, तब तक दो व्यक्तियों को प्रवेश करते देखा। वे बंदूक से लैस और अपनी नुकीली मूंछों से अपने पुरुषार्थ का इजहार कर रहे थे। दोनों जगह की तलाश करने लगे, फिर तुरंत जाकर एक तीसरे व्यक्ति को ले आये। उन्हें एक साइड में बैठा दिया। व्यक्ति लंबे, चौड़े, गोरे, खद्दर का कुरता-पैजामा पहने, उनके आका मालूम पड़े। उनकी मूंछ नहीं थीं, मगर उसकी वाणी

उन दोनों की मूंछों की ही तरह तीखा था।

गाड़ी ने स्टेशन छोड़ दिया। मुझे लगा, मैं इनके बारे में कुछ सोच सकता हूं, फिलहाल मेरा रूमाल फेंकना स्थगित हो गया।

जगह पर्याप्त न मिलने से उन दोनों के आका ने अप्रत्यक्ष रूप से अनर्गल बातें करनी शुरू कर दीं, उसने कभी रेलवे विभाग को, तो कभी जनता को गरियाया, शायद उन दोनों को भी अपने साथ बैठाना चाहता था।

मैंने अनुमान लगाया, इस व्यक्ति की जगह अगर कोई भेड़िया हो और वह मनुष्य की भाषा में बात करता हो तो ठीक ऐसी ही बात करता।

तीनों अपने को राक्षस प्रमाणित करने में लगे थे।

अभी मैं उनके बारे में कुछ सोचता, तब तक गाड़ी एक छोटे स्टेशन पर खड़ी हुई और तीनों उतर गये। ऐसा महसूस हुआ, जैसे कोई अधूरा नाटक देखा हो।

गाड़ी आगे बढ़ने लगी, मेरा दिमाग थोड़ा उन तीनों के संदर्भ में फंसा रहा। थोड़ी देर बाद फिर भय का एहसास हुआ।

घड़ी देखी, ढाई घंटे गुजर गये। लगा रूमाल के साथ इतने घंटे घसीटता चला आया।

इच्छा हुई बगल के किसी व्यक्ति को मैं यह सब बता दूं। मगर मुझे पागल समझे जाने का भी डर था।

मैं रूमाल को अपनी जेब से निकालकर देखने लगा। वह छोटा मगर भव्य था। उसे देखने के बाद सुरक्षित रखने की इच्छा हुई, अकारण ही किसी खूबसूरत चीज को फेंकना मुझे अच्छा भी नहीं लग रहा था, लेकिन उत्पन्न हुए सवाल से मैं परेशान था।

बोगी में ही एक सिरे से दूसरे सिरे तक गया, भय पूरे तरीके से व्याप्त था।

मैंने सोचा, अगर मालिक है, तो मुझे देखकर अवश्य मुसकरा रहा होगा। प्रसन्न होगा और प्रसन्नता में वह इस तरह की बातों को अंजाम नहीं देगा, लेकिन क्या ठिकाना, प्रसन्नता में वह कैसा व्यवहार करता है, इसका ज्ञान भी तो नहीं था।

इस सोच पर हल्का-सा सुकून मिला, जो स्थायी नहीं रहा। गाड़ी की रफ्तार धीमी हुई, शायद कोई छोटा स्टेशन था। मैंने एक बारात देखी। गाड़ी रुकी

नहीं, मैं अपनी शादी के बारे में सोचने लगा। सारे कमिटमेंट और बीते हुए समय पर गौर करने लगा। शादी कैसे हुई, फिर शादी के बाद मेरे प्रति विश्वास, जो सही सलामत है, पर जिसका अकारण ही कुछ समय बाद विध्वंस हो जाएगा।
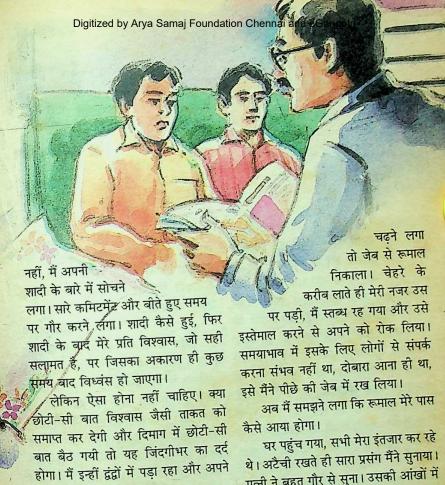
लेकिन ऐसा होना नहीं चाहिए। क्या छोटी-सी बात विश्वास जैसी ताकत को समाप्त कर देगी और दिमाग में छोटी-सी बात बैठ गयी तो यह जिंदगीभर का दर्द होगा। मैं इन्हीं द्वंद्वों में पड़ा रहा और अपने शहर पहुंच गया।

बाहर निकलकर मैंने रिक्शा किया।

रूमाल मेरी जेब में कैसे आया, इस पर विचार करने लगा। कहां-कहां गया, कौन-सी स्थिति और स्थान था।

जब मैं शिक्षा निदेशालय की सीढ़ियां चढ़ने लगा तो जेब से रूमाल निकाला। चेहरे के करीब लाते ही मेरी नजर उस पर पड़ी, मैं स्तब्ध रह गया और उसे इस्तेमाल करने से अपने को रोक लिया। समयाभाव में इसके लिए लोगों से संपर्क करना संभव नहीं था, दोबारा आना ही था, इसे मैंने पीछे की जेब में रख लिया।

अब मैं समझने लगा कि रूमाल मेरे पास कैसे आया होगा।

घर पहुंच गया, सभी मेरा इंतजार कर रहे थे। अटैची रखते ही सारा प्रसंग मैंने सुनाया। पत्नी ने बहुत गौर से सुना। उसकी आंखों में चमक और चेहरे पर मेरे प्रति एक ऐसा विश्वास दिखा, जिसे किसी संज्ञा की परिधि में रखना संभव नहीं है।

– सी-862, गुरु तेग बहादुर नगर (करेली),
इलाहाबाद

विधि

अरविन्द जैन

मकान कैसे खाली हो

मैं अपने माता-पिता की इकलौती वारिस हूं। मेरे पिता दो भाई हैं। मेरी मां के नाम 200 गज का एक प्लॉट था। कुछ साल पहले मेरी मां मर गयी। मेरे पिता ने उस प्लॉट की एटॉर्नी मेरे नाम करके कहा कि मैं इस प्लॉट का आधा हिस्सा (100 गज) उनके छोटे भाई के नाम लिख दूं क्योंकि वह अब अपने भाई के साथ ही उस प्लॉट में रहेंगे। मैंने एटॉर्नी अपने चाचा के नाम कर दी। कुछ साल पहले मैंने अपने हिस्से के प्लॉट पर ऋण लेकर मकान बनवा दिया। मेरे पिता ने कहा कि जब तक वे चाचा के नाम किये गये प्लॉट के दूसरे हिस्से में मकान नहीं बनवा लेते, तब तक उन्हें नये मकान में रहने दूं। पिता ने दूसरे हिस्से में मकान बनवाकर उसे किराये पर चढ़ा दिया है और मैंने जो मकान बनवाया था उसे खाली नहीं कर रहे हैं। मेरे पति नहीं हैं और मेरी कमाई से ही परिवार का खर्च चल रहा है। क्या मैं चाचा के नाम की गयी एटॉर्नी कैंसिल करवा सकती हूं ? मैं अपने पिताजी से अपना मकान कैसे खाली करवाऊं?

– संतोष वर्मा, दिल्ली

प्लॉट मां के नाम था तो मृत्यु के बाद पिता ने आपके नाम एटार्नी कैसे की? क्या अदालत से उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र लिया था? खैर...एटॉर्नी कभी भी रद्द की जा सकती है। आप कर सकती हैं तो पिता भी कर सकते हैं। लेकिन पिता के नाम तो प्लॉट था नहीं। अदालत भी जाएं तो आधा प्लॉट आपको मिलेगा, आधा पिता को। चूंकि आपके नाम एटॉर्नी है और आपने ऋण लेकर मकान बनाया है, अतः उसके प्रमाण आपके पास होंगे। हाऊस टैक्स, बिजली का मीटर तथा टैलीफोन वगैरह भी आपके नाम ही होंगे। आप चाहें तो अदालत में कब्जे के लिए मुकदमा दायर कर सकती

हैं और पिता से मकान खाली भी करवा सकती हैं। बेहतर होगा कि आपसी संवाद से मामला सुलझाने की कोशिश करें। न सुलझे तो वकील की सलाह-अनुसार अदालती कार्यवाही का कदम उठायें।

मेरी सास की उत्तराधिकारी उनकी इकलौती पुत्री यानि मेरी पत्नी ही है। उनकी संपत्ति में कुछ कृषि योग्य भूमि और मकान का कुछ भाग आता है। जब मेरे ससुर यानी उनके पति, जो तीन भाई थे, जिंदा थे तो सारी संपत्ति संयुक्त रूप से उन तीनों के नाम थी। अब तीनों भाइयों का स्वर्गवास हो चुका है। तीनों भाइयों के परिवार आपसी सुलह से संपत्ति का बंटवारा करके अलग-अलग हो गये हैं। अत: मेरी सास भी अलग ही रह रही हैं। मेरी सास के अनुसार जमीन के कागजात उनको नहीं मिले हैं लेकिन जमीन पर कब्जा उन्हीं का है और खेती आदि वही करवा रही हैं। क्या मेरी सास ऐसी स्थिति में अपनी संपत्ति की वसीयत अपनी इकलौती पुत्री, यानी मेरी पत्नी के नाम कर सकती हैं? क्या उनकी जायदाद उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी पुत्री को अपने आप मिल सकती है?

– कृष्ण कुमार पाण्डेय, वेस्टकामेग, अरुणाचल प्रदेश

आपकी सास अपनी चल-अचल संपत्ति की वसीयत अपनी बेटी के नाम कर सकती हैं। वसीयत न भी करें तो भी बेटी ही एकमात्र उत्तराधिकारी होने के कारण मृत्यु के बाद संपत्ति पाने की अधिकारी होगी। लेकिन बेहतर होगा कि वसीयत लिखवाकर रजिस्टर्ड भी करवा लें ताकि कोई कानूनी झमेला न हो। विश्वास हो तो आपकी सास जीते जी ही संपत्ति बेटी के नाम करवा सकती हैं। यह सब करने के लिए संपत्ति के बंटवारे के कागजात होने जरूरी हैं, नहीं तो यह पता कैसे चलेगा कि बंटवारे में उनके हिस्से कौन-सी संपत्ति आयी।

मेरी चाची ने पति की मृत्यु के बाद अपनी औलाद व वारिस न होने के कारण पट्टीदार के रिश्ते में देवर तथा भतीजे को अपनी समस्त चल व अचल संपत्ति बराबर-बराबर पंजीकृत वसीयत कर दी। बाद में 1986 की वसीयत को सभी के सहमत होने पर नवंबर 1999 में उपरोक्त संपत्ति के एक हिस्से का बैनामा वसीयतदारों की पत्नियों के पक्ष में बिना धन लिए और बिना वसीयत का उल्लेख किये किया गया। इसके चार व नौ महीने बाद मेरी चाची की बीमारी और कोमा की हालत में गलत तरीके से देवर तथा भतीजे ने मेरे परिवार के लोगों की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर शेष संपत्ति का बैनामा व अपंजीकृत वसीयत अपने ही रिश्तेदारों को शामिल करके करा ली। चाची की मृत्यु उपरोक्त घटना के एक महीने के भीतर हुई।

जब उनसे इस विषय में बात करें तो कहते हैं कि हमने तुम्हारी चाची की बीमारी में जो खर्च किया है, पहले वह दे दो, तभी समझौता हो सकता है। बैनामा में आपत्ति लगाने के बाद भी तहसील स्तर पर उनके पक्ष में दाखिल

खारिज हो चुका है। कृपया बताएं कि यह संपत्ति हमें कैसे मिल सकती है?

– रवीन्द्र दीक्षित, देवरिया

मरने के पहले वसीयत कभी भी, कितनी ही बार बदली जा सकती है। वसीयत करने का अर्थ यह नहीं है कि कोई व्यक्ति अपने जीवनकाल में अपनी संपत्ति बेच नहीं सकता या किसी को उपहार में नहीं दे सकता। मरने के बाद बची संपत्ति को ही वसीयत अनुसार बांटा जा सकता है। अगर कोई संपत्ति बची ही नहीं तो वसीयत होने का क्या अर्थ है? इस संबंध में कोर्ट-कचहरी करने से कोई लाभ नहीं। आपस में बातचीत या पारिवारिक दबाव से ही कुछ समझौता हो सकता है।

हम सभी भाई दिल्ली के शहरीकृत गांव में रहते हैं। जिस जमीन पर हमने अपने जीवनकाल में मकान बनवाये हैं, वह सब संपत्ति पिताजी के नाम थी। पिताजी ने अपने जीवनकाल में ही लिखित (बतौर वसीयत) रूप में बंटवारा करके संपत्ति हमारे नाम करवा दी थी। पिताजी का स्वर्गवास होने के पश्चात हम भाइयों ने मिलकर अपनी संपत्तियों के अधिकारों का एक 'सूट फॉर डिक्लरेशन' दाखिल करके पिताजी के लिखित बंटवारे की पुष्टि (आर्डर) भी अपने अलग-अलग नामों से प्राप्त कर लिया है। बिजली, पानी, गृहकर, तहसील, पटवारी इत्यादि सब प्रकार से अब मैं अपनी संपत्ति का मालिक हूं, जो अलग-अलग स्थानों पर है।

मेरे लड़के, जो [illegible] संपन्न और विवाहित हैं, मेरी उपरोक्त संपत्ति के एक दो सौ मीटर के मकान में पिछले 15 वर्षों से अलग-अलग अपने परिवार के साथ रहते हैं। मैं उपरोक्त संपत्ति में अपने एक अन्य मकान में रहता हूं, जो मेरे लड़कों की रिहायश से अलग है।

मैं यदि अपने मकान का कुछ हिस्सा बेचना चाहूं तो क्या मुझे इसका पूरा अधिकार है? क्या मुझे अपने लड़कों से लिखित रूप में अनापत्ति प्रमाण-पत्र लेना पड़ेगा? तीन में से दो लड़के खरीददारों को धमकी देकर मेरे इस काम में बाधा उत्पन्न करते हैं। क्या मेरे होते हुए उनका मेरी इस संपत्ति पर कोई अधिकार है? कृपया मेरा मार्गदर्शन कर मेरी समस्या का समाधान करें।

– तारा सिंह, नांगल राय, नयी दिल्ली

यदि आप अपने मकान का कुछ हिस्सा या पूरा मकान बेचना चाहें तो बेच सकते हैं। लड़कों से लिखित अनापत्ति प्रमाण-पत्र लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन जिस मकान में लड़के 15 सालों से परिवार सहित रह रहे हैं, वो उसे आसानी से क्यों बेचने देंगे? कोई-न-कोई बाधा जरूर खड़ी करेंगे। खरीददार उनसे खाली कैसे करवाएगा? आपके पास दो मकान हैं। अगर बहुत अधिक आर्थिक जरूरत न हो तो एक मकान में बेटों को रहने दें और दूसरे में खुद रहें। जीवन सुखमय रहेगा। आपको भी तो संपत्ति अपने पिता से ही मिली थी।

पढ़े-लिखे तुम, बेटियों से डरते क्यों हो?

कर्तारी देवी से मेरी मुलाकात कुछ बरस पहले सर्दियों में हुई थी। उस समय वह रोहतक की एक आटा मिल में काम कर रही थी। बाद में उससे पक्की दोस्ती हो गयी। कर्तारी देवी निरक्षर है लेकिन वह एक विचारक है। आप भी उसके विचारों से परिचित हो सकें, इसलिए मैंने कर्तारी देवी के सोच-विचार के छोटे से टुकड़े को लिखा है - शुभा

मैं एक मामूली औरत हूं। इतनी मामूली कि आपकी नजर भी मुझ पर नहीं पड़ी लेकिन मैं आपको देख रही हूं। आप अपनी बीवी के साथ डॉक्टर के यहां जा रहे हैं। उसकी कोख में लड़की या लड़का, यह जानने के लिए। असल में आप अपनी लड़की की हत्या करना चाहते हैं, कोख में ही।

आपको यह खयाल भी नहीं आ सकता कि जिस सड़क से आप जा रहे हैं, उसे मैंने बनाया है। मैंने यहां रोड़ियां बिछायीं और फिर उन्हें दुरमुट से कूटा था। मेरी छोटी बेटी तब यहां किनारे पर उगी झाड़ियों में ऊंघती रहती थी।

मैं अकेली नहीं हूं

मेरी तीन बेटियां हैं। मेरा आदमी कहता था कि अगर बेटा नहीं हुआ तो मुझे छोड़ देगा। उसने कहने के लिए मुझे छोड़ भी दिया पर अब भी पका-पकाया खाने के लिए जब-तब आ जाता है। चिकनी-चुपड़ी बातें भी करता है। मैं सब समझती हूं। फिर सोचती हूं, चलो मेरी बेटियों का बाप है। कमाल है, जिन बेटियों से वह छुट्टी चाहता था, उन्हीं बेटियों के नाम की थाली मे उसे परोस देती हूं। वह समझाता है बेटियां बोझ हैं।

मेरी तीनों बेटियां सांवली हैं। उनकी काली आंखें हैं बड़ी-बड़ी पके जामुनों-जैसी और हाथ बहुत फुरतीले हैं। खूब काम करती हैं। मेरी ही तरह वे तरह-तरह के धंधे करके पेट पालेंगी पर फिर भी उनके होने से मुझे बहुत तसल्ली है। मैं अकेली तो नहीं हूं न?

लड़कियां बेकार नहीं होतीं

तुम समझते हो लड़कियां बेकार होती हैं। औरतों के कामों को आप जानते ही नहीं। अरे देखो मैंने सड़क बनायी, धान की रोपायी की, कपास चुना, कपड़े की फैक्ट्री में 'रीलिंग' की, आलू खोदे, तीन-तीन बेटियों को जनम दिया, पाला-पोसा, क्या मैं बेकार हूं? ये जो तुम चाय पीते हो, इसकी पत्तियां भी लड़कियां ही चुनती हैं।

और क्या-क्या नहीं करतीं? इतने धंधे औरतें करती हैं कि गिनवाना मुश्किल! और तुम्हारा ये स्वेटर कोई एक पौंड का होगा। एक पौंड ऊन इतनी होती है कि दिन-रात लगकर तीन दिन में उसका स्वेटर बनता है, जिसके मुझे बारह रुपये मिलते थे।

तब बच्चियां छोटी थीं तो सोचती थी घर में उनके पास बैठे-बैठे बुनाई कर सकती हूं लेकिन धंधा बहुत नुकसान का था। फिर ठेकेदार ने मीन-मीख निकालने शुरू की और मुझ पर गलत नजर डालने लगा तो मैंने ये धंधा छोड़ दिया। फिर आलू की फैक्ट्री में काम किया। बड़े काम छोड़

और पकड़े। दो-चार मुर्गियां और बकरियां तो खैर पालती ही हूं। इसी तरह रूखा-सूखा चलता है।

ये जो तुम्हारी बीवी है

ये जो तुम्हारी बीवी ने रेशमी साड़ी पहन रखी है, इसके धागे भी औरतें तैयार करती हैं। कीड़े पालती हैं। मुश्किल काम है। जांघ में घाव हो जाते हैं। धान की रोपनी में भी पैरों में खरवे हो जाते हैं और कमर झुके-झुके टूट जाती है।

मुझ पर पैसे होते तो अपनी लड़कियों को पढ़ाती-लिखाती। उन्हें मास्टरनी बनाती या डॉक्टरनी। तुम खुद पढ़े-लिखे हो। पैसेवाले भी दीखते हो। तुम लड़की का गर्भ क्यों गिरवाना चाहते हो? तुम समझते हो तुम्हारी लड़की कोई काम नहीं कर सकती? अरे आदमी कोई फालतू चीज नहीं। सौ काम हैं उसके करने को। फिर इस तरह सोच-समझकर लड़कियों को मारना तो कुदरत से खिलवाड़ है।

अगर मान लो तुम्हारे घर लड़का हो गया तो तुम क्या सोचते हो वो तुम्हें लड़की से ज्यादा प्यार करेगा? फिर लड़के बिगड़ते भी बहुत हैं। आजकल उनका ध्यान शराब, ताश और मार-पीट में ज्यादा हो गया है। मान लो लड़की ही पैदा हो जाए तो क्या? तुम उसे पढ़ाना-लिखाना। वो तुम्हें खूब प्यार करेगी। लड़कियां मां-बाप को खूब प्यार करती हैं। तुम्हारे घर में रौनक होगी सो अलग से। तुम सोचते हो दहेज देना पड़ेगा। तो तुम उसे खाने-कमाने लायक कर देना। दहेज मांगनेवाले से शादी मत करना। हो सकता है अपने आप ही ऐसा लड़का मिल जाए जो बिना दहेज के शादी कर ले। अगर न मिले तो क्या वो कमाएगी-खाएगी और तुम्हारा सहारा बनेगी। हो सकता है वह तुम्हारा नाम रोशन कर दे।

पैसा बेटी से बड़ा हो गया?

तुम्हारे लिए क्या पैसा ही सब कुछ हो गया या दुनिया का डर अपनी बेटी से भी बड़ा हो गया? आखिर तुम अपनी बेटी को प्यार तो कर ही सकते हो और बेटी भी तुम्हें प्यार कर सकती है। मां-बाप और बच्चे का इतना रिश्ता बहुत हुआ। इसके लिए ही तो आदमी जीता है। पैसे को चाहे जितना मानो पर मोह-ममता फिर भी बड़ी चीज है। इसे बनाये रखने में ही खैर है। नहीं तो दुनिया उजड़ी समझो।

कुदरत के साथ मनमानी

कुदरत के साथ इतनी मनमानी अच्छी नहीं। लड़कियों को तुम ऐसे ही गिरवाते रहे

तो औरतें कितनी कम हो जाएंगी? फिर तुम उनके लिए कुत्तों की तरह लड़ोगे। दहेज के डर से आज उन्हें मरवा सकते हो तो कल फिर पैसे के लालच में बेचोगे भी। इस तरह क्या दुनिया बहुत अच्छी हो जाएगी या तुम्हारे घर-परिवारों में खुशियां छा जाएंगी?

न करे कोई उनसे शादी

तुम जो रेशमी साड़ी पहनकर इसके साथ चली आयी हो, इससे इतना डरती क्यों हो? सोचती हो यह तुम्हें छोड़ देगा? ये मिचमिची आंखोंवाला अगर तुम्हें छोड़ भी दे तो क्या तुम मर जाओगी? मैं तो पढ़ी-लिखी भी नहीं थी। मैं तानों से नहीं डरी। आदमी ने छोड़ने की धमकी दी तो कह दिया, ले छोड़ दे। अब भी मेहनत करके खाती हूं, तब भी मेहनत कर लूंगी। पर वो क्या मुझे छोड़ पाया? हम औरतें बहुत काम की हैं। हमें ये ऐसे ही थोड़े छोड़ सकते हैं। परिवार की जरूरत तो इन्हें भी है। नहीं तो हांफते-हांफते मर जाएंगे। कोई पानी देनेवाला भी नहीं मिलेगा। मैं तो कहती हूं बेटी भी पैदा करो, दहेज भी मत दो और डरो भी मत। देखना दुनिया ऐसी ही चलेगी, इससे अच्छी चलेगी। दाब-धौंस कुछ कम ही होगी।

मेरी बेटी ने कढ़ाई-सिलाई सीखी है। वो न होती तो फिर क्या था? मैं तो दुनिया में काम-धंधा करते-करते मर जाती। अब भी मेहनत करती हूं पर मन में खुशी भी है। मेरी तीन लड़कियां खूब हुनरवाली हैं। कोयल-जैसी आवाज है उनकी। सुनने से थकान मिट जाती है। न करे कोई शादी अपनी जिंदगी भाड़ बनाएगा और जो शादी करेगा सो भागवान होगा।

हत्यारों की सूरत देखनी पड़ेगी

चलती हूं ये ठेकेदार आता दीखता है। आंखों से कम सूझने लगा है। ये जो 'लिबर्टी सिनेमा' है न इसे गिराना है। मालिक यहां पूरी बाजारभर दुकानें बनवाना चाहता है। यहीं मलबा ढोने का काम करूंगी। काम तो ठीक है। मैंने बहुत किया है पर इसके सामने ये डॉक्टर की दुकान है यहां लड़का-लड़की 'टैस्ट' होता है बस इसे देख-देखकर मन में बेचैनी बनी रहती है। घड़ी-घड़ी तुम्हारे-जैसों की सूरत देखनी पड़ेगी-हत्यारों की।

बस कहीं और काम मिला तो ये जगह छोड़ दूंगी। देखूं तब तक तो यहीं काम करना पड़ेगा। मैं पढ़ी-लिखी होती तो ये हां सब बातें लिख देती। फिर तो तुम भी मेरी बात किताब में पढ़ लेते। पढ़कर तुम भी कहते कर्तारी देवी बात तो पते की कहती है।

– 4/9, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय परिसर
रोहतक (हरियाणा)

जब तुम सर्वस्व लुटा दोगे तो जो तुम्हे मिलेगा, वह सर्वस्व से कहीं महान होगा।
– सुकरात

आंदोलन के लिए टेलीफोन

अभी हाल ही में इराक के खिलाफ युद्ध छेड़ने से पहले अमेरिका के नागरिकों ने पंद्रह लाख फोन घंटों तक जाम रखे। आंदोलन के लिए टेलिफोनों के प्रयोग की यह पहली घटना नहीं है। आंदोलनों के इन नये-नये रूपों के संबंध में जानकारी दे रहे हैं अनिल चमड़िया

चित्रांकन : भुपेन मंडल

दुनिया के कई मुल्कों में और शहरों में बढ़ती व्यस्तता के कारण लोगबाग किसी मुद्दे पर अपनी असहमति जाहिर करने के लिए तकनीक का इस्तेमाल करने लगे हैं। भारत में ही कुछ दिनों पूर्व की दो घटनाओं की चर्चा की जा सकती है। आंध्र प्रदेश में किसानों की किसी समस्या को लेकर कुछ गैर सरकारी संगठनों और उनके देश-विदेश के समर्थकों ने मुख्यमंत्री को इंटरनेट के जरिये अपना विरोध पत्र भेजा। सभी जानते हैं कि आंध्र प्रदेश के चन्द्रबाबू नायडू 'हाई टेक' मुख्यमंत्री माने जाते हैं। उन्होंने हैदराबाद को आधुनिक संचार तकनीकीवाले विकसित राज्य की राजधानी की छवि प्रदान करवाने की भरपूर कोशिश की है। किसानों के मुद्दे पर विरोध और उस पर सरकार की प्रतिक्रिया का काम मिनटों में हुआ। देश-विदेश से जो विरोध दर्ज हुआ, उस पर मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू ने तत्काल कार्रवाई की। विरोध इतना व्यापक और असरदार हुआ था कि सरकार को अपना फैसला वापस लेना पड़ा। इसी तरह प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भी इंटरनेट के जरिये इसी तरह के विरोध का सामना किया। अभी हाल ही में सरकार ने दो साल के लिए कपास के विदेशी बीज के आयात पर रोक लगा दी है। सरकार ने यह फैसला इंटरनेट पर विरोध आंदोलन के बाद ही लिया था। अभी इराक पर अमेरिकी हमले के विरोध में युद्ध विरोधियों ने इंटरनेट पर ऐसी घमासान मचाई है कि अमेरिका तथा उसके मित्र देशों की नींद हराम हो गयी। उन्होंने एक तरह से साइबर युद्ध छेड़ दिया।

आंदोलनों का बदलता स्वरूप

वैसे भी आमतौर पर देखा जाता है कि टेलीविजन चैनलों द्वारा किसी भी सवाल पर दर्शकों की इंटरनेट, एस.एम.एस., मोबाइल फोन और टेलीविजन के जरिये राय पूछी जाती है। उन सवालों पर दर्शक अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। यह भी आंदोलनों का बदलता स्वरूप ही है। लेकिन इसमें फर्क यह है कि टेलीविजन या रेडियो चैनल अपनी जरूरत और दृष्टिकोणवाले सवालों पर दर्शकों और श्रोताओं की राय जानते हैं, जिसका सरोकार बहुत बड़ी आबादी से नहीं होता है। जैसे एक चैनल ने यह सवाल पूछा कि क्या राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को अपने बाल के मौजूदा डिजाइन बदलने चाहिए? हालांकि दर्शकों ने इस पर भी जवाब दिये, लेकिन किसी चैनल द्वारा पूछे गये सवालों पर ही दर्शक या श्रोता अपनी राय जाहिर

करने के लिए विकसित तकनीक का इस्तेमाल क्यों करे? क्यों नहीं अपने आसपास के सवालों और प्रभावित करनेवाले मुद्दों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने और विरोध में शामिल होने के लिए इस तकनीक का इस्तेमाल करें।

नये-नये रूपों की तलाश

हमारा यह अर्थ कतई नहीं है कि भारत जैसे देश में गरीबी और बदहाली में जीती बहुतायत आबादी को अब इंटरनेट या मोबाइल फोन जैसे महंगे माध्यमों से अपना विरोध दर्ज कराने का तरीका सीखना चाहिए। लेकिन यह बहुत साफ हो चुका है कि सरकारें नहीं चाहती हैं कि लोग किसी भी मुद्दे पर अपने विरोध के साथ घरों से बाहर निकलें। मध्यमवर्ग के लोगों का सड़कों पर निकलना तो उसके लिए कई तरह की मुश्किलें पैदा करता है। व्यस्तताएं भी लोगों की बढ़ी हैं। इसीलिए इन स्थितियों में प्राथमिकता तो ऐसे उपायों की होगी, जिससे कि विरोध का स्वर किसी भी कीमत पर कुंठित नहीं हो। इसीलिए नयी परिस्थितियों, नये वातावरण, नये किस्म के दबावों और सरकारों की बदलती लोकतंत्र की परिभाषाओं के मद्देनजर बहुसंख्यक आबादी के साथ-साथ मध्यवर्ग के प्रभावशाली हिस्से के लिए आंदोलन के नये-नये रूपों की तलाश की जाए।

अभी हाल ही में इराक के खिलाफ युद्ध छेड़ने से पहले अमेरिका के नागरिकों ने पंद्रह लाख फोनों को घंटों तक जाम कर दिया। ये नागरिक अमेरिका द्वारा इराक पर हमला करने की योजना का पुरजोर विरोध कर रहे थे। नागरिकों ने सड़क पर प्रदर्शन करने के बाद टेलीफोन को भी अपने आंदोलन का हथियार बनाया। भारत में भी पिछले कई वर्षों से टेलीफोन आंदोलन के बारे में सोचा जाता रहा है। लेकिन यह इतने छोटे स्तर और छोटे दायरे में सिमट कर रह गया कि इस पर किसी का शायद ज्यादा ध्यान ही नहीं गया। इसीलिए यहां फिर से इस पर विचार किया जा सकता है कि टेलीफोन आंदोलन क्यों नहीं हो सकते हैं?

टेलिफोन द्वारा विरोध प्रदर्शन

आज देश के बहुत सारे हिस्से टेलीफोन से जुड़ चुके हैं। शहरी इलाके तो पूरी तरह से एक-दूसरे के संपर्क में हैं। टेलीफोन इस समय एक जरूरी संचार माध्यम है। यह केवल एक व्यवसायी ही नहीं किसी भी संस्था, संगठन, कंपनी के लिए जरूरी उपकरण है। टेलीफोन इस समय एक जरूरी उपकरण है। महानगरों में आमतौर पर किसी भी मुद्दे पर या सरकार द्वारा गैरकानूनी कार्रवाइयां करने पर बहुत सारे

लोग अपना विरोध प्रकट करना चाहते हैं। लेकिन कई कारणों से ये लोग अपना विरोध दर्ज कराने के लिए धरना-प्रदर्शन पर नहीं आ सकते। क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि जिसके समक्ष अपना विरोध दर्ज कराना है, उसका टेलीफोन नंबर सार्वजनिक कर दिया जाए और सभी को उस नंबर पर अपना विरोध दर्ज कराने का आह्वान किया जाए?

मनोवैज्ञानिक दबाव

टेलीफोन आंदोलन की चर्चा सुननेवाले जागरूक लोग सबसे पहले यह सवाल कर सकते हैं कि यदि टेलीफोन का रिसीवर ही उठाकर रख दिया जाएगा, तब ? निश्चित ही ऐसा हो सकता है। लेकिन क्या ऐसा नहीं लगता है कि यह आंदोलन की पहली सफलता है? किसी भी सक्रिय संस्थान या संगठन के फोन का आज के दौर में ठप्प होना एक फोन का ठप्प होना भर नहीं है। टेलीफोन संचार का एक बड़ा माध्यम है। जिसके समक्ष विरोध दर्ज कराना है, उस पर निरंतर एक मनोवैज्ञानिक दबाव बनाना आंदोलन का एक हिस्सा होता है। यह भी ध्यान में रखे जाने की जरूरत है कि टेलीफोन जैसे उपकरण के नंबर को बहुत गुप्त रखा जाना मुश्किल है। इस तरह के आंदोलन विरोध की भावना को कुंठा का शिकार होने से रोकते हुए दिखायी पड़ते हैं, जो कि इस समय बेहद जरूरी है। विरोध की भावना को कुंठित करने के लिए ही तो सरकारें, संस्थान वर्षों-वर्षों तक आंदोलनकारियों के धरनों, हड़ताल की उपेक्षा करते हैं। यह कहा जा सकता है कि इस तरह के आंदोलन फिलहाल शहरों में ही संभव है। लेकिन गांव-गांव में सूचना तंत्र का जाल बिछ रहा है। वैसे बाजारवादी शक्तियां इस तरह की योजनाओं से खुश होती हैं क्योंकि आंदोलनों में तकनीक का इस्तेमाल होने से उनके बाजार का विस्तार भी होता दिखायी देता है।

- सी- 251, सेक्टर-19,
रोहिणी, दिल्ली-85

अपने को ही छलते हो

तुम सबसे खफा नजर आते हो मगर असलियत यह है कि तुम अपने सिवा और किसी से खफा नहीं हो सकते और तुम अपने से खफा क्यों हो, इस प्रश्न का उत्तर भी तुम्हारे पास इसलिए नहीं है कि तुम दूसरों को छकाने के मोह में स्वयं अपने को ही छकाते रहते हो, अपनी चतुराई से दूसरों को छलने के लोभ में तुम अनजाने में अपने को ही छलते रहे हो।

– तुर्गनेव

(प्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार)

अंतरिक्ष के दस अनसुलझे रहस्य इस साल सुलझेंगे

अंतरिक्ष में आज भी इतने रहस्य छिपे पड़े हैं कि उनकी कोई थाह नहीं ले सकता। लेकिन इस साल इनमें से दस रहस्यों को सुलझाने का लक्ष्य रखा गया है। इस बारे में बता रहे हैं - ***संदीप निगम***

वर्ष 2003 अंतरिक्ष विज्ञान के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण है हालांकि शुरुआती महीनों में ही स्पेस शटल कोलंबिया हादसे के रूप में ही ऐसी भयंकर दुर्घटना घटी कि पूरी दुनिया सकते में आ गयी। इस दुर्घटना में हमें बेहद प्रतिभाशाली अंतरिक्ष विज्ञानी कल्पना चावला समेत सात अंतरिक्ष यात्रियों को खोना पड़ा। लेकिन घोर विपरीत परिस्थितियों में भी हार न मानने की यह इनसानी फितरत है। इस दुर्घटना के मात्र कुछ दिन बाद ही अंतरिक्ष के दस प्रमुख रहस्यों में से एक को सुलझा लिया गया। इस वर्ष अंतरिक्ष विज्ञानियों के समक्ष अन्वेषण के लिए अंतरिक्ष के प्रमुख रहस्य इस प्रकार हैं-

डार्क इनर्जी

गुरुत्वाकर्षण बल अणुओं को आपस में बांधे रखने से लेकर सौरमंडल में विभिन्न ग्रहों और अंतरिक्ष में विभिन्न सितारों को अपनी जगह पर बनाये रखता है। लेकिन इसके विपरीत अंतरिक्ष में एक अज्ञात शक्ति ऐसी भी मौजूद है, जो विभिन्न ग्रहों व अनंत तारों से भरे इस ब्रह्मांड को विपरीत दिशाओं में खींच रही हैं। इस अनोखी शक्ति के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध होने के कारण विज्ञानियों ने इसका नाम 'डार्क इनर्जी' रखा है। अंतरिक्ष विज्ञानियों की गणना के अनुसार ब्रह्मांड के 65 प्रतिशत हिस्से में इस प्रतिकर्षण बल यानि 'डार्क इनर्जी' का प्रभुत्व कायम है। इतना ही रहस्यमय एक अन्य पदार्थ 'डार्क मैटर' ब्रह्मांड के 30 प्रतिशत हिस्से में व्याप्त है। इस तरह हमारे लिए ब्रह्मांड का मात्र पांच प्रतिशत हिस्सा ही सामान्य पदार्थ और ऊर्जा (मैटर एंड इनर्जी) के साथ बचा रहता है। हमारी आकाश गंगा 'मिल्की वे' भी इसी हिस्से में है। उम्मीद है कि इस वर्ष 'डार्क इनर्जी' के रहस्य से परदा उठाने में विज्ञानी सफल रहेंगे।

मंगल पर पानी

अपनी सतह पर विशाल मानव चेहरे जैसी आकृति के साथ मंगल ग्रह हमेशा से अंतरिक्ष विज्ञानियों के साथ हम सभी को सम्मोहित करता रहा है। नासा और मंगल ग्रह संबंधी अन्वेषण में जुटे सभी विज्ञानी लंबे अरसे से यह खोज करते रहे हैं कि क्या इस लाल ग्रह पर जीवन है? लेकिन इससे पहले इस बेहद महत्त्वपूर्ण सवाल का जवाब तलाशा जा रहा है कि क्या मंगल पर जीवन के पनपने के लिए पहली शर्त 'पानी' मौजूद है? नासा के अंतरिक्ष यान 'मार्स ओडिसी' ने दिसंबर, 2002 में कुछ ऐसे चित्र भेजे थे, जिससे मंगल की सतह के नीचे बर्फ के विशाल भंडार की मौजूदगी का पता चला था। एक अन्य अध्ययन 'डार्क स्ट्रीक' के अनुसार मंगल की सतह पर लवण युक्त पानी मौजूद हो सकता है। फिलहाल 'मार्स ओडिसी' मंगल की परिक्रमा करते हुए यहां पानी मौजूद होने के अन्य साक्ष्य तलाश कर रहा है।

आकाश गंगा के बीचोंबीच

बीते वर्ष अक्तूबर में अंतरिक्ष विज्ञानियों ने हमारी आकाश गंगा 'मिल्की वे' के बीचोंबीच अजीब-सी धुंधली आकृति खोज निकाली। यह आकृति कुछ ऐसी थी कि लग रहा था कि 'मिल्की वे' के मध्य मौजूद ब्लैक होल को कोई खा रहा हो। अमेरिका की चंद्रा एक्स-रे ऑब्जरवेटरी से इस वर्ष की शुरुआत में लिए गये चित्रों से स्पष्ट हो गया कि हमारी आकाश गंगा के बिलकुल पास कोई अज्ञात धुंधली-सी आकृति मौजूद है, जो गतिमान नहीं बल्कि स्थिर है। इस वर्ष जनवरी में एक अध्ययन रिपोर्ट में बताया गया कि यह अज्ञात आकृति दरअसल एक दूसरा ब्लैक होल है और ये दोनों ब्लैक होल एक-दूसरे में समा रहे हैं। यह बिलकुल नयी और अद्भुत खोज थी।

अंटार्कटिक में मिले मंगल ग्रह से आये उल्कापिंड में मौजूद मृत बैक्टीरिया के अवशेष

साइंटिस्टों को अब इस अभूतपूर्व क्रिया की तुलना ब्रह्मांड के अन्य ब्लैक होलों से करके व्याख्या देनी है कि ये ब्लैक होल आपस में समा क्यों रहे हैं।

जीवन का उद्भव

पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत कैसे हुई, यह एक पुराना विवाद है। बीते वर्ष नवंबर में एक नयी अध्ययन रिपोर्ट से इस विवाद में नया मोड़ आ गया है। इस रिपोर्ट में दो मुख्य बातें बतायी गयीं। पहली यह कि मंगल के धरातल पर उल्कापात के कारण टूटकर छिटकी चट्टानें व पत्थर के टुकड़े औसतन महीने में एक बार पृथ्वी पर आ गिरते हैं। दूसरी बात यह कि मंगल से पृथ्वी तक की यात्रा में चट्टानों या पत्थर के टुकड़ों में बैक्टीरिया के रूप में जीवन के सुरक्षित रहने की पूरी-पूरी संभावना है। पृथ्वी पर खासतौर पर अंटार्कटिक में जहां हिम के अलावा कुछ भी नहीं है, कुछ ऐसे पत्थर के टुकड़े मिले हैं, जिन्हें जांचने पर पता चला कि ये मंगल से आये हैं। नासा की प्रयोगशालाओं में जांचने पर पत्थर के इन टुकड़ों में बैक्टीरिया के रूप में जीवन के अवशेष मिले हैं। बीते वर्ष दिसंबर में विज्ञानी यह सोचने पर मजबूर हो गये हैं कि हमारे ग्रह पर जीवन का आगमन कहीं मंगल या अन्य ग्रह से छिटककर आये उल्का पिंड में मौजूद बैक्टीरिया से तो नहीं हुआ। इस रहस्य पर फिलहाल बहस जारी है।
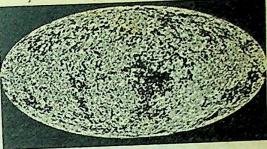
रहस्यमय चंद्रमा

पृथ्वी से परे किसी अन्य चीज के बारे में इतना व्यापक अध्ययन नहीं किया गया है, जितना कि चंद्रमा के बारे में। इसके बावजूद चंद्रमा के कई रहस्य ऐसे हैं, जिन पर से अभी परदा उठाया जाना शेष है। हम चंद्रमा पर गये हैं। वहां से मिट्टी और पत्थर के नमूने लाए हैं और इन सब पर आधारित यह सिद्धांत विकसित किया गया है कि चंद्रमा पृथ्वी का ही एक टुकड़ा है, जो अरबों वर्ष पहले किसी विशाल उल्का या धूमकेतु के पृथ्वी से टकराने के कारण अलग हो गया था। इसका अर्थ यह हुआ कि चंद्रमा की चट्टानों में इस बात के साक्ष्य अब भी मौजूद होंगे कि अरबों वर्ष पहले पृथ्वी का वातावरण कैसा था और यह सूत्र भी मिल सकते हैं कि पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत कैसे हुई। यूनीवर्सिटी ऑव वाशिंगटन के जॉन आर्मस्ट्रांग कहते हैं कि

पृथ्वी अपनी सतह को लगातार बदलती रहती है और अरबों वर्ष पुरानी चट्टानें पृथ्वी के केंद्र तक पहुंचकर पिघले हुए लावे में तब्दील हो चुकी हैं। चंद्रमा पर ऐसा नहीं होता। वहां की सतह आज भी वही है, जो अरबों वर्ष पहले थी। इन सवालों को लेकर नासा और भारत समेत दुनिया के सभी अंतरिक्ष विज्ञानियों में चंद्रमा के प्रति रुचि एक बार फिर जाग्रत हो गयी है।

क्या हम अकेले हैं

आस्ट्रेलिया की यूनीवर्सिटी ऑव न्यू साउथ वेल्स के साइंटिस्टों लाइनवीवर और डेनियल ग्रेथर ने लंबे रिसर्च के बाद बीते वर्ष जून में एक गणना सामने रखी, जिसके अनुसार हमारी आकाश गंगा 'मिल्की वे' में करीब 300 अरब सितारे हैं और इनमें से करीब दस प्रतिशत यानि 30 अरब सितारे हमारे सूर्य की तरह हैं और कम-से-कम 1.5 अरब और अधिकतम 30 अरब ग्रह हमारे बृहस्पति और पृथ्वी की तरह हैं। कार्नेगी इंस्टीट्यूशन ऑव वाशिंगटन में प्लेनेटेरी सिस्टम फारमेशन(ग्रहीय व्यवस्था के बनने) क्षेत्र के विशेषज्ञ एलेन बॉस भी लाइनवीवर और डेनियल ग्रेथर की गणना का समर्थन करते हैं। हमारी आकाश गंगा में पृथ्वी के समान कोई दूसरा ग्रह है या नहीं, इसका पता लगाने के लिए 'केप्लर मिशन' के नाम से नासा से एक विशेष अभियान वर्ष 2006 में अंतरिक्ष भेजा जाएगा। 'केप्लर मिशन' आकाश गंगा 'मिल्की वे' में ऐसे ग्रहों की गणना करेगा, जहां जीवन मौजूद होने और पनपने की संभावनाएं होंगी। ज्यादातर अंतरिक्ष विज्ञानियों का मानना है कि यदि किसी अन्य ग्रह पर जीवन मिला भी तो वह बैक्टीरिया की शक्ल में होगा लेकिन सेटी इंस्टीट्यूट,अमेरिका के शोधकर्ताओं के अनुसार आकाश गंगा के किसी अन्य ग्रह में हम मानवों-जैसे 'बौद्धिक' जानवर भी मौजूद हो सकते हैं। बहरहाल इस वर्ष कुछ नये साक्ष्य मिल सकते हैं।

अंटार्कटिक में मिले मंगल ग्रह से आये उल्कापिंड में मौजूद मृत बैक्टीरिया के अवशेष

रहस्यमय सूर्य

कितनी हैरत की बात है कि हम जिस अद्वितीय व प्राणवान ग्रह की लगातार परिक्रमा करते रहते हैं, उसके ही बारे में हमें ज्यादा कुछ जानकारी नहीं है। वर्ष 2002 में सनस्पॉट यानि सूर्य के धब्बों का लिया गया चित्र अब तक इस ग्रह के बारे में सबसे विस्तृत विवरणवाला चित्र है। इस चित्र में हमें दहकते हुए तीव्र चमकदार हिस्सों से सूर्य के धब्बों के केंद्र तक जाती हुई नहरनुमा संरचनाएं दिखायी दी हैं। ये

संरचनाएं सूर्य के अपार तापक्रम और मैग्नेटिक इनर्जी यानि चुंबकीय ऊर्जा से भरपूर हैं। लेकिन रहस्य यह है कि सूर्य की सतह पर ये संरचनाएं बनीं कैसे? सूर्य के संबंध में नासा में चल रहे शोध कार्यक्रम के एक सदस्य अंतरिक्ष विज्ञानी डान किसेलमैन कहते हैं कि सूर्य की लगातार परिवर्तनशील सतह पर ऐसा क्या घटित हुआ,जिससे ये नहरनुमा संरचनाएं बन गयीं,इस बारे में हमें कोई जानकारी नहीं है।

कैसे बने यूरेनस व नेप्च्यून

बीते वर्ष अमेरिका की सैंडिया लैब स्थित दुनिया के सबसे शक्तिशाली सुपर कंप्यूटर पर हमारे सौर मंडल के निर्माण संबंधी गणना की गयी। इससे हैरतअंगेज तथ्य सामने आये। गणना के बाद सुपर कंप्यूटर ने जो तस्वीर पेश की, उसमें सौर मंडल में पृथ्वी समेत मात्र सात ग्रह ही दर्शाये गये थे। सुपर कंप्यूटर ने आठवें और नौवें ग्रह यूरेनस व नेप्च्यून को सौर मंडल का सदस्य नहीं माना । सुपर कंप्यूटर के अनुसार सौर मंडल के सात ग्रहों के निर्माण के बाद इतना पदार्थ ही नहीं बचा था कि आठवें और नौवें ग्रह का निर्माण हो सकता। इस गणना से अंतरिक्ष विज्ञानी हैरत में है। संभवत: इस वर्ष आकाश गंगा के अन्य सौर मंडलों के अध्ययन के दौरान ऐसा कोई सूत्र हाथ लग सके, जिससे यह पता लगाया जा सके कि हमारे सौर मंडल के आठवें और नवें ग्रह का निर्माण कैसे हुआ था। वर्ष 2019 में पृथ्वी से एक विशाल उल्का के टकराने की संभावना की खबर जुलाई, 2002 में दुनियाभर के समाचार पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित हुई थी।

क्या हमारा अस्तित्व बचेगा

किसी विशाल उल्का या धूमकेतु की पृथ्वी से संभावित टक्कर एक ऐसा विषय है, जिसमें जन-साधारण से लेकर शीर्ष अंतरिक्ष विज्ञानियों तक की रुचि हमेशा रही है। ऐसे ही एक विनाशकारी उल्कापात से पृथ्वी से डायनासोरों का अस्तित्व समाप्त हो गया था, लेकिन इस बार यदि यह घटना घटी तो हमारा अस्तित्व दांव पर लग जाएगा। उल्लेखनीय है कि कुछ मीटर जितने बड़े उल्का पिंडों के धरती से टकराने की संभावना प्रति वर्ष कम-से-कम एक बार अवश्य रहती है जबकि कुछ सेंटीमीटर जितने छोटे उल्का पिंड 24 घंटे में दर्जनों बार पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश करते रहते हैं। अनुमान है कि एक किलोमीटर या उससे बड़े आकार के 1100 उल्का पिंड हमारे सौर मंडल में मौजूद हैं। इनमें से करीब 640 पिंड खोजे जा चुके हैं। नासा और पृथ्वी के निकट किसी विशाल पिंड (नियर अर्थ आब्जेक्ट) संबंधी अध्ययन क्षेत्र के सभी शीर्ष अंतरिक्ष विज्ञानी इस तलाश में लगे हैं कि यदि पृथ्वी की तरफ कोई विशाल उल्का पिंड बढ़ रहा हो, तो इस स्थिति में विनाश रोकने के लिए क्या किया जाना चाहिए।

- बी-182, गुरुनानक पुरा ,
मंगल बाजार, लक्ष्मी नगर , दिल्ली-92

एक होता है शब्द एक होती है परंपरा

भारतीय वाङ्मय में वाचिक परंपरा का विशेष महत्त्व है। इस परंपरा को समझना इस देश की उस श्रुति परंपरा को जानना है, जिसके सहारे तमाम वेद, मानस समेत कथाएं और मिथक-मथी सामाजिक व्यथाएं कंठ-दर-कंठ, कर्ण-दर-कर्ण यात्राएं करती हुई हम तक आती हैं। वाचिक परंपरा के महत्त्व के बारे में प्रसिद्ध व्यंग्यकार अशोक चक्रधर के विचार।

वाचिक, एक होता है और एक होती है। जो होता है, वह है शब्द और जो होती है, वो है परंपरा। यानि, होता है- वाचिक शब्द और होती है- वाचिक परंपरा। मैं 'होता है' और 'होती है' कि बीच में गोता लगाना चाहता हूं। किसी तोते की तरह मचान पर बैठकर, जहां से मुझे वाचिक शब्द दिखायी दे और सुनायी दे वाचिक परंपरा। वाचिक परंपरा को जब मैं देखता हूं, तो कुछ अलग तरह से। कुछ अलग तरह से इसलिए कि मेरी शुरूआत ही वाचिक परंपरा से हुई। मेरा बचपन वाचिक परंपरा की नदी के किनारे किलोल करता रहा। फिर करीब एक दशक तक यानी 1968 से 1978 तक वाचिक परंपरा को दूर से देखा और उस दौरान मैं 'उत्तरार्द्ध,' 'क्यों,' 'वाम' और 'पहल' समेत अन्य पत्र-पत्रिकाओं में छपनेवाला कवि बन गया। फिर लौटा वाचिक परंपरा की ओर।

वाचिक परंपरा का महत्त्व

वाचिक परंपरा को समझना इस देश की उस श्रुति परंपरा को जानना है, जिसके सहारे तमाम वेद, मानस समेत कथाएं और मिथक-मथी सामाजिक व्यथाएं कंठ-दर-कंठ, कर्ण-दर-कर्ण यात्राएं करती हुई हम तक आती हैं।

वाचिक परंपरा इस देश के मूल मिजाज में है। जब भी हमारे घरों में कुछ सुखद होता था, तो मानस पाठ या सत्यनारायण की कथा रखी जाती थी। सामूहिक रूप से लोग बैठते थे, सुनते थे। इस तरह एक सामूहिक अनुभव वाचिक परंपरा से जुड़ता है। यह अनुभव ही वाचिक परंपरा की ताकत है। परंपरा जितनी पुरानी है, उतनी नयी भी। आज आई. आई. टी., आल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑव मेडिकल साइंसेज, जामिया हमदर्द या दिल्ली इंजीनियरिंग कॉलेज के विशुद्ध अंगरेजीदां छात्र-छात्राओं के बीच कवि सम्मेलनों के प्रति जोरदार आकर्षण देखता हूं, तो फिर-फिर इस वाचिक परंपरा की ताकत को रेखांकित करता हूं। वाचिक परंपरा से करीब चालीस साल जुड़े रहने के बाद मैं यह कह सकता हूं कि हमारे समय और समाज के तापमान को नापने के बैरोमीटर हैं, हमारे कवि सम्मेलन। कवि सम्मेलन में क्या पसंद किया जा रहा है, इससे समाज के बदलते हुए मूड का पता लगाया जा सकता है।

समय और समाज का बदलता मूड

मैं समय और समाज के बदलते हुए मूड को मंच की मचान से पकड़ने की कोशिश करूंगा। मैं अपने और कवि सम्मेलनों के अतीत पर निगाह डालता हूं, तो मैं अशोक नामक बालक को हाफ-पैंट बनियान पहने हुए घर के एक कमरे के दरवाजे के बाहर कान लगाकर कुछ सुनते हुए पाता हूं। अंदर उसके कवि पिता राधेश्याम प्रगल्भ कुछ कवियों से, विद्वानों से काव्य चर्चा कर रहे हैं। यह बात रही होगी 1957-58 की और बालक रहा होगा सात-आठ साल का।

अंदर आदरणीय नीरजजी हैं, मुकुटबिहारी 'सरोज' हैं, वीरेंद्र मिश्र हैं, आनंद मिश्र हैं, शिशुपाल सिंह 'शिशु' हैं, शिशुपाल सिंह 'निर्धन' हैं। सब अपनी-अपनी तरह से जुटे हुए हैं। बीड़ी-सिगरेट और दिलों से उठनेवाला धुंआ है। शाम को कवि सम्मेलन होना है। लेकिन हमारे घर में होनी है उनकी खातिरदारी। कवि लोग तब सीधे मंच पर नहीं पहुंचते थे। जिस शहर में कवि सम्मेलन हो रहा है, वहां के आत्मीयों-अंतरंगों के घर पहले पहुंचते थे। आत्मीयता का एक सिलसिला होता था। सब में अपना-अपना नया रचा हुआ सुनाने की होड़ रहती थी। वो बालक हाफ-पैंट पहने हुए,

जो निश्चय ही खाकी नहीं होती थी, कवियों की सेवा-टहल करने के मौके तलाशता रहता था। कमरे के दरवाजे से कान लगाकर सुनता रहता था। अंदर बातचीत में सुनायी देते थे कुछ गीत, जिनमें गांव के सौंदर्य का गुणगान होता था, इस बात का गर्व होता था कि हम गांव के हैं। सोहनलाल द्विवेदी अपनी कविता सुना रहे हैं, जिसमें गांधीजी के दो चरणों के पीछे पूरा भारत चला जा रहा है। शाम की तैयारी है। शाम को कवि सम्मेलन में सबको अपना-अपना खोमचा लगाना है, स्वर का, शब्द का। सोमजी नया गीत लिखकर लाये हैं-*'सागर चरण पखारे, गंगा शीश चढ़ावे नीर, मेरे भारत की माटी है चंदन और अबीर।'*

सबका अपना-अपना अंदाज

कोई अपना मफलर भूल आया है, तो किसी से मांग रहा है। कोई किसी के कुरते पर मुग्ध है, तो उसने अपना कुरता दे दिया है। लोग कुरता बदल रहे हैं, टोपी बदल रहे हैं, मफलर बदल रहे हैं, लेकिन कविता नहीं बदल रहे हैं। गीत नहीं बदल रहे हैं। सबका अपना अंदाज है। जिससे जो फन लिया है, जो पन लिया है, उसके प्रति आदर का एक भाव है। बच्चनजी से सब प्रभावित थे। गोपाल सिंह 'नेपाली' से सब प्रभावित थे। नेपालीजी की भाषा एक अलग पन और अंदाज लिये हुए होती थी। सो उस निक्करवाले बालक ने सात से दस साल की उम्र के बीच बहुत कविताएं सुनीं, ढेर सारे गीत सुने। उस दौर में गांधीवाद ही मुख्य स्वर था। आजादी के बाद आजादी प्राप्ति का आह्लाद, मामला मोहभंग का नहीं था। मोहभंग अगर हुआ था, तो प्रगतिशील कविता के कवियों का हुआ, जिन्हें वाचिक परंपरा से मोह ही नहीं था। उनके गीत तो हड़तालों, रैलियों और आंदोलनों के गीत थे। साठ के दशक की शुरूआत तक यही मामला चला। नेहरू और गांधी के प्रति लोगों में यह भाव था कि ये तो अपने घर के बुजुर्ग हैं, इनके खिलाफ कोई बात कैसे सुन लें। आम आदमी इनके द्वारा पिलायी गयी आजादी की शराब के नशे में था। खुश था, तो कैसी कविताएं सुनेगा, शृंगार की ही ना।

नैन हुए जलधारे क्यूं

चलिए, इसके आगे का किस्सा अगली बार। अब कुछ हो जाए, होता है और होती है के नाम अर्ज किया है-

नैन हुए जलधारे क्यूं/कोई किसी को मारे क्यूं
तुम इतने बेचारे क्यूं/उनके वारे-न्यारे क्यूं
हम तो ऐसे कभी न थे/बदल गये हम सारे क्यूं
पत्ती से पूछे चिड़िया/पेड़ की खातिर आरे क्यूं
जिनके रहते हिम्मत थी/वे ही हिम्मत हारे क्यूं
दिल ही जिनके बहरे हैं/दिल से उन्हें पुकारे क्यों
उनके लिए महल कोठी/तुझको ईंट और गारे क्यूं
गंगा शीश झुकाय नहीं/सागर चरण पखारे क्यूं
सहने की भी सीमा है/मिलते नहीं सहारे क्यूं
आंखों के मीठे सपने/बहकर हो गये खारे क्यूं
रात में बादल धुंध धुंआ/दिन में दिखते तारे क्यूं
सन्नाटों से गूंज रहे/गांव-गली-गलियारे क्यूं।

और अंत में एक शाश्वत सवाल जिसमें एक गोरी होती है और एक दर्पण होता है-

गोरी से दरपन पूछे/कारे कान्हा प्यारे क्यूं?

- जे-116, सरिता विहार, नयी दिल्ली-44

सवाल आपके, समाधान हमारे

■ रेखा अग्रवाल

इस स्तंभ में आप भी हमें अपने सवाल भेज सकते हैं। आपका सवाल तन-मन के किसी भी पहलू के बारे में हो सकता है। यह सवाल न सिर्फ ऐलोपैथी बल्कि आयुर्वेद, एक्यूपंक्चर और होम्योपैथी किसी भी चिकित्सा प्रणाली से संबंधित हो सकता है। आपकी समस्या का समुचित समाधान देने के लिए हमने देश के जाने-माने विशेषज्ञों को विशेष रूप से अपने साथ जोड़ा है। आपका कोई भी सवाल हो, हमें अपनी केस हिस्ट्री और पूरे विवरण के साथ इस पते पर लिख भेजिए-

क्लीनिक, कादम्बिनी, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, 18-20 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-110 001

क्रोनिक ब्रोंकाइटिस में क्या करें ?

मेरे पिता को क्रोनिक ब्रोंकाइटिस है। अक्सर उन्हें खांसी छिड़ जाती है, दम उखड़ने लगता है और काफी बलगम भी आता है। क्या कोई ऐसा इलाज नहीं है कि यह रोग जड़ से कट सके? *-राकेश*

मूलचंद अस्पताल के वरिष्ठ काय चिकित्सक डॉ. आर. एस. के. सिन्हा के अनुसार क्रॉनिक ब्रोंकाइटिस लंबे समय से चली आयी सांस-नलियों की सूजन है। यह सूजन ही फेफड़ों में बलगम पैदा करती है, जिससे बार-बार खांसी छिड़ती है और सांस छोड़ने और लेने में मुश्किल होती है। दम फूलने लगता है और दमा की ही तरह छाती में घरघराहट होने लगती है। सीटी की-सी ध्वनि भी सुनायी दे सकती है। एक बार शुरू हो जाने पर यह रोग उम्रभर तकलीफ देता है। लेकिन कुछ जरूरी उपाय करते रहने से इस पर अंकुश जरूर रखा जा सकता है।

आपके पिता के लिए यह जरूरी है कि वे श्वास-नलियों के स्वास्थ्य को और न बिगड़ने दें। उनकी सुरक्षा के लिए खुद को धुएं, धूल और ऐसे सभी तत्त्वों से बचाकर रखें जिनसे श्वास-नलियों को नुकसान पहुंचता है। अगर वे धूम्रपान करते हों, तो उसे तुरंत त्याग दें। जब भी

कभी श्वास-नलियों में इंफेक्शन हो, बलगम का रंग पीला पड़ने लगे, तभी ऐंटिबॉयोटिक दवा शुरू कर दें। इंफेक्शन को नजरअंदाज करने से रोग बढ़ जाता है। क्रॉनिक ब्रोंकाइटिस में खांसी से आराम पाने के कई उपाय हैं। खूब मात्रा में गरम तरल पदार्थ लें और भाप लें ताकि भीतर जमा बलगम तरल होकर बाहर आ सके। फिर भी खांसी परेशान करे, तो उसे रोकने के लिए कोई साधारण शरबत जरूरत के अनुसार ले लें। ठंड के दिनों में कमरे में हीटर जलाकर रखें, पर साथ ही हवा में वाष्प की मात्रा न घटे इसलिए कमरे में किसी खुले बरतन में पानी भी रख छोड़ें। सांस उखड़ने लगे तो डॉक्टरी सलाह से ब्रोंकोडाइलेटर दवा, जैसे डेरीफाइलिन, एस्थालिन, टेड्राल आदि लें। ये दवाएं इन्हेलर से लेने से ज्यादा अच्छा रहता है, थोड़ी ही मात्रा में दवा असर दिखा देती है। इसके बावजूद यदि कभी रोग बेकाबू हो जाए, तो इसे इमरजेंसी समझकर अस्पताल जाएं ताकि डॉक्टर उचित दवाएं और ऑक्सीजन देकर स्थिति को संभाल लें।

रोग पर अंकुश रखने के लिए कुछ सावधानियां भी जरूरी हैं। सबसे पहली जरूरत है कि उन सभी चीजों से बचें, जिनसे सांस-नलियों की सूजन और सिकुड़न बढ़ती है। धुएं से तो बिल्कुल बचकर रहें, कोई कमरे में सिगरेट जलाये तो उसे प्यार से मना कर दें। न माने, तो खुद उठकर बाहर चले जाएं। घर में अंगीठी, चूल्हे और मिट्टी के तेल के स्टोव का प्रयोग बंद कर एल. पी. जी. गैस का इस्तेमाल करें। ठंड के दिनों में अपना पूरा बचाव रखें, गरम वस्त्र पहनने में बिलकुल ढील न करें। धुंध, सीलन और तापमान के अकस्मात परिवर्तन से बचें। जिन दिनों शहर में खांसी-जुकाम फैला हो, सिनेमाघर और प्रदर्शनियों-जैसी भीड़वाली जगहों में न जाएं। इन छोटी-छोटी सावधानियों से रोग बिगड़ने की संभावना घटेगी।

डॉक्टर की मदद से श्वास-व्यायाम सीख लेना और उन्हें नियमपूर्वक करना भी बहुत उपयोगी है। इससे फेफड़ों की ताकत बढ़ेगी। शरीर मोटा हो तो वजन घटाना भी बहुत जरूरी है, ताकि फेफड़ों पर कम दबाव पड़े। उनके लिए यह छोटी-सी सावधानी भी जरूरी है कि रात का भोजन सोने से कम-से-कम तीन घंटे पहले करें और उसमें ऐसे गरिष्ठ व्यंजन न लें जिन्हें पचाने में लंबा समय लगता है।

छपाकी का होम्योपैथी में इलाज

मैं पिछले कई हफ्तों से छपाकी से परेशान हूं। लगातार ऐंटिएलरजिक दवा ले रहा हूं, पर बिलकुल आराम नहीं है। समय-समय पर कभी कहीं, तो कभी कहीं छपाकी निकल आती है। क्या होम्योपैथी में

इसका स्थायी समाधान संभव है? उचित मार्गदर्शन करें। *- सुल्तान*

डॉ. संजय सिंह तोमर, होम्योपैथ चिकित्सक, मदन सिंह ब्लॉक, एशियाड विलेज, दिल्ली के मुताबिक होम्योपैथी में छपाकी के लिए कई अच्छी दवाएं उपलब्ध हैं। पर इसे ठीक होने में थोड़ा समय जरूर लगता है। इस बीच आपको अपना धीरज बनाये रखना होगा, तभी इलाज कामयाब हो सकता है।

दवाओं का और उनकी डोज का चयन प्रत्येक रोगी के लक्षणों, शरीर रचना, व्यक्तिगत प्रकृति आदि को ध्यान में रखकर किया जाता है। मायने यह कि हर रोगी में एक ही दवा कामयाब नहीं हो सकती। पर मूल रूप से जो दवाएं विशेष रूप से उपयोगी साबित होती हैं, वे हैं- ऐपीस मेल 30, यूटिका यूरेन्स 30, 200 और नेट्रम मूर 30।

मासिक धर्म के दर्द से कैसे छूटें ?

मेरी उम्र 19 साल है। मुझे मासिक धर्म शुरू होने के कुछ घंटे पहले से ही पेट के निचले हिस्से में जोरों का दर्द होने लगता है। कभी-कभी यह दर्द इतना तेज होता है कि मन कच्चा होने लगता है और सिर में भी तेज दर्द होने लगता है। बताइए कि ऐसे में मुझे क्या करना चाहिए? *-रानी*

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. नूतन अग्रवाल के मुताबिक जीवन के युवा वर्षों में मासिक धर्म के दिनों में दर्द होना काफी आम है। यह समस्या मासिक धर्म शुरू होने के तीन-चार साल बाद प्रकट होती है और अक्सर 25-30 की उम्र में आकर आप दूर हो जाती है।

इस मुश्किल से निजात पाना मुश्किल नहीं है। दर्द से राहत पाने के लिए कोई भी साधारण दर्दनिवारक दवा, जैसे कि पैरासिटामोल,एस्प्रीन, निमयुलिड ले लें। साथ ही गरम पानी का सेंक करें। टब में पानी भर लें और 10-15 मिनट तक सेंक करें। इससे दर्द से छुटकारा मिलेगा। साथ ही, स्वस्थ जीवनचर्या रखें, सुबह उठकर थोड़ा व्यायाम करें। संतुलित पौष्टिक आहार लें और समय से सोयें। यह भी जरूरी है कि आप मासिक धर्म के प्रति स्वस्थ नजरिया रखें। सच बात तो यह है कि यह दर्द इस खास बात का भी द्योतक है कि शरीर के भीतर बसी प्रजनन प्रणाली में डिंब के पकने और छूटने की क्रिया स्वस्थ रूप से चल रही है और आप विवाह के बाद मां बन सकेंगी।

स्तन-वृद्धि के लिए आयुर्वेदिक उपचार

मैं 23 वर्षीया कॉलेज की छात्रा हूं। कुछ ही महीनों में मेरा विवाह होनेवाला है। मेरा शरीर दुबला-पतला है और वक्ष उन्नत नहीं हैं। डरती हूं कि कहीं इस कारण मुझे

वैवाहिक जीवन में परेशानी न उठानी पड़े। कोई ऐसी आयुर्वेदिक क्रीम, दवा, व्यायाम या घरेलु नुस्खा बतायें जिससे कि स्तनों का आकार बढ़ सके। *-सुनीता*

केंद्रीय स्वास्थ्य सेवा, दिल्ली के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. महेश चंद्र पाण्डे के मुताबिक शरीर के नैन-नक्श, कद-काठी की ही तरह स्तनों का रूप-आकार भी हर किसी में स्वभावगत होता है। इस पर किसी का वश नहीं चलता। आयुर्वेद में ऐसी किसी दवा या लेप की व्याख्या नहीं की गयी जिसमें स्तन-वृद्धिकारक गुण हों।

पत्र-पत्रिकाओं में छपनेवाले विज्ञापनों से गुमराह होना ठीक नहीं। उनमें कोई दम नहीं। अब तक ऐसी कोई दवा या क्रीम ईजाद नहीं हुई है जो स्तनों के आकार को बढ़ा सके। न ही कोई ऐसा विशिष्ट व्यायाम है जो इस संबंध में आपकी मदद कर सके।

हां, यह जरूर है कि जैसे-जैसे आप जीवन के विभिन्न चरणों से गुजरेंगी, वैसे-वैसे स्तन के रूप-आकार में अपने आप ही कुछ परिवर्तन आएंगे। विवाह के बाद जब आप मां बनेंगी तो स्तनों के आकार में स्वाभाविक रूप से वृद्धि होगी।

उचित तो यही होगा कि आप अपने नैसर्गिक रूप-स्वरूप को यथावत खुशी-खुशी स्वीकार करें और ग्लैमर वर्ल्ड के मानदंडों पर न जाएं।

'क्लीनिक' के परामर्शदाता

आयुर्वेद एवं एक्यूपंक्चर : डॉ. महेश चंद्र पाण्डे, केंद्रीय स्वास्थ्य सेवा

कार्डियो सर्जरी : डॉ. नरेश त्रेहन, एस्कार्टस हार्ट इंस्टीट्यूट

कार्डियोलॉजी : डॉ. हर्ष वर्धन, राम मनोहर लोहिया अस्पताल

मेडिसिन : डॉ. आर. एस. के. सिन्हा, मूलचंद अस्पताल

सर्जरी : डॉ. अवनीत सिंह चावला, सफदरजंग अस्पताल

स्त्रीरोग एवं प्रसूति चिकित्सा : डॉ. सुनिता मित्तल, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान

नेत्र चिकित्सा : डॉ. सायरस श्रौफ, श्रौफ आई सेंटर

ई.एन.टी विशेषज्ञ : डॉ. अरुण अग्रवाल, मोलाना आजाद मेडिकल कॉलेज

त्वचा रोग विशेषज्ञ : डॉ. राकेश कुमार जैन, सफदरजंग अस्पताल

दंत चिकित्सा : डॉ. एस. पी. अग्रवाल, ग्रीन पार्क डेंटल सेंटर

आर्थोपैडिक्स : डॉ. वी. के. गर्ग, मजीदिया अस्पताल

मनोरोग विशेषज्ञ : डॉ. स्मिता देशपांडे, राम मनोहर लोहिया अस्पताल

गस्ट्रो ऐंट्रोलॉजी : डॉ. निर्मल कुमार, जीबी पंत अस्पताल

प्लास्टिक सर्जरी : डॉ. एस .पी. बजाज, जयपुर गोल्डन अस्पताल

कैंसर चिकित्सा : डॉ. सुल्तान प्रधान, टाटा मेमोरियल, मुंबई

होम्योपैथी : डॉ. संजय सिंह तोमर, एशियाड विलेज, दिल्ली

बुद्ध पूर्णिमा पर विशेष

संरक्षित हाथी प्रतिमा

उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के छोटे-से गांव संकिसा में कभी बुद्ध ने जीवन में पहली बार चमत्कार-प्रदर्शन किया था। बौद्ध मान्यताओं के अनुसार बुद्ध कभी अपनी मां तथा तेंतीस देवताओं के साथ स्वर्ग से यहीं उतरे थे। संकिसा की मौजूदा स्थिति के बारे में बता रहे हैं

-डॉ. जगदीश चंद्रिकेश

स्वर्ग से उतरे थे यहां बुद्ध

विवादास्पद स्थल- जिसके पीछे अशोक स्तंभ था
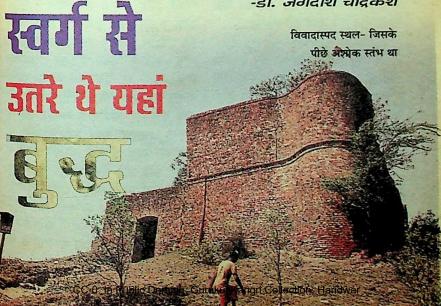
बुद्ध पूर्णिमा का उत्सव समापन की ओर था। मुझे देर हो गयी। फर्रुखाबाद-शिकोहाबाद लूप लाइन ट्रेन बहुत लेट थी। हालांकि, दिल्ली के विवेकानंद अंतरराज्यीय बस अड्डे से रात्रिकालीन बस लेकर फिरोजाबाद होते हुए शिकोहाबाद तो मैं तड़के ही पहुंच गया, लेकिन ट्रेन लेट पर लेट होती गयी। शिकोहाबाद से पखना रेलवे स्टेशन पहुंचने में और देर लगी। पखना स्टेशन पर यातायात का जो उपलब्ध एकमात्र साधन है वह है तांगा, जिससे आगे बारह किलोमीटर की दूरी तय कर जहां पहुंचा गया, वह जगह थी-संकिसा।

रामायणकालीन संकाश्य

संकिसा यानी रामायणकालीन संकाश्य और बुद्धकालीन संकस्स। यह नगर श्रावस्ती के बाद दूसरा नगर है, जहां भगवान बुद्ध को चमत्कार -प्रदर्शन करना पड़ा था, जबकि वे चमत्कार-प्रदर्शन के पक्ष में कभी नहीं रहे। बौद्ध मान्यताओं के अनुसार बुद्ध त्र्यस्त्रिस स्वर्ग में अपनी मां मायादेवी तथा तेंतीस देवताओं को अभिधम्म का उपदेश देने के बाद यहीं उतरे थे। स्वर्ग से उतरते समय तीन सीढ़ियां थीं-बीच की सीढ़ी रत्नों से जड़ित थी और अगल-बगल की सीढ़ियां सोने और चांदी की थीं। बुद्ध बीचवाली सीढ़ी से उतरे और अगल-बगल की सीढ़ियों पर उनके साथ थे एक ओर ब्रह्मा और दूसरी ओर शक्र (इंद्र)। इसलिए बौद्धों के लिए यह विशेष महत्त्व का धर्मस्थल है। इसकी गणना बौद्ध धर्म के अट्ठ महाठानानि यानी बुद्ध के जीवन-प्रसंगों से जुड़े आठ प्रमुख उन बौद्ध स्थलों में की जाती है, जिनकी यात्रा करने का निर्देश स्वयं बुद्ध ने अपने अनुयायी बौद्ध श्रावकों को दिया है। बुद्ध का मानना था कि इन स्थलों की यात्रा श्रावकों के लिए उनकी विराग वृत्ति की वृद्धि में सहायक हो सकती है।

वैभव का इतिहास

संकिसा आज उत्तर प्रदेश के जिले फर्रुखाबाद का एक साधारण छोटा-सा गांव है जो अतीत के वैभवशाली भव्य भवनों, मंदिरों, बौद्ध विहारों के जमींदोज ढूहों-टीलों के ऊपर बसा हुआ है । इसके वैभव का इतिहास रामायण काल तक जाता है लेकिन बुद्ध के जमाने में इसने चरमोत्कर्ष प्राप्त किया था, जिसका सबसे पहला उल्लेख हमें पहले चीनी यात्री फाहियान के यात्रा वृत्तांत में मिलता है जिसने बुद्ध के लगभग आठ सौ साल बाद संकिसा को देखा था। उसने जो देखा वह इस प्रकार है -'यहां छोटे-छोटे सैकड़ों स्तूप हैं। मनुष्य दिनभर गिना करे तो भी पार नहीं पा सकता। यदि कोई यह जानना ही चाहे और एक-एक स्तूप पर एक-एक आदमी खड़ा कर दे और फिर एक-एक आदमी को गिने तो भी न्यूनाधिक (संख्या) न जान पाएगा।'

'एक संघाराम (बौद्ध विहार) है। उसमें लगभग छह-सात सौ भिक्षु होंगे...जिस स्थान पर भिक्षुणी उत्पला ने स्वर्ग से अवतरित बुद्धदेव का अभिवादन किया था वहां स्तूप बना है . . . .स्वर्ग से लौटकर बुद्ध ने जहां स्नान किया था, उस जगह को बाद में लोगों ने तीर्थस्थान बना दिया। वह तीर्थस्थान अब तक है। . . .जहां बुद्ध आकर बैठे, जहां केश, नख छेदन किया, वहां स्तूप बने हैं। सर्वत्र स्तूप बने हैं। इस स्थान पर लगभग चार हजार श्रमण होंगे। सब संघ के भांडार में भोजन पाते हैं और हीनयान तथा महायान दोनों के अनुयायी हैं। 'बुद्ध जब भूमि पर उतर आये तो सीढ़ियां भूमि में धंस गयीं। केवल सात आरोह (पेढ़ियां) देखने के लिए बच गयीं। बाद में राजा अशोक ने यह जानने के लिए कि इनकी नींव कहां है, खोदने के लिए आदमी भेजे। पीले पानी तक जमीन खोदी गयी, पर अंत न मिला। अशोक की श्रद्धाभक्ति बढ़ गयी, उसने आरोह पर विहार बनवाया और मंध्य के आरोह पर सोलह हाथ की मूर्ति स्थापित की। विहार के पीछे तीस हाथ ऊंचा स्तंभ बनवाया, जिसके ऊपर सिंह बना है। स्तूप के चारों ओर बुद्धदेव की प्रतिमाएं बनवायीं। यहां जैनियों के आचार्यों ने बौद्ध भिक्षुओं से इस स्थान के अधिकार पर विवाद किया।

खुदाई करने पर इस स्थिति में मिली थी यह अशोक स्तंभ के शीर्ष की हाथी प्रतिमा।

यहां के लोग सुखी थे

'इस स्थान के पास एक श्वेतकर्ण नाग है। वही भिक्षुसंघ का दानपति है। जनपद में उसी की वजह से खूब अन्न होता है। यथासमय वर्षा होती है और ईतियां (दुर्भिक्ष) नहीं पड़तीं। इसके प्रत्युपकार में भिक्षुसंघ ने नाग के लिए विहार बना दिया है, उसके बैठने के लिए आसन कल्पित है, उसके लिए भोग लगता है और पूजा होती है। वर्षा बीतने पर नागराज कलेवर बदलता है। एक छोटा-सा संपोला बन जाता है जिसके कानों के पास सफेद बुंदकियां होती हैं। भिक्षुसंघ उसे पहचानते हैं, तांबे के कलश में दूध भरते हैं और नाग को उसमें डाल सभी लोगों के पास ले जाते हैं। यह कृत्य अकथनीय होता है। ऐसी यात्रा वर्ष में एक बार होती है। जनपद बहुत उपजाऊ है,

प्रजा सुखी है। यहां और देश के लोग आते हैं तो उन्हें कष्ट नहीं होने पाता, उन्हें जिस वस्तु की आवश्यकता होती है, देते हैं।'

विवरण ह्वेन सांग का

फाहियान के चीन लौटने के दो शताब्दी बाद चीन का एक दूसरा प्रमुख बौद्ध यात्री ह्वेन सांग आया। उसने अपने यात्रा- विवरण में इस स्थल का उल्लेख कपिथ राज्य के अंतर्गत करते हुए लिखा -

'राजधानी से कोई बीस ली (लगभग दस किलोमीटर) दूर पूर्व में एक वृहद संघाराम था। इसका निर्माण अत्यंत सुंदर था। उत्कीर्णन सूक्ष्म थे। बुद्ध की मूर्ति अत्यंत विशद रूप से सजायी गयी थी। कई सौ भिक्षु थे। उनकी सेवा में दसियों हजार गृहस्थ थे, जो संघाराम के निकट ही रहते थे। संघाराम की प्राचीर के अंदर त्रिविध सोपान (तीन प्रकार की सीढ़ियां) थे. . . .कालांतर में ये विध्वस्त हो गये तो विध्वस्त आधार पर त्रिविध सोपानों के प्रतिरूप स्वरूप ईंटों एवं पत्थरों से सोपान बनाये गये और उन पर रत्न जड़ दिये गये। वर्तमान सोपान सत्तर ली (लगभग 23 मीटर) ऊंचे थे। उन पर विहार भी खड़ा करवाया गया। विहार में एक प्रस्तर बुद्ध प्रतिमा सुशोभित थी। समीप में ही 23 मीटर ऊंचा एक प्रस्तर स्तंभ था, जिसे सम्राट अशोक ने खड़ा कराया था। स्तंभ के शीर्ष पर सिंह की प्रस्तर मूर्ति थी, जो सोपानों की ओर उन्मुख बैठी हुई दिखायी देती थी। . . .सोपानों के निकट उस स्थल में एक स्तूप था, जिस स्थल में चार भूत बुद्धों के आसनों एवं चक्रमण के अवशेष थे। उसके समीप एक स्तूप वहां खड़ा था जहां बुद्ध ने स्नान किया था। पास में ही एक चैत्य था।

'इंद्र और ब्रह्म स्तूपों के आगे भिक्षुणी उत्पला का स्तूप था। . . . एक वृहद स्तूप के दक्षिण पूर्व में एक ताल में नागराज इस तीर्थ की रक्षा करता था। . . .कालांतर में यह तीर्थ ध्वस्त होता चला गया।'

ह्वेन सांग ने यहां इस बात का भी उल्लेख किया है कि चार संघाराम, कोई एक हजार भिक्षु तो थे ही, 'दस देव मंदिर थे। विधर्मी (बौद्धों से इतर) अव्यवस्थित रूप से बसे हुए थे। वे सब के सब शिव भक्त थे।'

जब दस बड़े शिव मंदिरों और शैव मतावलंबी हिंदुओं का उल्लेख आया है, तो हमें रामायणकालीन इतिहास देखना होगा। बाल्मीकि रामायण के आदिकांड के पच्चीसवें सर्ग में मिथिला नरेश जनक अपने पुरोहित शतानंद से कहते हैं -

भ्राता मम महातेजा वीर्यवान ति धार्मिकः।
कुशध्वज इति ख्यातः पुरीम धवसच्छु भाम।
वार्याफलक पर्यंतां
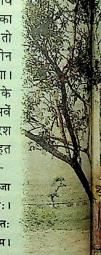
पिवन्निक्षुमती नदीम सांकाश्यां पुष्य संकाशां विमानमिव पुष्पकम् ।

अर्थात, महाप्रतापी, पराक्रमी, धर्मप्रवण मेरा भाई कुशध्वज प्रख्यात सांकाश्य नगरी में राज्य करता है। नगरी चारदीवारी से सुरक्षित है और वहां इक्षुमती नदी प्रवाहित होती है। यह नगरी पुष्पक विमान के समान सुंदर और सुखदायी है।

आगे का प्रसंग यह है कि जनक के समय में संकाश्य पर सुधन्वा का राज्य था। सुधन्वा ने मिथिला पर आक्रमण कर उसे घेर लिया और सीता तथा शिव धनुष की मांग की। मांग पूरी न किये जाने पर युद्ध हुआ, जिसमें जनक के हाथों सुधन्वा मारा गया। उसका राज्य जनक ने अपने भाई कुशध्वज को दे दिया, जिसकी कन्याएं-मांडवी व श्रुतिकीर्ति का विवाह क्रम्शः भरत व शत्रुघ्न के साथ हुआ। संकिसा का उल्लेख पाणिनी की अष्टाध्यायी में भी मिलता है और गजेटियर में भी कालांतर में यहां सब कुछ ध्वस्त हो गया।

पुरातात्त्विक प्रयास

अंगरेजी शासन के दौरान पुरातत्त्व विभाग के निदेशक सर एलेक्जेंडर कनिंघम जब बौद्ध स्थलों की खोज कर रहे थे, तो वह दोनों चीनी यात्रियों के विवरणों के आधार पर सन् 1876 में इस स्थान को संकिसा के रूप में चिह्नित कर पाये। फाहियान ने लिखा था कि वह मथुरा से पूनी नदी (वर्तमान काली नदी और रामायण कालीन इक्षुमती नदी) के किनारे-किनारे अठारह योजन चलकर यहां पहुंचा। यहां नाग विहार में वर्षावास कर दक्षिण पूर्व में सात योजन चलकर कान्यकुब्ज (कन्नौज) पहुंचा। ह्वेन सांग यहां से दक्षिण पूर्व दिशा में दो सौ ली (सौ किलोमीटर) से कुछ कम दूरी पर कन्नौज पहुंचा।

प्राचीन ध्वंसावशेष में विसारी देवी का मंदिर

जनरल कनिंघम ने संकिसा को चिह्नित तो कर लिया लेकिन सुनियोजित ढंग से उत्खनन नहीं करा पाया , फिर भी यहां जो साक्ष्य मिले हैं वह इसकी प्राचीनता को प्रमाणित करते हैं। साढ़े तीन मील के वृत्ताकार दायरे में चारों ओर फैले भग्नावशेष मिलते हैं। कहीं -कहीं पर तिहरी परकोटे की दीवारें मिलती हैं। यहां पर पाये जानेवाले भग्नावशेष इतनी बड़ी मात्रा में हैं कि उनके लिए किसी विशेष खुदाई की आवश्यकता नहीं पड़ती बल्कि खेतों में हल चलाते समय या मकान के लिए नींव खोदते समय पुरावशेष मिल जाते हैं।

भग्नावशेषों का ढेर

यहां के निवासियों का कहना है क्रि उन्हें आज तक मकान बनाने के लिए ईंटों और पत्थरों को बाहर से मंगवाने की जरूरत ही नहीं पड़ी क्योंकि वे इन्हें यहीं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते रहे हैं और शायद ही कोई ऐसा घर हो, जहां यहां की खुदाई में मिली मूर्ति न हो।

इस समय यहां पुरातात्त्विक महत्त्व की जो वस्तुएं व स्थल हैं उनमें उल्लेखनीय है- विसारी देवी का मंदिर, अशोक स्तंभ की शीर्ष प्रतिमा, कौंडिया ताल, निविका कोट के खंडहर में भग्न स्तूप, शिवलिंग, रेलिंग, स्तंभ और घाट।

वर्तमान संकिसा गांव एक टीले पर है- जो कि 455 मीटर पूर्व-पश्चिम तथा 30[illegible] मीटर उत्तर-दक्षिण लंबा-चौड़ा और 1[illegible] मीटर ऊंचा क्षेत्र है- जिसे किला कहा जा[illegible] है। गांव से कुछ दूर एक टीले पर विसा[illegible] देवी का मंदिर है । यह स्थान किसी मंदि[illegible] या स्तूप का अधिष्ठान रहा होगा। अधि[illegible] संभावना यह है कि विसारी देवी के मंदि[illegible] वाले स्थल पर मुख्य स्तूप या बौद्ध मंदि[illegible] था, जहां मान्यताओं के अनुसार बुद्ध उ[illegible] थे।

अब यहां एक मंदिर है

बौद्ध धर्म के भारत से पलायन के ब[illegible] जिस तरह अन्य बौद्ध स्थलों पर सनात[illegible] हिंदुओं और शैवों ने कब्जा कर लिया, इ[illegible] तरह यहां भी कब्जा कर लिया गया हो[illegible] और विसारी (विषहरी) देवी का मं[illegible] खड़ा कर दिया गया होगा, जिसे देखने [illegible] साफ लगता है कि इस छोटे-[illegible] मढ़इया-जैसे मंदिर को पिछ[illegible] ही कुछ समय में खड़ा कि[illegible] गया है। बुद्ध संभवतः श्राव[illegible] माह की पूर्णिमा को य[illegible] अवतरित हुए इसलिए यहां बु[illegible] पूर्णिमा पर नहीं बल्कि श्राव[illegible] पूर्णिमा पर उत्सव मनाया जा[illegible] है। विसारी देवी के मंदिर [illegible] जुलाई-अगस्त की श्रावण पूर्णि[illegible] पर बड़ा भारी मेला लगता है[illegible] लोक प्रचलित मान्यता यह है कि किसी [illegible] विषैले कीड़े द्वारा काटे जाने पर उसका ज[illegible] विसारी देवी की मानता मानने पर बेअसर [illegible]

जाता है। इसलिए इस देवी की बड़ी मान्यता है। इस पर खूब चढ़ावा चढ़ता है जो इस मंदिर के पुजारी की आय का साधन तो है ही, यहां लगनेवाला मेला भी इस गांव की अर्थव्यवस्था में अच्छा सहयोग देता है। ऐसे ही अन्य कारणों से इस गांव के बौद्धों और हिंदुओं में इस स्थान पर अपने-अपने अधिकार के दावे किये जाते रहे हैं और यह विवाद कई वर्षों से न्यायालय में विचाराधीन है। इसीलिए कभी-कभी तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है।

विसारी देवी के मंदिर के पास ही अशोक स्तंभ के शीर्ष की प्रतिमा है, जिसे चीनी यात्रियों ने सिंह बताया है लेकिन यह खंडित सूंढ़ वाले हाथी की प्रतिमा है। इस प्रतिमा का उत्खनन बड़ी कठिनाई के साथ किया जा सका है। बहुत समय तक उपेक्षित पड़ी रहने के बाद अब इसके चारों ओर कटहरा लगाकर इसे संरक्षित कर दिया गया।

मूर्तियां चोरी हो रही हैं

भगवान बुद्ध की ढाई हजारवीं जन्मशती के अवसर पर सन् 1956 में जब बौद्ध धर्म का भारत में पुनरागमन हुआ तो श्रीलंका के बौद्ध भिक्षु भदंत विजय सोम ने हाथी की प्रतिमा के समीप एक बौद्ध मंदिर की स्थापना की। पुरातात्त्विक महत्त्व का क्षेत्र होने के कारण इस समूचे परिसर की रखवाली के लिए एक चौकीदार नियुक्त किया हुआ है लेकिन अब तक अनेक उल्लेखनीय मूर्तियां तस्कर चुराकर ले जा चुके हैं, जबकि गांव के सजग निवासियों ने कुछ मूर्तियों को चोरी जाने से बचा भी लिया है।

विसारी देवी मंदिर के युवा महंत भंवरपाल ने मंदिर का ताला खोलकर मुझे दर्शन करने दिये और मंदिर की बगल में बैठकर उसने फोटो भी खिंचवाया लेकिन मंदिर विवाद के लिए बौद्धों को भी जिम्मेदार ठहराया।

नया बौद्ध मंदिर

बौद्धों ने अब अपना एक नया बौद्ध मंदिर और भवन बना लिया है जो गांव में प्रवेश द्वार पर मुख्य सड़क के किनारे है। मंदिर से लौटकर इस नये श्री देवावरोहण मैत्रेय बुद्ध विहार के प्रमुख भिक्षु श्रीलंका के डॉ. जुलाम्पितिक्ष से मैं मिला। वह ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों में बौद्ध धर्म दर्शन के व्याख्याता रहे हैं। उनसे कुछ चर्चा हुई। उन्होंने आग्रह कर भोजन कराया और आश्विन (शरद) पूर्णिमा पर उस समय आने के लिए आमंत्रित किया जबकि बौद्ध उत्सव होता है। बुद्ध विहार के सामने की सड़क से फर्रुखाबाद की ओर जाती बस को पकड़ फर्रुखाबाद और वहां से दिल्ली, उसी रात लौट आया-संकिसा के इतिहास की भूलभुलइया में भटकते हुए।

-सी-बी 66 डी, जी-8 एरिया,
राजौरी गार्डन, नयी दिल्ली-64

झुन्नू पानवाला जीवन में बहुत ज्यादा नहीं चाहता। उसके सपने बहुत छोटे-छोटे हैं। वह ईश्वर से मांगता है-साधारण जीवन। वह लेखक बनना चाहता है, यह बात उसने कवि-कथाकार विमल कुमार को बतायी

ईश्वर मुझे दे साधारण जीवन

छाया : सर्वेश

मेरे जीवन में सबसे खुशी का दिन : 'जिस दिन मैं पापा-मम्मी को स्कूटर पर बिठाकर चला रहा था।' झुन्नू की डायरी में ढेर सारी बातें लिखी हुई हैं, लेकिन इस बात पर मेरी नजर टिक जाती है। इस भरे बाजार में कितनी छोटी-सी खुशी है उसकी! 'क्या तुम्हारे पास स्कूटर है?' 'नहीं, वह स्कूटर चांदना का था।

'चांदना कौन?'
'शर्ट बनानेवाली कंपनी का मालिक, जहां मैं पौने दो साल दो हजार रुपये की तनख्वाह पर काम करता था।'
इक्कीस वर्षीय झुन्नू उर्फ प्रदीप कुमार दुबे मुझसे बातों-बातों में खुल गया और बेहिचक अपनी रामकहानी सुनाने लगा।

झुन्नू की डायरी

' यह देखिए मेरी डायरी।' डायरी को पलटकर देखा तो एक पन्ने पर एक लंबी सूची थी जिसमें उसने लिख रखा था कि उसके मनपसंद राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, फिल्म, गायक, संगीतकार आदि कौन-से हैं। झुन्नू सिर्फ अपने बारे में ही नहीं सोचता। वह पूरी दुनिया के बारे में सोचता है। वह अच्छे-बुरे का फर्क समझता है। उसके मन में कुछ आदर्श हैं, कुछ सपने हैं, कुछ इच्छाएं हैं, कुछ भावनाएं हैं, कुछ आक्रोश है तो कुछ असंतोष भी है, कुछ दुःख भी है। उसका दुःख कुछ ज्यादा ही गहरा है, तभी तो वह जाड़े में अटल चौक के पास साढ़े पांच बजे ही दुकान खोलकर बैठ जाता है और रात दस बजे तक बैठा रहता है। सुबह में उसकी दुकान के पास सैर करनेवालों, स्कूल-कॉलेज जानेवाले छात्रों और दफ्तर जानेवाले कर्मचारियों का तांता लगा रहता है। कोई सिगरेट लेता है तो कोई पान तो कोई गुटका। ज्यादा भीड़ गुटका लेनेवालों की है।

झुन्नू की डायरी में लिखा है-'जीवन में दुःखी दिन दो नवम्बर, 2000।' 'दुःखी दिन का मतलब?' 'उसी दिन पुलिस मेरे पिता को पकड़कर ले गयी थी।'

क्यों?'

' पिताजी मेरठ रोड पर एक कंपनी में स्कियोरिटी में काम करते थे। एक दिन कंपनी में एक लाख रुपये का माल गायब हो गया। मैनेजर की पिताजी से खटपट चलती थी। उसने पिताजी पर इल्जाम लगा दिया चोरी का। पुलिस आयी, उन्हें पकड़कर ले गयी। सिंहानी गेट थाने में प्रभारी रणबीर सिंह चौहान थे। थाने में एक सप्ताह तक पिताजी आते-जाते रहे। कभी रात में पुलिसवाले रोक लेते थे, कभी दिन में । गबन मैनेजर ने ही किया था। पिताजी निर्दोष थे। दो साल हो गये। फिर कुछ नहीं किया पुलिस ने। लेकिन इस घटना ने पूरे परिवार को हिला दिया। पिताजी ने नौकरी छोड़ दी और उन्होंने सामने पान की दुकान खोल ली। मैं भी उनसे कहता रहा कि मैं भी नौकरी छोड़ दूंगा। गलत को मैं गलत ही कहता हूं।'

पिता पर मुसीबतें

झुन्नू की डायरी में लिखा है, 'जीवन में आदर्श-पिता और चाचा।' आगे यह भी लिखा है, 'दूसरे जन्म में क्या बनना चाहोगे' -'अपने पिता-जैसा कर्मठ और रूपेश - जैसा दोस्त।' क्योंकि उसके विचार बदलने में रूपेश की जबर्दस्त भूमिका रही। झुन्नू ने दसवीं के बाद ही पढ़ाई छोड़ दी। घर की माली हालत ठीक नहीं थी। घर में माता-पिता के बीच काफी झगड़ा होता था क्योंकि खर्चा

चल नहीं पाता था।

'मंहगाई ने कमर तोड़ रखी थी। घर के तनाव से पढ़ाई में मन नहीं लगता था, इसलिए दोस्तों की तरफ भागता था। संगत खराब हो गयी। जहां रहता था, वह लोकेलिटी भी वैसी ही थी। पर पढ़ाई के साथ-साथ मैं सिलाई भी करता था। अंततः साहिबाबाद के लालचंद शर्मा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, श्याम पार्क से मैंने पढ़ाई छोड़ दी और मोहम्मद शकील मास्टर टेलर के यहां काम करने लगा। वह बहुत ही नेक आदमी था। दो साल तक काम किया। पंद्रह सौ से ढाई हजार कमा लेता था पर दोस्ती और यारबाजी के चक्कर में इस कदर फंस गया था कि अंत में वह काम भी छोड़ दिया लेकिन जब से मैं घर में अपनी कमाई का पैसा देने लगा, गृह क्लेश खतम हो गया।'

लेखक बनने की इच्छा

इतनी कम उम्र में जगह-जगह काम करने से झुन्नू को यह दुनिया अच्छी तरह समझ में आ गयी है। वह कहता है, 'हाथ जोड़ोगे तो लात खाओगे, हाथ उठाओगे तो पैर छुआओगे।' यानी इस समाज में ताकत की भाषा चलती है। दुर्बल को सब सताते हैं। वह कहता है, 'हर आदमी को हर तरह से अपनी सेफ्टी करनी चाहिए, क्योंकि समाज और सरकार सुरक्षा नहीं देती है। आज राम और रावण दोनों बनना होगा। नहीं तो यह समाज मार देगा।' लेकिन झुन्नू ने अपनी डायरी में यह भी लिख रखा है, 'तहजीब से बोलो तो इज्जत मुफ्त में देता हूं।'

आगे उसने यह भी लिखा है, 'हे ईश्वर मैं अपने दायरे में रहकर जो मांगूं, वही देना और कभी मेरे मन को अशांत मत रखना।' 'ईश्वर से और क्या मांगते हो?' 'साधारण जीवन।'

'सबसे ज्यादा विश्वास?' 'ईश्वर में।'

डायरी में यह भी लिखा है- कैरियर कैसा चाहोगे- परिपूर्ण लेखक। 'तो तुम लेखक बनना चाहते हो?' 'हां, लेकिन क्या करूं? मैंने कई गाने लिखकर आनन्द बख्शी को भेजे, लताजी को भेजे, अन्नू मलिक को भेजे पर कोई जवाब नहीं आया।

साधारण जीवन : असाधारण बातें

मुझे पैसा नहीं चाहिए। मैं देखता हूं कि समाज की तमाम विद्रूपताओं के बीच झुन्नू पानवाले में अभी जीवन बचा हुआ है। उससे बात करने की इच्छा खतम नहीं होती लेकिन सुबह-सुबह लौटते हुए मैं यही सोचता हूं कि उसके साधारण जीवन में कितनी असाधारण बातें छिपी हुई हैं झुन्नू की यह बात मन में गूंज रही है-'अगर लड़ाई सच के लिए है तो लड़ाई जीवनभर चलनी चाहिए।' लेकिन हम लोग यह लड़ाई कितनी लड़ पा रहे हैं ?

-13/1016,
वसुंधरा, गाजियाबाद

टेढ़ी नजर

नो इज्जत से बाइज्जत

■ आलोक पुराणिक

भित्तियों पर करीना कपूर, विपाशा बसु के तरह-तरह के फोटू लगे हुए थे। मेनका, रंभा, उर्वशी इन फोटुओं में दरशायी गयी मुद्राओं को कॉपी करने की कोशिश कर रही थीं। ऊपर से ऑर्डर थे कि अगर नयी चाल की ट्रेनिंग पुरानी अप्सराओं ने नहीं ली, तो सबको वी.आर.एस. के जरिए रिटायर करवा दिया जाएगा। एक धमकी उन्हें यह भी दी गयी थी कि जो अप्सरा कायदे से परफॉर्म नहीं करेगी, उसे क्लिंटन के दफ्तर में काम करनेवाली मोनिका लेवेंस्की सरीखी बाला बना दिया जाएगा या फिर बिन लादेन की कई बीवियों में से एक।

कोने में करीने से सजी अलमारियों पर लिखा था- 'स्टाक ऑव शिवाज रीगल। अर्थात शिवाज रीगल नामक दारू झमाझम मात्रा में थी, हिंदीभाषियों के लिए उसका अनुवाद किया गया था-शिवरंजनी। भित्तियों पर इंगलिश में कुछ इस तरह के डायलॉग लिखे हुए थे- 'बी हैप्पी, यू आर इन स्वर्ग।' हालांकि हैप्पी वहां कोई भी नहीं था, किसी देवता को शिकायत थी कि मेनका उसे देखकर उस अंदाज में स्माइल नहीं करती, जिस अंदाज में किसी और को देखकर करती है। एक पंडा टाइप बंदा हल्के से शिकायत कर रहा था कि उसका मन करता है कि वह रंभा का अवलोकन उस निगाह से करे, पर वह यह सोचकर शरमाता है कि उसके स्वर्गवासी प्रपितामह भी सेम सभा में सेम निगाहों से रंभा को घूर रहे हैं। कुछ नये-नये स्वर्गवासियों को शिकायत थी कि अप्सरा पक्के राग ही क्यों गाती हैं जबकि पृथ्वी पर पक्के रागों का मामला बहुत कच्चा हो गया है। नये स्वर्गवासियों की डिमांड थी कि स्वर्ग को पृथ्वी के लेटेस्ट डेवलपमेंट्स के हिसाब से अपडेट किया जाए। कुल मिलाकर स्वर्ग वैसा ही था, जैसा वह भारतीयों के होते, हो सकता था।

स्वर्ग में एंट्री काउंटर पर चित्रगुप्त के सामने पांच सद्य टेबोलित (ताजे चुने) विधायक थे, उनमें दो बिहार के थे, तीन यू पी के थे। चित्रगुप्त ने विधायकों की फाइल देखना शुरू किया-चार मकान, आठ फॉर्म

हाउस, पच्चीस [illegible] पचास हेलीकॉप्टर, सौ पेट्रोल पंप, बीस बलात्कार, चालीस हत्याएं, अस्सी अपहरण . . . . । नरक, रौरव नरक- चित्रगुप्त ने फैसला सुनाया।

'ऑवजेक्शन मी लॉर्ड'-चित्रगुप्त के सामने विधायकों के वकील ने अपना पक्ष रखा। 'पर पहले तो वकील नरक में जाते थे, अब स्वर्ग में कैसे आने लगे'-चित्रगुप्त ने अपने असिस्टेंट से पूछा।

असिस्टेंट ने आगे असिस्टेंट से पूछकर बताया कि, 'नो सर, हाल के डाटा के हिसाब से सारे टॉप वकील अपने टॉप क्लाइंटों के साथ स्वर्ग में ही आते हैं। चित्रगुप्तजी आप चूंकि कई दिनों से स्वर्ग कंप्यूटरीकरण का ठेका अपने बंदे को दिलवाने में बिजी थे, इसलिए आपने हाल के ट्रेंड नहीं देखे। पाप-पुण्य के मामले में थोड़ी-सी अपडेटिंग अब जरूरी हो गयी है।'

'व्हाट, इन विधायकों ने इतना माल खाया है, इतनी हत्याएं की हैं फिर भी इसकी कोई गलती न मानी जाए'-चित्रगुप्त कुछ समझ नहीं पा रहे थे।

'नो, सर, यूपी-बिहार में अभी गलत - सही के फंडे थोड़े से बदल गये हैं। यू सी, यूपी में हर तरह से माल खाना सही है, गलत तब माना जाएगा, जब इसका पच्चीस फीसदी पार्टी के कोष में जमा न कराया जाए। खाना [illegible] नहीं है, जमा न कराना गलत है। जमकर खाओ और खाकर जमा कराओ। यूपी में बहनजी ने तमाम भाईजीयों को यही संदेश दिया है।'

'व्हाट, पब्लिक का माल खाना गलत नहीं है'-चित्रगुप्त ने पूछा। 'नो सर, मैं पहले कह चुका हूं, जमा न कराना गलत है। वैसे माल भी पब्लिक का है और ये भी पब्लिक के हैं ।' स्पष्टीकरण आया।

'पर पाप और पुण्य के रूल नंबर चार सौ बीस के पुराने एडीशन के अनुसार तो यह पाप है।' चित्रगुप्त पाप और पुण्य की किताब निकाल लाये।

'नो सर, ये पुराना एडीशन है। नया एडीशन बहनजी के भाइयों के नाम संदेश के बाद आया है। जिन आइटमों को पहले पाप माना जाता था, इधर उनका ट्रांसफर पुण्य के खाते में कर दिया गया है। यू नो, सर ये विधायक पापी नहीं हैं, ये सब के सब बाइज्जत लोग हैं।' चित्रगुप्त फिर बोले- 'बाइज्जत, व्हाट? इन सबकी बहुत इज्जत है क्या?'

असिस्टेंट ने समझाया-'जी बात यह है कि भारतवर्ष में खून, घपले करनेवाले ही रजिस्टर्ड बाइज्जत हो पाते हैं, बाकियों की इज्जत सर्टिफाइड नहीं हो पाती। जी बात यह है कि खून, घपले करनेवालों को अदालत जाना पड़ता है। अदालत जाने से पहले भले

ही घपलेबाजों [illegible] से लौटते हुए वह भिन्न स्थिति में होते हैं क्योंकि अदालत उन्हें तमाम आरोपों से बरी करते हुए कहती है- 'आप बाइज्जत बरी किये जाते हैं। सो प्रभु, टुच्चा जेबकट या लुच्चा राहजन भी अदालत से लौटते ही बाइज्जत हो [illegible] तो कई-कई बार के बाइज्जत बंदे हैं। प्रभु इज्जत, बेइज्जती, पाप और पुण्य के फंडे बहुत बदल गये हैं।'

चित्रगुप्त निरुत्तर हो गये। सारे विधायक स्वर्ग में एंट्री पा गये।

सपोर्ट प्राइज यानी समर्थन मूल्य

चित्रगुप्त के सामने एंट्री काउंटर पर एक सूटेड-बूटेड चशिमत सोने की चेनित बंदा स्वर्ग में जाने की इजाजत मांग रहा था। 'ओ सर, यह तो सपोर्ट प्राइज यानी समर्थन-मूल्य को लेकर बहुत चर्चित हुए थे', चित्रगुप्त के असिस्टेंट ने रिपोर्ट दी।

'समर्थन-मूल्य तो खेती-किसानी के अर्थशास्त्र का शब्द है । क्या यह किसान रहे हैं, अगर यह किसान रहे हैं, तो लगता है कि टूटे हाऊसवाले नहीं, बल्कि फॉर्म हाऊसवाले रहे हैं'-चित्रगुप्त ने चकरायमान अवस्था में पूछा।

'नो सर, समर्थन-मूल्य का मतलब आप समझे नहीं'-असिस्टेंट ने ठीक वैसे ही यह बात कही, जैसे कोई लाइनमारणोत्सक नौजवान किसी सुंदरी से यह कहता है-''आप मेरी भावनाओं को सही तरह से नहीं समझ रही हैं।''

चित्रगुप्त फिर पाप-पुण्य कोश निकाल लाये और समर्थन-मूल्य का मतलब देखने लगे-'वह मूल्य, जो सरकार द्वारा किसी अनाज आदि के बदले दिये जाने का वादा किया जाता है।' 'हे भाई, तू बता खेती-किसानी का बंदा रहा है। कभी किसी की कोई रकम वगैरह तो नहीं मारी', चित्रगुप्त ने समर्थन-मूल्य वाले बंदे से सवाल-जवाब शुरू किये।

'महाराज, मेरी रकम ही सी.एम. मार गये। मैं एक इंडीपेंडेंट एम.एल.ए. था। मैंने उनकी डुबायमान सरकार को समर्थन इस मूल्य पर दिया था कि पचास करोड़ रुपये और मंत्री पद मुझे मिलेगा। बाद में मुझे सिर्फ मंत्री पद दिया गया। मेरे पचास करोड़ मार दिये गये । इस सदमे में मेरा हार्ट-जिसके बारे में कइयों को शक था कि वो है भी कि नहीं- फेल हो गया। हे चित्रगुप्त मैंने समर्थन किया, पर मूल्य नहीं मिला।'

समर्थन-मूल्यवाला विधायक गौंडे जैसे चेहरे पर मेमने-जैसी विनम्रता लाने की कोशिश में कुछ उस तरह से दिखने लगा, जिस तरह से फिल्मों में अमरीश पुरी या गुलशन ग्रोवर प्रणय दृश्यों में दिखायी पड़ते हैं। चित्रगुप्त गुस्सा होकर बोले-'यह तो रिश्वत है। यह पाप है।' 'नो, सर, यह समर्थन-मूल्य है। सरकारी दफ्तरों में बाबू किसी की फाइल चाहे जब बंद कर सकते हैं, पर नहीं, वे उसे चलाने का समर्थन करते हैं, इसका वो मूल्य मांगते हैं। इसमें रिश्वत क्या है, यह तो समर्थन -मूल्य है। हवलदार जब चाहे आपको अंदर कर सकता है। पर नहीं, वो आपके बाहर रहने के अधिकार का समर्थन करता है, इसके बदले वह मूल्य मांगता है, तो इसमें रिश्वत क्या है, यह तो समर्थन-मूल्य है।'

चित्रगुप्त के असिस्टेंट ने समर्थन-मूल्य की नयी व्याख्या रखी। महाराज बिना मूल्य के समर्थन कैसा? आप चाहे जिससे पूछ लें। आप भारतवर्ष के अखबारों का अध्ययन कर लीजिए। सारे दल समर्थन-मूल्य बढ़ाये जाने की ही डिमांड करते हैं, विधायक ने आगे बात साफ की। तमाम अखबारों में समर्थन-मूल्य बढ़ाये जाने की मांग पढ़कर चित्रगुप्त चकराकर बैठ गये। नये फंडे के हिसाब से समर्थन -मूल्य पाप के खाते से निकल चुका था। चित्रगुप्त निरुत्तर थे। समर्थन मूल्यवाला विधायक भी स्वर्ग में एंट्री पा गया।

आगे की कथा यह है कि पाप-पुण्य के मामले में चित्रगुप्त इतने घपलियाए कि कई ठगों, तस्करों, विधायकों को स्वर्ग में एंट्री देने से इनकार कर दिया। इन सबने मिलकर अपनी हरकतों की जो व्याख्या की, उससे इंद्र भी सहमत हुए कि बदली हुई परिस्थितियों में ये सब स्वर्ग के अधिकारी हैं। आखिर में चित्रगुप्त को 'लेक ऑव नॉलेज' और 'आउटडेटेड नॉलेज' के आरोप में वी.आर.एस. के जरिए विदा करना पड़ा, बाइज्जत। फिर स्वर्ग में 'ओपन इनवीटेशन' टांग दिया गया-सारे चोर, डकैत, नेता, तस्करों और इनसे मिलते-जुलते धंधेवालों का स्वर्ग में स्वागत है। प्रश्न यह है कि अब नरक में कौन जाता है? नरक में वे सारे ईमानदार जाते हैं, जो समर्थन-मूल्य लेने का विरोध करते हुए अपने परिवारों को कार, फॉर्महाउस, सिंगापुर, स्विट्जरलैंड यात्राओं की चाहों को मारकर उनकी आहें बटोरते हैं।

वैसे आप ही बताइए, ऐसे परिवार सताऊओं का ठौर नरक नहीं होगा, तो और क्या होगा? लेटेस्ट खबर यह है कि नरक ऐसे झेलू, ईमानदारी के संस्मरण-सुनाऊ कुंठितों का जमावड़ाभर बनकर रह गया। नरक के कर्मचारी भी अब हाहाकार करने लगे हैं कि दिन-रात ईमानदारों का बोर-शोर सुनकर रौरव-नरक बौरव-नरक बन गया है।

परम लेटेस्ट खबर यह है कि रौरव - नरक से आगे की कैटेगिरी अब बौरव -नरक के रूप में चिन्हित की गयी है। जहां सिर्फ और सिर्फ ईमानदार जाते हैं।

-14-डी पॉकिट ए,जीटीबी इन्क्लेव,
दिल्ली-110093
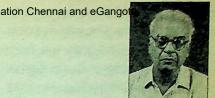
■ अनंतराम गौड़

क्या शिवाजी के पूर्वज राजस्थान के थे?

होरीलाल कनोजिया, नासिक

क्या यह सच है कि शिवाजी के पूर्वज मूलत: राजस्थान के थे?

शिवाजी राजसी परिवार के हैं, ऐसा दावा करने में एक समस्या थी। वे एक मराठा थे जो एक ऐसी जाति है जिसकी गिनती तब शूद्रों में होती थी, जबकि हिंदू परंपरा सदा से यह रही है कि केवल क्षत्रिय को ही राजसिंहासन पर बैठने का अधिकार है लेकिन इतिहासकार ऐब्रहम इरैली लिखते हैं कि यह कोई ऐसी समस्या नहीं थी, जिसका समाधान संभव नहीं था। अत: इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि शिवाजी के योग्य, उदार एवं अनुग्राही वंशविषयक गुप्तचरों ने उनके लिए सर्वोत्तम क्षत्रिय वंश परंपरा खोज निकाली। उन्हें मेवाड़ के सूर्यवंशी क्षत्रियों का वंशज घोषित कर दिया गया। (ज्ञातव्य है कि भगवान राम भी सूर्यवंशी क्षत्रिय थे।) इसे स्वीकार करने में महाराष्ट्र के ब्राह्मणों में हिचकिचाहट थी, किंतु वाराणसी के विद्वान ब्राह्मण और हिंदू धर्मग्रंथों के अधिकारी पुरुष गंगा भट्ट ने इस पर अपनी मोहर लगा दी और शिवाजी सूर्यवंशी क्षत्रिय बन गये।

कमला वर्मा, गंगाशहर (बीकानेर)

वे पंचकन्याएं कौन हैं जिनके स्मरण से महापातक दूर होते हैं?

अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा, तथा मंदोदरी: पंचकन्या: स्मरोन्नित्यं महापातकनाशनम्॥

अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा, मंदोदरी इन पांच कन्याओं (महिलाओं) का प्रात:काल स्मरण करने से महापातक का नाश होना बताया गया है।

भोलानाथ स्नातक, पुणे

अष्टछाप कवि कौन हुए तथा अष्टछाप का तात्पर्य क्या है?

पुष्टिमार्गीय आचार्य वल्लभ के काव्यकीर्तनकार चार प्रमुख शिष्य थे तथा उनके पुत्र विट्ठलनाथ के भी ऐसे

ही चार शिष्य थे। ये आठों ब्रजभूमि के निवासी थे और श्रीनाथजी के समक्ष अपनी रचनाओं को गाकर नृत्य किया करते थे। अष्टछाप के निम्नलिखित कवि हुए हैं- कुंभनदास (1468-1582 ई.), सूरदास (1478-1580 ई.), कृष्णदास (1495-1575 ई.), परमानंददास (1491-1583 ई.), गोविंददास (1505-1585 ई.), छीतस्वामी (1481-1585 ई.), नंददास (1533-1586 ई.) और चतुर्भुजदास (1530-1585 ई.)।

गगन दीक्षित, भोपाल

अकबर के नौ-रत्नों के नाम क्या थे?

अकबर के नौ-रत्नों के नाम पहले भी दिये जा चुके हैं। यदि आप 'कादम्बिनी' की फाइल रखते हैं, पुराने अंकों में खोजने से मिल सकते हैं। तथापि, उनके नाम हैं : बीरबल, मानसिंह, टोडरमल, अब्दुर्रहीम खानेखाना, तानसेन, फैजी, अबुल फजल, हकीम हुम्माम और मुल्ला दो प्याजा।

डॉ. जगदीश चंद्र लाड, रतलाम

वाल्मीकि कृत 'रामायण' की रचना कब हुई थी?

इस ग्रंथ का रचनाकाल विभिन्न कोशों में ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में बताया गया है। इस पर भी अभी तक कोई संदेह व्यक्त नहीं किया गया है कि रामायण के रचनाकार और सीता को उनके निर्वासन में आश्रय प्रदान करनेवाले वाल्मीकि अलग-अलग व्यक्ति थे। यहां 'दशरथ जातक' जैसे बौद्ध और जैन ग्रंथों की बात नहीं कही जा रही है जिनमें परस्पर विरोधी बातें लिखी गयी हैं।

जयपाल सिंह, उन्नाव

भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष कौन थे? डॉ. अंबेडकर की भूमिका क्या थी?

भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद चुने गये थे। संविधान का मसविदा तैयार करने के लिए एक समिति बनायी गयी थी जिसमें ए. रामास्वामी मुदालियर, सी.पी. रामास्वामी अय्यर, के.एम. मुंशी, बी.एन. राव-जैसे संविधान विशेषज्ञ सदस्य थे। इस समिति का अध्यक्ष डॉ. अंबेडकर को बनाया गया, क्योंकि महात्मा गांधी की यह इच्छा थी कि डॉ. अंबेडकर को कानून मंत्री और इस संविधान समिति का अध्यक्ष बनाया जाए। इस प्रकार संविधान निर्माण में सबका मिला-जुला सहयोग था।

किशोर व्यास, जबलपुर

घड़ियों के विज्ञापन में 10 बजकर 10 मिनट ही हमेशा क्यों दिखाते हैं?

घड़ियों में सामान्यतः घड़ी-निर्माता कंपनियों के नाम अक्सर ऊपर ही होते हैं। अतः घड़ी की सुइयों की यह स्थिति संभवतः घड़ी बनानेवाली कंपनी के नाम पर दृष्टि टिकाने के लिए की जाती है।

मनोज कुमार अग्रवाल, राजगांगपुर (उड़ीसा)

जीभ अपनी किस विशेषता के कारण स्वाद बता देती है?

जीभ के ऊपरी भाग में 'टेस्ट बड', यानी दाने होते हैं, जो स्वाद बताने के लिए सक्रिय रहते हैं। जीभ चार तरह के स्वाद बताती है- मीठा, खट्टा, कड़वा और नमकीन। जीभ का अग्र भाग मीठे और नमकीन के प्रति, पिछला भाग कड़वे के प्रति और अन्य शेष दोनों किनारे खट्टे के प्रति संवेदनशील हैं। बीच के भाग में स्वाद कोशिकाएं नहीं होतीं, इसलिए उससे कुछ भी पता नहीं चल पाता। कब्ज या बदहजमी होने पर इन कणिकाओं पर जमाव आ जाता है जिससे स्वाद बताना संभव नहीं हो पाता। यदि कोई बहुत गरम और अत्यधिक ठंडी चीज ले ली जाए तब भी कणिकाएं सुन्न हो जाती हैं। इस स्थिति में भी स्वाद की परख नहीं हो पाती।

सुधीर निगम, कानपुर

क्या 'दशरथ जातक' वाल्मीकि रामायण से पुरानी रचना है?

'दशरथ जातक' बौद्धकालीन रचना है जबकि रामायण का रचनाकाल ई.पूर्व चौथी शताब्दी का है।

मोहन कुमार सरकार, छपरा

'बादल फटने' का क्या तात्पर्य है?

आप संभवतः 'कादम्बिनी' के पुराने पाठक हैं। इस प्रश्न पर पहले भी विचार हो चुका है। तथापि, सूर्य की गरमी से सागर तथा अन्य जलाशयों का जल भाप में परिवर्तित होकर हवा में मिल जाता है और यह भाप हलकी होने के कारण काफी ऊंचाई पर पहुंच जाती है। आसपास के तापमान में थोड़ी-सी भी कमी से ये वाष्प-कण संघनित (कंडेंस) होकर बादल बन जाते हैं और बरसते हैं। अधिक ऊंचाई पर जब इन बादलों का एकत्रीकरण (न्यूक्लिएशन) होता है तो तूफानी हवाओं से इन पर भारी दबाव पड़ता है जिससे ये निचुड़कर एकदम-से बरस पड़ते हैं। इसी को बादल का फटना कहते हैं, क्योंकि बादल फटने पर वर्षा बूंदों में नहीं होती बल्कि मूसलाधार होती है।

वंदना सरकार, आरा

बुलबुल किस मौसम का पक्षी है और कहां पाया जाता है?

बुलबुल एक बारहमासी पक्षी है, जिसकी लगभग 120 प्रजातियां पायी जाती हैं। भारत, अफरीका, मेडागास्कर, अरब, ईरान से लेकर पूर्व दिशा में चीन और इंडोनेशिया तक में पाया जाता है। वैसे हिमालय की वादियों में बुलबुल का सुमधुर संगीत गूंजता रहता है, लेकिन क्रुद्ध होने पर खड़खड़ाहट-जैसी आवाजें भी यह निकालता है और चीख भी पड़ता है। शरीर पर सफेद धब्बेवाला बुलबुल सीरिया, अफगानिस्तान, उत्तर और पश्चिम भारत, मध्य चीन से मलयेशिया, फिलीपींस और माल्यूकस में पाया जाता है। छींटेवाले घुमावदार

पंख, गरदन पर कहीं कहीं कालिमा, पूंछ के नीचे पीला धब्बा बुलबुल की चारित्रिक विशेषताएं हैं। भारत में सफेद गालवाले बुलबुल की तीन प्रजातियां हैं- गुलदुम बुलबुल, सिपाह बुलबुल और कांगड़ा बुलबुल। इनकी शक्ल-सूरत में अंतर तो होता है लेकिन आदतें एक-जैसी हैं। बुलबुल अकसर जाड़ों में दिखायी पड़ते हैं। फल इनका मुख्य भोजन है। वैसे तो अकेले या जोड़े में रहते हैं पर कभी-कभी इनको फल के पेड़ों पर झुंड में भी देखा जा सकता है। बाग-बगीचों में होनेवाले समारोहों में रसोईघर तक यह स्वआमंत्रित होते हैं। फल मुख्य भोजन होने पर भी ये कीड़े-मकोड़े आदि खा लेते हैं। बुलबुलों का प्रजनन काल मई-जून में है, जिसमें मादा बुलबुल दो बार अंडे देती है और तभी ये अपना छोटा गहरा घोंसला किसी नीची झाड़ी, झाऊ या सरपत के घने बूटे से बनाती हैं जिसे मुलायम घास, चीथड़े और बालों से नरम बना दिया जाता है। ये पक्षी शिकारियों से अपने बच्चों और घोंसलों का बहुत साहस से बचाव करते हैं।

रवीन्द्र ठाकुर, उदयपुर

आखिर दिल का दौरा क्यों पड़ता है?

दिल एक पंप की सहायता से हमारे खून को साफ करता है। यह शरीर के सभी हिस्सों को ऑक्सीजन तथा भोजन प्रदान करता है। साथ ही हृदय मांसपेशियों को भी खून पहुंचाता है। जिस नाड़ी द्वारा खून पहुंचाया जाता है उसे कारोनरी धमनी कहते हैं। कई बार एक या उससे अधिक कारोनरी धमनियों में से कोई धमनी रुक जाती है तो हृदय को ठीक तरह से ऑक्सीजन नहीं मिल पाती। इससे कई बार तो व्यक्ति को सामान्य पीड़ा होती है, किंतु कई बार उसकी मांसपेशियां निष्क्रिय हो जाती हैं। इसे दिल का दौरा कहते हैं। जब भी हम वसा और चरबीवाली वस्तुओं का प्रयोग करते हैं तो धमनी की अंदरवाली परत पर चरबी जमना शुरू हो जाती है। कभी तो अधिक चिकनाईवाले पदार्थों के प्रयोग से चरबी की परत की धमनी को ढंक डालती है। ऐसे में धमनी सिकुड़ जाती है और धमनी से खून नहीं जा पाता। वहीं पर रक्त का थक्का जम जाता है और पूरी तरह खून को रोक देता है। इसी से दिल का दौरा पड़ता है और धमनियों का मार्ग बदलने के लिए बाईपास सर्जरी करनी पड़ती है।

चलते-चलते

पत्रकारों के लिए आयोजित लंच में एक केंद्रीय मंत्री के पुत्रों ने अतिथियों का नमस्कार से स्वागत किया। एक पत्रकार ने उनसे पूछा कि आपके आदर्श कौन हैं और आप क्या बनना चाहेंगे सचिन या शाहरुख? जवाब में एक ने मंत्री और दूसरे ने प्रधानमंत्री बनने की इच्छा जाहिर की।

ईरान के शाह का तख्ता पलटने के आरोप में जेल में बंद डॉक्टर फेरिदून ने अल्सर के एक रोगी को दो गिलास पानी पिलाने को कहा और उसका दर्द जाता रहा। तब से उन्होंने जल-चिकित्सा की खोज शुरू की और परिणाम कितने आश्चर्यजनक रहे, यह बता रहे हैं - सत सोनी

पानी कई बीमारियों का इलाज है

सन् 1979 की बात है। ईरान में शाह का तख्ता पलटने के बाद नये प्रशासन ने अनेक बुद्धिजीवियों और व्यवसायियों को जेल में ठूंस दिया। इनमें डॉक्टर फेरिदून बतमंगलीज़ भी थे, जिन्हें तेहरान की एक जेल में रखा गया था। आठ व्यक्तियों के लिए बनी कोठरी में लगभग 90 लोग थे।

डॉ. फेरिदून बताते हैं : "एक रात साथी कैदियों ने मुझे जगाया। कोठरी में एक कैदी पेट के अल्सर के दर्द से छटपटा रहा था लेकिन मैं क्या कर सकता था? मुझे जेल में दवाइयां ले जाने की इजाज़त तो थी नहीं। मैंने कहा :'इसे दो गिलास पानी पिलाइए।' कुछ ही मिनटों में रोगी का दर्द जाता रहा। मैंने उसे कहा, 'नियमित रूप से पानी पिया करो।'

जब तक वह जेल में रहा, उसे फिर कभी दर्द नहीं हुआ।

चिकित्सा की शुरुआत ऐसे हुई

जेल की उस तंग कोठरी में उस रात जल के चमत्कार से स्वयं डॉ. फेरिदून भी आश्चर्यचकित थे। इसलिए कि लंदन में डॉक्टरी की शिक्षा में यह बात नहीं बतायी गयी थी। ''मैंने जल चिकित्सा पर सोच-विचार शुरू कर दिया, जेल में तनाव और दबाव से होनेवाली स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का इलाज मैंने पानी से करना शुरू कर दिया।''

अपने तीन वर्ष के जेल-जीवन में अल्सर के बीसियों मरीजों का इलाज डॉ. फेरिदून ने सिर्फ पानी से किया। जेल से छूटने के बाद उन्होंने जल चिकित्सा पद्धति का विकास किया। नये- पुराने रोगों से परेशान सैकड़ों लोगों को फायदा हुआ। दमा, दिल के दर्द, सीने में जलन, तनाव, सिरदर्द, जोड़ों के दर्द, पीठ की पीड़ा, आंत के रोगों, मोटापे की समस्याओं, यहां तक कि उदासी और अवसाद (डिप्रेशन) के रोगियों को भी स्वास्थ्य लाभ हुआ।

डॉ. फेरिदून का कहना है कि पर्याप्त मात्रा में पानी पीते रहने से कई बीमारियां पास नहीं फटकतीं और अनेक रोग स्थायी रूप से ठीक हो जाते हैं। उनका कहना है, ''यह बात मैं अपने अनुभवों और गहन शोध के आधार पर कह रहा हूं। अब मेरा उद्देश्य जन साधारण को यह बताना-समझाना है कि शरीर में पानी की कमी से कोई भी बीमारी हो सकती है। इसलिए खूब पानी पीजिए। यदि फिर भी लाभ न हो, तो किसी डॉक्टर से सलाह लें। यदि आप पहले से ही किसी डॉक्टर से इलाज करा रहे हैं, दवाइयां ले रहे हैं, तो उन्हें बंद न करें।''
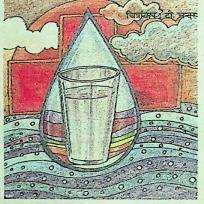
ये रोग नहीं हैं

डॉ. फेरिदून के अनुसार, शरीर के विभिन्न भागों में पानी की कमी होने से कई लक्षण उभरने लगते हैं जिन्हें रोग समझ लिया जाता है। ये लक्षण जल के असंतुलन के कारण उत्पन्न होते हैं यानी 'डीहाइड्रेशन' की वजह से। आमतौर पर ये समस्याएं रोगी को पर्याप्त मात्रा में पानी पिलाकर दूर की जा सकती हैं लेकिन डॉक्टर देते हैं दवाइयां जिनसे रोगी को अस्थायी रूप से लाभ तो होता है, किंतु इन दवाइयों से शरीर में जल-संतुलन और भी बिगड़ जाता है। दर्द बढ़ता

गया ज्यों-ज्यों दवा की जैसी हालत पैदा हो जाती है। शरीर में पानी की अत्यधिक कमी से रोगी की मृत्यु भी हो सकती है। डॉक्टर कह देता है कि वह अमुक रोग से मर गया। डॉक्टर प्राय: रोग की जड़ तक पहुंचने की कोशिश नहीं करते। अत्यधिक तनाव, दमा, पेट के अल्सर, जोड़ों के दर्द आदि के रोगी जिंदगीभर दवाइयां खाते रहते हैं, लेकिन ठीक नहीं होते।

प्यास लगे तो पानी पियें

शरीर में पानी की कमी ज्यादा हो , तो मुंह सूखने लगता है। एक गलत धारणा यह है कि प्यास लगे तो पानी ही क्यों, कोई भी पेय लिया जा सकता है-बोतल बंद पेय, चाय, कॉफी, बिअर वगैरह कुछ भी। लेकिन सच तो यह है कि पानी का विकल्प नहीं है। पानी की कमी से एलर्जी, पेट के रोग, सिरदर्द, टांगों में दर्द और अन्य अनेक बीमारियां हो सकती हैं। डॉ. फेरिदून का कहना है कि संक्रमण (इंफेक्शन) और चोट के कारण दर्द के अलावा किसी भी प्रकार का नया या पुराना दर्द हो, तो पानी पीजिए-दो-ढाई लीटर पानी हर रोज। कुछ दिन पानी पीते रहें। दर्द से फिर भी छुटकारा न मिले, तो अपने डॉक्टर से सलाह-सहायता लें।

डॉ. फेरिदून ने अपनी पुस्तक में, अनेक रोगों के उपचार में, जल की भूमिका का उल्लेख किया है। यहां कुछ आम बीमारियों का जिक्र करना ही ठीक रहेगा।

कब्ज का इलाज पानी

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में सबसे व्यापक हैं पेट के रोग। कब्ज कई बीमारियों की जड़ है। कब्ज हो तो सोचिए कि कारण क्या है? हो सकता है आप खाना बहुत जल्द खाते हों। लोग समय-असमय भी खाते हैं। भूख न होने पर खाते हैं। दिनभर में छह से दस कप तक चाय, कॉफी और दो- एक बार बोतल बंद पेय पीं लेते हैं। ऊपर से धूम्रपान। चाट-पकौड़ी, समोसे, मिठाई, मैदे से बनी चीजें जब मिल जाएं, खा लेते हैं। फल-सब्जी नहीं खाते, किसी भी तरह का व्यायाम नहीं करते। चिंता, तनाव भी कब्ज की एक वजह हो सकती है। अपना खान-पान सुधारें और खूब पानी पिया करें। पाचन-क्रिया संबंधी अन्य रोग हैं पेट दर्द, अपच, अफारा, अल्सर-जैसे आंत के रोग, पेट और सीने में जलन, जब हम एक गिलास पानी पीते हैं, तो वह सीधा आंतों में चला जाता है और

आधे घंटे के बाद पेट में। पानी भोजन पचाने में सहायक होता है और एसिडिटी को रोकता है। दर्द होता तो पेट में है, लेकिन दरअसल सारे शरीर में ही पानी की कमी होती है। तो पानी पीजिए। हां, पेट में फोड़े के कारण दर्द हो, तो वह पानी पीने से ठीक नहीं होगा। ऐसी हालत में डॉक्टर से सलाह लें।

एक पानी, कई इलाज

जोड़ों का दर्द : आज करोड़ों लोग जोड़ों के दर्द से परेशान हैं। अनेक लोग जोड़ों के दर्द के कारण अपंग हो जाते हैं। जोड़ों में दर्द हो तो समझ लीजिए आपके शरीर को अधिक पानी की जरूरत है हालांकि कुछ स्थितियों में नमक की कमी भी इसकी एक वजह हो सकती है। डॉ. फेरिदून के अनुसार जोड़ों में सूजन का कारण भी जल का असंतुलन है। जिन लोगों को पीठ के निचले हिस्से का दर्द रहता हो, उन्हें भी अधिक पानी पीना चाहिए और उठने-बैठने के तौर-तरीकों में सुधार लाना चाहिए।

सिर दर्द : सिर दर्द तनाव और दबाव के कारण हो, शराब पीने से हो, धूप में चलने-फिरने से हो या फिर गरम बिस्तर या गरम कमरे में सोने से हो, वास्तविक कारण एक ही है-पानी की कमी। जो लोग माइग्रेन (अत्यधिक सिर दर्द) से परेशान हों, उन्हें भी खूब पानी पीना चाहिए।

सांस के रोग : श्वास लेने से फेफड़ों में जल का अभाव हो जाता है और पर्याप्त मात्रा में पानी न पिया जाए, तो सांस लेने की मांसपेशियां सिकुड़ जाती हैं और सांस लेने में कष्ट होने लगता है। दमा के रोगी या सांस की किसी अन्य बीमारी में पानी पीने से लाभ होगा। कई प्रकार के विषाणुओं, वैक्टीरिया, एलर्जी का इलाज है पानी।

उदासी का भी इलाज है पानी

तनाव और अवसाद : कई तरह की समस्याओं से घिरे रहने से, अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी होने से और टूटते सपनों से अवसाद (डिप्रेशन) हो सकता है। उदासी और निराशा एक सीमा से बढ़ जाए, तो मानसिक संतुलन बिगड़ सकता है। आमतौर पर डिप्रेशन अस्थायी होता है, लेकिन कई लोगों के लिए भयभावना, चिंता, क्रोध, ईर्ष्या आदि से छुटकारा पाना संभव नहीं होता और उन्हें डॉक्टर की सलाह-सहायता की जरूरत पड़ती है।

डॉ. फेरिदून का कहना है कि भय, चिंता, असुरक्षा और अन्य भावनात्मक समस्याओं का कारण है जल का अभाव। मस्तिष्क में तीन-चौथाई से अधिक पानी होता है। जिस तरह पानी से बिजली बनती है, उसी तरह पानी मस्तिष्क की कोशिकाओं में जाकर ऊर्जा उत्पन्न करता है। पानी कम होगा, तो ऊर्जा का निर्माण नहीं होगा और दिमाग भली-भांति काम नहीं करेगा।

परिणाम होगा अवसाद। इसके

फलस्वरूप थकान होगी, तनाव होगा। अवसाद में व्यक्ति निढाल हो जाता है और उसमें जीवन की वास्तविकता का सामना करने की क्षमता कम हो जाती है। कभी थकान महसूस करें, उदास हों या निराशा घेरने लगे तो पानी पीजिए।

उच्च रक्तचाप : तनाव और दबाव हो तो संकट की स्थिति आ जाती है। (इसका उलटा भी ठीक है)। पानी की कमी और शारीरिक सूखे की स्थिति में रक्त की प्रवाह-क्रिया में गड़बड़ी पैदा हो सकती है। कुछ कोशिकाओं को पर्याप्त मात्रा में पानी नहीं मिल पाता। इसका परिणाम है उच्च रक्तचाप, जो अन्य कारणों के साथ-साथ तनाव से भी उत्पन्न हो सकता है।

मोटापा है पानी पीजिए

मोटापा : पाचन-क्रिया के लिए, जैसा कि बताया गया है, जल अत्यावश्यक है। इसके अभाव में सीने में जलन, पेट के अलसर और आंतों के रोग हो सकते हैं। हमारा मस्तिष्क सदा काम करता रहता है और उसे निरंतर ऊर्जा चाहिए। भोजन से उपजी रक्त-शर्करा (ब्लड शुगर) से उसे यह ऊर्जा मिलती है। जब इस ऊर्जा की मात्रा बहुत कम हो जाती है, तो मस्तिष्क एक साथ भूख और प्यास के संकेत देता है लेकिन अधिसंख्य लोगों के होंठ जब तक सूखने न लगें, वे भूख और प्यास का अंतर नहीं जान पाते। खाने की बजाय पानी पीने से कई बार पता चल जाता है कि प्यास लगी है या भूख। जिन लोगों का वजन जरूरत से ज्यादा है, उन्हें ज्यादा पानी पीने की सलाह देकर डॉ. फेरिदून ने मोटापा कम करने में सहायता दी है।

डॉ. फेरिदून बार-बार कहते हैं कि मेरा उद्देश्य आपके डॉक्टर का स्थान लेना नहीं है, मेरा संदेश और मेरा इलाज सीधा-सादा है। लगभग मुफ्त।

-सी-13/10, डी.एल.एफ.
सिटी-1, गुड़गांव-122002

लेखक के अनुभव

हर रोज सुबह दांत साफ करने के बाद दो गिलास पानी पीजिए और दो-चार महीनों में मात्रा बढ़ाते-बढ़ाते चार गिलास पानी पर आ जाइए। पानी पीने के पौन घंटे तक कुछ भी खाएं-पिएं नहीं। जिन लोगों को कब्ज की शिकायत हो, उन्हें दो-तीन गिलास पानी पीकर दो-तीन किलोमीटर पैदल चलना चाहिए। गरमी के मौसम में घर से बाहर जाएं तो कम से कम दो गिलास पानी पीकर निकलें। इससे लू लगने का खतरा कम हो जाता है। अधिक ठंडा पानी कई रोगों को आमंत्रित करता है। ताजा पानी पीजिए। दमा और सरदी-जुकाम के मरीज सरदी के मौसम में गरम पानी पिएं। दिन में दो-ढाई लीटर पानी पीने से त्वचा की चमक बनी रहती है। झुर्रियां नहीं पड़तीं। सामान्य स्थितियों में दो-ढाई लीटर पानी एक दिन में पीना चाहिए। यानी 12 से 14 गिलास पानी। गरमी के मौसम में इससे कुछ ज्यादा पानी पिया जा सकता है। बेहतर यही है कि 14-15 गिलास पानी तक ही सीमित रहें। बहुत अधिक पानी पीने से अधिक लाभ नहीं होगा, हानि की आशंका रहेगी। -स. स.

ढूंढ़ता रहूंगा किसी खुद को

चन्द्रकांत देवताले

दुनिया का नंगापन दिखाने
कूच के लिए खड़ा होऊंगा – बढ़ूंगा आगे
जब समझूंगा मैंने दागी है तोप
ठीक उसी वक्त
किसी प्रतिष्ठान के दहाने से
खुद दाग दिया गया होऊंगा
फटी आंखों चिंदा-चिंदा बिखरते
देखता रहूंगा अपना सर्वस्व

नेक, प्रबोधित, शुद्ध बचा हूं मैं पावन
बताते-बताते बांटने लग जाऊंगा
अपना बायोडाटा
और आत्मा की फर्जी फोटो कॉपी

रेखांकन: ध्रुवदान खड़े

असल आत्मा तो अंतरराष्ट्रीय मंडी में
शुरू कर ही चुकी होगी अपना धंधा

जिन-जिनको गिनाऊंगा दुश्मनों की सूची में
अपने से छिपकर बार-बार
उन्हीं के टेलीफोन नंबर मिलाऊंगा
जिन चीजों के विरुद्ध चीखूंगा
दिखूंगा जोखिम उठाता
धंसूंगा उन्हीं में,
सपने में उन्हीं को छाती से चिपकाऊंगा

सबके दु:ख में शामिल होने के अभिनय में
टोटा नहीं पड़ेगा आंसुओं का
पर अपने दु:ख के बारे में जब सोचूंगा
मुट्ठीभर रेत भी नसीब नहीं होगी

और एक दिन मुकर जाऊंगा
पहचानने से
निकल जाऊंगा दूर तक बाहर
पत्थरों की परछाइयों
और सूर्यास्त के तड़के आईने में
ढूंढ़ता फिरूंगा किसी खुद को ।

बाघ

रणथंभौर के अभयारण्य में तुमने
तीन घंटे में दो बार देखे
हमने पांच दिनों में हजारों बार देखा
अपने वतन हिन्दुस्तान के सरकस में
दुनिया का सबसे बड़ा बाघ

अभयारण्य में आज़ाद-बेखौफ़-बेखबर
घूम रहे थे
और तुम पिंजरे में से देख रहे थे वहां
हम निर्भय थे यहां अपने-अपने घरों में
और टकटकी लगाये देख रहे थे
जिस बाघ को
वह पिंजरे में था दूरदर्शन के
और हम पर झपट्टा नहीं मार सकता था

हमने यह भी देखा कि छूने के लिए
इस बाघ को
बदमिजाज बच्चों की तरह संसद में
मचल रहे थे मुल्क के भाग्य-विधाता

विश्व खेड़े की उत्तर आधुनिक
पण्य वीथी के गोरखधंधे में
अपनी ताकत के बूते खरीदने और
मन-मुताबिक बेचनेवाला
बेहद फुरतीला आकर्षक चमकदार बाघ
जो हमने देखा

म. प्र. के जिला बैतूल में 1936 को जन्मे चंद्रकांत देवताले, हिंदी के वरिष्ठ एवं सम्मानित कवि हैं। इनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में हुई। 'मजदूर' शीर्षक पहली कविता 1953 में प्रकाशित। लगभग दस कविता संग्रह अभी तक प्रकाशित। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का संपादन कर चुके हैं और 'मुक्तिबोध फैलोशिप' तथा 'माखनलाल चतुर्वेदी कविता पुरस्कार' से सम्मानित हो चुके हैं। हाल ही में वे 'पहल' सम्मान से सम्मानित किये गये हैं।

एकदम भिन्न है तुम्हारे देखे
अभयारण्यवाले शांत-सौम्य
सचमुच के बाघों से
यह न तो जंगल का, न पत्थर का
न म्यूजियम का
बोर्खेज की कवितावाला तो हरगिज नहीं
इसे देख याद आयी तो बस
पंचतंत्र की कहानीवाले उस बाघ की
जो सदियों से जीवित है स्मृतियों में
प्रतीक बन चुका है
विश्वासघाती दानी हिंसक पुण्यात्मा का।

- एफ-2/7, शक्तिनगर, उज्जैन (म.प्र.)

इराक-1

सुदीप बनर्जी

हर युद्ध में अपनी
भागीदारी समझकर
हथियार तो नहीं पर
अपनी आवाज़ वे ज़रूर उठाते हैं

सरे राह चाहे नहीं
किसी न किसी के कान में
ज़रूर कह देते हैं कि
वे इस बार किस तरफ हैं

हाल के बरसों में
कोई भी फसाद या जंग थमने पर
पराजितों के पाले में ही
उन्होंने खुद को खड़ा पाया है

परास्त होने का दम-खम होने पर ही
सोचने-समझने की जहमत उठानी चाहिए
दिल रखने का दंभ भरना चाहिए

सोचते हुए उन्होंने खुद को
इराक के साथ जुड़ा माना

बुश और दुनिया के तमाम हुक्मरानों में
कोई उनको नहीं सुन रहा और न ही
उनकी आवाज़ इराक के लिए
ढाल बन रही
फिर भी वे कह रहे हैं
ऐसी दुनिया में बचे रहने से
बग़दाद में ज़मींदोज होना बेहतर है ।

इराक-2

पीछे छूट चुका था इतिहास
रह गयी थी छोटी चिंताएं
पास-पड़ोस का दु:ख-दर्द भर कभी-कभी
वह भी कोई इतना विचलित
कर देनेवाला नहीं

सब जुट गये थे
संवारने अपनी दिनचर्याएं
नयी-नयी कंपनियों की
पेंशन योजनाओं में
देखते सपने भविष्य के
बेफिक्र दिन

सहसा सामने आ खड़ा हुआ इराक
बह निकली सिरहाने से यूफ्रेटीज़

जन्म : 16 अक्तूबर, 1946, इंदौर । 1969 से 1971 तक भारतीय पुलिस सेवा में और 1971 से भारतीय प्रशासनिक सेवा में । मध्य प्रदेश तथा केंद्र सरकार में विभिन्न प्रशासनिक पदों पर । इस समय केंद्र सरकार में अतिरिक्त सचिव । साक्षरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य । 'शब गश्त', 'जख्मों के कई नाम', 'इतने गुमान' (कविता संग्रह), तथा 'किशनलाल' (नाटक) प्रकाशित । दो नाटक, एक उपन्यास तथा कई कहानियां अभी अधूरी ।

बालू में उफन पड़ी टाइग्रिस
ढह गये दरो-दीवार सारे
महफूज़ अरमान गर्क़े दरिया हुए
जनाज़ा रोककर उतर पड़े
गये गुज़रे लोग और विचार

फिर से खुला समय सबके लिए

-मध्य प्रदेश भवन, चाणक्यपुरी, नयी दिल्ली.

सभी रेखांकन: हरिपाल त्यागी

15फरवरी, 1935 को जन्म अयोध्या में। अलीगढ़ विश्वविद्यालय से एम. ए, पी-एच. डी.। मेरठ और अलीगढ़ विश्वविद्यालय में अध्यापन।
संप्रति : बरकतुल्ला विश्वविद्यालय भोपाल की कार्यकारिणी के सदस्य।
विशेष : फैज़ अहमद फैज़-सरदार अली जाफरी तथा मजरूह सुल्तानपुरी -जैसे प्रतिष्ठित शायरों के बाद 'जश्ने-बशीर बद्र' का दुबई में आयोजन। अनेक देशों में कविता पाठ।
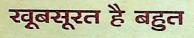
खूबसूरत है बहुत

बशीर बद्र

सच सियासत से अदालत तक है मसरूफ़ बहुत
झूठ बोलो, झूठ में अब भी मुहब्बत है बहुत

अजनबी पेड़ों के साये में मुहब्बत है बहुत
घर से निकलो, तो ये दुनिया ख़ूबसूरत है बहुत

सात संदूकों में भरकर, दफ्न कर दो नफरतें
आज इंसान को, मुहब्बत की ज़रूरत है बहुत

किसलिए हम दिल जलाएं, रात-दिन मेहनत करें
क्या ज़माना है, बुरे लोगों की इज्जत है बहुत

मुख्तसर बातें करो, बेज़ा वजाहत छोड़ के
नयी दुनिया है, बच्चों में जहानत है बहुत।

तुम नशे में हो

बाहर न आओ घर में रहो तुम नशे में हो
सो जाओ दिन को रात करो, तुम नशे में हो

पानी से इख्तलाफ का अंजाम सोच लो
मौजों के साथ-साथ बहो, तुम नशे में हो

बेहद शरीफ लोगों से कुछ फासला रखो
पी लो मगर अभी न कहो, तुम नशे में हो

क्या दोस्तों ने तुमको पिलाई है रातभर
अब दुश्मनों के साथ रहो, तुम नशे में हो

कागज का ये लिबास चिरागों के शहर में
जानां संभल-संभल कर चलो,
तुम नशे में हो

-११, रेहाना कॉलोना,
ईदगाह हिल्स, भोपाल (म.प्र.)

अधिकतर लोग रेल से लंबी यात्रा करने से डरते हैं। वे भाग्यशाली लोग भी, जो पहले दर्जे या वातानुकूलित डिब्बों में सफर करते हैं,अनेक कष्टों का दुख के साथ वर्णन करते पाये जाते हैं। उनके लिए दूसरे दर्जे में यात्रा करने की संभावना भी बड़े कष्ट की बात है।

जार्ज षष्टम पोस्टल टिकट पर

डब्लू जी स्टीम
लोकोमोटिव प्रियदर्शनी
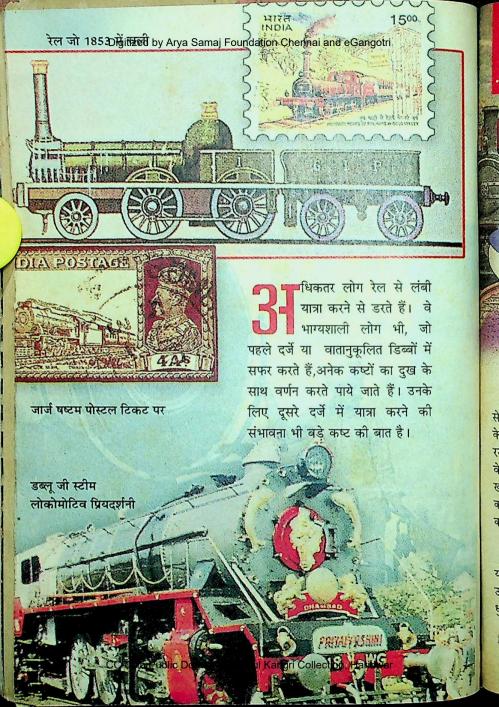
राजनीति की थकान और भागदौड़ से भरी जिंदगी में रेलयात्रा कितना सुकून दे जाती है और अध्ययन के लिए कितने फुर्सत के क्षण मुहैया कराती है यह लिखा था कभी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने। स्वतंत्रता-संघर्ष के दौरान उनकी रेल-यात्रा का यह अनुभव अपने आप में दुर्लभ है।

रेल में छुट्टी

फिर 'इंटर क्लास' अथवा तीसरा दर्जा तो उनके लिए खौफ की कोठरी है, जो उन गरीबों से भरी हुई है, जो अब तक उनसे दूर थे और जिनका मस्तिष्क और शरीर सिर्फ मानव श्रेणी के ऊपर के दर्जे के लोगों के लिए सुरक्षित सौंदर्य की अनुभूति करने की योग्यता या क्षमता नहीं रखता। यह सच है कि इस देश में वातानुकूलित और तीसरे दर्जे के डिब्बों में बेहद अंतर है। वे दो अलग-अलग दुनियाओं के द्योतक हैं। वे मानव संसार के विभिन्न दर्जों के बीच चौड़ी खाई हैं। यह भी सच है कि भारत में तीसरे दर्जे के यात्रियों के साथ- जिनके कारण रेल विभाग को बहुत बड़ी आय होती है- जो व्यवहार किया जाता है, वह बड़ा अपमानजनक और बदनामी का कारण बना हुआ है।

लंबी यात्राओं के लाभ

भारतीय रेल गाड़ियों के वातानुकूलित डिब्बों में सफर करने का मुझे कोई अनुभव नहीं है। यह दूसरी बहुत-सी चीजों की तरह से मेरी पहुंच से बाहर की चीज है। मैं तो सिर्फ बाहर से उन आरामदेह डिब्बों में झांक ही सकता हूं। पहले दर्जे की यात्रा भी मेरे लिए भूतकाल की धुंधली याद रह गयी है क्योंकि बहुत समय से मैंने उसमें सफर नहीं किया है। मैं तो तीसरे,

'इंटर क्लास' में या कभी-कभी दूसरे दर्जे में सफर किया करता हूं। अक्सर मेरे बहुत से दोस्त-जो आराम की जिंदगी बसर करने के आदी हैं मेरे नीचे के दर्जों में यात्रा करने पर घबराते हैं और कल्पना करते हैं कि मुझे न जाने कितनी तकलीफ होती होगी ? उन लोगों की चिंता बेकार है क्योंकि ये लंबी यात्राएं मेरे लिए बड़ी लाभदायक हैं और मुझे इनसे आराम मिलता है। हालांकि मैं शरीर से बहुत मोटा-तगड़ा नहीं हूं फिर भी मजबूत हूं और बिना किसी तकलीफ के अगर ज्यादा भीड़-भाड़ न हो तो तीसरे दर्जे में मजे में जा सकता हूं। मैं सोता हूं, आराम करता हूं, पढ़ता भी हूं और कुछ समय के लिए रोजाना का काम और लोगों से मिलना-जुलना भूल जाता हूं। सौभाग्य से जब भी सोना चाहूं, सो लेता हूं। मैं कभी अनिद्रा रोग का शिकार नहीं हुआ। मुझे नींद के लिए कभी परेशान नहीं होना पड़ा। अपने आप नींद आकर मुझे अपने कब्जे में ले लेती है,इसीलिए मैं लंबी यात्राओं की प्रतीक्षा में रहता हूं।

न काम, न मुलाकात

दो दिन हुए, पांच दिन तक व्यस्त रहने के बाद मैंने बंबई छोड़ी। मैं थक गया था और खूब आराम करना और सोना चाहता था। मुझे लखनऊ आना था। एक धीमी रेल जो दो रात और एक दिन यानी 36 घंटों में पहुंचती थी, मैंने पसंद की। इस लंबी यात्रा के विचार से और इस बात से कि न मुझे कोई काम रहेगा न मुलाकातों का झगड़ा होगा और मैं जितनी देर तक चाहूंगा सोता रहूंगा और किताबें पढ़ता रहूं, मैं बहुत खुश हुआ। इस आराम का पूरा आनंद लेने की गरज से मैंने दूसरे दर्जे में सफर करना मुनासिब समझा। रात के साढ़े दस बजे गाड़ी 'विक्टोरिया टर्मिनल' से चली। मैं अपनी सीट पर बिछे बिस्तर पर लेट गया और सोना चाहने लगा किंतु पुरानी आदत ने मुझे एक पुस्तक उठाने को लाचार कर दिया। स्टीफन ज्विग की, 'लैटर फ्राम एन अननोन वूमन' पुस्तक मैंने खोल ली। पुस्तक की कोमल और प्रभावोत्पादक कथा ने-जो सुंदर गद्य में लिखी हुई थी- मुझे आधी रात तक जगाये रखा। उसके बाद दस घंटे तक मैं लगातार सोता रहा। दूसरे दिन भी कुछ करने को नहीं था और मेरा मन उतने समय के लिए
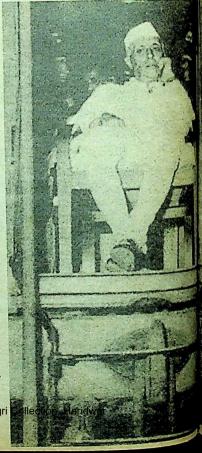
चिंताओं से मुक्त था और निश्चित समय पर उठने की लाचारी न होने से दिल में कोई परेशानी न थी।

यात्रा और पुस्तकें

मैंने हजामत बनायी, कपड़े बदले और आराम से चंद किताबें लेकर बैठ गया। सबसे पहले मैंने डब्लू बी. करी की 'दि केस फोर फैडरल यूनियन' पुस्तक उठा ली और उसके एक-दो अध्याय पढ़ डाले। पुस्तक दिलचस्प थी और सामयिक भी किंतु मैं कुछ हल्का साहित्य पढ़ना चाहता था। इसलिए मैंने उसे रख दिया लेकिन मुझे लगा कि यह पुस्तक स्ट्रीट की, 'यूनियन नाउ' की बनिस्बत जिसमें भारत, चीन तथा सोवियत संघ को छोड़कर एक संघीय यूनियन बनाने पर विचार किया गया है, काफी अच्छी थी।

उसके बाद डी. एन. प्रिट की, 'लाइट ऑन मास्को' उठा ली, जो धारावाहिक रूप से कुछ समय पूर्व 'हेराल्ड' में प्रकाशित हो चुकी थी। उसी समय मैंने उसके कुछ अंश पढ़े थे। मैं उसे पूरा पढ़ना चाहता था और वह पढ़ने योग्य निकली भी। याद कम रह पाता है और जब हम युद्ध के प्रचार में फंस जाएं तो यह भूल जाना स्वाभाविक है कि किन कारणों से यूरोप में युद्ध छिड़ा, वे कारण जो ब्रिटिश नीति पर प्रकाश डालते हैं तथा चेंबरलेन की सरकार की असलियत जाहिर करते हैं। यही सरकार युद्ध चला रही है, इसी सरकार के साथ हमें भी भुगतना होगा। इसलिए हमें यह समझ लेना चाहिए कि कई पीढ़ियों से ऐसी प्रतिगामी सरकार ब्रिटेन में नहीं बनी थी। इस सरकार ने यूरोप और दूसरे स्थानों पर प्रजातंत्र को कुचल कर 'फासिस्टवाद' को प्रोत्साहन दिया है। अगर ब्रिटेन की जनता इसी सरकार को स्वीकार किये रहे और हम लोग जनता को भी उसी रूप में देखें तो इसमें हमारा क्या अपराध है? अगर हमें उसके कार्यों के पीछे, युद्ध से पहले और शुरू होने के बाद, साम्राज्यवाद ही दिखायी दे तो इसमें हमारा क्या दोष है। उसके बाद दूसरी किताब उठा ली। एच. जी. वैल्स के पुराने निबंधों का संग्रह,'ट्रेव ल्स आव ए रिपब्लिकन रैडिकल इन सर्च आव हौट वाटर'। यह पुस्तक भी वैल्स की अन्य कृतियों के समान दिलचस्प और विचारों को उभारनेवाली है; किंतु इसमें आज की वास्तविकता का स्पर्श नहीं है।

कारणः क्रांति के

क्रांति के पीछे छिपे प्राकृतिक और ऐतिहासिक कारणों इसके बाद एक दूसरी पुस्तक मैंने उठायी। यह जार्ग बुचनर का प्रसिद्ध नाटक था– 'दांतेस टोड' या 'दांतेज डेथ' जो अंगरेजी में अनूदित था। सौ साल से भी अधिक पहले यह पुस्तक लिखी गयी थी और उसके साथ मैं भी फ्रांस की क्रांति के दिल हिला देनेवाले दिनों में पहुंच गया। मेरा दिमाग उस

क्रांति से आगे-पीछे हटकर आज हम भारतीय जहां खड़े हैं, वहां दौड़ गया। अपनी प्रेमिका को लिखे बुचनर के शब्द-जैसे मेरे सामने खड़े हो गये। क्रांति के पीछे छिपे प्राकृतिक और ऐतिहासिक कारणों से वह कितना प्रभावित था? मैं क्रांति के इतिहास का अध्ययन कर रहा हूं। मुझे लगता है, मानों इतिहास के भयावह भाग्यवाद ने मुझे मिटा दिया है। मनुष्य की प्रकृति में एक भयानक समानता है, मानव संबंधों में एक जरूरी हिस्सा है, जिसका सब व्यवहार करते हैं और कोई भी नहीं करता। व्यक्ति तो जल के बुदबुदे के समान है, महानता केवल एक संयोग है और प्रतिभा संपन्नता एक कठपुतली का खेल है, लौह नियम के विरुद्ध एक हास्यस्पद संघर्ष है। वास्तव में उच्च आदर्श कौन-सा है, जो प्राप्त हो सकता है, यह समझाना असंभव है। अनिवार्यता उन अभिशापों में से है, जो घुट्टी के साथ पिलायी जाती है।

राजनीति से दूर

यह कहावत कि 'अपराध तो होते ही हैं लेकिन अपराध करनेवाला अभागा है', बड़ी भयानक है। हमारे अंदर वह क्या है जो झूठ बोलता है, हत्या करता है और चोरी करता है?

क्या यह ठीक है? क्या हम लोग भाग्य की कठपुतलियां हैं, पानी के ऊपर के बुदबुदे हैं? एक सदी बीत गयी जब बुचनर ने यह लिखा था-'महान मानवीय सफलताओं और मनुष्यों की प्राकृतिक नियमों पर विजय की सदी'। और फिर भी वह उन वासनाओं को जो उसे खा जाती है, या उन प्राकृतिक प्रेरणाओं को जो उसे व्यक्ति या समूह के रूप में संचालित करती है, बस में नहीं कर सका और हम एक के बाद दूसरी दुर्घटना में फंसते जा रहे हैं। इस तरह के अनेक दांते-जैसे दुखी व्यक्तियों की बदनसीबी यह है कि वे इतिहास की प्रक्रियाओं के साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चल सकते। उनकेपास कोई काम करने को नहीं रहता और न वे भाग्य के विधायक ही रह जाते हैं क्योंकि उनका समय चूक जाता है इसलिए वे कुछ कर ही नहीं सकते। वे तो शिकायत ही कर सकते हैं और अपने भाग्य को रो सकते हैं। कमजोरी उनको ग्रस लेती है साथ ही यह चेतना भी कि अंत उनका नजदीक है।

और झांसी आ गयी

फ्रांस की क्रांति से हटकर हम फिर लौटते हैं बीसवीं सदी पर, जिससे हम गुजर रहे हैं। उस बीते कल पर, हिंदुस्तान में हमारे लिए सफलता से पूर्ण और यूरोप के लिए मूर्खता से भरी बीसी पर, आगे आनेवाले संकट की बढ़ती हुई चेतना और भय की तीसी पर, और अब फिर गहरे गड्ढे की ओर हमारे कदम बढ़ रहे हैं। मैंने दूसरी किताब उठा ली और उसमें उस आकर्षक जमाने का हाल पढ़ा, जिसे हमने अपनी आंखों से देखा है और जिसका हम पर इतना गहरा असर पड़ा है। यह किताब थी, पाइरी फान पैसन की आत्मकथा-'डेज ऑव ॲवर ईयर्स'।

और इस तरह दिन बीत गया और झांसी आ गयी। कुछ थोड़ा और पढ़कर फिर सो गया। सवेरा होते ही लखनऊ आ गया और वह छोटी छुट्टी इस प्रकार खत्म हुई।

- (फरवरी, 1940)

'राजनीति से दूर' पुस्तक से साभार

रेलों से पहाड़ों की यात्रा का आनंद ही कुछ और है

छाया-चित्र-गलेरी

शिमला की पहाड़ी पर पहली घर मेजर केनेडी नामक एक व्यक्ति ने 1822 में बनवाया था। अंग्रेज गवर्नर जनरल इस बात को शीघ्र समझ गये थे कि शिमला का वातावरण उन्हें भारत में इंगलैंड का-सा आनंद देगा। लॉर्ड एमहर्स्ट ने 1827 की गर्मियां बितायीं और उसके उपरांत उनके उत्तराधिकारी ने। बहरहाल यह यात्रा गोरे साहब के लिए अधिक आरामदायक नहीं थी। 43 मील के पहाड़ी रास्ते पर खच्चर या डंडों पर टिकी, पर्दों से घिरी पालकीवालों द्वारा उठायी जानेवाली 'जंपान' पर सवारी करना किसी भी व्यक्ति को गधा

आप खिलौनेनुमा रेलगाड़ी से शिमला जा सकते हैं, माथेरान जा सकते हैं और ऊटी भी। पूरे रास्ते में जो प्रकृति का अद्‌भुत सौंदर्य देखने को मिलता है- वह अविस्मरणीय है। बता रहे हैं भारतीय रेल से जुड़े- संदीप साइलस।

बना देगी।

समय एक पत्रकार का इंतजार कर रहा था, जिसे नवंबर, 1847 में रेलवे लाइन बनाने का विचार आया। 'दिल्ली राजपत्र' में इन श्रीमान द्वारा किये गये एक भावपूर्ण निवेदन के कारण शिमला तक रेल बनने का समर्थन मिला- 'हम शायद तब इन ठंडे इलाकों को सरकार की स्थायी गद्दी के रूप में देखेंगे, प्रतिदिन यहां का तापमान जो यूरोपियन शासकों को ताजगी देगा और उनकी मानसिक शक्तियों को तरोताजा रखेगा, जो शासकों और शासित दोनों के हित में होगा।' सबसे पहले क्षेत्रीय सर्वेक्षण 1884-95 के बीच में किये गये। यह कालका से शिमला तक की रेल लाइन थी,जो 96 कि.मी. लंबी थी। कालका से शिमला तक की रेल लाइन 864 पुलों के ऊपर से और 102 सुरंगों में से होकर गुजरती है।

छाया-चित्र-सर्वेश

खिलौने जैसी रेल

कालका पहुंचते ही गाड़ी- जैसे ही पहाड़ों में प्रवेश करती है तो कौशल्या नदी का नजारा दिखायी देता है। तापमान में बहुत शीघ्र उतार-चढ़ाव आता है। जैसे ही 'कोटी सुरंग' से गुजरते हैं तो कोट की आवश्यकता पड़ती है और जैसे ही समुद्र-तल से 1240 मीटर ऊंचाई पर 'जाब्ली' पहुंचते हैं तो ठंडी हवा कोंचने लगती है। सात डिब्बोंवाली यह सवारी-गाड़ी एक 'ट्रिप' में लगभग 200 यात्रियों को ले जाती है। अत्यधिक ठंडे मौसम की चरम सीमा, 700 अश्वशक्ति के डीजल इंजनों के निश्चय को डगमगा नहीं सकती। ये इंजन सर्दियों में 0.45 सेल्सियस के तापमान और औसतन दो फुट बर्फ में भी अपना कर्तव्य निभाते हैं। पहाड़ों में होनेवाली 200-250 सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा में 25-30 कि.मी. प्रति घंटा की सहज गति बनाये रखते हुए, ये इंजन अपनी प्रतिघंटा गति को कम नहीं होने देते। यहां पर चार अति विशेष रेल मोटर-कारें भी हैं।

मनभावन दृश्य

पहाड़ों से निकलनेवाली कल-कल करती सरिताएं पत्थर के पुलों के नीचे से गुजरते समय बहुत ही मनभावन दृश्य प्रस्तुत करती हैं। कोहरे के बादल हल्के से आपको छूकर चौंका देते हैं। गाड़ी 'कुमारहट्टी' से रेंगती हुई बड़ोग सुरंग में प्रवेश करती है जो एक किलोमीटर से भी अधिक है। यह सुरंग पंचमुंडा पहाड़ी से होकर निकलती है, जो सड़क से

लगभग 900 फीट नीचे है। बड़ोग में यह सुबह के नाश्ते का समय है।

बड़ोग से कांडाघाट तक यह गाड़ी पहाड़ी से नीचे की ओर जाती है ओर सोलन तथा सलोघरा के खूबसूरत और अनूठे एकांत स्थलों से गुजरती है। अंतिम चढ़ाई कांडाघाट से शुरू होती है, जहां की प्रचुर हरियाली मन को आनंदित कर देती है।

आनंदमय अवकाश

तारादेवी से आगे यह रेलगाड़ी आपको 'हिल' से 'जातोश' ले जाएगीऔर'समरहिल' तक जाने से पहले वादियों में हवा के झोंके आपसे छेड़खानी करेंगे। भरपूर आनंदमय अवकाश की इच्छा प्रत्येक यात्री के मन में प्रबल होती जाती है। अंततः यह गाड़ी 'इनवेरम हिल' के नीचे से सरकते हुए शिमला पहुंच जाती है।

शिमला के घने जंगलों से गुजरते समय कहीं न कहीं रेलगाड़ी की यात्रा हर व्यक्ति के भीतर छुपे बालपन को शरारत करने और धीमे से हंसने के लिए विवश कर देती है।

यदि आपकी पत्नी झील के किनारे बैठकर विचारमग्न होना चाहती है तो मेट्टूपालयम से उदगमंडलम-जो ऊटी के नाम से प्रसिद्ध है- के लिए गाड़ी पकड़ें।

यह पर्वतीय रेल लाइन 46 कि.मी. लंबी है, जिस पर 'यात्रा समय' साढ़े चार घंटे का है लेकिन इसका मार्ग प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है। नीलगिरी की पहाड़ियों में चलने वाली यह अद्‌भुत गाड़ी अक्तूबर 1908 से भाप इंजन से चलायी जा रही है। कॉफी और चाय के बागानों के बीच बहुत ही फुर्ती से चाय की नरम पत्तियों को तोड़ती छरहरी युवती देखी जा सकती हैं। सूर्य, बादलों में लुका-छुपी का खेल खेलता है। उजले चेहरों पर सूर्य की किरणें स्वर्णिम और रुपहले नमूने बुनती हैं। यदि आप किसी छोटे स्टेशन पर भटक गये हों तो भाप इंजन की तीखी सीटी की आवाज जो धीरे-धीरे बढ़ती जाती है, आपके दिवास्वप्न को भंग करके आपको वापस बुला लेगी। ऊंची पर्वतमाला के बीच यह गाड़ी हवा को बेधती हुई चलती है, जैसे-जैसे ऊंचाई बढ़ती है, हवा में ठंडक बढ़ती जाती है और हवा की ताजगी रोम-रोम को पुलकित कर देती है।

सजीव हो उठता है भीतर का कलाकार

जब गाड़ी ऊटी, समुद्रतल 2240 मीटर की ऊंचाई पर पहुंचती है तो आपके भीतर का कलाकार सजीव हो उठता है। यहां कोयंबटूर के कलक्टर जॉन सुलिवान द्वारा 1823-1825 में बनवायी गयी सम्मोहक झील है। अपनी दूरदृष्टि के कारण ही उन्होंने 1819 में ऊटी का निर्माण किया। सैकड़ों कारीगरों ने शहर के बीचों-बीच से बहनेवाली बारहमासी जलधारा को कृत्रिम पुश्तों की सहायता से ढंक दिया। एक समय में मौजूदा रेलवे स्टेशन, नजदीक ही बना बच्चों का गार्डन, बस स्टैंड और रेसकोर्स मैदान पानी के अंदर थे। ऊटी के मनुष्य 1877 तक इसी पानी को पीते थे। इसके

बाद धीरे-धीरे झील का पानी कम होता चला गया।

झील में नौका विहार का आनंद लें अथवा झील के किनारे धारा पर बैठकर प्रकृति के भरपूर सौंदर्य का अनुभव करें। ट्वीडाले के मारक्विसा द्वारा 1847 में बनाया गया वानस्पतिक बगीचा भी दर्शनीय स्थल है । आप कलहाट्टी जलप्रपात के पानी में जलक्रीड़ा कर सकते हैं, जो ऊटी से लगभग 14 कि.मी. की दूरी पर है। यदि आप 'ट्रेकिंग' का शौक रखते हैं तो 'फ्राग हिल 'और 'पेनलॉक डाउन' के आसपास पहाड़ी रास्ते का आनंद ले सकते हैं। बाजार चिनकोना उत्पादों, यूकेलिप्टस तेल; ग्रेवियन फूलों के इत्र, सुगंधित 'फिनोल'आदि से भरे पड़े हैं। आप वापसी में अपने साथ नीलगिरी की ताजगी की याद जरूर ला सकते हैं।

यहां भ्रमण के लिए सर्वोत्तम समय है- अप्रैल से जून अथवा सितम्बर से अक्तूबर के बीच।

हरीतिमा से परिपूर्ण दार्जिलिंग

यदि आप सूर्य देवता की भव्य सवारी निकलने के समय कंचनजंघा की पहाड़ियों पर खड़े हैं तो आप देखेंगे कि हिमाच्छादित-श्वेत चोटियां स्वर्णिम ज्वाला में धधकने लगती हैं और आप मंत्रमुग्ध होकर इस दृश्य को देखते ही रहेंगे। रात्रि के समय चंद्रमा की दूधिया किरणें बर्फीली पहाड़ियों से लिपट जाती हैं। तब आपको दृढ़-विश्वास हो जाएगा कि सिर्फ यही वह स्थल है जहां पूर्व और पश्चिम परस्पर मिलते हैं।

तितलियों और हवा से मुलाकात

विश्वास नहीं होता कि 'सिलिगुड़ी टाउन' और दार्जिलिंग के बीच 83 कि.मी. का जोखिमभरा रास्ता लगभग आठ घंटे में तय किया जाता है। यहां केवल दो फीट चोड़ी छोटी लाइन है। इसे देखकर आपको अहसास होगा कि इन दुर्गम पहाड़ियों में मार्ग बनाना कितना साहसिक कार्य है ? इस वीरान मार्ग में मखमली तितलियों और 'ग्लेशियर' की हवा से मुलाकात करानेवाली आपकी साथी होगी, यह छोटी-सी खिलौना गाड़ी।

पहले की सवारी गाड़ियों में 'केनवास' की छतें और लकड़ी की बैंच होती थी। इनमें प्रथम श्रेणी में छह यात्रियों, द्वितीय श्रेणी में आठ यात्रियों के बैठने की व्यवस्था थी। तीसरी श्रेणी के लिए खुली 'ट्रॉली', जिसके अंत में और 'साइड' में पर्दे लगे थे और जिसमें प्रत्येक 'ट्रॉली' में सोलह यात्री

बैठ सकते थे। एक बार तो आप मौसम संबंधी उतार-चढ़ाव अथवा वातानुकूलित कमरों के आराम को भुलाकर इस गाड़ी में अवश्य सफर करें। 'सुकना' में चढ़ायी शुरू होती है और नदी बलखाती और इठलाती हुई आगे बढ़ती है और अपने पीछे चमकती धारा को छोड़कर हिमाच्छादित पर्वतों की चोटियों की गोद में समा जाती है और पर्वतों की चोटियां शान से अपना सीना ताने खड़ी नजर आती हैं। आप जब 'चुनभरी' पहुंचेंगे तो आप 2208 फुट की ऊंचाई पार कर चुके होंगे और अपनी ही परछाईं से ढंके हुए जंगल आपकी तरफ अचरजभरी निगाहों से ताक रहे होंगे। जरा सोचें, यह कैसा अद्भुत दृश्य होगा? 800 फुट ऊंची चढ़ाई चढ़ने तथा आपको 'कुर्सियांग' तक पहुंचाने के लिए यह छोटा-सा इंजन अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करता है। सपाट चेहरे तथा गोल-मटोल नाकवाली भूटिया और लेप्चा महिलाएं शर्मीली मुस्कराहट के साथ आप पर चोरी-चोरी नजर डालती हैं। पीठों पर बंधे हुए बच्चे, हवा से काले हो गये चांदी के भारी गहने, मोर पंख के समान चमकीले वस्त्र आदि शीघ्र ही फोटो खींचने लायक अवसर सुलभ करा देते हैं।

अर्थभरे पक्षी-गान

जब आप इन जंगलों के बीच यात्रा करते हैं, ऐसा महसूस होता है कि पक्षी बड़ी तन्मयता से गा रहे हैं और उस गान में कई-कई अर्थ छिपे हुए हैं। फर्न, लताएं तथा झाड़ियां हवा के झोंकों के साथ लहलहाती हैं। एक समय यह जंगल बंगाल के शाही बाघों से भरा हुआ था।

नयनाभिराम दृश्यावली

सड़क अनंत मनोहर और घुमावदार है, यह ऊंची चोटियों जो लताओं तथा बेलबूटों से ढंकी है, के नीचे चक्कर काटती हुई तथा अनंत गहरी खाइयों के किनारे चलते हुए अंदर और बाहर होती रहती है। पूरे मार्ग पर नयनाभिराम मूल निवासियों की कतारें दिखायी देती रहती हैं। कुछ बोझ ऊपर ले जा रहे होते हैं, कुछ चाय के बागानों में काम करने के लिए नीचे जा रहे होते हैं। तुंग, चुटलिंकपुर, जोरबंगला के बाद आप 'घूम' पहुंचते हैं जो समुद्र तल से 7408 फुट की ऊंचाई पर है। वह छोटा इंजन अब चढ़ाई के कारण हांफने तथा ठंड के कारण घरघराने लगा है। यहां से छह किलोमीटर नीचे ढलान पर और यात्रा करने के बाद 'रिट्रीट हिल' तथा 'वैस्ट प्वाइंट हॉल्ट' से गुजरते हुए आप दार्जिलिंग पहुंच जाते हैं। समुद्र तल से 6812 फुट की ऊंचाई पर अब कंचनजंघा तथा आपके बीच कुछ भी नहीं है, श्वेत ऊंची चोटियों पर सुनहले प्रकाश की जर्द गुलाबी आभा तथा कोमल तूलिकाएं अतिथियों को अभिभूत कर लेती हैं।

मुंबई की तड़क-भड़कवाले शहर के निकट पश्चिमी घाट के शीर्ष पर स्थित

पहुंचने लगते हैं, प्रकृति का गुंजन सुनायी देता है। माथेरन मे कोई भी मानव-निर्मित तारकोल की सड़क नहीं है। मार्ग उसी हाल में मौजूद है-जैसा कि परमेश्वर ने उन्हें बनाया होगा, कच्चा तथा उबड़-खाबड़। जंगल में पगडंडियां 20 किलोमीटर से अधिक आगे तक गयी हुई हैं। ये आपको ,दिल को
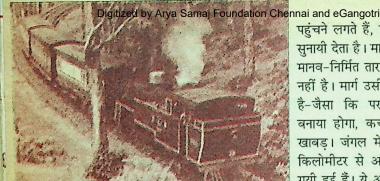
माथेरान की स्थिति पेटनुमा संरचना पर नाभिनुमा झील-जैसी है। हरियाली के बीचों-बीच घूमते हुए आप 'टाइल' की छतों तथा लंबे बरामदोंवाले अनूठे बंगलों तक पहुंच जाते हैं। इनमें से अधिकांश बंगलों के मालिक मुंबई में रहते हैं तथा इन पर वीरानी छायी रहती है।

सुरंग-यात्रा

पर्वतों के बीच घुमावदार रास्तों से गुजरती हुई रेलवे पटरियों पर दो घंटे की रोमांचकारी यात्रा अत्यधिक आनंद की अनुभूति कराती है। यह छोटी-सी पर्वतारोही 'नेरल' में अपनी चढ़ाई शुरू करती है, जो मुंबई की उपनगरीय गाड़ियों से भली-भांति जुड़ा हुआ है। रेल और सड़क एक-दूसरे से आंख-मिचौली खेलते रहते हैं तथा बार-बार इनका मिलना तथा बिछुड़ना जारी रहता है। समतल तथा अचानक चढ़ाई के बाद एक नालनुमा तटबंध दिखायी देता है। कुछ मिनट बाद ही 'सुरंग' यात्रा को सुखद बना देती है। जैसे-जैसे आप इस सुंदर घाटी के निकट

खुश कर देनेवाले अनेक अचंभों तथा वैभवशाली दृश्य- स्थलों तक ले जाती है। माथेरान ऐसे अनेक स्थलों को अपने में समाये हुए हैं- खड़ी चट्टान की तरह बाहर निकले हुए चट्टान के अंतरीप जो 2000 फुट से अधिक नीचे स्थित घाटी को निहारते से प्रतीत होते हैं। उत्तर में 'हार्ट प्वाइंट', पूर्वी पार्श्व के दक्षिण में चौक, उत्तर में 'पॉर्क्यूपाइन प्वाइंट' तथा पूर्वी पार्श्व के दक्षिण में 'लुइस प्वाइंट' ऐसे प्रमुख स्थल हैं लेकिन अपेक्षाकृत अधिक रमणीय स्थल है-पैनोरमा प्वाइंट , हनीमून प्वाइंट , और सनसेट प्वाइंट। चाहे यह सच हो या कल्पना, माथेरन में मौजूद होने का जादू एक मधु घाटी में यात्रा करने तथा बतौर पारितोषिक करुणामयी प्रकृति से परिष्कृत मधु मिलने के समान है।

जब पर्वत बुलाते हैं तो भला कौन रुक सकता है?

-निदेशक (सूचना एवं प्रचार)
303- रेलवे बोर्ड, रेलवे भवन,
नयी दिल्ली-23381224

आधुनिक जीवन की प्रगति का प्रतीक है -'रेल' जिसने सारे संसार में एक क्रांति-सी ला दी। लकड़ी की पटरियों पर दौड़ते भाप के इंजन और लकड़ी के डिब्बों से लेकर अत्याधुनिक तकनीक से लैस आज की रेलों ने विकास का एक लंबा सफर तय किया है। जानकारी दे रहे हैं-अखिली कुमार।

रेल ने भी तय किया है लंबा सफर

यूरोप में सर्वप्रथम सन 1550 में खदानों से सामान ले जाने के लिए खदानों के अंदर और बाहर लकड़ी की पटरियां बिछायी गयी थीं। इन पटरियों पर सामान

भारत में प्रथम

भारत का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन मुंबई का 'छत्रपति शिवाजी टर्मिनल' है।

भारत का सबसे लंबा रेल विद्युत-मार्ग कोलकाता से दिल्ली तक का है। इसकी कुल लंबाई एक हजार चार सौ चालीस किलोमीटर है।

भारत की सबसे लंबी रेल सुरंग, 'मंकी हिल' से खंडाला तक है। इसकी कुल लंबाई इक्कीस सौ मीटर है।

भारत की पहली 'मेट्रो रेल सेवा' कोलकाता में शुरू हुई थी। इसकी कुल लंबाई 14.43 किलोमीटर है।

भारत का सबसे लंबा रेल पुल सोन नदी पर बना 'नेहरू सेतु'

ढोनेवाली गाड़ियों को मजबूत कद-काठी के घोड़ों द्वारा खींचा जाता था। लकड़ी की पटरियों के बार-बार टूटने के कारण सन 1738 में लकड़ी के स्थान पर लोहे की पटरियां बिछायी जाने लगीं लेकिन सच्चे अर्थों में विश्व का पहला रेल द्वारा माल ढोने का मार्ग लंदन में सन 1803 में बना। इस रेल मार्ग को विलियम जेस्प नामक अंग्रेज ने तैयार किया था। इस रेलमार्ग पर सामान से भरे डिब्बों को घोड़ों द्वारा खींचकर गंतव्य स्थल तक पहुंचाया जाता था। इन प्राचीन रेल मार्ग के अवशेषों को देखने में यदि आप की रुचि हो तो आप 'सरे' में इसे आज भी देख सकते हैं।

रेल को लोकप्रिय बनाने का श्रेय

रेल को लोकप्रिय और सुविधाजनक बनाने का श्रेय सर्वप्रथम इंग्लैंड के रिचर्ड ट्रेविथिक को जाता है, जिन्होंने सर्वप्रथम भाप से चलनेवाले (लोकोमोटिव) इंजन का आविष्कार किया था। इस भाप के इंजन से 55 मीट्रिक टन तक का भार आसानी से ढोया जा सकता था। लोगों को रेल के सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था का अंग बनने के लिए सन 1825 तक इंतजार करना पड़ा। उस वर्ष उत्तर इंग्लैंड में 'स्टॉकन एंड डार्लिंग्टन रेलवे इंजीनियर'-जार्ज स्टीफेसन के सहयोग से इस सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को शुरु किया। उसका भाप से चलनेवाला 'लोकोमोशन इंजन' चौबीस किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ता था। रेल इंजनों की इस सफलता के कारण बड़ी संख्या में पटरियां बिछानेवाले लोगों की आवश्यकता पड़ी। उस समय के प्रसिद्ध ठेकेदार थॉमस ब्रासी ने अपने मेहनतकश मजदूरों की सहायता से उस समय दस

है। इसकी कुल लंबाई दस हजार चवालीस फीट है।

भारतीय रेल विश्व की सबसे बड़ी रेल प्रणाली है।

भारत में भाप के इंजन को बनानेवाला सबसे पहला कारखाना चितरंजन में स्थापित किया गया था लेकिन अब इसमें बिजली चालित रेल इंजनों को बनाया जाता है।

भारत की सबसे तीव्र गति की रेल गाड़ियां 'शताब्दी एक्सप्रेस' होती हैं। यह नयी दिल्ली, लखनऊ, चंडीगढ़, अजमेर, भोपाल आदि शहरों के लिए चलती हैं। पूर्णतः वातानुकूलित इस रेलगाड़ी की अधिकतम रफ्तार एक सौ चालीस किलोमीटर प्रति घंटा है।

भारत की 'हिमालयन क्वीन'(दिल्ली-कालका) 'शाने पंजाब'(दिल्ली-अमृतसर)' मगध एक्सप्रेस' (नयी दिल्ली-पटना) 'प्रयागराज' (नयी दिल्ली-इलाहाबाद) आदि प्रमुख रेलगाड़ियां हैं।

'भारतीय रेल' भारत का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उपक्रम है, जिसमें सोलह लाख से अधिक लोग काम करते हैं।

हजार किलोमीटर से अधिक रेलमार्ग का निर्माण फ्रांस , कनाडा, आस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना तथा भारत आदि देशों में करवाया था।

विश्व की पहली रेल सेवा

विश्व की पहली 'लोकल रेल सेवा' 'लंदन ब्रिज' से 'डेप्टफोर्ड' की बीच सन 1836 में शुरु की गयी। 'ग्रेट वेस्टर्न रेलवे' के मुख्य इंजीनियर ब्रुनेल ने सन 1841 में लंदन से 'ब्रिस्टल' के बीच शुरु की गयी रेल सेवा में पहली बार डेढ़ मीटर गेज के बदले ढाई मीटर की 'ब्रॉड गेज' पटरियों को अपनाया था। रेलों का यह विकास केवल यूरोपीय देशों तक ही सीमित नहीं रहा। अपितु यूरोप अधीनस्थ क्षेत्रों में भी रेलों का पर्याप्त विकास हुआ। स्पेन ने, क्यूबा में सन 1837 में पहला रेलमार्ग बनाया। इसके अलावा उसने जावा में भी रेल मार्गों की शुरुआत की। फ्रांस और जर्मनी ने अफ्रीका के कुछ हिस्सों तथा दक्षिण पूर्वी एशिया में तथा इंग्लैंड ने भारत में रेलों का जाल बिछाया।

पहला शयन यान

रेल यात्रा में सबसे महत्त्वपूर्ण सुधार तब आया जब जॉर्ज मार्टिमर पुलमैन नामक अमेरिकी वैज्ञानिक ने 'शयनयान ' (स्लीपिंग कोच) तथा 'भोजन यान' (डाइनिंग कार)-जैसी सुविधाओं को जोड़ा। विश्व का पहला 'शयनयान ' (स्लीपिंग कोच) इंग्लैंड में सन् 1873 में स्कॉटिश रेलमार्ग पर लगाया गया था। अब तक रेल के डिब्बे बड़े और मानकीकृत हो चुके थे। रेल डिब्बों में घूमने के लिए अंतिम भागों में 'बालकनियों' का निर्माण भी होने लगा था।

यूरोप में रेल का प्रचार-प्रसार उस

समय इतनी तीव्र गति से हुआ कि सन 1870 तक यूरोप के अधिकांश शहर रेलमार्ग द्वारा आपस में एक दूसरे से जुड़ गये थे। यूरोप के शहरों को रेलमार्ग से जोड़ने के लिए 'आल्प्स पर्वत' पर सुरंगें भी खोदनी पड़ीं जिनके द्वारा यूरोप के प्रमुख देशों फ्रांस, इटली, और स्विटजरलैंड को रेलमार्ग द्वारा आपस में जोड़ा गया। रेल के डिब्बे अभी तक लकड़ियों से ही बनाये जाते थे लेकिन यह सुरक्षा की दृष्टि से मजबूत नहीं होते थे और जल्दी टूट भी जाते थे। इसलिए सन 1896 से रेल के डिब्बे लकड़ियों के स्थान पर इस्पात से बनाये जाने लगे।

रेल दुर्घटनाओं से निजात

उस समय रेल का आविष्कार हुए ज्यादा समय नहीं हुआ था तथा रेल की तकनीक भी ज्यादा विकसित नहीं हुई थी। अतः उस काल में रेल दुर्घटना प्रायः हो जाया करती थी। इसी समस्या से निजात पाने के लिए सन 1872 में अमेरिकी वैज्ञानिक जार्ज वेस्टिंग हाउस ने 'एयर ब्रेक' प्रणाली तकनीक का ईजाद किया। इंग्लैंड के अरमग शहर में सन 1889 में एक भीषण रेल दुर्घटना हुई, जिसमें अठहत्तर लोग मारे गये थे। इसी दुर्घटना से सबक लेते हुए सरकार ने रेलों में 'ब्लाक सिगनल प्रणाली' तथा गाड़ियों में 'ब्रेक' जैसी प्रणालियों को अनिवार्य कर दिया ।

विश्व का सबसे बड़ा रेल मार्ग

विश्व में सबसे बड़े रेलमार्ग का निर्माण रूस ने 'ट्रांस-साइबेरियन' इलाके में किया जो कि सन 1916 में संपन्न हुआ। इस साढ़े नौ हजार किलोमीटर लंबे रेल मार्ग में ९7 ' स्टॉप' हैं, और आठ दिन में इस पूरे रेलमार्ग की यात्रा पूरी होती है। रेल की महत्ता को पूरे विश्व ने स्वीकार किया, इसी

कारण सन 1825 में जहां केवल दो रेल के इंजन चला करते थे, वहीं इस शताब्दी के अंत तक इनकी संख्या पच्चीस हजार से ज्यादा हो गयी।

रेलों का विकास यहीं तक सीमित नहीं रहा। धीरे-धीरे भाप के इंजनों के स्थान पर डीजल के इंजन आये। फिर रेल के इंजनों का विद्युतीकरण शुरु हुआ।

रेलों का विद्युतीकरण

जर्मन वैज्ञानिक वर्नहर वॉन सिमेंस ने सर्वप्रथम बिजली से चलनेवाली रेलगाड़ी का परीक्षण किया। इंग्लैंड के ब्राइटन शहर में सन 1863 में सबसे पहले विद्युत रेलमार्ग को शुरू किया गया था। रेलों की विद्युत व्यवस्था से यूरोपीय देश इतने प्रभावित हुए कि बीसवीं शताब्दी की शुरूआत तक यूरोप के अधिकांश देश अपनी मुख्य रेल लाइनों का विद्युतीकरण करने लगे। पहली भूमिगत विद्युत चालित रेल दक्षिण लंदन में सन 1890 में शुरू हुई थी। इसके अलावा पहली विद्युत चालित उत्थापित(एलिवेटेड)रेल 'सिटी रेलवे' लीवरपुल ओवरहेड से आरंभ हुई थी। विश्व की पहली विद्युत चालित उपनगरीय रेल सेवा दक्षिण इंग्लैंड में सन 1900 में आरंभ हुई थी। विश्व की पहली तीव्र गति की रेल, जर्मनी के बर्लिन और हैमबर्ग शहर के बीच चली थी। इस रेलगाड़ी में लगे 'फ्लाईंग हैमबर्गर' नामक इंजन ने एक सौ चौबीस किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से यात्रा पूरी की थी।

आज पूरा विश्व जहां विकास के नये सोपानों को छू रहा है, वहीं भारतीय रेलों में अभी भी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। रेल दुर्घटना , लेट-लतीफी तथा रेल डकैती-जैसी समस्याओं पर अगर रलवे ध्यान दे तो इसमें संदेह नहीं कि भारतीय रेलें भी सुविधाओं के मामले में विश्व की अन्य रेलगाड़ियों को मात करेगीं।

-183-जी आराम बाग ,पंचकुईयां रोड दिल्ली -110055

विश्व में प्रथम

विश्व का सबसे लंबा रेल पुल अमेरिका का 'ह्यूई पी लांग' पुल है, जो सात हजार मीटर लंबा है।

पश्चिमी बंगाल का खड्गपुर रेलवे प्लेटफार्म विश्व का सबसे लंबा प्लेटफार्म है। इसकी लंबाई आठ सौ तैंतीस मीटर है।

विश्व की सबसे लंबी रेल लाइन रूस की 'ट्रांस साइबेरियन रेल लाइन' है। इसकी कुल लंबाई नौ हजार चार सौ अड़तीस किलोमीटर है।

विश्व का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन न्यूयार्क सिटी का 'ग्रांड सेंट्रल टर्मिनल' है। यह उन्नीस हेक्टेयर में फैला है।

विश्व की सबसे बड़ी रेल सुरंग जापान की 'सीकेन रेल टनल' है, जो चौवन किलोमीटर लंबी है।

पर्थ से मेलबॉर्न, कश्मीर से कन्याकुमारी , पेरिस से इस्तंबूल, मास्को से व्लादिवोस्तक आदि विश्व के प्रमुख रेल मार्ग हैं।

आजादी की लड़ाई में भी काम आयीं थी रेलें

जब अंग्रेज भारत में अपने साम्राज्य को मजबूत करने के लिए रेलों का जाल बिछा रहे थे, तो उन्हें इस बात का कतई गुमान नहीं था कि दक्षिण अफ्रीका की रेल में हुआ महात्मा गांधी का अपमान और भारतीय रेलों का उनका बनाया संजाल ही स्वतंत्रता आंदोलन की मशाल बनकर ब्रितानिया सरकार की समाप्ति का कारण भी बनेगा। रेल और राष्ट्रीयता एक-दूसरे के किस तरह पर्याय बने, इसका खुलासा किया है-कोमल वर्मा ने इस लेख में।

निस्संदेह भारत में रेलों का जाल बिछाने का श्रेय अंग्रेजों को है, जिन्होंने अपने साम्राज्य को बढ़ाने और मजबूत करने के लिए इनका उपयोग करना चाहा था मगर उन्हें क्या पता था कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाने में भी इन रेलों की महती भूमिका रहेगी। लार्ड डलहौजी ने 1853 में कहा था कि भारत में रेलों की स्थापना होने से सेना का एक जगह से दूसरी जगह पहुंचना आसान हो जाएगा, लार्ड कर्जन ने इन्हें ब्रिटिश साम्राज्य की अंतड़ियां बताया था मगर इन्हीं रेलों ने जहां स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं को एक जगह से दूसरी जगह जाने में मदद की, वहीं इन्हें नुकसान पहुंचाकर या इनका उपयोग करके स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने उद्देश्य की पूर्ति भी की बल्कि कह सकते हैं कि भारत की आजादी का असली स्वप्न भले ही संयोग से ही सही, दक्षिण अफ्रीका मैं देखा गया। 1893 में गांधीजी ने जो अपमान दक्षिण अफ्रीका में अपनी रेलयात्रा के दौरान झेला, उसने उनके भीतर भारत की आजादी की ऐसी चिंगारी जलायी कि उसके बाद अंग्रेजों के पास भारत छोड़ने के अलावा कोई चारा नहीं रहा।

सत्याग्रह का मूल मंत्र

इस घटना ने गांधीजी को सत्याग्रह का मूलमंत्र दे दिया। सत्याग्रह यानी सत्य के लिए आग्रह, जो सच है उसके लिए डटे रहना। चाहे उसके लिए कितनी पीड़ा और परेशानी क्यों न झेलनी पड़े? और कितना अद्भुत था यह मंत्र कि सच्चाई के लिए पिटते रहना और पिटते-पिटते पीटनेवाले को थका देना। हालांकि पहले-पहल तो लोगों ने इस पर विश्वास नहीं किया और गांधीजी का मजाक भी बनाया गया कि कहीं इस तरह आजादी मिला करती है?

इसे ब्रिटिश सत्ता की अजब विडंबना ही कहा जाएगा कि जिसे उसने अपने साम्राज्य के मुख्य आधार स्तंभ के रूप में स्थापित किया था, वही रेलें उनके साम्राज्य की मौत का कारण भी बनीं।

गांधीजी ने 1915 में भारत लौटने के बाद सबसे पहला काम भारतीय जन-मानस को समझने का किया। भारत-जैसा विशाल एशियाई उपमहाद्वीप, जहां अनेक तरह की विविधताएं और भिन्नताएं हैं- जिनकी कल्पना नहीं की जा सकती-उसे समझना आसान नहीं था लेकिन रेल ने इसे आसान बना दिया। उन्होंने सारे देश का भ्रमण किया और वह भी रेल द्वारा तीसरे दर्जे के डिब्बे में आम आदमी के साथ बैठकर। उन्होंने इन यात्राओं द्वारा ही भारतीय जन-मानस को, उसके दुख-दर्द और आशा-आकांक्षा को समझा और इसी को अपनी आधार-भूमि बनाकर स्वाधीनता संग्राम छेड़ दिया और
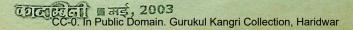
इसकी शुरूआत उन्होंने चंपारण में नील की काश्त करानेवाले अंग्रेज जमींदारों के अत्याचारों के खिलाफ सत्याग्रह करके की।

नेहरूजी, राजनीति और रेलयात्रा

गांधीजी की तरह रेलों ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के जीवन को भी प्रभावित किया। उन्होंने भी रेल के तीसरे दर्जे के डिब्बे में बैठकर खूब यात्राएं कीं। यह भी कहा जा सकता है नेहरूजी ने भी राजनीति में आने का दृढ़-निश्चय रेलयात्रा के दौरान ही किया। जलियांवाला बाग की घटना के बाद एक रात वह 'ट्रेन- यात्रा' कर रहे थे। उनके मंत्रिमंडल में रहे अजित प्रसाद जैन के अनुसार 1919 में नेहरूजी जिस 'ट्रेन' में सफर कर रहे थे, उसमें 'जलियांवाला बाग' के हत्याकांड को अंजाम देनेवाला जनरल डायर भी यात्रा कर रहा था। उसने बड़े घमंड से उस हत्याकांड का वर्णन किया। नेहरूजी उसे सुनकर कांप उठे और अंग्रेजों के उसी दिन से कट्टर विरोधी हो गये।

शायद ही कोई स्टेशन ऐसा होगा, जहां नेहरूजी के पैर न पड़े हों और वहां पर उन्होंने जनता को संबोधित न किया हो। उन्होंने रेलों के बारे में अनेक बार लिखा है और दिलचस्प ढंग से लिखा है।

एक पत्र में उन्होंने इस बात पर गहरा दुख प्रकट किया है कि प्रायः अराजक उपद्रवी भीड़ का रेलें अकारण ही शिकार हो जाती हैं, जिससे रेल संचालन थम ही नहीं जाता बल्कि रेल की संपत्ति को भी क्षति पहुंचती है।

क्रांतिकारी आंदोलन और रेलें

भारत की आजादी के लिए जो आंदोलन क्रांतिकारियों ने चलाया, उसमें भी रेलों की एक अत्यंत अहम भूमिका रही है।

प्रसिद्ध 'काकोरी षड्यंत्र' के जरिए सरकारी खजाने को लूटने की घटना 9अगस्त, 1925 को 'ट्रेन' में ही हुई थी, जिसके मुख्य नायक रामप्रसाद ' बिस्मिल' थे। इसमें 29 क्रांतिकारी गिरफ्तार हुए थे। उन पर मुकद्मा चला। इसमें ' बिस्मिल' , रोशनलाल, अशफाक उल्ला और लाहिरी को मृत्युदंड दिया गया। दूसरी महत्त्वपूर्ण घटना 1929 की है, जब प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी जतीन दास का शव 'ट्रेन' से लाहौर से कोलकाता लाया गया। लाहौर केंद्रीय जेल में 63 दिन के उपवास के बाद 15 सितम्बर, 1929 को जतीनदास का प्राणांत हो गया। ब्रिटिश सरकार ने उनका शव रेल के जरिये कोलकाता भेजने का फैसला किया लेकिन रेल विभाग ने आनाकानी की तो सुभाषचंद्र बोस ने विशेष ' कोच' से शव लाने के लिए 600 रुपये भेजे। रास्तेभर लोग जतीनदास के दर्शन के लिए उमड़े। अंततः जब जतीनदास

का शव कोलकाता पहुंचा तो वहां छह लाख लोग जमा थे। यहां तक कि उस विशेष 'कोच' को भी लोगों ने वापिस नहीं जाने दिया, जिसमें जतीनदास का शव लाया गया था। कई सप्ताह तक वह 'कोच' कोलकाता रेलवे स्टेशन पर ही पड़ा रहा और लोग 24 साल के इस अद्‌भुत स्वतंत्रता सेनानी को श्रद्धांजलि देने के लिए इस 'कोच' के दर्शनार्थ आते रहे।

विद्रोह की आग में जलतीं रेलें

लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए लाहौर के अंग्रेज पुलिस सुपरिटेंडेंट जे.ए. स्कॉट की हत्या की योजना चंद्रशेखर आजाद ने भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु के साथ मिलकर बनायी थी। स्कॉट तो बच गया था मगर उसका सहायक जे.पी. सांडर्स मारा गया था। सांडर्स की सनसनीखेज हत्या के बाद लाहौर रेलवे स्टेशन के चप्पे-चप्पे पर पुलिस तैनात थी ताकि क्रांतिकारी भाग न पाएं लेकिन इसके बावजूद भगत सिंह, आजाद, राजगुरु तथा सुखदेव साधुवेश में कुशलता से रेल से निकल भागे थे और ब्रिटिश सरकार को हवा भी नहीं लगी थी।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन की घोषणा के बाद जब ब्रिटिश सरकार का दमनचक्र तेज हुआ तो सारे देश में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी थी। चूंकि रेलें ब्रिटिश साम्राज्यवाद का प्रतीक थीं, इसलिए उन्हें नाराज भारतीयों ने खूब निशाना बनाया। जगह-जगह रेलों को रोका गया। मुंबई में ट्रेनें रोकी गयीं। बिहार में रेलवे पुलों को निशाना बनाया गया। बलिया जिला तो अंग्रेजों के कब्जे से मुक्त ही हो गया था। पूर्वी भारत में बड़े पैमाने पर रेलों को जलाया गया था। पंजाब, सिंध तथा असम में भी कई घटनाएं हुई थीं।

रवैया बदला नहीं

दुख की बात यह है कि आजादी के बाद भी हमारा यह रवैया रेलों के प्रति बदला नहीं है। दरअसल अभी तक भी हम रेल को राष्ट्र की संपत्ति, अपनी संपत्ति न समझकर शासन और सत्ता का प्रतीक मानते रहे हैं, जैसा कि अंग्रेजों के जमाने में मानते थे। आज भी कोई छोटी-मोटी घटना होती है, 'बंद' या हड़ताल होती है तो दंगाई लोग रेलों को रोक देते हैं, 'सिग्नल' और पटरियों को क्षति पहुंचाते हैं। अब तो आतंकवादी घटनाओं के लिए भी रेल अधिक आसान साधन होता जा रही है।
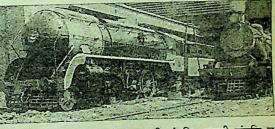
- ए-1/242-ए-लॉरेंस रोड,
दिल्ली-110035

रेलों ने पाटी हैं कई-कई दूरियां

डेढ़ सौ वर्ष से भारत में रेलें चल रही हैं। क्यों बिछायी थीं अंग्रेजों ने भारत में रेल लाइनें और कैसे ये आज भारतीय समाज की रक्त-धमनियां बन चुकी हैं, बता रहे हैं- योगेश।

बात 1840 की है। अंग्रेज भारत में पैर जमाने की कोशिश कर रहे थे। इस कोशिश में एक जगह सफल होते तो दूसरी जगह पिट जाते। उनके पास फौज तो थी लेकिन ऐसा साधन नहीं था कि वह मौके पर फौरन ही पहुंच सके। इसीलिए उन्हें झांसी की रानी से मात खानी पड़ी। कानपुर, लखनऊ और भरतपुर यहां तक कि दिल्ली में भी उन्हें बाहर ही डेरा डाले रहना पड़ा। हालांकि उन्होंने जगह-जगह अपनी फौजी छावनियां इसीलिए रखी थीं कि वक्त-जरूरत एक छावनी को दूसरी छावनी से मदद मिल सके लेकिन यातायात के सुचारू साधन के अभाव में ठीक समय पर मदद नहीं पहुंच पाती और अंग्रेजों को मुंह की खानी पड़ती।

ब्रिटेन में रेल चल चुकी थीं। भारत में उसकी सख्त जरूरत थी अत: भाप के इंजन के आविष्कर्ता जोर्ज स्टीफेंसन ने भारत में रेलों के व्यापक जाल बिछाये जाने का प्रस्ताव किया। इसके लिए बड़ी धनराशि की जरूरत थी। जहां साढ़े तीन प्रतिशत से अधिक ब्याज नहीं मिलता था, वहां पांच प्रतिशत लाभ की गारंटी देते हुए अंग्रेजों से पूंजी-निवेश कराया गया और कंपनियां बनायी गयीं।

पहली रेल कंपनी

पहली कंपनी जो सामने आयी उसका नाम था- 'ग्रेट इंडियन रेलवे कंपनी'। इस कंपनी की पहली रेल 16 अप्रैल, 1853 को चली, जिसने मुंबई से ठाणे के बीच 34 किलोमीटर की दूरी तय की। इसका विधिवत उद्घाटन कर इसे मुंबई के बोरी बंदर रेलवे स्टेशन से मध्याह्न साढ़े तीन बजे रवाना किया गया। उस समय अपार जनसमूह की हर्षध्वनि के साथ इसे 21 तोपों की सलामी दी गयी। इसके 14 डिब्बों में 400 आमंत्रित विशिष्ट अतिथि सवार हुए। यह शाम पौने पांच बजे ठाणे पहुंची। अतिथियों को वहां 'टैंटों' में ठहराया और जलपान कराया गया। रात्रि विश्राम कर, यह रेल दूसरे दिन शाम सात बजे वापस बोरीबंदर पहुंची। यह दरअसल भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की एक महान उपलब्धि थी।

चित्र साभार : विकास प्रभा

रेल ने बांधा पूरे भारत को

इसके बाद रेलों ने काफी उतार-चढ़ाव देखे। जल्दी ही सारे देश में रेल लाइनों का जाल बिछ गया, जिसने देश के एक छोर को दूसरे छोर से मिला दिया। अंग्रेजों ने रेलों की नींव भारत में इसलिए डाली थी कि उसकी सैन्य शक्ति मजबूत बनी रहे, दूसरे देश के अंदरूनी इलाकों से कच्चा माल बंदरगाहों तक पहुंच सके और वहां से पानी के जहाजों में लादकर उसे इंग्लैंड पहुंचाया जा सके। साथ ही इंग्लैंड का माल भारत के कोने-कोने तक पहुंचाया जा सके। रेल के पीछे फौजी ताकत और भारत के आर्थिक शोषण को बढ़ाना ही अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य था, जिसे उन्होंने बेहिचक स्वीकार भी किया था हालांकि इसे उन्होंने भारत को सभ्य बनाने और विकसित कर उसे उन्नत बनाने का जामा भी पहनाने की कोशिश की थी।

सामाजिक क्रांति का माध्यम

भारत की जनता ने भी पहले रेल का कोई खास स्वागत नहीं किया। हां, उत्सुकता से जरूर देखा। संदेह की दृष्टि से भी देखा। यहां तक कि जनता ने इसे 'टेलीग्राफ' की तरह 'शैतान का दफ्तर' भी माना लेकिन जब इसकी उपयोगिता पहचानी तो दिल खोलकर अपनाया भी। रेल इस देश के लिए अंग्रेजों की सत्ता शक्ति का प्रतीक ही नहीं रही बल्कि देश में एक बहुत बड़ी सामाजिक क्रांति का प्रतीक भी बनी। कट्टर वर्ण व्यवस्था, छूआछूत को मिटाने और उत्तर को दक्षिण से ,पूर्व को पश्चिम से जोड़कर भारतीय सांस्कृतिक समन्वय एकता और सद्भाव पैदा करने का भी वाहन बनी।

विश्व की सबसे बड़ी रेल

आज हमारी भारतीय रेल देश रूपी देह की उन 'रक्तवाहिनी धमनियों' का रूप ग्रहण कर चुकी है, जिनमें एक पल की रुकावट प्राणघातक सिद्ध होती है। आज हमारी रेल विश्व का सबसे बड़ा रेल संस्थान है, जो प्रतिदिन 11 लाख यात्रियों को उनके गंतव्य पर पहुंचाती है। सात हजार स्टेशनों को छूती सात हजार रेलें प्रतिदिन भू-मंडल की कई परिक्रमाएं लगाती हैं। आजादी के बाद राजधानी और शताब्दी रेलों ने समय और दूरियों के अंतर को जो घटा दिया है, वह तो और भी अद्भुत है। यात्रियों के अतिरिक्त माल की ढुलाई में भी मालगाड़ियों का कोई मुकाबला नहीं है। अब तो बंदरगाहों से माल से भरे 'कंटेनरों' के लाने-ले जाने की सुविधा ने भारतीय अर्थव्यवस्था को आश्चर्यजनक समृद्धि प्रदान की है।

-147 न्यू आर्यनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)

उस जमाने में 'कंप्यूटर' और 'इंटरनेट' तो क्या, टेलीविजन भी नहीं था। रेडियो था, लेकिन वह भी कुछ ही घरों में होता था। बैटरी से चलनेवाले 'ट्रांजिस्टर' भी तब तक नहीं आये थे। रेडियो बिजली से चलनेवाले 'रेडियो-सेट' के रूप में होता था और संपन्न शहरी लोगों की बैठकों की शोभा बढ़ाता था। कारण कि गांवों में तो बिजली थी ही नहीं, कस्बों और छोटे शहरों में भी बिजली के 'कनेक्शन' बहुत कम लोग ले पाते थे। इसलिए पुस्तकें और पत्रिकाएं उस समय मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन का मुख्य माध्यम हुआ करती थीं....

कहानी की इस निबंधात्मक शुरूआत के लिए पाठक क्षमा करें लेकिन कहानीकार के विचार से यह इसी तरह से शुरू की जा सकती थी। कारण कि कहानी आज के पाठकों को लगभग आधी सदी पहले के एक कस्बाई परिवेश में ले जाकर एक अद्‌भुत मानवीय चरित्र का परिचय देने के लिए

लाला बुकसेलर

■ रमेश उपाध्याय

लिखी जा रही है और कहानीकार को आशा है कि पाठक जब उस चरित्र से परिचित होकर अपने वर्तमान में वापस आयेंगे, तो खाली हाथ नहीं होंगे।

कस्बे में एक ही दुकान थी, जिस पर साहित्यिक पुस्तकें और पत्रिकाएं मिलती थीं। वह दुकान लाला रामसहाय की थी, जो कस्बे में 'लालाजी' या 'लाला बुकसेलर' के नाम से जाने जाते थे। वे बनिये नहीं, कायस्थ थे। उनके पूर्वज पीढ़ी-दर-पीढ़ी कोर्ट-कचहरीवाले काम करते आये थे। पिता उन्हें वकील बनाना चाहते थे लेकिन उन्हें वकालत से नफरत थी। वे अच्छे विद्यार्थी थे और विद्या को बड़ी ऊंची, पवित्र और महान चीज समझते थे। मगर वकालत को वे 'ठगविद्या' कहते थे और वकीलों को 'पढ़े-लिखे ठग'। उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में भाग लिया था लेकिन उनके आदर्श गांधी-नेहरू नहीं बल्कि तिलक, सुभाष,

बिस्मिल और भगतसिंह थे। साहित्य के संस्कार उन्हें अपने उर्दू के उस्ताद फैयाज खां से मिले थे, जो उर्दू में रूमानी गजलें और हिंदी में जोशीले गीत लिखते थे।

लाला रामसहाय ने कस्बे के एकमात्र 'डिग्री कॉलेज' में बी. ए. की पढ़ाई करते समय ही क्रांतिकारी गीत लिखना शुरू कर दिया था, जिन्हें वे हजारों की जनसभाओं में सुनाते थे और श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करके उनमें देशभक्ति की भावनाएं और सामाजिक परिवर्तन की कामनाएं जगा देते थे। ऐसे क्रांतिकारी कवि का वकालत की ठगविद्या से क्या वास्ता? लेकिन आजादी आ गयी, लाला घर-गृहस्थीवाले हो गये और पिता कचहरी के काम से 'रिटायर' हो गये, तो कोई काम करके कमाना जरूरी हो गया। लाला को साहित्यिक पुस्तकें और पत्रिकाएं पढ़ने का शौक था लेकिन कस्बे में ऐसी कोई दुकान नहीं थी, जहां उनकी मनपसंद पुस्तकें और पत्रिकाएं मिल सकें। सो उन्होंने बाजार में एक दुकान किराये पर ली और पास के बड़े शहर से लाकर साहित्यिक पुस्तकें और पत्रिकाएं बेचने लगे।

लाला की दुकान बहुत अच्छी नहीं चलती थी और परिवार उनका काफी बड़ा था-माता-पिता, पत्नी, तीन बेटियां, दो बेटे, एक पागल चाचा और विधवा बहिन, जो ससुराल से हकाल दी गयी थीं और हमेशा के लिए मायके आ गयी थीं-फिर भी इतनी कमाई हो जाती थी कि दाल-रोटी चलती रहे और उनके बच्चों की पढ़ाई-लिखाई होती रहे। कारण कि उन दिनों पुस्तकें और पत्रिकाएं कस्बे के पढ़े-लिखे लोगों के मनोरंजन और ज्ञानवर्द्धन का मुख्य माध्यम हुआ करती थीं । पढ़ने का शौक बूढ़े-पुराने लोगों को ही नहीं, स्कूल-कॉलेज में पढ़ने वाले लड़कों और लड़कियों को भी होता था; घरों में बूढ़ी दादियों से लेकर नयी ब्याहली बहुओं तक को होता था। फिर, घरों में पुस्तकें और पत्रिकाएं रखना शिक्षित होने का ही नहीं, सभ्य और सुसंस्कृत होने का भी प्रमाण माना जाता था। उससे लोगों की सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ती थी। इसलिए लाला की दुकान बहुत अच्छी न सही, पर चलती थी।

लेकिन लाला के पिता को दुकान से होनेवाली कमाई कम लगती थी। दरअसल, उन्हें साहित्यिक पुस्तकों और पत्रिकाओं की दुकान खोलने का 'आइडिया' ही पसंद नहीं आया था। उन्होंने लाला को समझाया था- ''बुकसेलर ही बनना है, तो स्कूल-कॉलेज में पढ़ाई जानेवाली किताबें बेचो। अग्रवाल की तरह नयी किताबों की नहीं, तो शर्मा की तरह 'सेकेंड हैंड' किताबों की दुकान ही खोल लो। अग्रवाल तो चांदी काट ही रहा है, शर्मा की दुकान भी बढ़िया चल रही है। पुरानी किताबें आधी कीमत में खरीदता है और पौनी कीमत में बेच देता है। जुलाई में जब स्कूल-कॉलेज में नये दाखिले होते हैं, तब तो उसकी दुकान पर भीड़ लगी रहती है। पहले छोटी-सी दुकान पर अकेला बैठता था, पर अब देखो, कितनी बड़ी

दुकान कर ली है! दो-दो नौकर भी रख लिये हैं।''

लाला सुनते सबकी थे, पर करते थे अपने मन की। उन्होंने यह सोचकर अपनी तरह की दुकान खोली थी कि कमाई के साथ-साथ अपना पढ़ने-लिखने का शौक भी पूरा होता रहेगा। और उनका सोचना सही था। दुकान पर हर समय तो ग्राहक आते नहीं थे, सो लाला को खूब फुर्सत रहती थी, जिसमें वे या तो कुछ न कुछ पढ़ते रहते थे या अपने 'रजिस्टर' में अपना कुछ लिखते रहते थे। पढ़ते-पढ़ते जो पंक्तियां उन्हें बहुत अच्छी लगतीं, उनको वे 'रजिस्टर'में उतार भी लिया करते थे। पढ़ी हुई पुस्तकों पर अपनी समीक्षात्मक टिप्पणियां भी वे अपने 'रजिस्टर' में दर्ज कर लेते थे। हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी के अलावा उन्हें थोड़ी संस्कृत भी आती थी। उनकी दुकान पर इन चारों भाषाओं की पुस्तकें मिलती थीं। वे अपने 'रजिस्टर' में भी इन चारों भाषाओं में लिखते थे और उनकी लिखावट बहुत खूबसूरत थी। पढ़ने-लिखने में उन्हें सच्चा सुख मिलता था और वे इस सुख को ज्यादा कमाई करने के लिए छोड़ना नहीं चाहते थे। पिता और दूसरे लोग उन्हें आलसी, अव्यावहारिक या अदूरदर्शी समझें, तो समझते रहें।

चित्रांकन : शिवानी

पिता और दूसरे लोग उन्हें समझाते- ''बाजार और व्यापार का उसूल है कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा कमाना और होड़ में दूसरों को पीछे छोड़ आगे निकल जाना। जब तुम ऐसा कर सकते हो, तो करते क्यों नहीं? इधर घर के खर्चे बढ़ रहे हैं, उधर महंगाई बढ़ती जा रही है। कल को तुम्हें अपनी बेटियों के ब्याह भी करने होंगे। बेटों को पढ़ा-लिखाकर काम-धंधे से लगाने में भी बड़ा खर्च होगा। खाली बैठे मक्खियां मारने से तो बेहतर है कि दुकान पर 'स्टेशनरी' भी रख लो। स्टेशनरीवालों की दुकानें दिनभर चलती हैं।''

लाला को बुरा लगता कि उनके पढ़ने-लिखने की तुलना मक्खियां मारने से की जा रही है लेकिन वे किसी के साथ बहस में न उलझते। विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर ऊपर देखते हुए कहते-''जिसने जिम्मेदारियां दी हैं, वही उन्हें निभाने के साधन भी देगा। हम उससे और कुछ मांगते भी नहीं। बस, इतना ही

कहते हैं कि साईं इतना दीजिए, जा में कुटुंब समाय। मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाए।"

समझानेवाले समझ जाते कि लाला के लिए उनके सारे सुझाव और उपदेश बेकार हैं। पीठ पीछे वे लाला के बारे में कहते- "खब्ती आदमी है, किसी की नहीं सुनता, अपने ही मन की करता है।"

घूम-फिरकर ऐसी बातें लाला तक पहुंचतीं, तो लाला मुस्कराते और मन ही मन कहते-"खब्ती हूं तो खब्ती ही सही। इतने बड़े परिवार को पाल रहा हूं और किसी के आगे हाथ फैलाने नहीं जाता। क्या इतनी कमाई काफी नहीं? माना, पाठ्य-पुस्तकें और 'स्टेशनरी' बेचनेवालों की दुकान ज्यादा चलती है लेकिन ये लोग यह क्यों नहीं देखते कि लाला की दुकान कस्बे में अपने ढंग की एक अलग ही दुकान है, जिसे और कोई नहीं, लाला ही चला सकता है। ऐसी दुकान चलाने के लिए पढ़ा-लिखा होना ही नहीं, नयी से नयी चीजें पढ़ते रहना भी जरूरी है। इन लोगों को क्या मालूम कि जब मैं दुकान पर बैठा पढ़-लिख रहा होता हूं, तो खुद को ऐसी दुकान चलाने के योग्य बना रहा होता हूं।"

लेकिन लाला अपना यह 'ट्रेड सीक्रेट' किसी को बताते नहीं थे। लोगों की बातें सुनते थे और मंद-मंद मुस्कराते रहते थे या उन बातों की काट करता कोई हिंदी का दोहा, उर्दू का शेर, संस्कृत का श्लोक या अंग्रेजी की कोई सूक्ति सुना देते, जिसका आशय होता-दुनिया समझदारों से ही नहीं चलती, उसे बेहतर ढंग से चलाने के लिए कुछ सिरफिरे भी होने चाहिए।

लाला कैसे सिरफिरे थे, यह जानते थे कस्बे के साहित्यप्रेमी पाठक, जिनमें नौजवान लड़के-लड़कियों से लेकर प्रौढ़ और सब तरह के लोग थे। कोई उनकी दुकान पर कुछ खरीदने आये, तब तो बात ही क्या, बाजार से गुजरता कोई उनकी दुकान के सामने यूं ही ठिठककर देखने लगे, तो भी लाला उसके स्वागत में उठ खड़े होते। खुद से उम्र में बहुत छोटे लोगों से भी आदरपूर्वक कहते-"आइए, आइए, दुकान के अंदर आकर देख लीजिए। देखने के कोई पैसे नहीं लगते।" और जो उनकी दुकान में एक बार आ जाता, वह पहली बार में कुछ खरीदे या न खरीदे, हास्य-व्यंग्य के साथ कही गयी उनकी विद्वतापूर्ण और स्नेहयुक्त बातों से प्रभावित होकर जाता था और एक न एक दिन ग्राहक बनकर लौटता था। लाला अक्सर पहली बार में ही बातों-बातों में यह जान लेते थे कि वह कौन है, कहां रहता है, क्या करता है और उसकी रुचि किस चीज में है? फिर, लाला की स्मरण-शक्ति भी अच्छी थी। अगली बार वह आता, तो लाला उसका हालचाल ऐसे पूछते, जैसे उसे बरसों से जानते और प्यार करते हों। वह जो पुस्तक खरीदने आता, वह तो उसे बेचते ही, साथ ही कई और अच्छी पुस्तकों के बारे में भी उसे बता देते। केवल पुस्तकों के नाम लेकर नहीं बल्कि विस्तार से यह समझाते

हुए कि उन पुस्तकों में क्या है, उनके लेखकों का इतिहास-भूगोल क्या है और उनको पढ़ना क्यों जरूरी है?

इस प्रकार लाला की दुकान तो चलती ही थी, कस्बे में एक विद्वान व्यक्ति के रूप में उनकी ख्याति भी फैलती थी। कस्बे में हिंदी-उर्दू जाननेवाले तो बहुत थे, पर अंग्रेजी जाननेवाले और उनमें भी धाराप्रवाह बोल सकनेवाले लोग बहुत कम थे। इससे 'लाला बुकसेलर' की धाक और ज्यादा जमती थी। शायद इसी का परिणाम था कि शाम को लाला की दुकान पर कस्बे के पढ़े-लिखे लोगों की मंडली जुटने लगी थी। उस मंडली में स्कूल-कॉलेज के शिक्षक और छात्र, सरकारी अफसर और नौकर, राजनीतिक दलों के स्थानीय नेता और साहित्यकार-पत्रकार किस्म के लोग हुआ करते थे।

रोज शाम को दुकान पर आनेवाले ऐसे लोगों की संख्या बढ़ने लगी और दुकान के अंदर जगह कम पड़ने लगी, तो लाला ने दुकान के सामने दो बेंचें रखवा दीं। शाम होते ही लोग आ-आकर उन बेंचों पर जमने लगते और साहित्यिक बातचीत के साथ-साथ दुनियाभर की चर्चाएं और बहसें होने लगतीं। एक-दूसरे का ज्ञान बढ़ाने से लेकर एक-दूसरे को अपढ़-कुपढ़ साबित करने तक के प्रयास होते। लाला अपनी दुकान भी चलाते और उन लोगों की बातों के बीच-बीच अपनी टिप्पणियां भी करते जाते। बातों में कभी कड़वाहट आने लगती, तो लाला

जन्मः 1 मार्च, 1942
शिक्षाः एम.ए., पीएच.डी. कृतियां - चक्रबद्ध, दंड-द्वीप, स्वप्नजीवी, हरे फूल की खुशबू (उपन्यास), जमी हुई झील, शेष इतिहास, नदी के साथ, चतुर्दिक, पैदल अंधेरे में, राष्ट्रीय राजमार्ग, किसी देश के किसी शहर में, कहां हो प्यारेलाल (कहानी-संग्रह), पेपरवेट, सफाई चालू है, बच्चों की अदालत, भारत-भाग्य विधाता (नाटक), कहानी की समाजशास्त्रीय समीक्षा, आज का पूंजीवाद और उसका उत्तर-आधुनिकतावाद (आलोचना)। संप्रति : कॉलेज ऑफ वोकेशनल स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के रीडर।

कोई हंसानेवाली बात कहकर या कोई शेर-वेर सुनाकर मामला रफा-दफा कर देते।

लाला की दुकान पर होनेवाली इन सांध्य गोष्ठियों में जैसे हिंदी-उर्दू-अंग्रेजी का कोई भेदभाव नहीं था, वैसे ही हिंदू-मुसलमान और जात-पांत का। यहां तक कि नौसिखिए नौजवान भी अनुभवी बुजुर्गों के सामने अपनी बात खुलकर कह सकते थे।

लाला अपनी दुकान पर आनेवाले नौजवानों को साहित्य पढ़ने के लिए ही नहीं, लिखने के लिए भी प्रेरित करते थे। कोई पहले से ही कवि या शायर बनने की राह पर चल पड़ा होता, तो लाला उसे फुर्सत

के वक्त अकेले आने को कहते, उसकी रचनाएं सुनते और यथाशक्ति उनमें सुधार करके उन्हें संवारने-निखारने का प्रयास करते। उसमें प्रतिभा और संभावना नजर आती, तो लाला सांध्य गोष्ठियों में आनेवाले विद्वानों के बीच उसकी हवा बांधना शुरू कर देते-"वाह साहब, क्या बात है उस लड़के की। देखिएगा, एक दिन वह इस कस्बे का नाम जरूर रोशन करेगा।" आखिर कोई न कोई उत्सुक होकर कह ही देता-"किसी दिन यहां बुलाइए। हम भी तो सुनें।" लाला तो चाहते ही यह थे। वे किसी शाम उस नवोदित कवि या शायर को बुलाकर उसकी रचनाओं का पाठ करवाते और वह विद्वानों की नजर में चढ़कर कस्बे का होनहार 'हीरो' बन जाता।

सब जानते थे कि लाला खुद भी गीत लिखते हैं और अपनी जवानी के दिनों में कवि-सम्मेलनों में भी जाते रहे हैं लेकिन बातों-बातों में भले ही अपनी लिखी दो-चार पंक्तियां सुना दें, औपचारिक रूप से अपनी रचनाएं कभी नहीं सुनाते थे। अपनी रचनाओं को प्रकाशित कराने का प्रयत्न भी उन्होंने कभी नहीं किया। कोई उन्हें उनके कवि होने की याद दिलाकर कुछ सुनाने का अनुरोध करता, तो वे अत्यंत दीन-हीन से होकर इनकार करने लगते थे-"नहीं-नहीं, मैं कोई साहित्यकार नहीं हूं। मुझे तो बस, दूसरों का लिखा पढ़ने और पढ़वाने का शौक है।"

"लालाजी, आपने कोशिश नहीं की, वरना आज आप नीरज-वीरज से बड़े गीतकार होते।"

"राम-राम।" लाला दांतों में जीभ दबाकर और कानों को हाथ लगाकर कहते, कहां नीरजजी और कहां मैं नाचीज।

एक-दो बार ऐसा भी हुआ कि कस्बे में होनेवाले कवि-सम्मेलन में लाला को कविता सुनाने के लिए आमंत्रित किया गया, पर लाला ने जाने से मना कर दिया। उनकी सांध्य मंडली के लोगों ने उन्हें उकसाया-लालाजी, आप जाइए। आप अच्छे-अच्छों पर भारी पड़ेंगे। फिर से एक नयी शुरूआत कीजिए। हम दावे से कहते हैं कि जल्दी ही आप कस्बे से शहर, शहर से प्रदेश और प्रदेश से देश पर छा जाएंगे। अंग्रेजी आपकी बढ़िया है ही, टैगोर की तरह अपनी किसी गीताजंलि का अनुवाद कीजिए और छपा लीजिए। क्या पता, आपको भी 'नोबल पुरस्कार' मिल जाए।

लेकिन लाला खुद अपना मजाक उड़ाने वाला एक ठहाका लगाकर रह गये।

एक बार लाला से पूछा गया, आखिर वजह तो बताइए, जब साहित्य के लिए ही आपने अपना जीवन समर्पित कर रखा है, तो साहित्य-रचना में समर्थ होते हुए भी आप स्वयं क्यों साहित्य में सक्रिय नहीं होते?

लाला ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, "मैं साहित्य में चला गया, तो इस दुकान को कौन संभालेगा? मेरे लड़कों को तो यह दुकान फूटी आंखों नहीं सुहाती। वे इसे मेरी बेवकूफी समझते हैं। कहते हैं-बीच बाजार

में ऐसे बढ़िया मौके की दुकान है, इस पर चाट-पकौड़ी भी बेची जाए, तो चौगुनी कमाई हो।''

''आप कस्बे के इतने सारे लड़के-लड़कियों में साहित्य के प्रति प्रेम पैदा कर चुके हैं, अपने लड़कों में क्यों नहीं कर पाये?''

''अब क्या कहूं साहब। मुझमें ही कोई कमी रही होगी।'' लाला ने अपने भीतर डुबकी-सी लगाते हुए उदास स्वर में कहा, '''उन्हें लगता है कि मैंने अपनी एक सनक के कारण उतना नहीं कमाया, जितना मैं कमा सकता था। और ऐसा करके मैं उन्हें उतनी सुविधाएं नहीं दे पाया, जितनी दे सकता था। इसलिए वे मुझे अपना पिता कम, शत्रु अधिक समझते हैं। और आप जानते हैं, लोगों को शत्रु का अमृत भी विष लगता है। दोनों लड़के छोटी-छोटी नौकरियां कर रहे हैं, जबकि दोनों मिलकर इस दुकान को संभालते, तो जितना आज कमा रहे हैं, उससे कई गुना ज्यादा कमाते। मेरे मन में भी कई बार यह बात आयी कि मैं साहित्य में सक्रिय हो जाऊं, कवि-सम्मेलनों में जाऊं और अपनी किताबें छपवाऊं लेकिन हर बार यह सवाल सामने आकर खड़ा हो गया कि मैं उधर सक्रिय हो गया, तो इधर इस दुकान को कौन संभालेगा? आप देखते हैं, मैं अपनी दुकान छोड़कर कहीं नहीं जाता। किसी की शादी या गमी में दुकान बंद करके जाना पड़ता है, तब भी मेरा जी कलपता रहता है कि पता नहीं, कितने ग्राहक आकर लौट गये होंगे? मौत और ग्राहक का क्या पता, कब आ जाए?''

लाला इस कहावत को अक्सर दोहराते थे कि मौत और ग्राहक का क्या पता, कब आ जाए। कभी-कभी, न जाने क्यों, वे इसमें यह और जोड़ देते थे कि ''इंसान को जिस तरह ग्राहक का स्वागत करने के लिए हर वक्त तैयार रहना चाहिए, उसी तरह मौत का।''

यह सुनकर कोई हंसी में कहता-''हां, भई। लालाजी को मौत का क्या डर? ये तो यमराज को भी साहित्य पढ़वाकर साहित्यकार बना देंगे।''

''और यमराज गुरु-दक्षिणा के रूप में इन्हें अमर कर देंगे।'' दूसरे लोग उस हंसी में शामिल हो जाते।

एक बार किसी ने गंभीरतापूर्वक पूछा, ''लालाजी, अल्लाह आपको लंबी उम्र दे, पर क्या आपने कभी सोचा है कि आपके बाद आपकी इस दुकान का क्या होगा?''

लाला ने किसी वीतरागी की तरह कहा, ''मैंने तो इसे अपनी दुकान कभी समझा ही नहीं। यह तो आप सबकी दुकान है। जरूरी समझें, तो आप लोग इसे संभाल लें।''

पूछनेवाले ने कुरेदकर पूछा, ''फिर भी, आपने कुछ तो सोचा होगा? आखिर इस दुकान को चलाने में आपने अपनी जिंदगी खपायी है।''

लाला ने जवाब दिया, ''कहने को यह

चित्रांकन : शिवानी

मेरी दुकान है, पर मेरा इसमें क्या है? शुरू-शुरू में सोचा था कि अपनी किताबें छपवाकर बेचूंगा। ऐसा हो पाता, तो यह सचमुच मेरी दुकान होती लेकिन मेरी अपनी जिंदगी का इस दुकान से क्या वास्ता रहा? बस, दो वक्त की रोटी, दो जोड़ी कपड़ों और एक जोड़ी चप्पल का। बाकी सब तो परिवार को पालने की जिम्मेदारी निभाने का जरिया था। वह जिम्मेदारी जैसे निभ सकती थी, निभ गयी। मां-बाप और चाचा सुख से स्वर्ग चले गये। बेटियों के ब्याह हो गये। बेटे पढ़-लिखकर काम-काज से लग गये और घर-गृहस्थीवाले हो गये। बस, एक विधवा बहिन की चिंता है लेकिन उसकी भी क्या चिंता? मैं पहले जाऊंगा या वह पहले जाएगी, कौन जानता है?"

"क्या आपको अपनी जिंदगी से कोई शिकायत है? या कोई पछतावा?"

"नहीं। कोई शिकायत नहीं। कोई पछतावा नहीं। मुझे तो खुशी है कि मैंने जैसे जीना चाहा, वैसे जिया। न तो किसी की गुलामी की, न मन और आत्मा को मारकर झूठ-फरेबवाला कोई काम किया। और सबसे बड़ा लाभ यह रहा कि जिंदगी आप जैसे अच्छे लोगों के साथ उठते-बैठते आनंद से बीत गयी।"

"अभी कहां बीती? अभी तो आपको बहुत जीना है।" किसी ने हंसकर वातावरण को हल्का-फुल्का बनाने की कोशिश की।

लेकिन लाला को शायद अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। इस बातचीत के कुछ ही दिन बाद वे चल बसे। भले-चंगे थे, पर एक रात नींद में दिल का दौरा पड़ा और खत्म। उनके लड़कों ने उस दुकान को चलाने के बारे में सोचा तक नहीं। किराये की दुकान थी। उसका मालिक दुकान खाली कराने के लिए एक लाख की पगड़ी देने को तैयार था। लड़कों ने रकम लेकर आधी-आधी बांट ली। दुकान में भरी किताबें उन्होंने औने-पौने दामों में बेचने की कोशिश की, पर वे उनसे बिकी नहीं। आखिर उन्होंने सारी किताबें रद्दी के भाव एक कबाड़ी को बेच दीं और कबाड़ी से मिली रकम भी आधी-आधी बांट ली।

उन किताबों के साथ वे सारे 'रजिस्टर' भी रद्दी में चले गये, जिनमें लाला फुर्सत के समय कुछ न कुछ लिखते रहते थे। हमारे देश में ऐतिहासिक महत्त्व की चीजों को सुरक्षित रखने का चलन नहीं है न।

-107, साक्षरा अपार्टमेंट्स
ए-3, पश्चिम विहार, नयी दिल्ली-110063

वरदान

है ईश्वर मैं नहीं बनना चाहती हूं
सोना, चांदी, हीरे-सी क्योंकि
अग्नि परीक्षा की कसौटी में खरा उतरने पर भी
सोने में मिलायी जाती है खोट
खारे जल में चांदी भी काली होकर
हृदय में पहुंचाती है चोट
हीरा भी नहीं होता है किसी का साथी
जहर बन जीवन का नाश कर
बन जाता है पाप का भागी

हे ईश्वर ! मैं बनना चाहती हूं
परिश्रमी किसान के तन का
पसीना
जो सिखाता है हमें दूसरों के
लिए जीना
भूखे मासूम बच्चों के लिए
रोटी का टुकड़ा
लाज छिपाती गरीब औरत के तन का कपड़ा।

-रचना व्यास
बी-504, स्काई व्यू टॉवर
आनंद महल मार्ग,सूरत (गुजरात)395009

आवाज

दूर से रंभाती गायों की आवाज
संतति के प्रति प्रेम की परिभाषा लिखती है
खेतों से आती रहट चलने की आवाज
कृषक के श्रम की कहानी कहती है
शिशु को लोरी सुनाती मां की आवाज
ममत्व की मंदाकिनी बहाती है
आंगन बुहारती वधू की चूड़ियों की आवाज
कानों में मधु-रस वर्षण करती है
जंगल से आती सूखे पत्तों की आवाज
जीवन की क्षणभंगुरता का एहसास कराती है
पावस में पानी के गिरने की आवाज
जगत को नवजीवन का संदेश सुनाती है
गरीब की छत्त से पानी टपकने की आवाज
उसकी नींद उड़ा ले जाती है
कुछ आवाजें तीक्ष्ण अस्त्र की तरह होती हैं
जो सीने को चीरकर रख देती हैं
तो कुछ आवाजें रिसते हुए जख्मों पर
संजीवनी का काम करती हैं
कुछ आवाजें नीम की तरह
कड़वी होती हैं
तो कुछ आवाजें शहद की
तरह मीठी होती हैं
कुछ आवाजें सात दरवाजे
को भी भेदकर बाहर आ जाती हैं
तो कुछ आवाजें अंदर ही अंदर
घुटकर रह जाती है

जब मनुष्य बाहर की आवाजों से
निर्विकार हो जाता है
तभी वह अपनी अंतरआत्मा की
आवाज सुन पाता है।

-उर्मिला फुसकेले
द्वारा: विनोदकुमार फुसकेले
उपमहाप्रबंधक(यांत्रिकी)इंजीनियरिंग
एन.एम.डी.सी.मसबटैंकविभाग,हैदराबाद(आं.प्र.

टूटता पहाड़

कोई पहाड़ नहीं ढहता अचानक
दरकता है वह धीरे-धीरे
बढ़ती जाती हैं दरारें
फिसलती जाती हैं चट्टानें
इसमें लगता है लंबा समय

कोई पहाड़ नहीं ढहता अचानक
हवा के झकोरे तो बनते हैं बहाने
मगर पहले ढहता है वह
भीतर अपने
अपनी ही तपिश से जाता है
चटक
बेशक उसका ढहना होता है
भयानक मगर कोई पहाड़
नहीं ढहता अचानक।
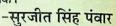
–सुरजीत सिंह पंवार
मेन बाजार, उत्तर काशी (उत्तरांचल)
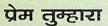
प्रेम तुम्हारा

मानसरोवर के पत्तों पर
पड़ी ओस की बूंदों- सा
निश्चल कोमल और स्पंदित
तितली के पंखों के रंगों- सा
उनींदी आंखों में है
यह सपनीले
एहसासों-सा
यथार्थ के
कठोर धरातल पर है
यह तिलिस्मी,
जादुई अंशों-सा
जीवन की निराशाओं में
है स्मित-मुसकान-सा
हां मीत यह है प्रेम तुम्हारा।

–आभा गौड़
सी-6-सी-119, जनकपुरी, नयी दिल्ली-110058

धूप

धूप
गुपचुप
चुप-चुप
आयी अंधियारे फांकती
कभी गले लगी,
कभी गले पड़ी
मेरे अंतरमन में झांकती
आयी अंधियारे फांकती
अंधियारे फांकती
भीतर के उदास
कोहरे पर जगह-जगह
खुशियों के सलमे सितारे
टांकती
आयी अंधियारे फांकती
जीवन के अलिखे भाग्य
पीले पड़ गये-पन्नों को
बांचती
धूप कहां से आ गयी
अंधियारे फांकती
मेरे जीवन
में झांकती।

– राहीशंकर
–जसीडीह आरोग्य भवन
पो.-जसीडीह
जिला-देवघर (झारखंड)

■ पीयूष पाण्डे

इंटरनेट टेलीफोनी क्या है?

इंटरनेट टेलीफोनी इंटरनेट के माध्यम से फोन करने की प्रक्रिया का नाम है। इंटरनेट टेलीफोनी से बात करने के दो मुख्य तरीके हैं। पहला तरीका यह है कि आप अपना माइक्रोफोन लेकर कंप्यूटर पर बैठें और याहू अथवा किसी मुख्य मैसेन्जर के जरिए बात आरंभ करें। मैसेन्जर से नंबर लिखकर भेजने के बाद इंटरनेट प्रदाता कंपनी के गेटवे के जरिए आपका कॉल दूसरे देश के इंटरनेट प्रदाता कंपनी के लोकल गेटवे तक पहुंच जाएगा, जहां से आपका कॉल आपके वांछित नंबर पर भेज दिया जाएगा और बातचीत आरंभ हो जाएगी। दूसरा तरीका यह है कि आप वायस ओवर इंटरनेट प्रोटोकोल तकनीक का सहारा लें ,पर इसके लिए आपको कुछ उपकरण खरीदने पड़ेंगे। वीओआईपी तकनीक का लाभ यह है कि आप सीधे अपने कंप्यूटर से नंबर डायल कर सकते हैं। इंटरनेट टेलीफोनी का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसके जरिए लोकल कॉल के शुल्क पर विदेशों में फोन किये जा सकते हैं। एक लाभ यह है कि इंटरनेट के माध्यम से आप बात और नेट सर्फिंग दोनों एकसाथ कर सकते हैं।

कंप्यूटर की दुनिया का कुत्ता, बिल्ली और चूहा - आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कंप्यूटर की प्रभावी तकनीकी दुनिया में भी कई किस्म के जानवर और पशु-पक्षी पाए जाते हैं। डॉग-हॉटडॉग नामक सॉफ्टवेयर इंटरनेट पर होमपेज बनाने में और स्मार्ट डॉग वायरस ढूंढ़ने में मदद करता है। कैट-कंप्यूटर की दुनिया में कैट का अर्थ एक ऐसा मोडेम है, जो आपको कंप्यूटर को इंटरनेट से जोड़ता है। माउस-कंप्यूटर का उपयोग करने वाले लोगों के लिए यह बहुत ही उपयोगी यंत्र है। माउस को प्रयोग करना आसान है और इसका उपयोग करने से की बोर्ड की बहुत कम मदद लेनी पड़ती है।

जावा प्रोग्रामिंग भाषा - सन माइक्रोसिस्टम्स द्वारा विकसित एक उच्च-स्तरीय प्रोग्रामिंग भाषा। जावा को मूलत: ओ.ए. के. कहते थे, जोकि हस्तगत युक्तियों तथा सेट-टॉप बॉक्सेस के लिए विनिर्मित थी। ओ.ए.के के 1995में विफल होने के पश्चात सन माइक्रोसिस्टम्स ने इसका नाम बदलकर जावा रख दिया और तेजी से बढ़ रहे वर्ल्ड वाइड वेब का लाभ उठाने के लिए इसमें आवश्यक सुधार किये।

जावा सी++ की ही तरह एक विषयाधारित (ऑब्जेक्ट ओरिएण्टिड) प्रोगामिंग भाषा है, किन्तु कठिन प्रोग्रामिंग खामियों को दूर करने के लिए सी++ की अपेक्षा इसका सामान्यीकरण किया गया है।

वोर्टल क्या है - साइट और पोर्टल का भाई वोर्टल वास्तव में 'वर्टिकल इंडस्ट्री पोर्टल' के संक्षिप्त रूप में प्रयोग होता है। वोर्टल पर साधारणत: किसी विशेष इंडस्ट्री से संबंधित तमाम सूचनाएं उपलब्ध रहती हैं। कहने का अर्थ यह है कि वोर्टल पर आप किसी विशेष उद्योग से संबंधित समाचार, आंकड़े, शोध, बहस व लिंक आदि पा सकते हैं। वोर्टल को देखने के लिए आप एक छोटा सा चक्कर वर्टिकलनेटडॉटकॉम का लगा सकते हैं, जहां लगभग सभी इंडस्ट्री के वोर्टलों की लिस्ट उपस्थित है।

- बी3 बी/7 बी, जनकपुरी, नयी दिल्ली-58

रोजगार

सृजनशीलता से भरा भविष्य है डिजायन में

■ अशोक सिंह

कैरियर निर्माण की दृष्टि से तेजी से उभरते हुए क्षेत्र के रूप में डिजायनिंग के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। विश्वव्यापी तौर पर छाए उपभोक्तावाद के वर्तमान दौर में ग्राहकों को आकर्षित करने और रिझाने के लिए डिजायनिंग की विद्या का खूब धड़ल्ले से प्रयोग किया जा रहा है। चाहे विभिन्न उत्पादों के रंग-रूप, आकार-प्रकार अथवा उनमें निहित सौंदर्य को देखें या उनकी चमकती-दमकती आकर्षक पैकिंग पर निगाह डालें, इनमें डिजायनरों की कल्पना और उनकी पारंगतता की झलक अवश्य ही किसी न किसी रूप में दिखाई पड़ती है। बड़ी और नामी-गिरामी कंपनियां भी बाजार में कोई नया प्रोडक्ट उतारने से पहले मार्केट रिसर्च एजेंसियों के माध्यम से उपभोक्ताओं की पसंद-नापसंद का जायजा लेने के बाद ही प्रोडक्ट की बनावट और पैकिंग के तौर-तरीकों को अंतिम रूप देती हैं और उसके बाद ही बाजार में
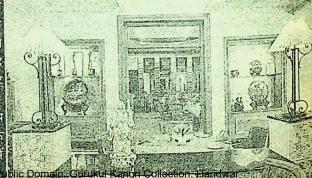
लाँच करने का जोखिम उठाती हैं,हालांकि कहने-सुनने में यह बड़ी ही महत्वहीन-सी बात प्रतीत होती है, पर मार्केट विशेषज्ञों के अनुसार बेहतरीन गुणवत्ता के ब्रांड नाम वाले प्रोडक्ट भी सिर्फ एक जरा-सी गलत डिजायनिंग के कारण पिट जाते हैं और करोड़ों रुपये की चपत कंपनी मालिकों को लगा सकते हैं।

डिजायनरों की मांग तेज

यही कारण है कि दुनिया भर में डिजायनरों की मांग तेजी से बढ़ रही है। डिजायनिंग क्षेत्र में विविध विद्याओं का विकास होने से प्रत्येक विद्या में विशेषज्ञता हासिल करने से बल दिया जाने लगा है। इन विद्याओं में मोटे तौर पर ड्रेस डिजायनिंग या फैशन डिजायनिंग, टैक्सटाइल डिजाइनिंग, फर्नीचर डिजायनिंग, इंटीरियर डिजायनिंग, ज्वैलरी डिजायनिंग, ग्राफिक्स डिजायनिंग, इंडस्ट्रियल प्रोडक्ट डिजायनिंग का उल्लेख किया जा सकता है। ख्याति प्राप्त डिजायनरों की फीस एक-एक प्रोडक्ट के लिए हजारों में नहीं बल्कि लाखों रुपयों में होती है और फिर बाजार में उनके द्वारा डिजायन किए गए उत्पाद काफी ऊंचे दामों पर एक विशिष्ट श्रेणी के अंतर्गत बेचे जाते हैं जो वस्तुत: एक प्रकार

के स्टेटस सिम्बल के प्रतीक होते हैं।

प्रोडक्ट डिजायन

आज हमारे भारतीय बाजार में विदेशी सामानों की भरमार है और स्वदेश निर्मित वस्तुओं की मांग में निरंतर गिरावट के संकेत देखने को मिल रहे हैं। इसके पीछे भी स्वदेशी निर्माताओं द्वारा गुणवत्ता के निर्धारित मानदंडों की अनदेखी करना और प्रोडक्ट डिजायनिंग तथा पैकिंग डिजायनिंग के विशेषज्ञों की सेवाएं लेने से हिचकना और इन मदों पर खर्च करने को अपव्यय समझने की मानसिकता है। लेकिन हाल के वर्षो में भारतीय निर्माताओं ने भी इस ओर ध्यान देना शुरू किया है और अपने अस्तित्व को बचाने के लिए और बाजार में स्पर्धा में बने रहने के लिए प्रोडक्ट डिजायनरों की सेवाएं लेनी शुरू की हैं। इसी कारण उम्मीद है कि आने वाले समय में डिजायनरों की मांग में और तेजी आएगी। डिजायनिंग के क्षेत्र में एक सफल कैरियर बनाने के लिए सर्वाधिक आवश्यक है आपके भीतर कुछ नया कर दिखाने की एक अदम्य भावना जिसमें घंटों तक अथक रूप से निरंतर काम करने का आत्मविश्वास और शुरूआती नाकामयाबियों को झेल पाने का साहस भी निहित होना चाहिए। इसमें सफलता हासिल करने का मूलमंत्र है सृजनशीलता जो मूल रूप से आपके अपने दिमाग, कल्पना और सोच से उपजे।

यह पूर्णत: गैरपरंपरागत किस्म का प्रोफेशन है जिसमें कहीं कोई निर्धारित सीमा रेखाएं नहीं हैं और कर गुजरने के लिए अनन्त संभावनाएं हैं। अगर आप भी अपने व्यक्तित्व को कुछ इसी प्रकार का पाते हैं तो निश्चित रूप से आपको इस क्षेत्र में भविष्य निर्माण के बारे में गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए।

औपचारिक प्रशिक्षण

इसके बाद बात आती है डिजायनिंग के औपचारिक प्रशिक्षण की। सैद्धांतिक तौर पर

दाखिले- इस महीने

सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम (फूड एण्ड न्यूट्रीशियन, डिजास्टर मैनेजमेंट, रूरल डेवलपमेंट, टूरिज्म स्टडीज ह्यूमन राइट्स, कंज्यूमर प्रोटेक्शन), एम. बी. ए. (बैंकिंग एण्ड फाइनेंस) आदि पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनीवर्सिटी की ओर से आवेदन मंगाए गए हैं। सभी पाठ्यक्रम गैर परंपरागत पद्धति से संचालित हैं। विवरणिका प्राप्त करने के लिए 80 रुपये का 'आई .जी .एन .ओ .यू.' के नाम नई दिल्ली में देय डिमाण्ड ड्राफ्ट 'डायरेक्टर, एस. आर. ई .डिवीजन, आई .जी. एन .ओ. यू., मैदान गढ़ी, नयी दिल्ली-68' के पते पर भेजें, जबकि एम .बी. ए. पाठ्यक्रम हेतु 350 रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट भेजें। अंतिम तिथि 31 मई है। (संस्थान की वेबसाइट www.ignou.ac.in)

बात करें तो बैचलर ऑफ फाइन आर्टस अथवा इंजीनियरिंग के डिग्रीधारकों, आर्किटैक्चर के डिग्रीधारकों के लिए ही उनके विषय क्षेत्रों में डिजायनिंग की पारंगतता हासिल करने की बात की जाती है। लेकिन इसका आशय यह कतई नहीं समझा जाना चाहिए कि अन्य विषयों की शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले युवाओं के लिए डिजायनिंग के क्षेत्र में प्रवेश करना वर्जित है। वैसे भी ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है जिनमें दूसरे क्षेत्रों के लोगों ने ही अपने काम के बूते पर सफलता की पताकाएं फहराई हैं। लेकिन इसके बावजूद, डिजायनिंग के क्षेत्र में प्रशिक्षण हासिल करने के बाद कैरियर की शुरूआत करने का प्रयास करना ही उचित कदम होगा। इसका सबसे बड़ा लाभ यह है कि डिजायनिंग के सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक पहलुओं के बारे में जानकारी हो सकेगी और आप अपनी नैसर्गिक प्रतिभा में निखार लाते हुए सृजनशीलता में श्रेष्ठता का समावेश कर सकते हैं।

डिजायनिंग की प्रमुख विधाओं का परिचय

इंडस्ट्रियल डिजायन : इसके तहत बड़ी-बड़ी औद्योगिक मशीनों के डिजायन तैयार किए जाते हैं। यही नहीं इनके जरिये तैयार होने वाले उपभोक्ता उत्पादों के आकर्षक डिजायन विकसित करने से संबंधित काम भी इसी विद्या के अंतर्गत होते हैं। इसमें भी उपविद्याएं हैं जिनमें पारंगतता हासिल की जा सकती है, जैसे प्रोडक्ट डिजायन, सिरेमिक डिजायन, फर्नीचर डिजायन आदि। इस विशिष्ट विद्या का प्रशिक्षण नेशनल इंस्टीट्यूट ऑव डिजायन, पाल्डी, अहमदाबाद (गुजरात) में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर दिया जाता है। दाखिले अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित की जाने वाली चयन परीक्षा के आधार पर दिए जाते हैं। इसके अलावा गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट, चेन्नई-600028, आई आई टी, स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्किटैक्चर, नई दिल्ली-2 में भी यह विशिष्ट पाठ्यक्रम है।

विजुअल कम्यूनिकेशन डिजायन : बड़ी संख्या में टेलीविजन चैनलों के आगमन और इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए भारी मात्रा में सॉफ्टवेयर की मांग होने से इस विद्या में निपुण व्यक्तियों के लिए काम के अवसर काफी बढ़े हैं। इनका काम ग्राफिक्स, डिजायन, एनीमेशन डिजायन अथवा वीडियो प्रोग्रामिंग से संबंधित हो सकता है। इनकी मांग टेलीविजन, फिल्म, पब्लिशिंग तथा एडवर्टाइजिंग कंपनियों में हो सकती है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑव डिजायन के अलावा दिल्ली स्कूल ऑव आर्ट, जे. जे. इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड आर्ट, एम. एस. यूनीवर्सिटी, बड़ोदरा, बी .एच.यू, वाराणसी, मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ कम्यूनीकेशन, अहमदाबाद में इस विशिष्ट विद्या की ट्रेनिंग उपलब्ध है।

इंटीरियर डिजायन एण्ड इंटीरियर डेकोरेशन : घरों, होटलों, रेस्त्रां, बड़े शो-रुम, कार्पोरेट ऑफिस, कम्यूनिटी सेंटर, ऑडिटोरियम, थियेटर, स्कूलों आदि की डिजायनिंग का खर्च ईंट-गारे से तैयार संपूर्ण ढांचे की तुलना में कहीं अधिक होता है। यह काम इंटीरियर डेकोरेटर और डिजायनरों द्वारा मुंहमांगी फीस के एवज में कराया जाता है। यह पाठ्यक्रम स्कूल ऑव इंटीरियर डिजायन, सेंटर ऑव एनवायरनमेंटल प्लानिंग एण्ड टैक्नोलॉजी, कस्तूरभाई लालभाई कैम्पस, यूनीवर्सिटी रोड, अहमदाबाद, विभिन्न पॉलीटैक्नीक संस्थानों और निजी क्षेत्र के संस्थानों द्वारा अंशकालिक अथवा पूर्णकालिक हैं।

टैक्सटाइल डिजायनिंग : कपड़ा मिलों में कपड़े की डिजायनिंग, रंगों का तालमेल, फैब्रिक का चयन आदि इस क्षेत्र के निपुण टैक्सटाइल डिजायनर करते हैं। एन.आई.डी., पाल्डी (अहमदाबाद) के अलावा देश के विभिन्न राज्यों में पॉलीटैक्नीक और वोकेशनल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट द्वारा भी यह ट्रेनिंग दी जाती है। इसके अलावा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑव फैशन टैक्नोलॉजी, हौजखास, नयी दिल्ली द्वारा भी 10+2 पास युवाओं के लिए पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं।

डिजायन : चमड़े के उत्पाद, बहुमूल्य धातुओं से तैयार होने वाले विभिन्न उत्पादों, पर्स, बेल्ट, फैंसी बटन आदि के अलावा भी असंख्य संख्या में उत्पाद हैं जिनका आम आदमी रोजाना की जिन्दगी में उपयोग करता है। इनकी डिजायनिंग के लिए विशिष्ट ट्रेनिंग की व्यवस्था नेशनल इंस्टीट्यूट ऑव फैशन टैक्नोलॉजी में उपलब्ध है। इसमें भी 10+2 के बाद दाखिले दिए जाते हैं।

-सी-301, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट 17, आई.पी. एक्सटेंशन पटपड़गंज, दिल्ली-92

पं. पुनीत पाण्डे

मेष : युवाओं को परीक्षा व रोजगार संबंधी परीक्षा परिणाम निराश करेंगे। कंप्यूटर एवं आई. टी. से जुड़े लोगों को रोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे। किसी पुराने मित्र से अचानक भेंट लाभप्रद होगी। बच्चों की शिक्षा के कारण परेशान रहेंगे। लंबी यात्रा की आकांक्षा अत्यंत तीव्र होगी परंतु सैर का कार्यक्रम स्थगित होगा।

वृषभ : पुत्र-पुत्री के विवाह के दायित्व से मुक्ति मिलेगी। ऋण प्राप्ति के साथ ही गृह निर्माण का प्रयास सफल होगा। राजनीति व राजनीतिक संबंधों से आर्थिक लाभ होगा। आर्थिक दृष्टि से समय ठीक नहीं है किंतु पुराने व्यावसायिक भागीदार सहायक सिद्ध होंगे। अचल संपत्ति खरीदने के प्रयास अपने अंतिम पड़ाव पर पहुंचेंगे।

ग्रह स्थिति

सूर्य 15 मई से वृषभ में, मंगल मकर में, बुध मेष में, गुरु कर्क में, शुक्र 11 से मेष में, शनि मिथुन में, राहु वृषभ में, केतु वृश्चिक में।

मिथुन : किसी पुराने कर्ज से मुक्ति मिलेगी। सरकारी सेवा की तैयारी कर रहे युवाओं को सुखद समाचार सुनने को मिल सकता है। किसी धार्मिक स्थान की यात्रा का योग बन सकता है। व्यापार में पुराने मित्रों की मदद सहायक होगी। माह के मध्य में स्वास्थ्य को लेकर चिंतित रहेंगे। वाहन खरीदने की भी संभावना है।

कर्क : अथक प्रयासों से कई वर्षों से चला आ रहा कानूनी विवाद समाप्त होगा। जीवन साथी से आर्थिक व मानसिक सहयोग मिलेगा। किसी सामाजिक संस्था में कोई उच्च पद प्राप्त होगा। नई सुख-सुविधाएं जैसे कंप्यूटर व मोबाइल फोन की खरीद होगी। लंबी अवधि के निवेश लाभप्रद होंगे। नौकरी या स्वयं का व्यवसाय चुनाव की स्थिति में नौकरी का चुनाव करें।

सिंह : वैवाहिक संबंधों में किसी खास मित्र अथवा रिश्तेदार की वजह से उलझनें पैदा हो सकती हैं। फैशन डिजाइनिंग, लेखन, फिल्म, पत्रकारिता से जुड़े लोगों के लिए अच्छा वक्त है। आय के नए स्रोत खुलेंगे। व्यवसाय में नए भागीदार मिलेंगे, जो दीर्घकाल में लाभदायक साबित होंगे। माह के अंत में सैर-सपाटे का कार्यक्रम बनेगा। मेहमान के आने की भी संभावना है।

कन्या : माह के आरंभ सामान्य परन्तु उत्तरार्ध्द आर्थिक एवं पारिवारिक दृष्टि से उत्तम होगा। घर खरीदने की कोई योजना है तो उस पर अमल करें। व्यवसाय परिवर्तन का विचार अपने दिमाग से निकाल दें। वाहन खरीदने का योग है। विवाह योग्य युवाओं की शादी तय हो सकती है। नौकरी-व्यवसाय के

चक्कर में शहर से दूर जाना पड़ सकता है।

तुला : माह का उत्तरार्ध मानसिक तनाव वाला होगा। इंटरनेट, ई-मेल, चैट, मोबाइल आदि के कारण संचार से संबंधित खर्च बढ़ेगा। नौकरी के कारण कुछ परेशान रहेंगे। टी.वी. घर में तनाव का कारण बनेगा। माह के प्रारंभ में अचानक कोई खुशखबरी मिलेगी। खर्चों पर पूर्ण नियंत्रण की आवश्यकता है। विदेश यात्रा संभव है।

वृश्चिक : सरकारी सेवाओं में कार्यरत लोगों को पदोन्नति के अवसर मिलेंगे। युवाओं के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं के परिणाम चौंकाने वाले साबित होंगे। भाई अथवा किसी खास मित्र की वजह से तनावग्रस्त रहेंगे। कोई नया व्यवसाय प्रारंभ कर सकते हैं। जेब गर्म रहेगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से समय उत्तम नहीं है।

धनु : शेयर बाजार, कारोबार की वजह से हुए नुकसान का संबंधों पर असर पड़ सकता है। नौकरी परिवर्तन का योग है। सी.ए, सी.एस., एम.बी.ए. कर रहे युवाओं को रोजगार के नए अवसर मिलेंगे। क्रोध के कारण धन हानि होगी अत: क्रोध पर नियंत्रण रखें। विदेश जाने का कार्यक्रम बन सकता है। पितृ-पक्ष की ओर से दुखद समाचार मिल सकता है।

माह के अंत में आय के नए स्रोत खुलेंगे।

मकर : घर में किसी नए मेहमान के आने का समाचार मिलेगा। इलेक्ट्रानिक उपकरण फ्रिज, टेलीविजन, कूलर, कंप्यूटर आदि खरीदने का योग है। वाहन चालन में सावधानी अपेक्षित है। दूर से आए किसी रिश्तेदार की वजह से घर में आनंद का माहौल रहेगा। माह के अंत में स्वास्थ्य संबंधी कुछ परेशानियां रहेंगी।

कुंभ : विफलता आजीवन साथ नहीं चलती, इस सूक्ति पर अमल करिए और अपने काम को पूरे जोश के साथ कीजिए। कानूनी विवादों का हल निकलेगा। वैवाहिक संबंध प्रगाढ़ होंगे। सैर-सपाटे का कार्यक्रम बनेगा जो कि आनंद देने वाला होगा। रिश्तेदारों के कारण तनाव महसूस करेंगे। शेयर, लॉटरी में धन हानि संभव है।

मीन : ग्रामीण क्षेत्र में रह रहे लोग व्यवसाय के लिए शहर का रुख करेंगे। परिवार में शुभ कार्यक्रमों का आयोजन होगा। किसी पुराने मित्र से व्यवसायिक लाभ होगा। डायबिटीज एवं ब्लड प्रेशर के कारण परेशान रहेंगे। नौकरी में प्रमोशन व ट्रांसफर का योग है। सैर सपाटे का कार्यक्रम बनेगा। माह के अंत में हाथ कुछ तंग रहेगा।

पर्व और त्योहार

2 मई पाराशर जयंती, 3 शिवाजी जयंती, 4 परशुराम जयंती, 6 आद्य शंकराचार्य/सूरदास जयंती, 7 रामानुजाचार्य जयंती, 8 श्री गंगा सप्तमी, 9 श्री दुर्गाष्टमी, 12 मोहनी एकादशी, 13 प्रदोष, 15 वृष संक्राति, 16 बुध पूर्णिमा, 18 नारद जयंती, 19 श्री कृष्ण चतुर्थी, 21 राजीव गांधी पुण्य तिथि, 23 कालाष्टमी, 26 अपरा एकादशी, 27 पंचक समाप्त, 30 पितृकार्य एवं श्राद्ध आदि की अमावस्या, 31 वट सावित्री व्रत/ शनिश्चरी अमावस्या।

पहले इसे नाश्ता कराओ

एक रात की बात है। गांधीजी के रसोईघर में एक चोर घुस आया। वह भूखा था या उसका उद्देश्य कुछ और था, यह कोई नहीं जान सका। परंतु आश्रमवासियों ने उसे पकड़ लिया और एक कोठरी में बंद कर दिया।

दूसरे दिन प्रात:काल नित्य कर्मों से निवृत्त होकर गांधीजी नाश्ता करने बैठे तो चोर को उनके सामने उपस्थित किया गया, "किसने पकड़ा? क्यों पकड़ा?" आदि प्रश्नों का समाधान होने के तुरंत बाद गांधीजी ने पूछा, "इसे नाश्ता कराया या नहीं?"

आश्रमवासियों ने उत्तर दिया, "नहीं बापू।"

गांधीजी ने कहा, "तो पहले इसे नाश्ता कराओ, उसके बाद मेरे पास लाओ।"

सुनकर एक आश्रमवासी ने आश्चर्य से कहा, "चोर को नाश्ता?"

"हां", गांधीजी ने कहा, "यह चोर है तो क्या हुआ, है तो आदमी ही। भूख इसे भी लगी होगी। इस समय यह हमारे बंधन में है तो इसके पोषण का दायित्व भी हम पर है।"

गांधीजी की आज्ञा का पालन होने के उपरांत चोर को गांधीजी ने अपने पास प्रेम से बिठलाया और उससे कहा, "यदि तुम केवल भूख के कारण चोरी करते हो, तो मुझसे कहो, मैं तुम्हारे लिए यहीं आश्रम में कुछ व्यवस्था कर दूं?"

गांधीजी की इस उदारता के सामने वह बेचारा क्या कहता! उसके मौन को स्वीकार समझकर गांधीजी ने उसकी आजीविका की व्यवस्था कर दी।

यदि मैं प्रेम न रखूं

1. यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं और प्रेम न रखूं तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल और झनझनाती हुई झांझ हूं 2. और यदि मैं भविष्यवाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझ सकूं और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परंतु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं 3. और यदि मैं अपनी संपूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिए दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं 4. प्रेम धीरजवंत है और कृपालु है, प्रेम डाह नहीं करता और फूलता नहीं 5. वह अनीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं

चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता 6. कुकर्म से आनंदित नहीं होता, परंतु सत्य से आनंदित होता है 7. वह सब बातें सह लेता है, बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है 8. प्रेम कभी टलता नहीं, भविष्यवाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हों तो जाती रहेंगी, ज्ञान हो तो मिट जाएगा

9. क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है और हमारी भविष्यवाणी अधूरी10. परंतु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा 11. जब मैं बालक था तो मैं बालकों को नाई बोलता था, बालकों का-सा मन था, बालकों की-सी समझ थी, परंतु जब सयाना हो गया तो बालकों की बातें छोड़ दीं 12. अब हमें दर्पण में धुंधला-सा दिखाई देता है, परंतु उस समय आमने-सामने देखेंगे,इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है परंतु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहचानूंगा, जैसा मैं पहचाना गया हूं 13. पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी है, पर इनमें सबसे बड़ा प्रेम है।

(न्यू टेस्टामेंट से)

ईश्वर की खोज

-खलील जिब्रान

दो आदमी एक घाटी में घूम रहे थे। एक ने पहाड़ की ओर अपनी अंगुली से निर्देश करते हु कहा, ''देखते हो न, वहां एक कुटी है, जिसमें एक आदमी रहता है। उस आदमी ने बहुत दिनों से वैराग्य ले रखा है। वह केवल ईश्वर की खोज में लगा रहता है। संसार में उसकी और कोई कामना नहीं है।''

दूसरे आदमी ने कहा, ''जब तक वह इस कुटिया के एकांतवास का त्याग करके फिर हमारे संसार में वापस नहीं आ जाएगा, तब तक उसके लिए ईश्वर-प्राप्ति संभव नहीं। उसे चाहिए कि वह हमारे सुख-दुःख का भागी बने; शादी-भोज के अवसरों पर नाचनेवालों के साथ नाचे और मृत्यु के अवसर पर रोते हुए व्यक्तियों का साथ दे।''

पहला आदमी इस बात से अपने मन में संतुष्ट तो हुआ, लेकिन स्वभाववश बोला, ''जो कुछ तुम कहते हो, उससे मैं सहमत तो हूं, फिर भी मेरा ऐसा विश्वास है कि वह संन्यासी एक सत्पुरुष है और यह तो तुम्हें मानना ही पड़ेगा कि अपने गुणों का प्रदर्शन करनेवालों से भरी इस दुनिया में एक सत्पुरुष अपने को छिपाकर भी संसार का अधिक उपकार करता है।''

रेल लाइन पर कीड़ा

-स्वामी विवेकानंद

रेलवे लाइन पर एक भीमकाय इंजन तेजी से जा रहा था। एक छोटा-सा कीड़ा लाइन पर रेंग रहा था। इंजन आ रहा है यह देखकर उसने धीरे से लाइन से उतर कर अपने प्राण बचाये। यद्यपि वह क्षुद्र कीट इतना नगण्य है कि इंजन से दबकर किसी भी क्षण उसकी मृत्यु हो सकती है तथापि

वह एक जीवित पदार्थ है और इंजन इतना बृहद्, इतना प्रचंड होने पर भी केवल एक यंत्र है, इंजन एक जड़ ही है।

एक में जीवन है दूसरा केवल जड़ पदार्थ है, उसकी चाहे जितनी शक्ति हो उसकी गति और वेग चाहे जितना प्रबल हो, वह मृत जड़ यंत्र के सिवाय और कुछ भी नहीं है और वह क्षुद्र कीट, जो लाइन के ऊपर चल रहा था, इंजन के स्पर्श मात्र से जिसकी मृत्यु निश्चित थी, वह उस भीमकाय इंजन की तुलना में श्रेष्ठ और महिमा संपन्न है।

(धर्म रहस्य से)

बहरा हातिम

-शेख सादी

एक संत था। लोग उसे बहरा हातिम कहते थे, पर असल में वह बहरा न था। एक दिन उसकी संगत में कुछ लोग बैठे हुए थे कि इतने में एक मक्खी, मकड़ी के जाले में फंस गई। वह छुटकारा पाने के लिए भिनभिनाने लगी।

एकाएक हातिम के मुंह से निकल पड़ा, "ऐ लोभ की मारी, अब क्यों भिनभिना रही है? ठहर जा! हर जगह शक्कर, शहद और कंद नहीं होती-अकसर कोनों में जाल बिछे रहते हैं।"

इस पर लोग अचरज में पड़ गये। एक आदमी से न रहा गया। वह बोल उठा, "महाराज मक्खी की भिनभिनाहट आपने कैसे सुन ली? यह तो हमें भी सुनायी नहीं दी।"

दूसरा आदमी बोल उठा, "तो क्या आप बहरे नहीं हैं? "

हातिम मुसकराया।

पहले आदमी ने फिर कहा, "पर लोग तो आपको बहरा ही समझते हैं।"

हातिम बोला, "यह बेहतर है। झूठी बातें सुनने के बजाय बहरा होना कहीं अच्छा है। यदि मैं बात-बात पर उन्हें जवाब देता तो मेरे संगी-साथी मेरे अवगुणों को छिपाते और मेरे गुणों का गान करते रहते। इस तरह मैं अपने-आपको बहुत अच्छा आदमी समझने लगता। नतीजा यह होता कि मेरा आपा मुझे ही परेशान करने लगता और मैं अपना संतुलन खो बैठता। इससे बुरी बात और क्या होती!

"इसी कारण मैं अपने-आपको बहरा प्रकट करता हूं। शायद इस बहरेपन की आड़ में मेरे अवगुण दूर हो जाएंगे। क्योंकि अब मेरे साथी-संगी मुझे बहरा और मूर्ख समझते हैं और मेरी बुराई-अच्छाई बिना लाग-लपेट के साफ-साफ कह देते हैं। इस तरह मैं उनकी नजरों में भला आदमी बनने के लिए अपनी बुराइयों को दूर करने की कोशिश करता रहता हूं।"

आदमी को हातिम की तरह चुप रहकर अपनी बुराइयों को सुनना चाहिए और फिर उनको दूर करने की कोशिश करनी चाहिए।

प्रस्तुति : इब्बार रब्बी

व्यंग्य

उधार प्रेम की कैंची है

अश्विनी कुमार दुबे

उधार देना और लेना एक कला है। उधार लेनेवाला मन को साधकर आता है कि आज सेठजी कोई भी बहाना बनाएं, डांटें-फटकारें, चलेगा, परंतु उनसे उधार लेकर ही आना है। चाहे जो भी हो जाए। उधर सेठजी ने भी उसे देखते ही भांप लिया कि बच्चू आ गया उधार लेने। अभी इसने पिछली उधारी चुकायी नहीं और दोबारा गिड़गिड़ाने आ गया। आज इसकी एक न सुनेंगे। चाहे रोये या सिर पीटे। आज इसे उधार नहीं देना। फिर दुआ-सलाम के पश्चात दोनों एक-दूसरे पर अपनी-अपनी तरकीबें आजमाने लगते हैं। सेठजी अपनी जिद पर अड़े हुए हैं, 'पुरानी उधारी चुकाओ और यहां से रफूचक्कर होओ। फिर उधार मांगने यहां कभी मत आना।' उधर उधार लेनेवाला पूरी तरह विनम्र है। वह अपनी परेशानी, धंधे में लगातार घाटा एवं जल्द ही पूरी रकम चुका देने के वायदे के साथ और उधार लेने के लिए डटा हुआ है। अंत में सेठजी ब्याज की दर बढ़ाते हुए पिघले। उसने भी पुरानी उधारी में आधी रकम सेठजी को अर्पित की, तब कहीं जाकर समझौता हुआ। उधार दिया गया और लिया गया। दुकान पर लिखा है-'उधार प्रेम की कैंची है' इस प्रकार सुबह से शाम तक सेठजी की गद्दी पर प्रेम की कैंची सतत चलती रहती है।

आम आदमी ऋण लेकर दुखी होता है। उसे चिंता होती है कि वह ऋण कैसे चुकाएगा? वहीं हमारी सरकारें विदेशों से ऋण लेकर खुशियां मनाती हैं। वर्ल्ड बैंक से ऋण मंजूर हो जाए, सरकारें खुश हो जाती हैं। मंत्री नाचने लगते हैं। नौकरशाही जश्न मनाने लगती है। ठेकेदार लूट के लिए अटेंशन हो जाते हैं। सप्लायर और एजेंट अफसरों के आगे-पीछे, दायें-बायें घूमने लगते हैं। ऋण के रुपयों से कैसे होली खेली जाए, यह बताने के लिए बड़े-बड़े विशेषज्ञ सामने आते हैं। नेताओं को अपनी योजनाएं समझाते हैं। कमीशन तय होता है। और वही विदेशी पैसा फिर विदेश को चला जाता है, निजी खातों में। कई राज्य सरकारें विदेशी ऋण का यह खेल कुशलतापूर्वक खेलती हैं। कहीं-कहीं कुछ विकास भी होता है। होना चाहिए, वर्ना जांच कमीशन वालों को क्या दिखायेंगे? इसलिए इतना काम कर लो, जिसे देखकर जांच

कमीशन वाले संतुष्ट हो जाएं। वैसे उन्हें संतुष्ट करने के और भी तरीके हैं। वे सब तरीके तो समय रहते हम अपनाते ही हैं, परंतु मीडिया वालों को बहुत कुछ दिखाना पड़ता है। विपक्षियों का मुंह बंद रखना पड़ता है और जनता को भी किसी-न-किसी तरह बरगलाए रखना पड़ता है। इतनी मेहनत करनी पड़ती है, तब कहीं उधारी की रकम ठिकाने लगती है।

हमारे देश में चार्वाक दर्शन अत्यंत लोकप्रिय है, अर्थात ऋण लेकर घी पियो। आजकल घी तो कोई पीता नहीं। अब घी पचाने की क्षमता किसमें है? हां, उधार लेकर दारू पीने का चलन इन दिनों काफी लोकप्रिय है। दारू पीकर उद्दंड होने की आपको पूरी स्वतंत्रता है। अब जो भी आपसे अपनी उधारी के लिए तगादा करे, उसे आप हड़का सकते हैं, घुड़की दे सकते हैं। ज्यादा हुआ तो उसे दो-चार हाथ भी जमा सकते हैं, फिर वह कभी अपने पैसे मांगने की हिम्मत न करेगा। हां, ये बात जरूर है कि भविष्य में उससे आपको कुछ भी उधार न मिलेगा। न मिले, क्या फर्क पड़ता है! अपने देश में उधार देनेवालों की कमी है क्या? पिछले दिनों ऐसे ही एक महान चार्वाक प्रेमी से मेरा साबका पड़ा।

वह मेरे पड़ोस में रहते हैं। केंद्र सरकार की अच्छी नौकरी में हैं। सुबह-शाम ऑफिस जाते-आते उनसे कभी-कभार नमस्ते हो जाती थी। बस इतना ही परिचय हुआ था उनसे। एक दिन नर्सिंग होम में भेंट हो गयी। अपनी पत्नी को चेकअप कराने लाये थे। मैं भी किसी काम से डॉक्टर के पास गया था। बरामदे में मुझे रोककर वह कहने लगे, "मेरी पत्नी को हार्ट-अटैक आया है। एमरजेंसी केस है। उसे तत्काल एडमिट करना है। मैं जल्दबाजी में पर्याप्त पैसे नहीं ला पाया। अभी पांच सौ रुपये दे दें, काम चल जायेगा। घर पहुंचते ही वापस दे दूंगा।"

मैंने उन्हें तुरंत पांच सौ रुपये दे दिये। पड़ोसी हैं; इतना तो मुझे करना ही चाहिए था। इस घटना को कई दिन हो गये। रोज की तरह सुबह-शाम उनसे नमस्ते होती रही। महीने भर तक उन्होंने रुपयों का कोई जिक्र न किया। एक दिन मैंने संकोच तोड़ते हुए उन्हें उस दिन की याद दिलायी। वह कुछ-कुछ याद करते हुए बोले , "हां, हां, उस दिन की बात याद आ गयी। ठीक है, कुछ दिनों में रुपयों की व्यवस्था करता हूं।" कई महीनों तक उन्होंने कोई व्यवस्था न की। इस बीच मुझे मालूम हुआ कि उनकी पत्नी को कभी कोई हार्ट अटैक नहीं आया। वह अपने रुटीन चेकअप के लिए पति के साथ उस दिन नर्सिंग होम गयी थीं। हां, उनके पति महोदय को उधार लेकर घी पीने की तो नहीं, शराब पीने की गंभीर बीमारी जरूर

है। साल भर बाद मैंने पुन: अपने पैसों की याद दिलायी,तो वह झल्लाते हुए कहने लगे,"आप तो पीछे ही पड़ गये। आपके रुपये खाकर भाग जाएंगे क्या? आपने मुझे कोई मामूली आदमी समझ लिया है। जब रुपये पास होंगे, दे दूंगा।"

कई साल हो गये, आज तक मैंने उनसे रुपये नहीं मांगे। हां, सुबह-शाम वह मुझसे नमस्ते जरूर कर लेते हैं।

वैसे इस दौर में उधार लेकर न देने की परंपरा में विकास हुआ है। बेशर्मी और उद्दंडता का अध्याय उसमें और जुड़ गया है। पहले उधार न दे पाने के कारण लोग संकोच से भरे होते थे। अब संकोच के लिए उनके मन में कोई जगह नहीं है। वह चिल्लाकर ऊंची आवाज में कहते हैं,"आपने हमें उधार दिया, आपकी गलती। हमें नहीं देनी आपकी रकम। कर लें,जो करना हो।" सचमुच, आप कुछ नहीं कर सकते, सिवा इसके कि भविष्य में अब किसी को उधार न देंगे-यह कसम खा लें। ऐसी कसम खानेवालों की संख्या बढ़ती जायेगी, तो जरूरतमंद, गरीब और लाचार लोगों का क्या होगा?

मुझे किसी से कुछ भी मांगते हुए बहुत संकोच होता है। लोग बेधड़क मांग लेते हैं, "यार, जरा अपनी कार देना, मेरे मित्र आये हैं, उन्हें घुमाने ले जाना है।" "मियां, अपना सी. डी. प्लेयर भिजवा देना, नयी फिल्म देखनी है।" "भाई, तुम्हारा वह सूट बहुत अच्छा है, कुछ दिनों के लिए दो। बॉस के लड़के की शादी में जाना है।"

कुछ महिलाएं इतनी महान होती हैं कि उनकी रसोई में सब कुछ होते हुए भी वे पड़ोसी महिलाओं से कुछ-न-कुछ लगातार मांगते हुए आतंक-सा फैलाये रहती हैं। कभी 'चाय-पत्ती नहीं है।' 'आज एक कप दूध दे दीजिए।' परसों दो किलो आटा ले गयी थीं, आज तक नहीं भिजवाया। एक बार एक महिला पड़ोसन का नेकलेस पहनकर एक शादी में गयीं, वहां वह नेकलेस कहीं गिर गया। उन्होंने बाजार में वैसे ही नेकलेस की कीमत पता की। बीस हजार रुपये कीमत सुनकर उनके प्राण हलक में अटक गये। पति महोदय ने पत्नी को खूब डांटा-फटकारा। बेचारों ने बच्चों के लिए जो पैसे बैंक में जमा किये थे, उन्हें निकलवाया। जब नेकलेस की कीमत चुकाने वह पड़ोसी के यहां गये, तब उनके पड़ोसी खूब हंसे। उन्होंने मात्र दो सौ रुपये लेकर उन्हें राज की बात बतायी, "मियां, वह नेकलेस नकली था, जिसकी कीमत मात्र दो सौ रुपये है।"

तमाम विसंगतियों के बावजूद उधार देने और लेने की कला खूब विकसित हो रही है। देनेवाले, न देने के लिए लाख बहाने खोज लें परंतु लेनेवाला ऐसा कुछ चमत्कार-सा कर जाता है कि उसे उधार देना ही पड़ता है। देनेवाला भी घाघ है। वह यों ही किसी को उधार नहीं दे देता। बाद में डबल-तिबल ब्याज वसूलता है वह। अंतत: उसी सत्य से साक्षात्कार होता है कि उधार प्रेम की कैंची है।

-एल. आई. जी. ई-100,
शैलेन्द्र नगर, रायपुर - 492 001

समय से संवाद करती कविताएं

हिंदी कविता का हमेशा अपने समय के साथ गहरा संवाद रहा है। यह तो हिंदी आलोचना का संकट है कि वह अकसर कविता को तत्कालीन समाज के वैचारिक संघर्ष से जोड़कर नहीं देख पाती। 1970 के बाद की हिंदी की काव्यालोचना गहरे रूप से इस विडंबना की शिकार रही है। सुकून की बात यह है कि इस दौरान कविता ने न केवल समय के साथ अपना संवाद जारी रखा है, बल्कि इस बीच रचनाकारों के ही प्रयत्न से कुछ ऐसे कविता संकलन भी प्रकाशित हुए, जिनमें इसकी अनुगूंजें सुनी जा सकती हैं। 'पहल' में छपी हिंदी कविताओं में से चुनकर कर्मेन्दु शिशिर द्वारा तैयार किये गये संकलन का तो नाम ही है– 'समय की आवाज।' इसी तरह एक और महत्त्वपूर्ण संकलन है, असद जैदी द्वारा संपादित–'दस बरस ?'

1992 में अयोध्या में बाबरी मसजिद के विध्वंस की घटना ने भारतीय जनमानस को गहरे प्रमाणित किया। पिछले 6 दिसम्बर को उस घटना के दस वर्ष पूरे होने पर, असद जैदी ने दो जिल्दों में यह संकलन संपादित किया है, जिसमें 1992 की घटना और उसके बाद से निरंतर गहरे होते जा रहे सांप्रदायिक विद्वेष और घृणा तथा इस घृणा को चुनावी जीत में बदलने की फिरकापरस्तों की नापाक कोशिशों के विरुद्ध लिखी गयीं, हिंदी के 110 कवियों की कविताएं संकलित हैं।

संग्रह में पिछले एक दशक के दौरान लिखी गयीं ऐसी ढेर सारी अच्छी कविताएं हैं, जिनमें अपने समय की तमाम वैचारिक जद्दोजहद से टकराने और उन्हें अभिव्यक्त करने का गंभीर उपक्रम दिखाई देता है। इसमें गुजरात

प्रसाद मिश्र, कात्यायनी, संजय कुंदन आदि की वे कविताएं भी शामिल हैं, जो पिछले वर्ष चर्चा में रहीं। इनके अलावा ज्ञानेन्द्र, वीरेन डंगवाल, अनामिका, अरुण कमल, कुमार अम्बुज, विमल कुमार, निलय उपाध्याय, अनीता वर्मा आदि की कविताएं भी हिंदी कविता के प्रतिरोध के स्वर को मजबूत करती प्रतीत होती हैं। हालांकि, इस संग्रह में अतिव्याप्ति का दोष हैं अर्थात, इसमें कई ऐसी कविताएं शामिल हैं, जो अच्छी होने के बावजूद संकलन के लिए निर्धारित विषय से सीधे संबद्ध नहीं हैं। दूसरी तरफ, कुछ जरूरी कविताएं इसमें आने से रह भी गयी हैं। फिर भी, इसका दस्तावेजी महत्त्व है और इससे जाहिर होता है कि हिंदी कविता अभी भी अपने समय और समाज की चिंताओं से गहरे रूप से जुड़ी हुई है और उन्माद, चाहे वह सांप्रदायिकता का हो अथवा बाजार का, इसे निगल नहीं सका है। इसे पढ़ा जाना चाहिए और बार-बार चर्चा के बीच लाया जाना चाहिए। हालांकि, इस संकलन में कुछ कविताएं न होतीं और उनकी जगह पर विनोद दास, अष्टभुजा शुक्ल, शरद रंजन शरद, रंजीत वर्मा, अनिल विभाकर, प्रफुल्ल कोलख्यान, पूनम सिंह, अनवर शमीम, शहंशाह आलम आदि की कविताएं होतीं, तो यह और ज्यादा मुकम्मिल संग्रह बन पाता।

'समय की आवाज' में पिछले तीस वर्षों के दौरान हिंदी की महत्त्वपूर्ण तथा सबसे चर्चित पत्रिका 'पहल' में प्रकाशित कविताएं संकलित हैं। इसका चयन एवं संपादन युवा विचारक तथा कथाकार कर्मेंदु शिशिर ने किया है। किसी एक पत्रिका में प्रकाशित कविताओं के आधार पर बनाये गये संकलन की अपनी सीमाएं हो सकती हैं, क्योंकि चयनकर्ता का क्षेत्र सीमित हो जाता है। लेकिन 'पहल' इस संकलन की सीमा नहीं, शक्ति है। वैसे 'पहल' की महत्ता सर्वविदित है फिर भी, इस संग्रह को देख कर सुखद आश्चर्य होता है कि गये तीस वर्षों के दौरान इसमें हिंदी के प्रायः सभी प्रमुख एवं युवा कवियों की ऐसी उल्लेखनीय कविताएं प्रकाशित हुई हैं, जो लगभग उनकी प्रतिनिधि कविताएं हैं। इसमें एक तरफ वरिष्ठ पीढ़ी के शमशेर, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, त्रिलोचन, कुंवर नारायण, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह,

त्रिलोचन, कुंवर नारायण, रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह, मलय, विजेन्द्र, कुमार विकल, चंद्रकांत देवताले और धूमिल जैसे रचनाकार हैं तो दूसरी तरफ, नरेश सक्सेना, भगवत रावत, विष्णु खरे, ऋतुराज, इब्बार रब्बी, लीलाधर जगूड़ी, नीलाभ, सुदीप बनर्जी, मंगलेश डबराल, वीरेन डंगवाल, आलोक धन्वा, ज्ञानेंद्रपति, विजय कुमार, कुबेर दत्त, अरुण कमल, असद जैदी और लीलाधर मंडलोई जैसे हमारे समय के महत्त्वपूर्ण तथा चर्चित कवियों के साथ-साथ, हरीश चंद्र पाण्डेय, अग्निशेखर, विनोद दास, कुमार अम्बुज, अष्टभुजा शुक्ल, देवी प्रसाद मिश्र, संजय चतुर्वेदी, कात्यायनी, विमल कुमार, निलय उपाध्याय, एकांत श्रीवास्तव, अरुण आदित्य, हेमंत कुकरेती, प्रमोद कौंसवाल, बोधिसत्व, बद्रीनारायण, प्रेम रंजन अनिमेष, संजय कुंदन, प्रताप राव कदम , निरंजन श्रोत्रिय आदि जैसे युवा और संभावनाशील कवि भी हैं। यही कारण है कि 'पहल' की आवाज हमारे समय की आवाज बन गयी है।

युवा संपादक की चयनदृष्टि के कारण भी यह संकलन महत्त्वपूर्ण हो गया है। कर्मेंदु शिशिर ने सभी कवियों की प्रतिनिधि कविताएं ही चुनी हैं और भूमिका में विस्तार से तीस वर्षों के काव्य परिदृश्य को उकेरते हुए यह बताया है कि कैसे ये कविताएं 'समय की आवाज' बन कर उभरती हैं। हालांकि, सत्तर के दशक में प्रगतिशील काव्य-परंपरा की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने सिर्फ एक धारा की भूमिका को ही महत्त्वपूर्ण बतलाया है जबकि, इसके लिए अन्य वाम धाराओं के योगदानों को नकारा नहीं जा सकता है। अलबत्ता, एक पत्रिका के रूप में 'पहल' की जरूर ऐतिहासिक भूमिका है और उसकी झलक इस संकलन में भी मिलती है। हिंदी में अभी कोई भी दूसरी पत्रिका नहीं है, जिसमें छपी कविताओं का ऐसा उल्लेखनीय संकलन बन सके। 'दस बरस' की तरह यह संकलन विषय केंद्रित नहीं है। लेकिन, अनजाने ही एक विषय बन गया है, वह है-समय के साथ गहरा संवाद।

कुल मिलाकर ये दोनों संकलन हमारे समय की कविता के दो सबसे सार्थक संग्रह हैं और इनके माध्यम से समकालीन हिंदी कविता के मिजाज को काफी हद तक जाना-समझा जा सकता है। हालांकि, 'दस बरस' की तरह, 'समय की आवाज' में भी पहल में प्रकाशित कुछ और अच्छे कवियों की कविताएं शामिल नहीं हो सकी हैं।

आलोच्य संकलन

1. दस बरस : हिंदी कविता अयोध्या के बाद
संपादक : असद जैदी , प्रकाशक : सहमत 8, विट्ठल भाई पटेल हाउस, रफी मार्ग, नयी दिल्ली-110001, मूल्य : 120 रु. प्रत्येक खंड।

2. समय की आवाज
संपादक : कर्मेन्दु शिशिर
प्रकाशक :आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा)-134113 ,मूल्य : 200 रु.।

-मदन कश्यप

भारतीय चिंतन में धर्म की अवधारणा को अनेक रूपों में व्याख्यायित किया गया है। इनमें एक लोकहितकारी मत यह है कि 'धारयति इति धर्म,अर्थात जो धारण करने योग्य है, वही धर्म है। लेकिन विडम्बना यह है कि कुछ लोगों ने इसे अपने अनुकूल ढालने के प्रयास में इसके अर्थ इतने बदल दिये कि धर्म के कई विरोधी स्वरूप उभकर सामने आए। परिणाम यह हुआ कि दुनिया को धर्म के नाम पर नुकसान भी उठाना पड़ा। राजाराम भादू ने अपनी नई पुस्तक- 'धर्मसत्ता और प्रतिरोध की संस्कृति' नामक पुस्तक में इस तथ्य को अत्यंत वैज्ञानिक और तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत किया है।

279 पृष्ठों की इस पुस्तक में दो खंड हैं। पहला-'धर्मसत्ता और प्रतिरोध की संस्कृति' और दूसरा 'वैश्वीकरण,- 'खंडित आस्था और नए शक्ति केंद्र'। पहले खंड में हिंदू धर्म की संरचना, बौद्ध एवं जैन धर्म का रूपांतरण, संत परंपरा, पन्थ परिणतियां, धार्मिक सुधारवाद बनाम यथास्थितिवाद, हिंदू धर्म का तंत्र पक्ष, भारतीय अल्पसंख्यकों की घुटन, धर्मतंत्र से उत्पीड़ित स्त्री और दलित, धर्मसत्ता और प्रतिरोध की संस्कृति है।

दूसरे खंड में, बीसवीं सदी में ईश्वर की अवधारणा, कुछ अध्यात्म केंद्र और नये पैगम्बर, धर्मतंत्र का वैश्विक दृश्य, हिंदूवादी धर्म-संस्कृति का उद्यम, शक्तिकेंद्र बनता साधु समाज, हिंदूवादी सांप्रदायिक ध्रुवीकरण, पाकिस्तान की खबर और धर्मनिरपेक्ष संस्कृति की निर्मिति का प्रश्न है।

इस पुस्तक में लेखक ने हिंदू धर्म की संरचना के मूल में यहां की जाति व्यवस्था को माना है। जाति व्यवस्था को तोड़कर हिंदू धर्म की कल्पना नहीं की जा सकती। इसी की प्रतिक्रिया में बौद्ध और जैन धर्म का अभ्युदय हुआ, लेकिन लेखक के अनुसार विडंबना यह है कि जिसके विरोध में इन धर्मों का जन्म हुआ, कालांतर में ये धर्म भी उसी दिशा में अग्रसर होते पाये गये। यहां तक की बुद्ध के शिष्य नागार्जुन ने 'शून्यवाद' को जिस तरह प्रस्तुत किया है, वह भी एक तरह से बुद्ध के विरुद्ध ही है। नागार्जुन के संबंध में लेखक ने लिखा है,'उन्होंने बुद्ध के अनस्तित्व के सिद्धांत को क्षणिकत्व में रूपांतरित किया। इनकी मान्यता थी कि वस्तुएं निरंतर परिवर्तित हो रही हैं, अतः वे क्षणिक हैं। ....बुद्ध का यह कदापि

अर्थ नहीं था। वे तो अपने शिष्यों को एक बात समझाना चाहते थे कि वस्तुएं निरंतर गतिशील हैं, अतः वस्तुओं का स्वभाव गतिशील होने की वजह से वे 'अस्तित्व' में रहती हैं और 'अनस्तित्व' (नश्वर) में भी। नागार्जुन ने बुद्ध की अवधारणा में से 'अस्तित्व' को निकाल दिया और केवल 'नश्वरता' को रख लिया।'

पुस्तक के प्रथमखंड में जहां धर्मों के बदले हुए स्वरूप एवं उनसे उपजी विकृतियों को लेखक ने उजागर किया है, वहीं धर्मों के सैद्धांतिक पक्षों को भी पूरी ईमानदारी एवं अधिकार के साथ प्रस्तुत किया है। लेखक ने इस बात पर अधिक बल दिया है कि सत्ता से जुड़कर धर्म सत्ताधीश के हाथों का हथियार बन जाता है और अपनी लोक हितकारी भूमिका के उलट वह लोक विरोधी भी हो जाता है। धर्म की इसी भूमिका के विरोध में 'लोकायत दर्शन' का जन्म हुआ। हालांकि लेखक की यह चिंता जायज है कि 'लोकायत जनता को संगठित कर कोई व्यापक आंदोलन नहीं खड़ा कर पाए। लोकायत चिंतन का समाज पर अधिक प्रभाव क्यों नहीं हो सका यह प्रश्न हालांकि गहरे अन्वेषण की मांग करता है।'

दूसरे खंड में बदली हुई विश्वव्यवस्था और नये तरह के धर्माचार्यों की भूमिका पर लेखक ने प्रकाश डाला है। सबसे दुःखद स्थिति यह है कि धर्म के नाम पर ही भारत के दो टुकड़े हुए। जो लोग हिंदू राष्ट्र की बातें करते हैं, उन्हें अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान की ओर से झांककर देखना चाहिए कि मुस्लिम राष्ट्र होने के बावजूद वहां की जनता को आखिर क्या मिला। क्यों बार-बार वहां लोकतंत्र का गला घोंटकर सैनिक शासक हावी हो जाता है। पुस्तक में एक लेख है- 'पाकिस्तान की खबर' इसमें लेखक ने अपनी इसी तरह की चिंता व्यक्त की है। लेखक ने इस संदर्भ में अपनी चिंता व्यक्त करते हुए पाकिस्तान के एक कवि जीशान साहिल की कुछ पंक्तियां उद्धृत की हैं इन पंक्तियों से यह भी उजागर होता है कि पाकिस्तान का मानस वहां की व्यवस्था के प्रति क्या सोचता है। पंक्तियां हैं-

हमारे अलावा/कराची में चिड़ियां भी रहती हैं
जो गोलियों की आवाज और धमाकों के बावजूद
दरख्तों पर से उड़ती हैं
दीवारों पर बैठती हैं
कहीं न कहीं जमा होकर
बिला नागा दुआएं मांगती हैं
या हमारी तरह रात भर
अपने-अपने ठिकानों में छुपती रहती हैं
और सुबह होने तक बाहर नहीं निकलतीं

अत्यंत पाठनीय और वैचारिक उष्मा से युक्त यह पुस्तक धर्म की अवधारणा और उसके बदले हुए स्वरूप पर गंभीरता से विचार करने के लिए प्रेरित करती है।

पुस्तक : धर्मसत्ता और प्रतिरोध की संस्कृति (वैचारिक लेख) लेखक : राजाराम भादू
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 275 रुपये।

- राधेश्याम तिवारी

सत्यार्थीजी के विशद अनुभव का निचोड़

स्वर्गीय देवेन्द्र सत्यार्थी से बड़ा शायद ही लोक साहित्य का बड़ा और गंभीर अध्येता कोई और हुआ हो। 1927 में 19 साल की उम्र में लोकगीतों की तलाश का जो सिलसिला उन्होंने शुरू किया था, वह अनवरत चलता रहा। उनके काम से महात्मा गांधी तथा गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे बड़े व्यक्तित्व भी अत्यंत प्रभावित हुए थे। लेकिन सत्यार्थीजी ने अपने लगभग सात दशकों तक फैले रचनात्मक जीवन में सिर्फ लोकगीतों का संकलन ही नहीं किया था- हालांकि वह भी इतना बड़ा काम था कि उनकी महत्ता को अब भी पूरी तरह समझा नहीं जा सका है- इसके अलावा उन्होंने ढेरों लेख लिखे, संस्मरण लिखे, यात्रा-वृत्तांत लिखे, व्यक्ति-चित्र लिखे। कहानियां लिखीं, उपन्यास लिखे, कविताएं लिखीं तथा आत्मकथाएं भी लिखीं। उनके काम का विस्तार चार भाषाओं में है- हिंदी, अंगरेजी, उर्दू तथा पंजाबी। उनकी करीब 60 पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिनके बावजूद उनका रचनात्मक साहित्य पूरी तरह प्रकाश में नहीं आ सका है।

देवेंद्र सत्यार्थी प्रतिनिधि रचनाएँ

इतने बड़े व्यक्तित्व के धनी सत्यार्थीजी की भरपूर उपेक्षा हुई और कम-से-कम हिंदी में तो उन्हें भुला ही दिया गया होता, अगर प्रकाश मनु जैसे उद्यमी तथा लगनशील व्यक्ति ने उन्हें फिर से सामने लाने का बीड़ा न उठाया होता। श्री मनु ने 1989 में सत्यार्थीजी की चुनी हुई रचनाओं का एक संकलन प्रकाशित करवाया था। उसके बाद सत्यार्थीजी का पुनर्मूल्यांकन करते हुए एक पुस्तक 'देवेन्द्र सत्यार्थी : तीन पीढ़ियों का सफर' भी प्रकाशित करवाई थी। सत्यार्थीजी की 90वीं सालगिरह पर उनका एक लंबा दिलचस्प तथा अनौपचारिक साक्षात्कार भी प्रकाशित करवाया था।

इसी कड़ी में पिछले वर्ष के अंत में श्री मनु के संपादन में 'देवेन्द्र सत्यार्थी: प्रतिनिधि रचनाएं' प्रभात प्रकाशन से सामने आयी हैं। लगभग एक हजार पृष्ठों में श्री मनु ने पूरी कोशिश की है कि सत्यार्थीजी की सभी चुनी हुई रचनाएं सामने आ सकें। ऐसे किसी भी प्रतिनिधि चयन की अपनी सीमाएं हो सकती हैं- जिससे प्रकाश मनु भी अवगत हैं- कि बहुत-सा महत्त्वपूर्ण छूट जाता है, लेकिन इसका अहसास सामान्यत: पाठकों को इसलिए नहीं होगा कि एक लंबी उपेक्षा के कारण

सत्यार्थीजी का बहुत सा साहित्य वर्षों तक अंधेरे में खोया रहा है और क्या महत्त्वपूर्ण है, इसकी याद भी बहुत ही कम लोगों को होगी। सत्यार्थी के पांच उपन्यासों के अंश इसमें सामने आ सके हैं। उन्हें भी पूरी तरह सामने नहीं लाया जा सकता तो, एक कसक पाठकों के मन में रह जायेगी, लेकिन इस संकलन की सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें उनके चारों भाषाओं में लिखे गये साहित्य की प्रामाणिक सूची भी दी गयी है।

प्रतिनिधि रचनाओं के पहले खंड में उनके लंबे साहित्य के अध्ययन के निचोड़- 'लोक साहित्य का मर्म' के साथ-साथ विशिष्ट साहित्यकारों तथा कालजयी व्यक्तित्वों पर लिखे गये उनके संस्मरण, रेखाचित्र तथा उनके घुमंतू जीवन से परिचित करानेवाले कई अद्‌भुत यात्रा-वृत्तांत शामिल हैं। दूसरे खंड में तरह-तरह के अनुभवों से भरपूर उनकी सदाबहार आत्मकथा के अलावा उपन्यास अंश, चुनिंदा कहानियां और कविताएं संकलित हैं। इन सभी रचनाओं में पंजाब का लोकजीवन, बीसवीं शताब्दी के बदलावों का पूरा चित्र, लोकगीतों का मर्म, एक अद्‌भुत घुमंतू की जीवनयात्रा के पूरे सुख-दुःख शामिल हुए हैं। जाहिर है कि उन्होंने अनेक विधाओं में ही नहीं लिखा था बल्कि उनकी एक विधा की रचनाओं के भी अलग-अलग शेड्स थे, जिन्हें इसमें शामिल किया गया है। इस तरह यह संचयन उनकी रचनात्मक विविधता तथा विवशता दोनों का संकलन बन पड़ा है।

देवेन्द्र सत्यार्थी : प्रतिनिधि रचनाएं (दो खंड), प्रभात प्रकाशन, 4/19, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली-110002, दोनों खंडों का मूल्य 1,000 रुपये (प्रत्येक खंड का मूल्य 500 रुपये)।

डॉ. यतीश अग्रवाल और डॉ. रेखा अग्रवाल की नई पुस्तक **'खिले मातृत्व , गूंजें किलकारियां'** ढ़ाई सौ पृष्ठों की आर्ट पेपर पर छपी सुंदर पुस्तक है। यह पुस्तक उन युवा जोड़ों के लिए बहुत उपयोगी है जिनमें बच्चे की चाह उत्पन्न हो गई है। यह पुस्तक गर्भधारण के समय से लेकर एक साल के बच्चे की देखभाल करने के हर बारीक से बारीक पहलू की ओर ध्यान आकृष्ट करती है। लेखक की नजर से शायद ही कोई पहलू छूटा हो। विज्ञान-प्रसार, सी-24, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली- 110016 से प्रकाशित इस पुस्तक के सजिल्द संस्करण का मूल्य 195 रुपये तथा अजिल्द संस्करण का मूल्य 95 रुपये है।

- विकल

सांस्कृतिक डायरी

नयी दिल्ली। के. के. बिड़ला फाउंडेशन की 'कृति पुरस्कार' योजना के अंतर्गत ग्यारहवां वाचस्पति पुरस्कार-2002 के लिए पं. मोहनलाल शर्मा पांडेय के उपन्यास 'पद्मिनी' का चयन किया है। इस पुरस्कार की राशि एक लाख रुपये है। पिछले दस वर्षों में प्रकाशित संस्कृत की साहित्यिक कृतियों के अतिरिक्त किसी अन्य विषय की पुस्तक और संस्कृत में अनुदित पुस्तकों पर भी इस पुरस्कार के लिए विचार किया जाता है।

नयी दिल्ली। के. के. बिड़ला फाउंडेशन के वर्ष 2002के बारहवें 'घनश्यामदास बिड़ला पुरस्कार' के लिए डॉ. पार्थ प्रतिम मजूमदार का चयन किया गया है। हर वर्ष दिया जानेवाला यह पुरस्कार भारत में रहकर काम कर रहे 50 वर्ष से कम आयु के

वैज्ञानिकों को दिया जाता है। इस सम्मान की पुरस्कार राशि 1.50 लाख रुपये है।

लखनऊ। विगत दिनों बाबू गुलाब राय पर एक संगोष्ठी का आयोजन 'हिंदी-उर्दू साहित्य अवार्ड कमेटी' के तत्त्वावधान में किया गया। गोष्ठी में वरिष्ठ गीतकार गोपालदास नीरज, केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक डॉ. नित्यानंद पांडे और विनोद शंकर गुप्त ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन प्रो. विश्वम्भर 'अरुण' ने किया और आभार कमेटी के महामंत्री अतहर नबी ने व्यक्त किया।

कोटा। बसंत पंचमी पर 'पुरातत्व इतिहास एवं संस्कृति शोध संस्थान', 'कृति कला संस्थान' तथा 'साहित्य वितान' संस्थाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें डॉ. अशोक सिंह, रमेश वारिद, डॉ. देवेंद्र सिंह, विजय जोशी और संजय वरदान ने अपने विचार रखे।

जयपुर। स्वतंत्र छायाकार अनवर अली को पिछले दिनों कोडक कैमरा फिल्म की राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता फन-इन-यूरोप में तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

झांसी। गत दिनों जन नाट्य मंच द्वारा दीनदयाल सभागार में प्रख्यात नाट्य-निर्देशक हबीब तनवीर द्वारा लिखित नाटक 'चरणदास चोर' का मंचन किया गया। इस नाटक का निर्देशन देवदत्त बुधौलिया ने किया।

नयी दिल्ली। वरिष्ठ

कहानीकार नासिरा शर्मा की पुस्तक 'औरत के लिए औरत' का लोकार्पण विगत दिनों वरिष्ठ आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने किया। समारोह में मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार आलोक मेहता थे। दुनदुन राय और अनुजा शुक्ला ने पुस्तक पर अपने विचार रखे। अतिथियों का स्वागत महेश भारद्वाज ने और संचालन कथाकार महेश दर्पण ने किया।

फैजाबाद। पिछले दिनों यहां 'जनक्षेत्र' के तत्त्वावधान में राजेंद्र प्रकाश वर्मा के काव्य-संग्रह 'अंधेरे का आदमी' पर चर्चा आयोजित की गयी। इसमें मुख्य अतिथि डॉ. रोहिताश्व अस्थाना और अध्यक्ष अष्टभुजा शुक्ल थे। संचालन कृष्ण प्रताप सिंह ने किया। गोष्ठी को डॉ. राम शंकर त्रिपाठी, डॉ. ललित मोहन पांडेय, विप्लव बिलहरी, स्वामी प्रसाद गुप्त, मोती लाल तिवारी, डॉ. अनिल कुमार सिंह, स्वप्निल श्रीवास्तव, आगान फैजाबादी और साहिल भारती ने संबोधित किया।

नयी दिल्ली। व्यंग्यकार डॉ. हरि सिंह पाल के व्यंग्य-संग्रह 'संकीर्तन' का लोकार्पण विगत दिनों पं. गोपाल प्रसाद व्यास ने किया। इस अवसर पर डॉ. नरेंद्र कोहली, डॉ. हरीश नवल, अलका पाठक, डॉ. रामशरण गौड़, डॉ. हीरालाल बाछोतिया और सुभाष चंदर ने पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त किये।

पटना। पत्रकार सरिता सिंह को पिछले दिनों सम्मानित किया गया। 'साहित्यांचल', 'पारिजात

साहित्य परिषद्' और 'डॉ. शंकर दयाल सिंह हिंदी सेवा प्रतिष्ठान' के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस समारोह में उन्हें प्रशस्ति-पत्र तथा 'स्मृति-चिह्न' प्रदान किये गये। इस अवसर पर प्रो. कानन बाला सिंह, रंजन कुमार सिंह, डॉ. फणीभूषण प्रसाद, डॉ. रीता

सिन्हा, डॉ. अखौरी बी. प्रसाद और रामानंद प्रसाद चानपुरी सहित प्रमुख पत्रकार तथा साहित्यकार मौजूद थे।

नयी दिल्ली। शतरंज चैंपियन के. शशि किरण तथा हॉकी खिलाड़ी गगन अजीत सिंह का चयन के. के. बिड़ला फाउंडेशन के 2001-2002 के खेलकूद पुरस्कार के लिए किया गया है। इस पुरस्कार की राशि एक लाख रुपये है।

– **अरुण कुमार जैमिनि**

कादम्बिनी क्लब, भिण्ड (म. प्र.) के तत्त्वावधान में 'यूनिक स्टार ऐकेडमी स्कूल', दीनदयाल नगर में गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता मं. प्र. लेखक संघ ग्वालियर इकाई की अध्यक्ष डॉ. अन्नपूर्णा भदौरिया ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि वरिष्ठ कवि रामवरन ओझा व विशिष्ट अतिथि मोहन टंडन थे। गोष्ठी का संचालन युवा कवि रामलखन शर्मा 'अंकित' ने किया। गोष्ठी में कवि मोहन टंडन, सुनीति वैश्य, महेन्द्र भट्ट (सचिव म. प्र. लेखक संघ), रामअवतार सिंह तोमर, रविन्द्र नाथ यादव, ओम शुक्ला, भगवत भट्ट, प्रदीप पुष्पेंद्र, डॉ. अन्नपूर्णा भदौरिया, रामलखन शर्मा, रामवरन ओझा तथा पूजा शर्मा ने काव्य पाठ किया।

कादम्बिनी क्लब, जबलपुर की ओर से होटल अरिहंत पैलेस के सभागार में विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में देश के जल संकट को दूर करने पर विचार किया गया। इस परिसंवाद में डॉ. शिवप्रसाद कोष्टा, डॉ. एम. सी. चौबे, आदर्शमुनि त्रिवेदी, प्रो. दिलीप अवस्थी, डॉ. डी. पी. सिंह, नवनीत माहेश्वरी, बी. के. जेकब, डॉ. कृष्णा पटैरिया, के. जी. व्यास आदि ने हिस्सा लिया। क्लब के संयोजक मुकुन्ददास माहेश्वरी ने अतिथियों का स्वागत किया।

कादम्बिनी क्लब, पौड़ी गढ़वाल (उत्तरांचल) और 'साहित्यांचल' संस्था के संयुक्त तत्त्वावधान में 'चंद्र ज्योति सम्मान समारोह' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मदन मोहन 'उपेंद्र' को उनकी

साहित्यिक सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. वेद प्रकाश आर्य (रीडर : हिंदी विभाग, मेरठ विश्वविद्यालय) और अध्यक्ष डॉ. नंद किशोर 'अरुण' (अध्यक्ष : हिंदी विभाग, कोटद्वार महाविद्यालय) थे।

समारोह के द्वितीय चरण में काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ। गोष्ठी में 'कादम्बिनी क्लब' की ओर से क्लब की सह संयोजिका डॉ. बीना वशिष्ठ, अनुराधा खुराना, भारत भूषण शर्मा, डॉ. एस. एन. सिंह, विशू प्रभाकर, अशोक शर्मा व सुनील श्रीवास्तव ने काव्य पाठ किया। क्लब के संस्थापक अशोक गिरि ने सम्मानित साहित्यकार मदन मोहन 'उपेन्द्र' का क्लब की ओर से स्वागत किया।

कादम्बिनी क्लब, बरौनी द्वारा भारतीय मूल की कल्पना चावला सहित सात अन्य महत्त्वपूर्ण 'नासा' अंतरिक्ष वैज्ञानिकों की कोलम्बिया शटल यान में मृत्यु पर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। इस अवसर पर डॉ. केदार नाथ पंत, सुरेंद्र झा, डॉ. महेश्वर मिश्र, मनोज कुमार झा, प्रमोद कुमार सिंह, वेद प्रकाश, शारदानंद, गौरी शंकर ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कादम्बिनी क्लब, नंगल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डिंपल सुखमणि और कामना ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किये। हरभजन सिंह द्वारा प्रस्तुत गीत भी श्रोताओं द्वारा सराहा गया। कार्यक्रम में क्लब के संयोजक कृष्ण कुमार कालिया, प्रतीक्षा 'पुष्प' भाटिया, अलका सूद, अमरनाथ शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कादम्बिनी क्लब, सतना के तत्त्वावधान में बसंत पंचमी के अवसर पर वासंती गोष्ठी संपन्न हुई। मुन्नी गंधर्व की सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का आरंभ हुआ। मुख्य अतिथि शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सतना के हिंदी विभागाध्यक्ष तथा गीतकार डॉ. सुमेरसिंह शैलेश एवं साहित्यकार प्रो. प्रहलाद अग्रवाल का स्वागत माल्यार्पण से क्लब संरक्षक एस. डी. एम. नवीन तिवारी ने किया।

इस अवसर पर तुलसी तीर्थ रामवन में आयोजित कार्यक्रम में सतना के जिला कलेक्टर एस. एन. मिश्रा द्वारा गीतकार सुमेरसिंह शैलेस, कादम्बिनी क्लब सतना के

संयोजक एवं लेखक हरिहर प्रसाद तिवारी, कवि एवं वरिष्ठ पत्रकार सुदामा शरद, त्रिवेणीशंकर मिश्र, संगम रविशंकर चतुर्वेदी, उपन्यासकार विमल अहिल्यायन, रोशन लाल खरे को शॉल, श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में आयोजित काव्य-गोष्ठी में गीतकार सुमेरसिंह शैलेश, हरिहर प्रसाद तिवारी, सुदामा शरद, त्रिवेणीशंकर मिश्र, रविशंकर चतुर्वेदी, सत्येंद्र जैन प्रियदर्शी, डॉ. वेदप्रकाश सिंह प्रकाश, एच. डी. पाठक, मोहनलाल वर्मा मुकुट, रोशनलाल खरे, पृथ्वी आयलानी सजल ने काव्य पाठ किया।

कादम्बिनी क्लब, पिपरिया के तत्त्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में अनन्त साहू के प्रथम काव्य-संग्रह 'सरहदों के घेरे में' का विमोचन समारोह के मुख्य अतिथि देवेन्द्र दीपक ने किया। इस अवसर पर विशेष अतिथि आचार्य भगवत दुबे, जबलपुर कादम्बिनी क्लब संयोजक रामेन्द्र तिवारी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता खूबचंद मंडलोई ने की। समारोह के द्वितीय चरण में अवधेश शर्मा के संचालन में काव्य-गोष्ठी संपन्न हुई। आभार प्रदर्शन बी. पी. एस. बैस ने किया।

कादम्बिनी क्लब, भिंड (म. प्र.) के संयोजन में हनुमान नगर गोला का मंदिर स्थित शिवनन्दन सिंह बैस के आवास पर एक काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता कादम्बिनी क्लब, भिंड के संयोजक भगवत भट्ट ने की। काव्य-गोष्ठी में साहित्यकार डॉ. इंद्रपाल सिंह इंद्र (महाराष्ट्र, अकोला) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. सुषमा सिंह कवियत्री (आगरा) विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। कार्यक्रम में माताप्रसाद शुक्ल, डॉ. अन्नपूर्णा भदौरिया, अमित चितवन, के. एल. शर्मा, डॉ. नरेन्द्र सिंह तोमर, महेंद्र भट्ट, रामलखन शर्मा, डॉ. इंद्रपाल सिंह 'इंद्र', डॉ. सुषमा सिंह, भगवत भट्ट, अशोक विरथरिया, गजेन्द्र सिंह चौहान तथा शिवनन्दन सिंह बैस ने काव्य पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन हास्य-व्यंग्य कवि महेन्द्र भट्ट ने और आभार डॉ. नरेंद्र सिंह तोमर ने व्यक्त किया।

कादम्बिनी क्लब, हैदराबाद के तत्त्वावधान में 'हिंदी प्रचार सभा परिसर' में मासिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। चित्रकार एव कवि नरेंद्र राय की अध्यक्षता और मुरलीधर शर्मा के मुख्य आतिथ्य में 'उपभोक्ता और भाषा' विषय पर विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कवि-गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. अहिल्या मिश्र, नरेंद्र राय, पवित्रा अग्रवाल, मुरलीधर शर्मा, उमा सोनी, कविता वाचक्नवी, पुष्पा वर्मा, ज्योति नारायण, द्वारकाप्रसाद मायछ, गौतम दीवाना, जी. जगदीश्वर, एस. नारायण राव, मीना मूथा, अजित गुप्ता, सुरेश जैन और तेजराज जैन आदि कवियों ने रचनाओं का पाठ किया।

क्लब रचना

एक तुम

-डॉ. बीना वशिष्ठ

एक तुम
मेरे प्राणों में क्या जगी
टूट गये अवरोध सारे
बह गया भेद मझधार और किनारों का
डूब गया अंतर रोशनी के सैलाब में
सूरज और तारों का
आभासित होती रही बस तुम, केवल तुम
सीमाएं सब खो गयीं
तुम से क्या मिली असीम हो गयी
मन की व्यथाएं आनंद के पारावार में
डूबने-उतराने लगीं
चारों तरफ तुम्हारी छवि नजर आने लगी
सांझ भी ढली रात भी घिरी
गिरता रहा अंधेरा परत-दर-परत
पर लील न सका रोशनी की इस बूंद को
अनकहे आनंद में लीन इन प्राणों
को
तमस की कालिमा फिर न गहरा
सकी
अवसाद की बदली
फिर न छा सकी
एक तुम मेरे प्राणों में क्या जगी
कि जाग गये मेरे और तुम्हारे अटूट संबंधों का
अहसास
मेरे भीतर का शिवत्व
संसार में गहराता जा रहा है
मेरा अहं, तुझमें समाता जा रहा है
तुम क्या जगी,
कि मैं ही जाग गया
इस हृदय से, द्वेष गया, राग गया
देख कर अपना ही अभिनव सौंदर्य
आंखें रह गयी ठगी
एक तुम
मेरे प्राणों के भीतर क्या जगी!!

-सी-23, बी.ई.एल. कालोनी शाकुंतलम, कोटद्वार
-246189

नवोदित कवि

-डॉ. माणिक मृगेश

जब हर बार
एक नवोदित कवि की
सारी रचनाओं को
बिना छापे ही
सारी पत्र-पत्रिकाओं ने
खेद सहित लौटाया
तो
कवि महोदय पर
मातम-सा छाया
इतना देख
कवि पत्नी बोली
निराश काहे होते हो
इन बैरिन
पत्र-पत्रिकाओं में
आग लगा दो
कोई नहीं छापता है-तुम्हारी
कविता
तो इन्हें मेरी
साड़ी पै
छपा दो।

-मृगेशायन, 22 बी, मनोरथ सोसाइटी,
न्यू सामा रोड, बडोदरा-8

स्वर्ग-नर्क की बाउंड्री पर बने वी. आई. पी. आत्मा रूम का इंचार्ज चूंकि इंडियन बिजनेसमैन था, इसलिए उसे इस बात का भरोसा नहीं था कि दुनिया में कुछ भी असली और गैर मिलावटी हो सकता है। सो वह हर आत्मा का टैस्ट लिया करता था। जार्ज बुश ने वहां पहुंचकर कहा,''आई. एम. जार्ज बुश।''

इंचार्ज ने कहा,''देखिए, आप को सिद्ध करना होगा कि आप जार्ज बुश हैं। कुछ समय पहले अलबर्ट आइंस्टीन आये थे, तो उन्होंने मुझे फिजिक्स के कई सारे फंडे बताये, तो मैं समझ गया कि वो आइंस्टीन हैं। फिर चार्ली चैपलिन आये, तो उन्होंने जोरदार एक्टिंग करके दिखायी, सो मैं समझ गया कि वो चार्ली चैपलिन है। आप भी कुछ करके दिखाइए, तब मैं समझूंगा कि आप बुश हैं।''

जार्ज बुश ने आगे पूछा,''वो तो ठीक है और मैं अपना परिचय भी दे दूंगा। मगर ये तो बताइए कि ये आइंस्टीन और चार्ली चैपलिन कौन थे?''

इंचार्ज ने नतमस्तक होते हुए कहा,''राइट बुश, राइट, आप अंदर जा सकते हैं। आप अपना परिचय दे चुके हैं।''

■ ■ ■

बुश की सेनाधिकारियों के साथ मीटिंग चल रही थी। तमाम सेना अधिकारियों को शक था कि असली बुश मीटिंग में नहीं आते। खैर जो भी हो, बुश या बुश बने बंदे ने पूछा, ''हमारे सैनिकों के पास बेहतरीन हथियार होते हुए भी उनका वैसा मनोबल नहीं होता, जैसा लादेन या सद्दाम के सैनिकों का होता है।''

एक अधिकारी ने बताया, ''सर हमारे सैनिक लड़ते हैं और लादेन या सद्दाम के सैनिक जिहाद करते हैं। जिहाद का फंडा ये है कि अगर लड़ते हुए मारे गये, तो 72 सुंदरियां जन्नत में इंतजार करती मिलती हैं। उधर हमारे सैनिकों का हाल यह है कि अगर वे रेगिस्तान में बचे रह जाते

हैं, तो काफी समय तक उन्हीं सैंडविचों पर जिंदा रहना पड़ता है, जो तीन साल तक खराब नहीं होते। सो सर, कंपटीशन 72 नयी सुंदरियों और तीन साल पुराने सैंडविचों में है।''

बुश ने पूरे विश्वास से आश्वासन दिया,''मैं कांग्रेस से क्लियरेंस लूंगा कि कैसे हम भी 72 सुंदरियों को तीन साल खराब न होने वाले पैक में डालकर अपने सैनिकों को दे सकते हैं।''

सारे अधिकारी नतमस्तक होकर बोले,''राइट बुश, आज हमें यकीन हो गया कि आप ही असली बुश हैं।''

■ ■ ■

सद्दाम से परेशान होकर व्हाइट हाऊस के एक अधिकारी ने कहा,''ये दुष्ट सद्दाम मरकर नरक में जायेगा। ओर तब कोई प्राबलम नहीं, नरक में सद्दाम सारे पुराने अमेरिकन राष्ट्रपतियों से ही मिलेगा। वो सद्दाम से वहीं निपट लेंगे।''

सारे अधिकारी नतमस्तक होकर फिर बोले,''राइट बुश, राइट हमें यकीन हो गया कि आप ही बुश ही हैं, कोई और नहीं।''

■ ■ ■

भ्रष्ट कारोबारी अमेरिका में भी हैं, ईराक में भी। अर्थव्यवस्था अमेरिका की भी डूब रही है और ईराक की भी। सरकार चलानेवाले जमकर वियाग्रा लेते हैं। अमेरिका में भी और ईराक में भी और हां, सबसे जोरदार समानता यह है कि अमेरिका में सीनियर बुश अपने बेटे को राष्ट्रपति बना चुके हैं और सद्दाम अपने बेटे को राष्ट्रपति बनाने की कोशिशों में जुटे हुए हैं।

■ ■ ■

अगर आप हमारे साथ नहीं हैं, वो आतंकवादियों के साथ है।

या हो सकता है कि आप हमारे साथ हों, पर हमसे घृणा भी करते हों, जैसे मिस्र।

या हो सकता है कि आप हमारे साथ हों, पर हर तरह के आतंकवाद के डंडे को अपने फंड का तेल पिलाकर मोटा करते हों, जैसे सऊदी अरब।

या हो सकता है कि आप शत-प्रतिशत आतंकवादियों के साथ हों, सिर्फ आपके प्रेसीडेंट हमारे साथ हों, जैसे पाकिस्तान।

या हो सकता है कि आप हमारे साथ हों, पर हमारी कोई मदद नहीं कर सकते हों, जैसे कि त्रिनिडाड या टोबेगो।

या हो सकता है कि आप हमारे दुश्मन के दुश्मन हों, फिर भी पुरानी कहावत के हिसाब से हमारे मित्र न होते हुए भी हमारे भी दुश्मन हों-जैसे ईरान।

या यह भी हो सकता है कि आपको खुद ही पता न हो कि आप कहां हैं, हम समझें कि आप हमारे साथ हैं, ईराक समझे कि आप उनके साथ हैं और आप यह समझें कि कुछ समझने की जरूरत ही क्या है जैसे कि इंडिया।

-रामभरोसे तिवारी

एक नेताजी झुग्गी-झोंपड़ी बस्ती में भाषण दे रहे थे, "हम आपकी झोंपड़ियों के इन पुराने ईंट-पत्थरों से ही आप लोगों

के लिए नए मकान बनवा देंगे। जब तक नए मकान नहीं बन जाते, तब तक आप इन्हीं झोंपड़ियों में रहेंगे और जब इन्हें तोड़ा जाएगा, आप को रहने के लिए पास की बस्ती में नए मकान दिए जाएंगे।"

■ ■ ■

आगा हश्र कश्मीरी ३० के दशक में पारसी थिएटर की मशहूर हस्ती थे। गजब के नाटककार थे। एक बार दोस्तों को बता रहे थे, "हमने एक बार एक ड्रामा किया। बहुत बढ़िया था मगर न मालूम लोगों को पसंद क्यों नहीं आया? हॉल में बैठे लोग शोर मचाने लगे। कुछ देर बाद पत्थर और टमाटर बरसाने लगे। हमने एक-एक आदमी को मार-मार कर भगा दिया।"

"क्यों गप्प मार रहे हैं आप", किसी दोस्त ने कहा, "आप चंद आर्टिस्ट भला इतने लोगों को कैसे खदेड़ सकते हैं?"

"क्यों नहीं? हॉल में ड्रामा देखने वाले कुल ग्यारह आदमी थे और हमारा नाटक था अलीबाबा चालीस चोर।"

■ ■ ■

एक सभा में विंस्टन चर्चिल ने भाषण किया। बहुत भीड़ थी। सभा के बाद कुछ लोगों से अनौपचारिक बातचीत के दौरान एक महिला ने कहा, "सर, आप को अपनी सभा में इतने लोग देखकर बहुत खुशी होती होगी?"

"बिलकुल होती है," चर्चिल बोले, "लेकिन कभी-कभी यह सोचकर दिल बैठ जाता है कि अगर किसी सभा में भाषण करने की बजाय मुझे फांसी दी जाए तो इससे दुगने लोग आएंगे।"

■ ■ ■

आरक्षण की मांग करने के लिए रैली निकली। भीड़ बेकाबू हो गई। तोड़-फोड़ होने लगी। पुलिस ने गोली चलाई। कुछ लोग मर गए। इनमें वह नेताजी भी थे जिन्होंने रैली का आह्वान और आयोजन किया था। वह ऊपर पहुंचे तो उन्हें नरक के द्वार पर पटक दिया गया। वह सोचने लगे कि मैंने तो धरती पर पुण्य के कितने ही काम किए हैं, फिर मुझे नरक में क्यों

धकेला जा रहा है?

इतने में वहां से एक दूत गुजरा, नेताजी ने उसे पास बुलाकर पूछा, "क्यों भई, क्या तुम मुझे बता सकते हो कि मुझे नरक में क्यों भेजा जा रहा है?"

"स्वर्ग में सारी सीटें आरक्षित हैं," उत्तर मिला।

■ ■ ■

यदि पहली बार में आप सफल हो जाते हैं तो समझ जाइए कि कहीं न कहीं आप से या किसी और से कोई गलती हो गई है।

■ ■ ■

एक ठेकेदार एक अफसर को खुश करने के लिए नई कार देना चाहता था। अफसर ने कहा, "मैंने आज तक पूरी ईमानदारी से काम किया है। किसी से कुछ भी लेना मेरे सिद्धांतों के विरुद्ध है।"

ठेकेदार बोला, "लेकिन कार मैं आपको मुफ्त में थोड़े ही दे रहा हूं। मैं तो अपनी नई कार बहुत कम कीमत पर बेच रहा हूं। कोई चीज कम पैसों में खरीदना तो जुर्म नहीं है न? चलिए, आप इस कार के मुझे हजार रुपए दे दीजिए।"

"फिर तो यार, दो कारें दे दो," अफसर बोल उठा।

■ ■ ■

कोई गुमशुदा चीज मिल क्यों नहीं रही? क्यों कि जहां वह है, वहां ढूंढ़ने की बजाय आप वहां तलाश करते हैं जहां वह नहीं है।

■ ■ ■

20 वर्ष की उम्र में हमें परवाह नहीं होती कि लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं। 35और 40 के बीच हम सोचने लगते हैं कि लोग हमारे बारे में क्या सोचते होंगे और 50 की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते हमें मालूम हो जाता है कि किसी को फुरसत ही नहीं हमारे बारे में सोचने की।

■ ■ ■

अधेड़ावस्था : जब बुजुर्गों को कोसना बंद करके अपने बच्चों को कोसना शुरु कर देते हैं।

–मुहम्मद तुगलक

चित्र और रचना-1

प्रथम पुरस्कार

जल जीवन है। इसीलिए इसमें देवत्व की कल्पना है। जीवनाधार होने से इसकी उपलब्धि हमारा लक्ष्य है। फिर इसकी प्राप्ति में प्रतिदिन भले ही कितनी दूरी चलनी पड़ती हो। रेगिस्तान में इसके लिए मीलों चलना पड़ता है। किंतु तृप्ति के लिए जल आवश्यक है। यह वैसे ही है जैसे जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साधना आवश्यक है। ग्रीष्म हो या शीत, वर्षा हो या वसंत-जल के लिए चलना ही पड़ेगा। यह श्रम हमें शिरोधार्य है क्योंकि यह हमारा पोषक है।

-डॉ. विजय नारायण गुप्त
भाषा अधिकारी भारतीय स्टेट बैंक,
आंचलिक कार्यालय कानपुर-1

द्वितीय पुरस्कार

दूर तक फैला समंदर रेत का
और उस पर चिलचिलाती धूप,
रेगिस्तान में पानी, कि यानी पत्थरों पर दूब।
हाथ में पानी, चुनर का रंग धानी
और घूंघट में मचलती आंख में पानी,
पर कहां बालू में मिलती, नीर की दो बूंद
रेगिस्तान में पानी, कि यानी पत्थरों पर दूब
आज है, कल भी रहेगी यह कहानी,
देखिए/कैसा नजारा खूब/
रेगिस्तान में पानी कि यानी पत्थरों पर दूब

-धीरेन्द्र कुमार सिंह
ग्राम व पो.-अर्जुनपुर, जिला-सतना (म. प्र.)

तृतीय पुरस्कार

रेगिस्तान में कभी विलुप्त सरस्वती रही होगी। आज तो रेत का समंदर है यहां। रेत भी अत्यंत उदार। बरसात की हर बूंद को अपने भीतर समा लेने वाली रेत। चिकनी मैदानी मिट्टी बरसात के बाद चटखकर दरार बना लेती है, जिससे उसका पानी उड़ जाता है। रेगिस्तानी बालू जल भीतर लेती। जल नीचे से नीचे चला जाता है। फिर ठहर जाता है। कुईं खोदकर फिर लोग उसे प्राप्त करते हैं। कुईं में पानी रिसकर इकट्ठा होता है। लोग कुईं पर इकट्ठे होते हैं। ज्यादातर कुईंयां रेत के टीले के पास के ताल में होती हैं। पुरुष कुईं से पानी खींचते हैं। महिलाएं बरतनों में भरकर दूर घरों तक ले जाती हैं। सूर्यास्त के साथ अगली शाम तक कुईं की चहल- पहल रुक जाती है, पर कुईं में जल रिसना नहीं रुकता। ये दोघड़, नारियां सुस्ताती जरूर हैं, पर थकती नहीं।

जल गहरा थल उजला नारी नवले वेस।
पुरुष पठाधर नीपजै, अइहो मरुधर देस।

-बजरंग लाल जेठू
मु. पो. जेठवास-दांतरू वाया-लक्ष्मणगढ़,
सीकर (राजस्थान)-332311

दि हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, 18-20 कस्तूरबा गांधी मार्ग नई दिल्ली-110001 से मुद्रित तथा प्रकाशित।

चित्र और रचना-3

यहाँ प्रकाशित चित्र को देखिये, शीर्षक पढ़िए और अपनी कल्पना को यथार्थ के रंगों में घुलामिलाकर एक रचना लिखिये। वह कविता हो सकती है या कहानी या गद्य का कोई सुंदर-सुगठित नमूना हो सकता है। आपकी कल्पनाशीलता, भाषा तथा शैली का नयापन, सजगता, संक्षिप्तता, मार्मिकता ही आपकी रचना के चयन का आधार होगा। कोई भी रचना डेढ़ सौ शब्दों से अधिक की नहीं होनी चाहिए।

1. रचना मौलिक, अप्रकाशित और अप्रसारित होनी चाहिए।
2. कोई भी रचना संपादक के व्यक्तिगत नाम से न भेजी जाये।
3. एक बार पुरस्कृत रचनाकार को अगले छह माह तक दुबारा पुरस्कृत नहीं किया जाएगा।

पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है:

प्रथम पुरस्कार: 250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार: 200 रुपये तथा तृतीय पुरस्कार: 150 रुपये।
रचना भेजने की अंतिम तिथि 25 मई, 2003.

कादम्बिनी Regd. No. DL-27004/2003-05 RNI No. 4983/60 Postal License No. U (C)-114/2002